जैन साहित्य संशोधक समिति

पेट्रन.

श्रीयुत हीरालाल अमृतलाल शाह. बी. ए. मुंबई.

वाईस पेट्रन

श्रीयुत केशवलाल प्रेमचंद मोदी. बी. ए. एल्.एल्. बी. वकील अमदावाद.

शेठ चिरंजी लालजी वडजात्या वर्धा.

सहायक.

शेठ परमानंददास रतनजी, मुंबई.

श्रीयुत मनसुखलाल रवजीभाई मेहता, मुंबई.

शेठ कांतिलाल गगलभाई हाथीभाई, पूना.

शेठ केशवलाल मणीलाल शाह, पूना.

शेठ बाबूलाल नानचंद भगवानदास झवेरी, पूना.

लाईफमेंबर.

श्रीयुत बाबू राजकुमार सिंहजी बद्रीदासजी, कलकत्ता.

श्रीयुत बाबू पूरणचंदजी नाहार. एम्. ए. एल्. एल् बी. कलकत्ता.

शेठ लालभाई कल्याणभाई झवेरी, वडोदरा (मुंबई).

शेठ नरोत्तमदास भाणजी, मुंबई.

शेठ दामोदरदास, त्रिभुवनदास भाणजी, मुंबई.

शेठ त्रिभुवनदास भाणजी जैन कन्याशाला, भावनगर.

शेठ केशवजीभाई माणेकचंद, मुंबई.

शेठ देवकरणभाई मूळजीभाई, मुंबई.

शेठ गुलाबचंद देवचंद, मुंबई.

श्रीयुत मोतीचंद गिरधरलाल कापडिया बी. ए. एल्.एल्. बी. सोलीसीटर, मुंबई.

श्रीयुत केशरी चंदजी भंडारी इंदौर.

शाह अमृतलाल एण्ड भगवानदास कुं० मुंबई.

शाह चंदुलाल वीरचंद कृष्णाजी, पूना.

शाह धनजीभाई वखतचंद सागंदवाळा, हाल पूना.

शाह बाळुभाई शामचंद, तळेगाम (ढमढेरे).

शाह चुनिलास झवेरचंद, मुंबई.

शाह भोगीलाल चुनिलाल, सोलापुरबजार, पूना कॅंप.

जैन साहित्य संशोधकना द्वितीय खण्डमां केवा केवा विषयो आवशे ते जाणवुं होय

तो आ नीचेनी नोंध ध्यानपूर्वक वांचो

बीजा खण्डमां, जैन धर्मना प्राचीन गौरव उपर अपूर्व प्रकाश पाडनारा अनेक प्राचीन शिलालेखो अने ताम्रपत्रो प्रकट थशे.

बीजा खण्डमां, जैन संघना संरक्षक जुदा जुदा गच्छोनी पट्टावलियो प्रसिद्ध थशे.

बीजा खण्डमां, जैन साहित्यना आभूषणभूत ग्रन्थोना परिचयो अने तेनी प्रशस्तिओ प्रसिद्ध थशे.

बीजा खण्डमां, जैन अने बौद्ध साहित्यनी तुलना करनारा प्रौढ अने गंभीर लेखो आवशे.

बीजा खण्डमां, भगवान् महावीर देवना निर्वाण समय संबंधी जुदा जुदा विद्वानोए लखेला लेखोनां भाषान्तरो तथा स्वतंत्र लेख आवशे.

बीजा खण्डमां, प्रो० बेवरनी लखेली जैन आगमो वेबरनी विस्तृत समालोचना आपवामां आवशे

बीजा खण्डमां, जैन साहित्यमां उल्लिखित प्राचीन स्थळोनां वर्णनो आवशे.

बीजा खण्डमां, बौद्ध साहित्यमां जैन धर्मविषये शा शा विचारो लखाएला छे तेना विचित्र उल्लेखो आवशे.

बीजा खण्डमां, जैन संघमां आज पर्यंत थई गएला बधा प्रसिद्ध पुरुषोनो टुंक परिचय आपवामां आवशे.

आ सिवाय बीजा पण अनेक नाना मोटा अपूर्व अपूर्व लेखो प्रकट करवामां आवशे अने साथे तेवां ज सुन्दर, मनहर, दर्शनीय अने संग्रहणीय अनेक चित्रो पण यथायोग्य आपवामां आवशे.

॥ अर्हम् ॥

॥ णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

जैन साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक
सचित्र त्रैमासिक पत्र ।

प्रथम खण्ड

संपादक

मुनिराज श्रीजिनविजयजी

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक कार्यालय

भारत जैन विद्यालय, पूना सिटी

वीरनिर्वाण संवत् २४४७—विक्रम संवत् १९७७

प्रकाशक—
शा. केशवलाल माणेकचंद
भारत जैन विद्यालय.
पूना सिटी

मुद्रक—
लक्ष्मण भाऊ कोकाटे
हनुमान प्रेस, सदाशिव पेठ
पुणें—सिटि.

प्रथमखण्ड-विषयसूचि.

(हिन्दी लेखविभाग)

१ मंगल १
२ निर्ग्रन्थ प्रवचन २
३ उद्बोधन २
४ सिद्धसेन दिवाकर और स्वामी समन्तभद्र ६
५ हरिभद्रसूरिका समयनिर्णय ... २१
६ हरिषेणकृत कथाकोष (ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी) ... ५९
७ जैनेन्द्र व्याकरण और आचार्य देवनन्दी (ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी) ... ६३
८ गन्धहस्ती महाभाष्यकी खोज (ले. बाबू जुगल किशोरजी मुख्तार) ८८
९ तीर्थयात्राके लिये निकलनेवाले संघोंका वर्णन ९६
१० जेसलमेरके पटवोंके संघका वर्णन ... १०७
११ शोकसमाचार ११३
१२ चित्र परिचय ११८
१३ बालन्याय (ले० श्रीयुत चंपतरायजी जैन बॅरिष्टर-एट-लॉ) ... १२४
१४ दक्षिण भारतमें ९ वीं १० वीं शताब्दिका जैनधर्म (ले० स्व० कुमार देवेन्द्र प्रसादजी जैन) १२९
१५ जंबुदीवपण्णत्ति (ले० पं. नाथूरामजी प्रेमी) १४४

(गुजराती लेख विभाग)

१ डॉ० हर्मन जेकोबीनी कल्पसूत्रनी प्रस्तावना १
२ जैन धर्मनुं अध्ययन (ले० प्रो० सी. वी. राजवाडे एम्. ए. बीएस्. सी ... २९
३ जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कई (ले० पं. बेचरदास जीवराज, न्याय-व्याकरणतीर्थ) ३१
४ 'हरिभद्रसूरिनो समयनिर्णय' (ले० श्रीयुत हीरालाल अमृतलाल शाह, बी. ए.) ३८
५ संपादकीय विचार ४३
६ सोमप्रभाचार्य विरचित कुमारपाल प्रतिबोध ५५
७ डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोनी प्रस्तावना (प्रथम भाग) ६९,१४०
८ " (द्वितीय भाग)... ... १६७
९ साहित्यसमालोचन ९७
१० क्षेत्रादेश पट्टक १०५
११ सदयवत्स सावलिंगानी जैन कथा (ले० स्व० सी. डी. दलाल एम्. ए.) ... १३५
१२ सप्तभंगी (ले० अध्यापक रसिकलाल छोटालाल परीख बी. ए.) १४५
१३ बे नवा क्षेत्रादेश पट्टक १५१
१४ बृहट्टिप्पनिका नामक प्राचीन जैन ग्रंथ सूचि १५७
१५ एक ऐतिहासिक पत्र १५८
१६ एक श्रीमाळी जैन कुटुंबनी जुनी वंशावली १५१
१७ अहिंसा अने वनस्पति आहार—खास करीने बौद्ध धर्ममां १८६
१८ डॉ० होर्नलना जैनधर्म विषेना विचारो (ले० श्रीयुत नानालाल नाथाभाई शाह, बी. ए.) १९४
१९ महावीर निर्वाणनो समय विचार ... २०४

२० आगराना संघनो सांवत्सरिक पत्र ... २१२
२१ महावीर तीर्थंकरनी जन्मभूमि ... २१८

[इंग्रेजी लेख.]

1 The Undercurrents of Jainism, By Dr. S. K. Belvalkar, M. A. Ph. D. 1
2 The Immediate task before us, By Prof. Benarasi Dass Jain, M. A. 3
3 A Comparative Study of उत्तराध्ययनसूत्र with Pali Canonical Books. By Prof. P. V. Bapat M.A 7
4 Ratnakar Panchavimshatika By K. P. Modi, B.A. LL.B. ... 15
5 Logic for the Masses. By C. R. Jain, Bar-at-Law (हिन्दीविभाग) ११९

[परिशिष्ट]

१ बृहट्टिप्पनिका नाम प्राचीन जैनग्रंथ सूचि (द्वितीय अंक) पृष्ठ १–१६
२ वीर वंशावली अथवा तपागच्छवृद्ध पट्टावलि (तृतीय अंक) पृष्ठ १–१४

चित्रसूचि.

१ श्रीमहावीर निर्वाणभूमि, पावापुरी (रंगीन).
२–३ अति प्राचीन जैन कीर्तिस्तंभ, चितोड गढ.
४ पार्श्वनाथ जैन मन्दिर, करहेडा.
५ डॉ० सतीशचंद्र विद्याभूषण, महोपाध्याय.
६ स्वर्गीय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक.
७ चतुर्मुख जैनमन्दिर, कापरडा.
८ जैन मंदिर मानस्तंभ, देवगढ, (झांसी).
९ गिरनार पर्वत–पांचमी टुंक.
१० गिरनार पर्वत–नेमिनाथनी टुंक.
११ विजयसेन सूरिने आगराना संघे मोकलेलो सचित्र सांवत्सरिक पत्र.

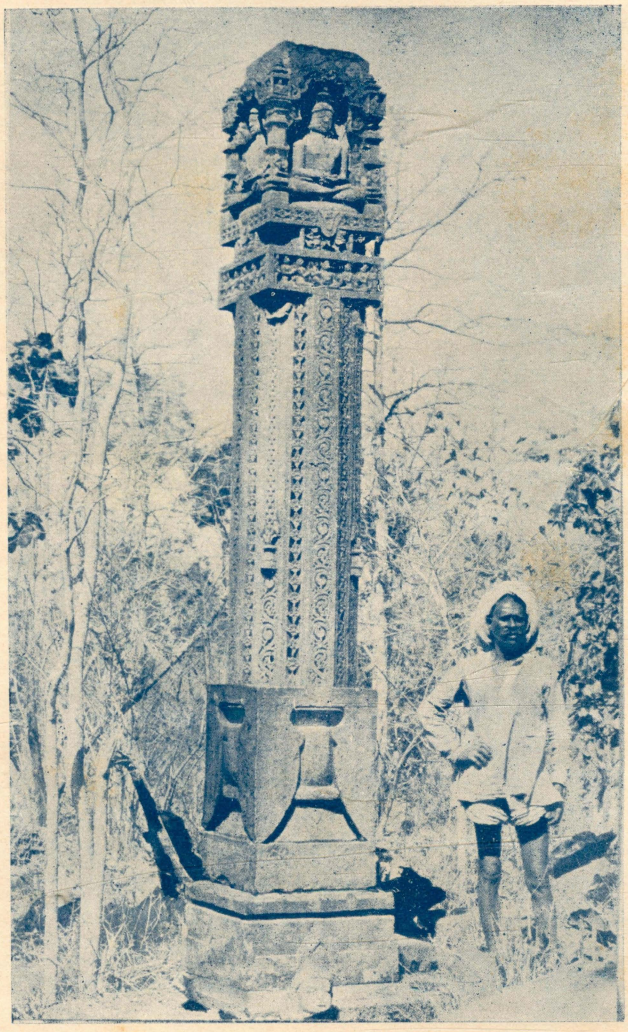

जैनमंदिर मानस्तंभ, देवगढ (झांसी)

॥ अर्हम् ॥

॥ नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय ॥

जैन साहित्य संशोधक

'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि। सच्चस्साणाए उवट्ठिए मेहावी मारं तरइ।'
'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ; जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ।'
'दिट्ठं, सुयं, मयं, विण्णायं जं एत्थ परिकहिज्जइ।'

—निर्ग्रन्थप्रवचन—आचारांगसूत्र।

खंड १] हिन्दी लेख विभाग [अंक ४

LOGIC FOR THE MASSES.

By C. R. JAINA, Bar-at-Low.

[This little article owes its existence to my growing conviction that the real cause of India's downfall has been the disappearance of what might be termed the scientific or logical turn of mind from her people. How to restore this logical tendency to the Indian mind speedily and in a simple manner naturally flowed from such a conviction. The solution of this troublesome problem has at last been found in the Jaina *nyaya* upon which this monogram is grounded. May it fulfil its great purpose, will, I doubt not, be the heartfelt wish of every true patriot.

C. R. JAIN.]

FOREWORD.

Reader,

Has it ever occurred to you to find out why a simple rustic who knows nothing of the three Rs and who is most certainly innocent of all pretensions to logic immediately infers the presence of fire at the sight of smoke? How do

you account for the unerring accuracy of his inference in this matter? Is it not that there is inherent in the human mind a natural capacity for valid deduction independently of a school or collegiate education?

Well, this is what may be termed natural logic which, as you see, is a very simple thing. Compared with this the modern system of logic which forms part of the higher education that is imparted only to advanced students, is but a bundle of artificial forms and formulae. It is cumbersome and too much loaded with technicalities, definitions and diagrams which only go to confuse the mind and confound the sense. Besides, it is meant only for a certain class of college students, is learnt with difficulty and is productive of no practical good outside. Natural logic, on the other hand, is a practical function of life, and, therefore, natural to every man, woman and child. It only requires the drawing of attention to a few principles which can be understood and mastered by any one in a short time. There is certainly nothing in the nature of an impossibility in its principles to place it beyond the reach of the moderately intelligent man in the street. How quickly one masters this branch of practical learning, depends on the way it is imparted to men. Certainly, their failure, if any, is to be laid at the door of their instructor.

It would be out of place to compare in detail the method advocated here with what is taught as logic in our colleges, but it is well-known that the highest achievement of artificial logic is the possession of a set of rigid diagrams and forms which it applies to each and every proposition to test its formal validity quite irrespective of the question whether the statement of fact or facts involved in its premises be, in reality, true or not. The least advantage to be derived from natural logic, on the contrary, is the acquisition of what may be termed the logical turn of mind that seeks to discover and establish actual relations among things and the true principles of causation of events in nature. The highest gain from this system of natural deduction must, consequently, imply a complete mastery over the empire of nature for our individual and racial good.

It only remains to be said that logic is the one science which is the crown of glory of Intellectualism. It is highly practical, useful in every department of learning and the sweetener of life. It was logic which was truly the source of undying fame to the ancient rishis and philosophers of our land; and it is logic whose neglect has reduced us to the lowest level of existence to day. It is, therefore, the duty of every true well-wisher of India and Indians, as well as of the entire human race, to spread the knowledge of this most important science amongst men; and most certainly it should be taught to our boys and girls in their child-hood to impart to them that logical attitude which is the source of all auspiciousness and good.

Hardoi,
22nd August 1920.

CHAMPAT RAI JAIN,
Bar-at-law.

LOGIC FOR THE MASSES.

LESSON I.

Logic is the method of valid deduction. A valid deduction is only possible where there is a *fixed rule* to lead the mind to a particular conclusion from a given mark or fact.

Illustration.

1. There is fire in this room, because it is full of smoke.

[Here smoke is the mark of fire. The sight of smoke immediately leads one to the conclusion that there is fire in the room, because smoke is not produced except by fire.]

2. It will be Monday to-morrow, because it is Sunday to-day.

Where there is no fixed rule there can be no valid deduction there, *e. g.*, you cannot tell the number of keys in my pocket, because there is no fixed rule that I should always have a partilar number of keys into my pocket and never more or less.

LESSON II.

A fixed logical rule means something more than a mere long course of practice, or a series of disconnected events. Suppose a man has hitherto always carried 5 keys in his pocket and never any more or less : does it entitle any one to say that he will have only five keys in his pocket to-morrow also? No, because we have here only a long course of practice which might be discontinued any moment. Suppose further that I have a friend who is the father of one dozen boys and who has never had a girl born to him, and suppose that his wife expects to become a mother again : can any one say what will be the sex of the next child of my friend? No, because there is no fixed rule in nature that a particular person should always get boys and never a girl.

It is thus evident that a long course of practice or even an uninterrupted series of natural events does not justify an inference which can only be drawn from certain fixed natural or quasi-natural rules.

LESSON III.

There is a fixed logical rule to guide the mind from :--

(1) Cause to effect.

Illustration.

Moist fuel if set burning produces smoke.

(2) Effect to cause.

Illustration.

Where there is smoke there is fire.

(3) Antecedent to consequent.

Illustration.

i Monday following Sunday ;
ii Youth following childhood ;
iii Old age following youth.

(4) Consequent to Antecedent.

Illustration.

i Saturday preceding Sunday.
ii Youth preceding old age.
iii Childhood preceding youth.

(5) Concomitance.

Illustration.

i Age and experience.
ii Childhood and inexperience.
iii Marks of ripeness and deliciousness of taste in fruit.

(6) Container and contained, *i. e.*, the whole includes the part, or, what comes to the same thing, the attributes of the whole are to be found in the part.

Illustraion.

There is no fruit tree in this garden ;

Therefore there is no mango tree in this garden.

The instructor should illustrate these

six kinds of fixed rules by many illustrations.

LESSON IV.

A conclusion may be drawn from an affirmative logical relationship, *e. g.*, wherever there is smoke there is fire. This is called the *anvaya* form. Hence when you see smoke you immidiately say that there must be fire present at its source. But the sight of fire does not entitle you to conclude that smoke must be there too ; for while smoke is always caused by fire, every kind of fire does not produce smoke, *e. g.*, red hot charcoal fire. But you may sefely infer from the relationship of fire and smoke that where there is no fire there is no smoke. This is technically known as *vyatireka.*

Thus from the relationship between fire and smoke we can infer

1. the existence of fire wherever there is smoke, and

2. the non-existence of smoke where there is no fire.

But we cannot infer

1. the existence of smoke from fire, nor

2. the non-existence of fire where there is no smoke.

Anvaya and *vyatireka* taken together establish the validity of a logical relationship.

LESSON V.

The argument or reason is either of a contradictory type or of a non-contradictory one. The former of these implies the existence of a fact which is incompatible with the existence of the fact expressed in the conclusion. The other type is the non-contradictory one.

Illustration.

1. There is no fire in this pitcher, because it is full of water.

2. There is fire on this hill, because there is smoke on it.

The *hetu* (reason) in the first of these illustrations is called contradictory because it (water) is opposed to the nature of fire the presence of absence of which is the subject of inference ; the pitcher being full of water which is hostile to and destructive of fire there can be no fire in it. The second illustration is a simple case of non-contradictory *hetu* (reason).

Further illustrations

Non-contradictory affirmative reason :

1. Sound is subject to modification, because it is a product.

(Explanation : All products are liable to modification ; sound is a product ; therefore, sound is subject to modification).

This is an instance of the rule that part is included in the whole, *i. e.*, the attributes of a class are to be found in the individual.

2. There is fire on this hill because there is smoke on it.

(Effect to cause.)

3. It must be raining yonder, because potent rain-bearing clouds are gathered there.

[(Active) Cause to effect.]

4. It will be Sunday to-morrow because it is Saturday to-day.

[Antecedent to consequent.]

5. Yesterday was a Sunday, because it is Monday to-day.

[Consequent to antecedent]

6. This mango has a delicious taste, because it is ripe yellow in colour.

[Concomitance.]

Contradictory negative reason :

7. The atmosphere inside a steam boiler when fire is burning in it is not cold, because heated bodies are not cold.

[This is an instance of the whole and part tpye. Its amplified form would be :--

All heated bodies are not cold. A steam boiler is a heated body when a fire is burning in it.

Therefore, a steam boiler when a fire is burning in it is not cold.]

8. This woman is not barren, because she has a grandchild (which is the effect of the antithesis of female barrenness).

[Effect to cause, antithetical.]

9. This man is not happy, because he has present in him the causes of misery (the opposite of happiness).

[Cause to effect, antithetical].

10. Tomorrow will not be a Sunday, because it is Friday to-day.

[Antecedent to consequent, antithetical.]

11. Yesterday was not a Friday, because it is Tuesday to-day.

[Consequent to antecedent, antithetical]

12. This wall is not devoid of an outside, because it has an inside.

[Concomitance, antithetical.]

Non-contradictory negative :

13. There is no oak in this village, because there is no tree in it.

[Whole and part]

14. There are no potent rain-bearing clouds here, because it is not raining here.

[Effect to cause.]

15. There is no smoke in this place, because there is no fire here.

[Cause of effect.]

16. It will not be Sundy to-morrow, because it is not Saturday to-day.

[Antecedent to consequent.]

17. It was not Monday yesterday, because to-day is not Tuesday.

[Consequent to antecedent.]

18. The right hand pan of this pair of scales is not touching the beam, because the other one is on the same level with it.

[Concomitance.]

Contradictory affirmation :

19. This animal is suffering from some disease, because it has not got the appearance of health.

[Effect to cause.]

20. This woman is feeling unhappy. because she has been forcibly separated from her lover.

[Cause to effect, antithetical.]

बा ल न्या य

[लेखक:—श्रीयुत चंपत रायजी जैन, बारिष्टर–ऍट–लॉ.]

(प्रथम वक्तव्य)

अध्यापकजी !

यह लेख जो आपके सम्मुख उपस्थित है; बालकों अर्थात् छठी, सातवीं और आठवी कक्षाके छात्रोंको न्यायमें प्रवेश करानेके लिये लिखा गया है । " युरुपीय–न्याय " तो कालिजहीमें अध्ययन कराया जाता है; किन्तु यह प्रकट है कि जो मनुष्य प्राकृतिक न्यायको जानता है, वह बिना कालिज तक पढे भी उचित नतीजा निकाल सकता है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्राकृतिक न्याय अत्यन्त सरल और सुबोध है । मेरा विचार है कि छठी, सातवी और आठवी कक्षाके बालकोंको भले प्रकार " न्याय " की शिक्षा दी जा सकती है ।

इसमें योग्यता केवल अध्यापकमें होनी चाहिये, जो कि प्रत्येक पाठ तथा दृष्टान्त भलाभांति विद्यार्थीको समझा दे । इस शिक्षामें स्मरण शक्तिपर बलात् बल डालनेकी कोई आवश्यकता नहीं–यदि छात्रको समझा दिया जाय । और न इसमें कोई बात ऐसी ही है, कि उपरोक्त छात्र भलीभांति न समझ सकें । इससे स्वयं छात्रकी नैतिक शक्तियां न्यायका प्रतिबिम्ब हो जायंगी, और उसका मन स्वयं न्यायमें प्रवृत्त होने लगेगा । आशय यह है, कि यदि बालकों की समझमें न्याय न आय तो अध्यापक महाशयकी त्रुटि है और किसीकी नहीं ।

" न्याय " के गुणोंके बारेमें भी इतना कहना उचित प्रतीत होता है कि बिना इसके जाने हुये बुद्धि तीक्षण नहीं होती, और जो इसको जानता है उसीका जीवन सफल समझना चाहिये । न्याय ही की बदौलत भारत बर्षके प्राचीन कालमें ऋषि, मुनि और विद्वान पंडितगण सारे संसारमें प्रख्यात हो गये । और न्यायके जाते रहने हीका यह फल है कि वर्तमान कालमें भारतमें चारों ओर अविद्या और अज्ञान फैला हुआ है । अतः जो मनुष्य देश और जातिके शुभचिंतक हैं, उनका कर्तव्य है कि वे यथासंभव शैशवकालहीमें अपनी सन्तान और छात्रोंके मनको "न्याय" में प्रवृत्त करावें ।

इसप्रकार "न्याय" में प्रवेश करनेके अर्थ उचित है कि छठी–सातवीं कक्षा तक तो येही पाठ–जो आप लोगों के सन्मुख उपस्थित हैं–पढाये जायं । तत्पश्चात् आठवीं श्रेणीमें " न्याय दीपिका " " परीक्षा मुख " अथवा इसी प्रकारकी किसी अन्य पुस्तका अध्ययन कराया जाय । इस प्रकार छात्रोंमें न्यायकी योग्यता स्वयं बढती जायगी ।

प्रथम पाठ

(क)

प्रश्न—बच्चो! आज रविवार है; तुम बतला सकते हो कि कल कौन दिन होगा?

उत्तर—सोमवार।

प्र०—क्या तुम बता सकते हो कि कल मंगल, बुध, या बृहस्पति वार क्यों नहीं होगा?

उ०—क्यों कि रविवारके बाद सदैव सोमवार ही होता है, कभी दूसरा दिन नहीं होता।

प्र०—इस लिये यदि हम यह कहें, कि कल बुध होगा तो क्या हमारा कहना ठीक होगा?

उ०—नहीं साहब! आपका ऐसा कहना नितान्त भ्रमात्मक होगा।

(ख)

प्र०—बच्चो! हमारी जेबमें चाबियोंका एक गुच्छा है; क्या तुम बतला सकते हो कि उसमें कितनी कुंजियें हैं?

उ०—नहीं साहब!

प्र०—क्यों?

उ०—इस लिये कि कोई ऐसा नियम नियत नहीं है कि जिससे किसी गुच्छेकी कुंजियोंकी संख्या निर्धारित हो सके।

उपरोक्त प्रश्नोत्तर-रीतिसे यह प्रकट है कि न्यायके अनुसार नतीजा वहीं निकाला जा सकता है कि,

१—जहां कोई निर्धारित नियम हो, और

२—वहां कोई न्यायका नतीजा नहीं निकल सकता जहां कोई निश्चित नियम नहीं है।

दूसरा पाठ

बच्चो!

कल तुमको यह बताया गया था कि जहां कोई नियम नहीं है वहां कोई ठीक नतीजा नहीं निकाला जा सकता। आज हम दो उदाहरणोंपर और विचार करेंगे, कि "नियम" से क्या प्रयोजन है।

१—कल्पना करो कि एक ग्वाला सूर्य्य निकलनेसे पूर्व शहरमें दूध बेचनेके लिये मेरे मकानके सामनेसे जाया करता है। और यह भी कल्पना कर लो कि यह मनुष्य ५० बर्षसे लगातार योंही मेरे मकानसे जाता है—और कोई नागा कभी इससे नहीं हुई। तो क्या तुम बता सकते हो, कि प्रातःकाल भी वह मेरे मकान के सामने से गुजरेगा, या नहीं?

२—कल्पना करो मेरा एक मित्र रामदत्त है जो १२ लडकोंका पिता है; और जिसके आज तक कभी लडकी पैदा नहीं हुई। इस रामदत्तकी पत्नी गर्भवती है। क्या तुम बता सकते हो कि उसका गर्भस्थ—बालक पुत्र होगा या पुत्री?

इन दोनों प्रश्नोंके उत्तर "नहीं" में है। क्यों कि पहिले प्रश्नमें दूध बेचनेवालेका बीमार हो जाना अथवा किसी अन्य आवश्यककार्य या लाभकारी व्यापारमें लग जाना, या दूध ही का अभाव हो जाना संभव है। दूसरे उदाहरणमें प्रकृतिका कोई ऐसा नियम नहीं है, कि अमुक मनुष्यके घर सदैव लडके ही हों—लडकी कभी न हो।

बस हम देखते हैं कि "न्याय" के नियमका प्रयोजन ऐसी घटनाओंसे नहीं है, जो किसी मुख्य बातमें अब तक प्रचलित रहीं हों; किन्तु उस नियत नियमसे है—जो अबतक सत्य पाया गया है—और भविष्यमें भी कभी असत्य नहीं हो सकता। जैसे बालक—पनका युवावस्थासे पहले होना।

तृतीय पाठ

उपरोक्त निर्धारित नियम ६ प्रकारके हो सकते हैं, अधिक नहीं।

१—कारणके ज्ञात होनेसे कार्य्यका अनुमान। जैसे सुलगते हुये गीले ईंधनसे धुंवाका ज्ञान।

नोट—अध्यापकका कर्तव्य है कि बालकों के मन पर नाना उदाहरणों द्वारा यह सिद्धान्त अंकित कर दे।

२—कार्यसे कारणका ज्ञान ।

उदाहरण—धुंवेसे अग्निका बोध ।

३—पूर्व पक्षसे उत्तर पक्षका बोध ।

उदाहरणः—१—रविवारके पश्चात सोमवारका होना ।

२—शैशव कालके पश्चात् युवावस्था ।

३—युवावस्थाके पश्चात् वृद्धावस्था ।

४—उत्तरपक्षसे पूर्वपक्षका ज्ञान ।

उदाहरण—१ रविवारके पूर्व शनिवारका बोध ।

—२ बुढापेसे पूर्व युवावस्था ।

५—एक साथ होनेवाली बातोंका ज्ञान ।

उदाहरण—१ जैसे वय और अनुभव ।

—२ बालकापन और अबोधता ।

—३ फलमें उसके पकनेके चिन्ह और उसका स्वाद विशेष ।

६—व्याप्य—व्यापक अर्थात् कुलमें जुज (अंश) शामिल है; या यों कहो कि जातिके गुण व्यक्तिमें पाये जाते हैं ।

उदाहरण—१ इस फुलवाडीमें कोई फलदार वृक्ष नहीं है; अतः इसमें आम भी नहीं है ।

अध्यापकका कर्तव्य होगा कि इन ६ प्रकारके नियमोंको भली भांति बालकोंको समझा दे और नाना प्रश्नों द्वारा इस बातका भी निश्चय करा दे कि केवल ६ ही प्रकार के नियम प्रकृति में हैं—न्यूनाधिक नहीं।

चतुर्थ पाठ

बच्चो !

न्यायका सिद्धान्त " धनरूप " नियमसे निकाला जा सकता है, जिसको " अन्वय " कहते हैं ।

उदाहरण—जहां कहीं धुंवां है; वहां अग्नि अवश्य है ।

इस लिये जब कभी तुम धुंवा देखो तो मनमें तुरन्त नतीजा निकाल सकते हो कि वहां अग्नि अवश्य होगी; किन्तु अग्निको देख कर तुम यह नहीं कह सकते कि धुंवा भी वहां है । क्यों कि धुंवा तो बिना आगके हो नहीं सकता; किन्तु आग बिना धुंवाके भी हो सकती है । जैसे सुलगते हुये अंगारे की आग । और आग तथा धुंवेके पारस्परिक संबधसे तुम यह भी नतीजा निकाल सकते हो कि जहां जहां आग नहीं होती वहां वहां धुंवा भी नहीं होता । क्यों कि धुंवा बिना आगसे नहीं होता । यह 'ऋणरूप' है और इसको 'व्यतिरेक' कहते हैं ।

बस यह प्रकट है कि आग और धुंवेके संबंधसे ४ नतीजे निकलते हैं ।

१—अग्निका ज्ञान धुंवेके ज्ञानसे ।

२—धुंवेके अभावका ज्ञान अग्निके अभावके ज्ञानसे।

३—धुंवेका ज्ञान अग्निके ज्ञानसे ।

४—अग्निके अभावका ज्ञान धुंवेके अभावके ज्ञानसे।

इनमेंसे पहिले दो तो नियमानुसार हैं और इस कारणसे ठीक हैं । और पिछले दो नियमके प्रतिकूल हैं अतः ठीक नहीं । जहां अन्वय और व्यतिरेककी तुलना होती है, वहां नियम सिद्ध समझा जाता है । यथा—

१—जहां जहां धुंवा होता है वहां वहां अग्नि होती है । (अन्वय)

२—जहां जहां अग्नि नहीं होती वहां वहां धुंवा भी नही होतां । (व्यतिरेक)

पञ्चम पाठ

बच्चो !

इस उदाहरणमें कि " इस पहाडपर अग्नि है, क्यों कि इसपर धुंवा है" अग्निको साध्य कहते हैं और धुंवेको हेतु ।

साध्य वह कहा लाता है जो सिद्ध किया जाय ।

नोट—सप्ताह दो सप्ताहमें जब यह बात छात्रगण समझ जावें, तो फिर आगे बढें ।

हेतु वह है जिसके द्वारा साध्यकी सिद्धी हो।

यह हेतु साध्यका चिन्ह या संबंधी हुआ करता है; जैसे अग्निका चिन्ह धुंवा। क्यों कि धुंवा किसी और वस्तुका चिन्ह नहीं है। कारण यह कि धुंवा अग्नि हीसे पैदा होता है; और अग्निके अभावमें नहीं पैदा हो सकता। अतः वह अग्नि हीका चिन्ह है और इसी कारणसे तुरन्त अग्निका बोध करा देता है।

हेतु दो प्रकार का हेता है, विरुद्ध व अविरुद्ध।

विरुद्ध— वह है जो साध्यके विरोधी का चिन्ह हो और जिससे साध्यके प्रतिकूल नतीजा निकले। जैसे इस घडेमें आग नहीं है; क्यों कि यह पानीसे भरा हुआ है। यहां पानी अग्निका विरोधी है। अतः अग्निके अस्तित्वका निषेध करता है।

अविरुद्ध हेतु—वह है जो सरलता पूर्वक साध्यके अस्तित्वको सिद्ध करता है। जैसे इस पहाड की चोटीपर आग है, क्यों कि वहांसे धुंवा ऊठ रहा है।

(विभिन्न उदाहरण)

(क) अविरुद्ध-विधि-साधक अर्थात् जिनसे अस्तित्व सिद्ध हो। जैसे—

१—शब्द परिणामी होता है; क्योंकि वह कियासे उत्पन्न होता है।

यह उदाहरण व्याप्य-व्यापकके संबधमें है; जिसका पुरा रूप इस प्रकार बैठता है। शब्द परिणामी होता है क्यों कि वह कार्यसे उत्पन्न होता है। जो जो किये हुये होते हैं वे वे पदार्थ परिणामी होते हैं। जैसे घट। उसी प्रकार शब्द भी किया जाता है, अतएव वह भी परिणामी होता है। अथवा जो पदार्थ परिणामी नहीं होते वे किये भी नहीं जाते। जैसे वन्ध्या स्त्रीका पुत्र। बस उसी प्रकार शब्द कृतक होता है इसी कारण परिणामी भी होता है।

२—इस प्राणीमें बुद्धि है; क्यों कि बुद्धिके कार्य बचन आदि इसमें पाये जाते हैं। यहां बुद्धि साध्य है और बचनादि हेतु। कार्यसे कारणका ज्ञान होता है।

३—यहां छाया है; क्योंकि छत्र मौजूद है। यहां समर्थ कारणसे कार्यका बोध हुआ।

४—कल इतवार होगा; क्यों कि आज शनिवार है। यहां पूर्व-पक्षसे उत्तर-पक्षका ज्ञान हुआ।

५—कल इतवार था; क्यों कि आज सोमवार है। यहां उत्तर-पक्षसे पूर्व-पक्ष का ज्ञान हुआ।

६—इस आममें रस है; क्यों कि यह पका हुआ पीले रंगका है। यह सहचरका उदाहरण है।

(ख) विरुद्ध-निषेध-साधक।

७—यहां शीत स्पर्श नहीं है; क्यों कि अग्नि-ताप मौजूद है। यहां अग्नि, शीत से विरुद्ध है और ताप, अग्नि का व्याप्य है। अतः वह अग्नि का ज्ञान कराता है।

८—यह मनुष्य अस्वस्थ है; क्यों कि शय्याग्रस्त है। यह उदाहरण कार्यसे कारणके निषेधाका ज्ञान विरुद्ध रूप से कराता है। क्यों कि स्वास्थ्यके निषेधका बोध होता है—उसके विरोधी बीमारीके कार्य अर्थात् शय्या-ग्रस्त होने से।

९—इस जीवको सुख नहीं है; क्यों कि उसके हृदयमें व्यग्रता मौजूद है। यहां दुखका कारण हृदयकी व्यग्रता है। अतः वह दुखको जनावेगी और दुखके अस्तित्वमें—जो सुखका विरोधी है—सुख का होना असम्भव है ही।

१०—कल इतवार नहीं होगा; क्यों कि आज शुक्र है। यह उदाहरण पूर्व-पक्षसे उत्तर-पक्षका है। शुक्रवार यहां शनिवारका विरोधी माना गया है।

११—कल शुक्रवार नहीं था; क्यों कि आज मंगल है। यहां मंगलको बृहस्पतिका विरोधी मानकर उत्तर पक्षसे पूर्व पक्षका अनुमान किया है।

१२—इस भीतमें उस ओरके भागका अभाव नहीं है; क्यों कि इस ओरका भाग मौजूद है। यह सहचरका दृष्टान्त हुआ।

(ग) अविरुद्ध-निषेध-साधक।

१३—इस नगरमें शीसम नहीं है; क्यों कि यहां

वृक्षका अभाव है। यह उदाहरण व्याप्य-व्यापकके संबंधमें है।

१४—यहां बरसाऊ बादल नहीं है; क्यौं कि यहां वर्षा नहीं हो रही। यह उदाहरण कार्य्य-कारणके संबंधका है।

१५—यहां धुंवा नहीं है; क्यौं कि यहां अग्नि नहीं है। यहां कार्य्यसे कारणकी ओर ध्यान गया।

१६—कल रविवार नहीं होगा; क्यौं कि आज शनिवार नहीं है।

१७—कल सोमवार नहीं था; क्यौं कि आज मंगल नहीं है।

१८—इस तराजूका दाहिना पलडा डंडीको नहीं छू रहा है; क्यौं कि दूसरा पलडा उसके बराबर है। यह सहचरका उदाहरण है।

(घ) विरुद्ध-विधि-साधक।

१९—इस प्राणीमें रोग है; क्यौं कि इसकी चेष्टा निरोग नहीं पाई जाती।

२०—इस स्त्रीके हृदयमें पीडा है; क्यौं कि यह अपने पतिसे हठात् पृथक् कर दी गई है।

अध्यापक महाशय को उचित है कि नाना उदाहरणों द्वारा इन चारों किसमके अनुमानोंका ज्ञान बालकोंको करा दे ॥ इति।

सम्पादकीय टिप्पणी—ऊपरके दोनों लेख (इंग्रेजी और हिन्दी) लेखक महाशयने, खास करके बालकोंको न्यायशास्त्रका सरल रीतिसे बोध करा देनेके हेतुसे लिखे हैं। मनुष्यमें रही हुई बुद्धि-शक्तिको विकसित करने और सत्यासत्यके विचारकी जिज्ञासाको तृप्त करने में एकमात्र साधन न्यायशास्त्र ही है। न्यायवेत्ताओंकी दृष्टिमें जिस मनुष्यने न्यायशास्त्रका अध्ययन नहीं किया वह, चाहे, फिर अन्य सभी विषयोंमें पारंगत क्यों न हो, परंतु " बाल " ही कहलाता है। " **अधीतव्याकरणकाव्यकोशोऽनधीतन्यायशास्त्रः बालः** । " (जिसने व्याकरण, काव्य, कोश आदिका अध्ययन तो कर लिया है परंतु न्यायशास्त्रका अध्ययन नहीं किया वह 'बाल' ही है) यह नैयायिकोंके " बाल " का लक्षण है। इस लक्षणमें सत्यता अवश्य रही हुई है। क्यौं कि विना न्यायशास्त्रका अध्ययन किये मनुष्य सत्यासत्यका भी निर्णय नहीं कर सकता और पदार्थके कार्य-कारणका भी ज्ञान नहीं कर सकता। न्यायतत्त्वके जाने बिना मनुष्यकी बुद्धिशक्ति कुंठित हो रहती है और विचारशक्ति अन्धी बनी रहती है। अतः इस कथनमें कोई भी अत्युक्ति नहीं है कि न्याय शास्त्रके अध्ययन विनाका मनुष्य बिलकुल " बाल " ही है।

भारतके प्राचीन विद्वानोंने न्यायशास्त्रका कितना सूक्ष्म और विस्तृत परिशीलन किया है इसकी साधारण जनोंको तो कल्पना भी आनी कठिन है। उन्होंने एक एक विषयपर तो क्या परंतु एक एक मामूली विचारपर भी सेंकडों ग्रंथ और हजारों श्लोक लिख डाले हैं! उनके इन गहन तर्कोंको देख कर आज कलके विद्वान् मनुष्यका मस्तिष्क भी चकराने लगता है तो फिर औरोंकी तो बात ही क्या। एक तो यों ही यह विषय कठिन है और फिर उसपर इनकी भाषा संस्कृत होकर उसकी शैली उससे भी कठिनतर है। इस लिये विना संस्कृतका अच्छा अभ्यास किये न्यायतत्त्वका ज्ञान होना आज प्रायः हमारे देशवासियोंके लिये दुर्लभ्य हो रहा है। इस दुर्लभताको कुछ सुलभ बनानेके लिये और सर्व साधारणको सहज ही में इस विषयका परिचय प्राप्त करा देनेके लिये श्रीयुत जैनीजीने यह प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। आप इस बारेमें लिखते हैं कि—" मेरा दृढ विश्वास है कि मनुष्य यदि प्राकृतिक नियमोंका विधिपूर्वक अनुशीलन कर ले तो न्यायशास्त्रका दुरुहपथ उसके लिये भलीभांति प्रशस्त हो सकता है। इसी विचारको भविष्यमें कार्य रूप प्रदान करनेके निमित्त यह लेख प्रकाशित कराया जाता है। ताकि इस शास्त्रके धुरंधर विद्वानों द्वारा इसकी उचित समालोचना हो जाय। अगर इन नियमोंमें यदि किसी महानुभावको संशोधन करनेकी आवश्यकता प्रतीत हो तो पूरी छानबीनके बाद कर दी जाय। इस लेख द्वारा इस शैलीकी उपयोगिता सिद्ध हो जाने पर इस विषयको पुस्तकाकार प्रकाशित करनेका उद्योग किया जायगा जिससे मातृभाषा भाषी छात्र न्यायमें प्रवेश करके सत्यासत्यका स्वयं निर्णय कर सकें। "

आशा है कि विद्वान्वर्ग जैनी महाशयके इस उच्च आशयको लक्ष्यमें लेकर इस बारेमें अपनी योग्य सम्मति प्रकाशित करेंगे।

दक्षिण भारतमें ९ वीं-१० वीं शताब्दिका जैन धर्म।

[लेखकः—स्वर्गस्थ कुमार देवेन्द्र प्रसादजी जैन]

गंग वंश।

भारतवर्षके प्राचीन राजवंशोंमें पश्चिमके गंगवंशीय राजा जैनधर्मके कट्टर अनुयायी थे। यह बात परम्परासे चली आई है कि नंदीगण सम्प्रदायके सिंहनन्दी नामक एक जैनधर्मके आचार्यने, गंगवंशके प्रथम राजा शिवमारको राज्यसिंहासन प्राप्त करनेमें सहायता दी थी। एक शिलालेखमें इस बातका वर्णन है कि शिवमार कोंगुणी वर्मा सिंहनन्दीका शिष्य था, और दूसरेमें यह कि सिंहनन्दी मुनिकी सहायता से गंगवंश वैभवसंपन्न हुआ। एतदर्थ इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि जैनग्रन्थोंमें इस भावके श्लोक पाए जायं कि गंगवंशीय राजा सिंहनन्दीकी चरणवन्दना करते हैं[3]। अथवा जिस राजवंशका जन्म एक जैन धर्माचार्यकी कृपासे हुआ हो उसके राजाओंका कट्टर जैनधर्मावलम्बी होना भी कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। ऐसे लेख विद्यमान हैं जो इस बातको निस्संदेह सिद्ध कर देते हैं कि गंगवंशीय राजा जैनधर्मके उन्नायक और रक्षक थे। ईसाकी चौथीसे बारहवीं शताब्दी तकके अनेक शिलालेखोंसे इस बातका प्रमाण मिलता है कि गंगवंशके शासकोंने जैन मन्दिरोंका निर्माण किया, जैन प्रतिमाओंकी स्थापना की, जैनतपस्वियोंके निमित्त चट्टानोंसे काट काटकर गुफाएं तैयार कराईं और जैनाचार्योंको दान दिया।

मारसिंह द्वितीय।

इस वंशके एक राजाका नाम मारसिंह द्वितीय था, जिसका शिलालेखोंमें धर्ममहाराजाधिराज 'सत्यवाक्य' कोंगुणीवर्मा—परमानडी मारसिंह नाम मिलता है। इस राजाका शासन काल चेर, चोल, और पाण्ड्य वंशोंपर पूर्ण विजयप्राप्तिके लिये प्रसिद्ध है। मारसिंह द्वितीयने अपने शत्रु बज्जलदेवके साथ सर्वोत्कृष्ट विजय प्राप्त किया और गोनूर और उच्छंगीमें उसने बहुत घनघोर युद्ध लडे। जैन सिद्धान्तोंका सच्चा अनुयायी होनेके कारण इस महान् नृपने अत्यन्त ऐश्वर्यसे राज्य करके राजपद त्याग दिया और धारवार प्रांतके बांकापुर नामक स्थानमें अपने प्रसिद्ध धर्म-गुरु अजितसेनके सन्मुख

---

१ देखो Repertoire d'epigraphie Jaina (A. A, Guerinot शिलालेख नं. २१३ और २१४; तथा चन्द्रगिरि पहाडी पर स्थित पार्श्वनाथवस्तीके शिलालेखका निम्न लिखित पद्य—

"योऽसौ घातिमलाद्विषद्बलशिला—स्तम्भावली—खण्डन—
ध्यानासिः पतुरर्हतो भगवतः सोऽस्य प्रसादीकृतः।
छात्रस्यापि स सिंहनन्दिमुनिना नो चेत् कथं वा शिला—
स्तम्भो राज्यरमागमाध्वपरिघस्तेनासिखण्डो घनः"॥

(श्रवण बेलगोल शिलालेख, नं. ५४, पृष्ठ ४२)

२ सलेम जिलाकी Manual-Revd.T. F.Foulkes द्वितीय भाग, पृ० ३६८ का निम्न लिखित पद्य देखिए—

"यस्यामवत् प्रवरकाश्यपवंशजोऽग्रे
कण्वो महामुनिरनल्पतपःप्रभावः।
यः सिंहनन्दिमुनिपपतिलब्धवृद्धि—
र्गंगान्वयो विजयतां जयतां वरः सः॥"

लुईस राईसके पाठानुसार 'महिप' की जगह 'मुनिप' पाठ दिया है, जो ठीक संगत मालूम देता है।

३ "श्रीदेशीयगणाब्धिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनन्दिव्रति—
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूडामणिः॥
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्द्धनसुधासूतिर्महीमण्डले
रेजे श्रीगुणभूषणो बुधनुतः श्रीराजमल्लो नृपः॥"

(बाहुबली चरित्र, श्लोक ८)

तीन दिनोंके व्रतसे शरीर त्याग दिया। मारसिंह द्वितीयकी समाधिका लेख कूगे ब्रह्मदेव खंभ नामक स्तम्भके निम्न भागमें चारों ओरके शिलालेखोंमें विद्यमान है। वह स्तम्भ श्रवण बेलगोल (माइसोर) की चन्द्रगिरी पहाडियोंपर स्थित मान्दिरोंके द्वारपर है[४]। यद्यपि इस लेखमें कोई तिथि नहीं लिखी है,—तथापि मारसिंह द्वितीयके मृत्युकी तिथि एक दूसरे शिलालेखके आधारपर सन ९७५ ई० निश्चय की गई है[५]।

चामुण्डराय।

चामुण्डराय या चामुण्डराज इस महान् नृपतिका सुयोग्य मंत्री था। इस मन्त्रीके शौर्यही के कारण मारसिंह द्वितीय वज्जलसे तथा गोनूर और उच्छंगीके रणक्षेत्रोंमें विजय प्राप्ति कर सका। श्रवणबेलगोलके एक शिलालेखमें चामुण्डराय की इस प्रकार प्रशंसा की हुई है—"जो सूर्यकी भांति ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी उदयाचलके शिरको मणिकी नाईं भूषित करता है; जो चंद्रमाकी भांति अपने यशरूपी किरणोंसे ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी समुद्रकी वृद्धि करता है; जो ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी खानियुक्त—पर्वतसे उत्पन्न मालाका मणि स्वरूप है और जो ब्रह्मक्षत्र कुलरूपी अग्निको प्रचण्ड करनेके हेतु प्रबल पवनके समान है; ऐसा चामुण्डराय है।

"कल्पान्त क्षुभित समुद्रके समान भीषणबलवाले और पातालमल्लके अनुज वज्जलदेवको जीतनेके हेतु इन्द्र नृपतिकी[६] आज्ञानुसार, जब उसने भुजा उठाई; तब उसके स्वामी नृपति जगदेकवीरके विजयी हाथीके सन्मुख शत्रुकी सेना इस प्रकार भाग गई जैसे दौडते हुए हाथीके सन्मुख मृगोंका दल।

"जिसकी उसके स्वामीने नोलम्बराजसे युद्धके समय इस प्रकार प्रशंसा की थी "जो वज्ररूप दांतोंसे शत्रुके हाथियोंके मस्तकको विदीर्ण करता है और जो शत्रुरूपी हिंस्र जीवोंके लिये अंकुशके समान है। ऐसे हाथीवत् आप जब वीर से वीर योद्धाओंके सन्मुख विराजमान हैं तो ऐसा कौन नृप है जो हमारे कृष्णबाणोंका ग्रास न बने"।

"जो नृप रणसिंहसे लडते हुए इस प्रकार गर्ज कर बोला, "हे नृपति जगदेकवीर! तुम्हारे तेजसे मैं एक क्षणमें शत्रु को जीत सकता हूं, चाहे वह रावण क्यों न हो, उसकी पुरी लंका क्यों न हो, उसका गढ त्रिकूट क्यों न हो, और उसकी खाई क्षारसमुद्र क्यों न हो।"

"जिसको स्वर्गांगनाओंने यह आशीर्वाद दिया था "हम लोग इस वीरके बहुतसे युद्धोंमें उसको कण्ठालिंगनसे उत्कंठित हुई थीं, परन्तु अब उसकी खड्गकी धारके पानीसे हमलोग तृप्त हुई हैं। हे रणरंगसिंहके विजेता! तुम कल्पांत तक चिरंजीव रहो। जिसने चलदंकगंग नृपतिकी अभिलाषाओंको व्यर्थ कर दिया, जो अपने भुजविक्रमसे गंगाधिराज्यके वैभवको हरण करना चाहता था; और जिसने वीरोंके कपालरत्नोंके प्याले बना कर और उनको वीरशत्रुओंके शोणितसे भरकर खूनके प्यासे राक्षसोंकी अभिलाषाको पूर्ण किया।" उपरोक्त शिलालेख स्वयं चामुण्डराजका लिखा हुआ अपना वर्णन है। परन्तु ऐसा जान पडता है इस शिलालेखका अधिक भाग अप्राप्य है। ऐसा मालूम देता है कि हेग्गडे कन्नने, अपने लिए केवल अढाई पंक्तिओंका लेख लिखनेके लिए, चामुण्डरायके मूल—लेखको तीन ओर अच्छी तरहसे घिसा दिया; और केवल एकही ओरके लेखको

---

४ देखो, लुईसराईस रचित 'श्रवणबेलगोलके शिलालेख' नं ३८।

५ देखो, मेलागानिका शिलालेख जिसको लुईस राईसने अपने 'श्रवण बेलगोलके शिलालेखोंकी भूमिकाकी पाद टीकामें उद्धृत किया है। पुनः देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ५, शिलालेख नं. १८।

६ इन्द्र चतुर्थ, तृतीय कृष्णका पौत्र—देखा 'एपिग्राफिया इन्डिका' भाग ५, लेख नं० १८।

७—८ "ब्रह्मक्षत्रकुलोदयाचलशिरोभूषामणिर्भानुमान्
ब्रह्मक्षत्रकुलाब्धिवर्द्धनयशोरोचिः सुधादीधितिः।
ब्रह्मक्षत्रकुलाकराचलभवश्रीहारवल्लीमणिः
ब्रह्मक्षत्रकुलाग्निचण्डपवनश्चामुण्डराजोऽजनि॥
कल्पान्तक्षुभिताब्धिभीषणबलं पातालमल्लानुजम्
जेतुम् वज्जलदेवमुद्यतभुजस्येन्द्रक्षितीन्द्राज्ञया।

रख छोडा, जिसका अनुवाद ऊपर दिया है। "चामुण्डरायने एक ग्रन्थकी रचना की जिसका नाम चामुण्डराय पुराण है और जिसमें २४ तीर्थंकरोंका संक्षिप्त इतिहास है और उसके अन्तमें ईश्वर नाम शक संवत्सर ९०० (९७८ ईस्वी) उसकी तिथि दी हुई है[९]"। उपरोक्त शिलालेखके श्लोकोंमें दिया हुआ वर्णन चामुण्डरायपुराणके वर्णनसे मिलता जुलता है। उस पुराणके प्रारंभके अध्यायमें यह लिखा है कि उसका स्वामी गंगकुल चूडामणि जगदेकवीर नोलम्बकुलान्तक–देव था; और वह ब्रह्मक्षत्रवंशमें उत्पन्न हुआ था। अन्तके अध्यायमें यह लिखा है कि वह अजितसेनका शिष्य था। तथा कृतयुगमें वह षण्मुख था, त्रेतामें राम, द्वापरमें गाण्डीवि और कलियुगमें वीर मार्तण्ड था। फिर उसकी अनेक उपाधियोंके प्राप्त होनेके कारण लिखे हैं। खेडग युद्धमें विज्जलदेवको परास्त करनेसे उसको समरधुरन्धरकी उपाधि मिली। नोलम्बयुद्धमें गोनूर नदीकी तीर, उसकी वीरतापर 'वीरमार्तण्ड' की उपाधि, उच्छंगी गढके युद्धके कारण 'रणरंगसिंह' की उपाधि, बागलूरके किलेमें 'त्रिभुवन-वीर' और अन्य योद्धाओंका वध करने और गोविन्दको उस किलेमें प्रवेश कराने के उपलक्ष्यमें 'वैरीकुलकालदण्ड' की उपाधि; काम नामक नृपति के गढमें राजा तथा अन्य लोगोंको हरानेसे 'भुजविक्रम' की उपाधि, अपने कनिष्ठ भ्राता नागवर्मा को उसके द्वेषके कारण मारडालने के निमित्त 'चलदंकगंग' की उपाधि; गंगभट मुदु राचय्यके वधसे 'समर-परशुराम' और 'प्रतिपक्ष-राक्षस' की उपाधियां; सुभट-वीर के गढको नाश करनेके कारण 'भटमारि' की उपाधि; अपनी और दूसरोंके वीरगुणोंकी रक्षाके कारण 'गुणवं काव' की उपाधि; उसकी उदारता एवं सद्गुण आदिके कारण 'सम्यक्त्व रत्नाकर' की उपाधि; दूसरोंके धन दारा हरण की इच्छा न करनेसे 'शौचाभरण' की उपाधि; हास्यमें भी कभी असत्य न बोलनेसे 'सत्य युधिष्ठिर' की उपाधि; अत्यन्त वीर योद्धाओंके शिरोमणि होनेके कारण 'सुभटचूडामणि' की उपाधि मिली। अन्तमें अपने ग्रन्थमें वह अपनेको 'कविजनशेखर' भी कहता है।

इन उपरोक्त उल्लेखोंमेंसे बहुतोंका और कहीं वर्णन नहीं है। परन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि इतने प्रसिद्ध और गौरवान्वित कार्योंके साथ उसके एक भी धार्मिक कार्यका वर्णन नहीं है। प्रत्युत आदिसे अन्त तक युद्ध और रक्तपातकी ही कथा वर्णित है।[१०]

परन्तु इस बातको सिद्ध करने के लिए सन्देह रहित प्रमाण उपस्थित है कि वृद्धावस्था प्राप्त होनेपर चामुण्ड-

---

पत्युः श्रीजगदेकवीरनृपतेर्जैत्रद्विपस्याग्रतो
धावद्भन्तिनि यत्र मग्नमहतानीकं मृगानीकवत् ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्तवज्रदलितद्वित्कुम्भिकुम्भोपले
वीरोत्तंसपुरोनिषादिनि रिपुव्यालाङ्कुशे च त्वयि ।
स्यात् को नाम न गोचरः प्रतिनृपो मद्बाणकृष्णोरग-
ग्रासस्येति नोलम्बराजसमरे यः श्लाघितः स्वामिना ॥
खातः क्षारपयोधिरस्तु परिधिश्चास्तु त्रिकूटः पुरी—
लङ्कास्तु प्रतिनायकोस्तु च सुरारातिस्तथापि क्षमे ।
तं जेतुं जगदेकवीरनृपते त्वत्तेजसीतिक्षणान्
निर्व्यूढं रणसिंहपार्थिवरणे येनोर्ज्जितं गर्ज्जितम् ॥
वीरस्यास्य रणेषु भूरिषु वयं कण्ठग्रहोत्कण्ठया
तृप्ताः सम्प्रति लब्धनिर्वृतिरसास्तत्-खड्गधाराम्भसा ।
कल्पान्तं रणरङ्गसिंहविजयि जीवेति नाकाङ्गना
गीर्वाणीकृतराजगन्धकरिणे यस्मै वितीर्णाशिषः ॥
आकुष्टुं भुजविक्रमादभिलषन् गङ्गाधिराज्यश्रियं
येनादौ चलदंकगङ्गनृपतिर्व्यर्थाभिलाषी कृतः ।
कृत्वा वीरकपालरत्नचषके वीरद्विषः शोणितं—
पातुं कौतुकिनश्च कोणपगणाः पूर्णाभिलाषीकृताः ॥

(त्यागद ब्रह्मदेवस्तम्भका शिलालेख, ई. स. ९८३; देखो, लु. रा. श्रवणबेलगोल. पृष्ठ ८५)

९ लुईस राईस 'श्रवणबेलगोलके शिलालेख' भूमिका पृ. २२; तथा कर्नल मेकेन्जीका कलेक्शन (एच्. एच्. विल्सनद्वारा संपादित, भाग १, पृ. १४६; जहां यह लिखा है कि चामुण्डराय पुराणमें जैन धर्मके ६३ प्रसिद्ध पुरुषोंका वर्णन है।

१० देखो, लुईस राईस, 'श्रवण बेलगोलके शिलालेख,' भूमिका, पृ. २४.

राय अधिकतर अपने गुरु अजितसेनकी सेवामें, धार्मिक विचारोंमेंही, अपना समय व्यतीत करता था और श्रवण बेलगोल (माइसोर) के विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि पर गोमटेश्वर और नेमिनाथकी विशाल मूर्तियोंकी स्थापना करने और अपनी सम्पत्तिके अधिक भागका इन मूर्तियोंकी पूजामें व्यय करने के कारण उसका नाम जैनमतके महान् उन्नायकों में अमर हो गया।

राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीय।

गंगवंशीय मारसिंह द्वितीयके मरणोपरान्त पाञ्चालदेव, जिसका पूरा नाम धर्ममहाराजाधिराज सत्यवाक्य कोंगुणी वर्मा पाञ्चलदेव था, सिंहासनारूढ हुआ। उसके अनन्तर राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीय[११] राजा हुआ जिसका पूर्ण नाम धर्म–महाराजाधिराज सत्यवाक्य कोंगुणीवर्मा राचमल्ल था। चामुण्डराज राचमल्ल अथवा राजमल्ल द्वितीयका भी मन्त्री था। एक शिलालेखमें लिखा है, "राय (अर्थात् चामुण्डराय) नृपति राचमल्ल का श्रेष्ठ मन्त्री"[१२], और दूसरे में "चामुण्डराय जो वैभवमें नृपति राचमल्ल का द्वितीय है"[१३] बाहुबली–चरित्र नामक एक जैनग्रन्थमें यह लिखा है कि राजमल्ल नामक एक नृपति था, जो सिंहनन्दी मुनिका चरणोपासक था। चामुण्डभूप (अथवा राज) उसका मन्त्री था।[१४] एक हस्तालिखित पुस्तकमें लिखा है कि "चामुण्डराय जो 'रणरङ्गमल्ल' 'असहाय–पराक्रम' 'गुणरत्नभूषण' 'सम्यक्त्व–रत्न–निलय' आदि उपाधिधारी है, जो सिंह नन्दी महामुनिद्वारा अभिनन्दित गंगवंशीय नृपति राजमल्लदेवका महामात्य (प्रधानमन्त्री) है"[१५]।

चामुण्डराय द्वारा स्थापित मूर्त्तियों और मन्दिरों का वर्णन करनेके पूर्व यह उत्तम होगा कि हम उन स्थानोंका संक्षेप वर्णन करें जिनमें उक्त धार्मिक स्मारक स्थित हैं और जो आजकल जैनयात्रियोंके लिये अत्यन्त पवित्र तीर्थ हैं।

श्रवण बेलगोल।

श्रमण बेलगोल अर्थात् श्रमण या जैनियोंका बेलगोल माइसोरमें हसन जिलेके चन्नरयपत्न तालुकेमें एक ग्राम है। हेल बेलगोल और कोडी बेलगोल नामक दो बेलगोलोंसे पृथक् करनेके लिये यहां बेलगोलके पूर्व श्रवण शब्दका प्रयोग हुआ है। कानडी भाषामें बेलगोलका अर्थ है "श्वेतसरोवर" और बहुतसे शिलालेखोंमे "धवल सरोवर" "धवल सरस" और "श्वेतसरोवर" का उल्लेख है,[१६] और उस स्थान पर स्थित मनोहर सरोवर ही के कारण उसका यह नाम पडा होगा। वहां दो पहाडियां हैं। एक उसके उत्तरमें और एक दक्षिणमें। उनके

---

११ डॉ० फ्लीटके मतमें राचमल्ल नाम शुद्ध है (देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ५, लेख नं. १८) और कुछ शिलालेखोंमें भी यह नाम मिलता है, पर जिन जैनलेखोंको हमने भूमिकामें उध्दृत किया है वे राजमल्ल नाम हीका उपयोग करते हैं। और देखो, एपिग्राफिया करणाटिका, भाग ३, लेख नं. १०७.

१२ 'राचमल्ल भूवरवर मेत्री–रायने।'
(भांडारी वस्ती शिलालेख, लु. रा. श्रवण बेलगोल, लेख पृ० १०३)

१३ "राचमल्ल जगन् नुतन् आभूमिपण द्वितीयविभवं चामुण्डरायम्" (द्वारपालक दरवाजे के बाई ओरका शिलालेख, देखो, लु. रा. श्रवण० पृ० ६७

१४ "श्रीदेशियिगणाब्धिपूर्णमृगभृच्छ्रीसिंहनन्दिव्रति—
श्रीपादाम्बुजयुग्ममत्तमधुपः सम्यक्त्वचूढामणिः।
श्रीमज्जैनमताब्धिवर्धनसुधासूतिर्महिमण्डले
रेजे श्रीगुणभूषणो बुधनुतः श्रीराजमल्लो नृपः ॥...
तस्यामात्यशिखामणिः सकलवित् सम्यक्त्वचूडामणिर्भव्याम्भोजवियन्मणिः सुजनवन्दिव्रातचूडामणिः।
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशुक्तिसुमणिः कीर्त्यौघमुक्तामणिः
पादन्यस्तमहीशमस्तकमणिश्चामुण्डभूपोऽग्रणीः ॥"
(बाहुबलीचरित्र, श्लोक ६–११)

१५ सिंहनन्दिमुनीन्द्राभिनन्दितगङ्गवंशललाम.....
श्रीमद्राजमल्लदेव—महीवल्लभमहामात्यपदविराजमान–रणरङ्गमल्ला—सहायपराक्रम—गुणरत्नभूषण–सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणग्रामनामसमासादितकीर्त्ति...श्रीमच्चामुण्डराय—भवत्पुण्डरीक—द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपं....."
(अभयचन्द्र त्रैविद्यचक्रवर्तीरचित गोमटसार टीका)

१६ श्रवण० शिलालेख नंबर १०८ तथा ५४.

नाम क्रमशः चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि हैं, जिनपर जैनियोंके मन्दिर और प्रतिमाएं हैं; और शिलालेख भी हैं जिनसे जिनमतके प्राचीन इतिहासपर बहुत प्रकाश पडता है। एक परम्परागत किम्वदन्तीके अनुसार चन्द्रगिरि नाम चन्द्रगुप्तके कारण पडा है, जो अपने गुरु भद्रबाहु और उसके १२००० शिष्योंके साथ एक भयंकर दुर्भिक्ष के निकट आनेपर पाटलिपुत्र छोडकर दक्षिणकी ओर चला गया था। चन्द्रगिरि ही पर भद्रबाहुने अपने नश्वर शरीरका त्याग किया और अन्तकालमें उसके निकट केवळ एक ही शिष्य उपस्थित था और वह उपरोक्त चन्द्रगुप्त थे। यदि हम जैन-किम्वदन्तीको स्वीकार करलें तो परिणाम वही निकलता है कि उपरोक्त चन्द्रगुप्त जो भद्रबाहु मुनिका शिष्य था, प्रसिद्ध मौर्य-सम्राट् ही है।[१७]

चन्द्रगिरि ही पर चामुण्डरायने एक भव्य मंदिर निर्माण करा था जिसमें उसने २२ वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की मूर्ति स्थापित करवाई। तदनन्तर चामुण्डरायके पुत्रने उसका दूसरा खण्ड भी बनवा दिया और उसमें तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथकी मूर्ति स्थापित की गई। यह दोनों खण्ड ईसाकी दसवीं शताब्दी में निर्मित हुए और उनसे उस समयकी गृह निर्माण कलाका उत्तम बोध होता है।

गोम्मटेश्वर।

विन्ध्यगिरिपर चामण्डरायने बाहुबली अथवा भुजबलीकी, जिनका अधिक लोकप्रसिद्ध नाम गोम्मटस्वामी अथवा गोम्मटेश्वर है, एक विशाल प्रतिमाका निर्माण किया। कालान्तरमें चामुण्डरायका अनुकरण करके वीर-पाण्ड्यके मुख्याधिकारीने कर्कल (दक्षिणी कनारा) में सन् १४३२ ई० में गोम्मटेश्वर की दूसरी मूर्ति बनवाई। और कुछ काल उपरान्त प्रधान तिम्मराज ने येनूर (दक्षिणी कनारा) में सन् १६०४ ई० में गोम्मटेश्वरकी उसी प्रकारकी एक और मूर्ति बनवाई।[१८]

ये "विशाल एक ही पत्थरमें बनी हुई नग्न जैन-मूर्तियां संसारके आश्चर्योंमेंसे हैं"[१९] ये "निस्संदेह जैन-प्रतिमाओंमें सर्वोत्कृष्ट और समस्त एशियाकी पृथक्-स्थित प्रतिमाओंमे सबसे बडी हैं। ऊंचाई पर स्थित होनेके कारण, कोसोंतक दृष्टि गोचर होती हैं। और एक विशेष सम्प्रदायकी होने पर भी, उनका विशाल गुरुत्व और दिव्य शान्ति-प्रकाशक स्वरूपके कारण हमें उन्हें प्रतिष्ठा युक्त ध्यानसे देखना पडता है। श्रवण बेलगोल वाली सबसे बडी मूर्तिकी उंचाई लगभग ५६½ फीट है और कटिके निम्नभागमें उसकी चौडाई १३ फीट है। वह 'नीस (Gneiss)' पत्थरके एक बडे टुकडेसे काटकर बनाई गई है; और ऐसा जान पडता है कि जिस जगह पर वह आज स्थित है वहीं पर वह बनी थी। कर्कलवाली मूर्ति जो उसी पत्थर की है, परन्तु जिसकी लम्बाई १५ फीट कम है, अनुमानसे ८० टन तौलमें होगी। इन भीमकायमूर्तिओंमें सबसे छोटी येनूरवाली मूर्ति है जो ३५फीट लम्बी है। ये तीनों मूर्तियां लगभग एकसी हैं, परन्तु येनूरवाली मूर्तिके कपोलोंमें गड्ढे हैं और उससे गंभीर मुसकुराहटका सा भाव प्रकट होता है, जिसके कारण लोगोंका यह कहना है, कि उसके प्रभावोत्पादक-भावमें न्यूनता आ गई है। जैन कलाकी अति एकनियमबद्धताका यह उत्तम प्रमाण है कि यद्यपि येनूरवाली मूर्तिकी मुसकराहटको छोडकर वस्तुतः तीनों विशाल मूर्तियां एक हीसी हैं, तथापि उनके निर्माण कालोंमें बडा अन्तर है[२०]।"

---

१७ इस विषय पर विशेष देखनेके लिये देखो—एपिग्राफिया कर्नाटिका, भाग २, भूमिका पृ० १-१४। और भी देखो मिसेज सिनक्लेयर स्टिवन्सन रचित "दि हार्ट आव जैनीजम" पृ० १८।

१८ श्रवण बेलगोलकी मूर्तियोंके लिये देखो—'इन्डियन एन्टीक्वेरी' भाग २, पृ. १२८; 'एपिग्राफिया इन्डिका,' भा. ७ पृ. १०८, लुईस राईसका 'माईसोर और कुर्ग' पृ. ४७। कर्कलकी मूर्तियोंके लिये देखो—'इन्डियन एन्टीक्वेरी' भाग २, पृ. ३५३, 'एपिग्राफिया इन्डिका' भा. ७, पृ. ११२। —येनूरकी मूर्तियोंके विषयमें देखो—'इन्डि. एन्टी.' भा. ५, पृ. ३७, एपि. इन्डि. भा. ७, पृ. ११२।

१९ देखो—'इम्पीरियल गेझेटियर आव इन्डिया' पृ. १२१.

२० देखो—विन्सेण्ट स्मीथ रचित 'ए हिस्टरी आव फाईन आर्ट इन इन्डिया एन्ड सिलोन' पृ. २६८।

चामुण्डराय–निर्मित मूर्ति "केवल तीनोंमें अधिक प्राचीन अथवा लम्बी ही नहीं है, किन्तु बडी ढालू पहाडीकी चोटीपर स्थित होने और एतदर्थ उसके निर्माणमें बडी कठिनाइयोंका सामना करनेके कारण उसका वृत्तान्त सबसे अधिक रोचक है। यह मूर्ति दिगम्बर है और उत्तराभिमुख सीधी खडी है.....जंघोंके ऊपर वह बिना सहारेके है। उरुस्थल तक वह वल्मीकसे आच्छादित बनी हुई है, जिसमेंसे सर्प निकल रहे हैं। उसके दोनों पदों और बाहुओंके चारों ओर एक वेलि लिपटी हुई है जो बाहुके ऊपरी भागमें फलोंके गुच्छोंमें समाप्त होती है। एक विकसित कमलपर उसके पैर स्थित हैं।"[२१]

श्रवण बेलगोलकी गोमटेश्वरकी मूर्त्तिके निम्न भागका शिलालेख।

श्रवण बेलगोलकी गोम्मटेश्वरकी मूर्तिके दाहिने और बाएं पैरोंके समीप छोटासा लेख है। दाहिने पैरका लेख यह है:—

श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं;
श्रीचामुण्डराजन [शे] य्व [व] इत्तां;
श्रीगंगराज सुत्तालयवं माडिसिद;

अर्थात्—

श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया,
श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया,
श्रीगंगराजने चैत्यालय निर्माण कराया।

"प्रथम और तृतीय पंक्तिकी लिपि और भाषा कानडी है। द्वितीय पंक्ति प्रथम पंक्तिका तामिल अनुवाद है, और उसमें दो शब्द है जिनमें पहला 'ग्रन्थ' और दूसरा 'वट्टेलुत्तु' लिपिमें है। पहिली दो पंक्तियोंमें यह लिखा है कि चामुण्डराजने मूर्त्ति बनवाई; और तीसरी पंक्तिमें लिखा है कि गंगराजने मूर्त्तिके आसपासका भवन बनवाया।"[२२]

बाईं ओरके पत्थरमें यह लेख है—

श्रीचामुण्डराजे करविपलें
श्रीगंगराजे सुत्ताले करविपले।

अर्थात्—

श्रीचामुण्डराजने निर्माण कराया।
श्रीगंगराजने चैत्यालय निर्माण कराया।

"इसकी लिपि नागरी है और भाषा मराठी है... शायद महाराष्ट्र देशके जैनयात्रियोंके लाभार्थ मराठी भाषाका प्रयोग किया गया है।"[२३]

चित्र ई ६ में † हमने उपरोक्त शिलालेखोंकी प्रतिलिपि दी है। पहिले बाईं ओरका लेख है। दोनों पंक्तियोंमें एकही प्रकारके अक्षर होनेके कारण बाईं ओर के लेखका गंगराजके समयमें खुदा जाना माना जाता है, जब उसने चामुण्डराज स्थापित गोमटेश्वर मूर्तिके चारों ओर भवन निर्माण कराया। यह देखते हुए भी यह बात सम्भव जान पडती है कि बाईं ओरका लेख दाहिनी और वालेका केवल दूसरी भाषामें रूपान्तर है।

गंगराज।

गंगाराज होयशाल–वंशीय–नृपति विष्णुवर्धनका मन्त्री था, जिसने ईसाकी १२ वीं शताब्दीमें शासन किया। लगभग सन् ११६० ई० के एक शिलालेखमें गंगराज, चामुण्डराय और हुल्लकी प्रशंसा इस प्रकार पाई जाती है।

"यदि यह पूछा जाय कि प्रारम्भमें (श्रवण वेलगोलमें) जैन–मतके कौन २ उन्नायक थे–तो कहना होगा कि (वे थे) राचमल्ल नृपति का मन्त्री राय, उसके

इन मूर्तियोंकी शिल्पकलाका विशेष वर्णन जाननेके लिये—स्लरक (Slurrock) रचित 'मेन्युअल आव साउथ कनारा, पृ. ८५, फर्गुसन साहेबकी 'हिस्टरी आव इन्डियन आर्चिटेक्चर, पृ. २६७, 'फ्रेजर्स मेगजीन' के मई १८७५ के अंकमें प्रकाशित मि. वालहाउस का लेख, इत्यादि देखने चाहिए।

२१ देखो, एपिग्राफिया कर्नाटिका, भाग २, भूमिका पृ.२८.

२२-२३ देखो, एपिग्राफिया इन्डिका, भाग ७, पृ. १०८-९।

† इस लेखके साथ लेखकने कई चित्र देने चाहे थे परंतु उनका अकाल स्वर्गवास होजानेके कारण वे चित्र हमें न मिल सके।
संपादक।

अनन्तर, नृपति विष्णुका मन्त्री गंग; और उसके पश्चात् नृसिंहदेव नृपतिका मन्त्री हुल्ल । यदि और भी इसके योग्य हैं, तो क्या उनके नाम न लिये जायंगे ?"[२४]

मूर्तिके नीचेके शिलालेखके अतिरिक्त ११८० ई० के लगभगके एक और शिलालेखमें इस प्रकार इसका वर्णन है—

" जिसमें बुद्धिमत्ता, धर्मिष्ठता, वैभव, उत्तमाचरण, और शौर्यका समावेश है, ऐसा राचमल्ल गंगवंशका चन्द्र था, उसका यश भूमंडल व्यापी था । नृपतिसे वैभवमें द्वितीय [उसका मन्त्री चामुण्डराय], मनुके समान, क्या उसीने अपने प्रयत्नसे यह गोम्मट नहीं बनवाया ? "[२५]

भुजबलीका वृत्तान्त, किम्बदन्तियोंके आधार पर । तीनों मूर्त्तियां बाहुबली, या भुजबलीको व्यक्त करती हैं, जिनको गोम्मटेश्वर भी कहते हैं और जो जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर आदिजिन ऋषभनाथके पुत्र थे । लोककथाके अनुसार ऋषभनाथ एक राजा थे और उनके दो स्त्रियां थीं, जिनके नाम थे नन्दा (या कुछ लोगोंके मतमें सुमंगला) और सुनन्दा । नन्दा या सुमंगलाने दो जुडवें उत्पन्न किए; जिनमें एक लडका था और एक लडकी थी और जिनके नाम थे क्रमशः भरत और ब्राह्मी । जब ऋषभदेवने अनन्त ज्ञानकी खोजमें वनवास स्वीकार किया; तब उन्होंने अपने राज्यका भार भरतको सोंपा । बाहुबली और उनकी बहिन सुन्दरी सुनन्दाकी सन्तान थे, और जब उनके पिताने अपने पुत्रोंको राज बांट दिया तो बाहुबली तक्षशिलाके सिंहासनपर सुशोभित हुए । भरतके पास एक अद्भुत चक्र था जिसका सामना कोई भी योद्धा रणमें न कर सकता था । इस चक्रकी सहायतासे पृथ्वी, विजय करके भरत अपनी राजधानीको लौट आया । परन्तु चक्र राजधानीमें (अथवा दूसरोंके मतसे—अस्त्रालयमें) प्रविष्ट नहीं होता था । भरतने इसका अर्थ यह समझा कि पृथ्वीमें कोई ऐसा राज्य शेष है जिसको उसने नहीं जीता है; और विचार करनेपर यह फल निकला कि केवल तक्षशिलाका राज्य शेष था, जहां उसका भाई भुजबली राज्य करता था । तब भरतने अपने भाई भुजवली पर युद्ध ठान दिया परंतु उस घोर युद्धमें विजयलक्ष्मी भुजवलीको प्राप्त हुई । भरतके चक्रसे भी भुजवलीको कोई हानि नहीं पहुंची। परन्तु विजयी होनेपर भी इस संसारको असार जानकर भुजबली क्षणभर में समाधिस्थ हो गए । भरतने भुजबलीको वंदना की और फिर अपने स्थानको लौट आए। फिर भुजबली कैलाश पर्वतके शिखरोंमें चले गए और वहां (अथवा दूसरे वर्णनके अनुसार—युद्धभूमिमें) वर्षभर मूर्त्तिकी भांति खडे रहे[२६] तटस्थ वृक्षोंमें लपटी हुई लताएं उनके गलेमें लिपट गईं । उन्होंने अपने वितानसे उनके शिरपर छत्र सा बना दिया और उनके पैरोंके बीचमें कुश उग आए और देखनेमेंमे वे मानों वल्मीक प्रतीत होने लगे[२७] । अन्तमें भुजबलीको अनन्त ज्ञानकी प्राप्ति हुई और वे केवली हो गए ।

परन्तु एक शिलालेखमें यह लिखा है कि भुजबली या बाहुवली और भरतके पिता पुरु थे[२८] । और उसके आगे यह लिखा है कि,—"पुरुदेवके पुत्र भरतने, जिसके चारों ओर उसके पराजित राजा बास करते हैं, प्रसन्नतासे विजयी बाहुवली केवली की मूर्त्ति निर्माण कराई जो पौदनपुरके समीप है और ५२५ चाप लम्बी है । बहुत समयके अनन्तर अनेक लोक भयकारी कुक्कुट-सर्प उस

२४ देखो, एपिग्राफिआ कर्नाटिका. भाग २, भूमिका पृ. ३४. हुल्ल होयशालवंशीय नृपति नरसिंह प्रथमका मंत्री था । वह १२ वीं शताब्दीमें विद्यमान था।

२५ देखो. एपि. कर्ना. भा. २, पृ. १५४. मूर्तिके निर्माणके संबंधमें यह पंक्ति है—" चामुण्डरायं मनुप्रतिमं गोम्मटं अल्ले माडिसिदन् इन्ती देवनं यत्नदिम् "

२६ देखो, जिनसेन रचित हरिवंश पुराण, अध्याय ११ । कुछ भिन्न वर्णनके लिए देखो, कथाकोश (ट्वेनी द्वारा इंग्रेजीमें अनुवादित) पृ. १९२-९५.

२७ देखो, कथाकोश, पृ. १९२-९५.

२८ " पुरुसूनु-बाहुबलि-वोल् " एपि. कर्ना. भा. २ शिलालेख नं. ८५, पृ. ६७.

जैनकी मूर्त्ति के आसपास उत्पन्न होगए और इसी कारण मूर्त्तिका नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया " [२९].

इन लोकप्रसिद्ध कथाओंके द्वारा हम समझ सकते हैं कि उन वल्मीकमयी मूर्त्तियों का क्या भाव है जिनसे सर्प निकल रहे हैं, तथा श्रवण बेलगोल कर्कल और येनूर गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तियोंमें लिपटी हुई लताओंका क्या तात्पर्य है ? " तीनों मूर्तियोंमें ये सब बातें एक समान हैं और उनसे यह भाव प्रकट होता है कि, वे तपस्या में ऐसे पूर्ण लीन होगए हैं कि उनके पैरों पर वल्मीक लग जाने; और शरीरमें लताओंके चिपट जाने पर भी सांसारिक विषयोंपर उनका ध्यानभंग नहीं होता। " [३०]

चामुण्डरायकी मूर्त्तिके स्थापनका वृत्तान्त।

बाहुबली चरित्र नामक एक संस्कृत काव्य में चामुण्डराय–द्वारा—स्थापित गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिकी स्थापनाकी कथा इस प्रकार वर्णित है।

बाहुबली चरित्रकी कथा।

द्रविड देशकी मधुरा नगरी (वर्तमान मदुरा) में राजमल्ल नामक एक राजा था; जिसने जैन सिद्धान्तों के प्रचारका उद्योग किया और जो देशीय–गण [३१] के सिंहनन्दिका उपासक था। उसके मन्त्रीका नाम चामुण्डराय था। एक दिन जब राजा अपनी सभामें मन्त्रीयोंके सहित विराजमान था, एक पथिक व्यापारी आया और उनसे कहा कि उत्तरमें पौदनपुरी नामक एक नगर है जहां भरत द्वारा स्थापित बाहुबली अथवा गोम्मटकी एक मूर्ति है। यह सुनकर भक्त चामुण्डरायने उस पवित्र मूर्त्तिके दर्शन करनेका विचार किया और घर जाकर अपनी माता कालिकादेवीसे यह वृत्तान्त कहा, जिसपर उसने भी वहां जानेकी इच्छा प्रकट की। चामुण्डराय तब अपने गुरु अजितसेनके पास गया, जो सिंहनन्दिका उपासक था। उसने सिंहनन्दिके सन्मुख यह प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं बाहुबली मूर्त्तिके दर्शन न कर लूंगा तब तक मैं दूध न ग्रहण करूंगा। नेमिचन्द्र अपनी माता और अनेक सैनिकों एवं सेवकोंके सहित चामुण्डराजने यात्रा प्रारंभकी और विन्ध्यगिरि (श्रवण बेलगोल) में जा पहुंचा। रात्रिमें जैनदेवी कुष्माण्डी (बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथकी यक्षिणी दासी) ने चामुण्डराज नेमिचन्द्र और कालिकाको स्वप्नमें दर्शन दिया और कहा कि पौदनपुरीको जाना अत्यन्त कठिन है, परन्तु इसी पहाडीपर पहिले पहिल रावण द्वारा स्थापित बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है। और उसके दर्शन तभी हो सकते हैं, यदि एक सुवर्ण–बाणसे इस पहाडीको फाड दिया जाय। स्वप्नके अनुसार, दूसरे दिन चामुण्डरायने दक्षिणाभिमुख पहाडीपर खडे होकर अपने धनुषसे एक सुवर्ण-बाण छोडा। तत्क्षण पहाडके दो टुकडे होगए और बाहुबलीकी एक मूर्त्तिके दर्शन हुए। चामुण्डरायने तब उस मूर्त्तिकी स्थापना और प्रतिष्ठा की तथा उसके पूजार्थ कुछ भूमि लगा दी। जब नृपति राजमल्लने यह वृत्तान्त सुना तो उसने चामुण्डराजको 'राय'की उपाधि प्रदान की और उस मूर्त्तिकी नियमित पूजाके लिए और भी भूमि प्रदान की।

राजावली कथेके अनुसार कथा।

देवचन्द्र-द्वारा-रचित कानडी भाषाकी एक नवीन पुस्तकमें भी यही कथा वर्णित है, परंतु कहीं कहीं कुछ बातोंमें अन्तर है। उसमें लिखा है कि चामुण्डराय राजा

---

२९ " घृत–जयबाहु–बाहुबलिकेवलि–रूपसमान—पञ्चविंशति–समुपेत–पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तम् अप्प तत्–प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जिताखिलक्षितिपतिचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेव–नन्दनम्। चिरकालं सले तज्जिनांतिक–धरित्री–देशादोल् लोकभीकरणं कुक्कुटसर्पसंकुलं असंख्यं पुट्टि दल् कुक्कुटेश्वरनामन्....." (देखो, एपि. कर्ना. भा. २, पृ. ६७.)

३० ल्यु. रा. का, श्रवण बेलगोल, भूमिका पृ. ३३.

३१ जब नन्दी संघके जैन आचार्य सारे देशमें फैल गये, तब उनके संघका नाम 'देशीयसंघ' हो गया।

देखो बाहुबली चरित्रका निम्न श्लोक—

" पूर्वं जैनमतागमाब्धिविधुवच्छ्रीनन्दिसंघेऽभवन्
सुज्ञानर्द्धितपोधनाः कुवलयानन्दा मयूखा इव।
सत्सङ्गे भुवि देशदेशनिकरे श्रीसुप्रसिद्धे सति
श्रीदेशीयगणो द्वितीयविलसन्नाम्ना मिथः कथ्यते ॥"

राजमल्लका एक अधीन-शासक था। उसकी माताने पद्म पुराणका पाठ सुनते समय यह सुना कि पौदनपुरमें बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है। इस लिए अपने पुत्रसमेत वह उस मूर्त्तिके दर्शनको चली, परन्तु मार्गमें एक पहाडीपर, जहां भद्रबाहु स्वामीका देहान्त हुआ था उसने स्वप्न देखा जिसमें पद्मावती देवीने उसे दर्शन देकर कहा कि उसी पहाडीपर बाहुबलीकी एक मूर्त्ति है जो पत्थरोंसे आच्छादित है, और जिसकी पूर्व समयमें राम, रावण, और मन्दोदरीने पूजा की थी। फिर दूसरे दिन एक बाण मारनेसे बाहुबलीकी मूर्त्ति दृष्टि-गोचर हुई।

इस प्रकार जैनियोंकी किम्बदन्तियोंके अनुसार यह पता लगता है कि चामुण्डरायने उस मूर्त्तिको नयी निर्माण नहीं कराया, किन्तु उस पहाडीपर एक मूर्त्ति विद्यमान थी जिसकी उसने सविधि स्थापना और प्रतिष्ठा कराई। इन लोक-कथाओंके अनुसार श्रवण बेलगोलके प्रधान पुरोहितने भी यह कहा था, कि प्राचीन कालमें इस स्थानपर एक मूर्त्ति थी, जो पृथ्वीसे स्वतः निर्मित हुई थी, और जो गोम्मटेश्वर स्वामीके स्वरूपकी थी। उसकी राक्षसराज रावण सुखप्राप्तिके हेतु उपासना करता था। चामुण्डरायको यह विदित होनेपर उसने कारीगरों द्वारा उस मूर्त्तिके सब अंगोको उचित रूपसे सुडौल बनवाया। उसके सब अंग मोक्षकी इच्छासे ध्यानावस्थित गोम्मटेश्वर स्वामीके असली स्वरूपके समान थे। उसने उनके चारों ओर बहुतसे मन्दिर और भवन बनवाए। उनके बनजानेपर उसने बडे उत्सव एवं भक्ति-पूर्वक मूर्त्तिकी उपासनाका क्रम प्रारंभ किया.[३२] स्थल-पुराणसे उद्धृत एक अवतरणमें यह लिखा है जो उपरोक्त कथासे मिलता-जुलता है।

स्थल-पुराणमें वर्णित कथा।

"चामुण्डराजने सपरिवार, पदनपुरस्थित-देव गोम्मटेश्वर एवं उसके आसपास स्थित १२५४ अन्य देवताओंके दर्शनार्थ यात्रा प्रारंभ की। देव गोम्मटेश्वरके सम्बन्धमें बहुत कुछ सुनकर, वह मार्गमें श्रवण बेलगोल क्षेत्रमें जा पहुंचा। वहां उसने गिरे पडे मन्दिरोंका जिर्णोद्धार किया और अन्य विधानोंके साथ पंचामृत-स्नान की भी प्रक्रिया कि। दैनिक, मासिक, वार्षिक एवं अन्य उत्सवोंके संचालनके, लिए उसने सिद्धान्ताचार्यको मठका गुरु नियत किया। मठमें उसने एक 'सत्र' स्थापित किया जहां यात्रियोंके लिए भोजन औषध और शिक्षाका प्रबन्ध था। उसने अपनी जाति-वालोंको इस लिए नियत किया, कि वे तीनों वर्णोंके यात्रियोंकी, जो दिल्ली, कनकाद्रि, स्वित्पुर, सुधापुर, पापापुरी, चम्पापुरी, सम्मिदगिरि, उज्जयन्तगिरि, जयनगर आदिस्थानोंसे आवें, आदरपूर्वक सेवासुश्रूषा करें। इस कार्यके लिए मन्दिरमें कई ग्राम लगादिए गए। उसने चारों दिशाओंमें शिला-शासन लगवा दिए। १०९ वर्षों तक उसके पुत्रपौत्रोंने इस दानको नियमित रक्खा"[३३]

अब हमें इस बातका निर्णय करना उचित है कि यह बात कहांतक ठीक है कि चामुण्डराय श्रवण बेलगोलकी गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिका केवल अनुसन्धानकर्त्ता था। मुजबली चरित्र अथवा बाहुबली चरित्र नामक ग्रन्थ संस्कृत छन्दोंमें है, और उसमें केवल जनश्रुतियोंका समुच्चय है, और कई मुखोंतक पहुंचनेके कारण उनमें विचित्रता आगई है। इस ग्रन्थका रचनाकाल ठीक ठीक निर्णय नहीं किया जा सकता। परन्तु इसकी लेखशैलीसे यह अनुमान किया जा सकता है कि यह गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके स्थापनाके बहुत काल पश्चात् बना होगा। राजावली कथे जैन इतिहास, किम्बदन्ती, आदिका बृहत् संग्रह है जिसको वर्तमान शताब्दीके पूर्वभागमें माईसोर राजवंशकी एक महिला देवी रम्मके निमित्त मलेपूरकी जैनसंस्थाके देवचन्द्रने रचा था।[३४]

३२ बेली पागलका ऐतिहासिक और किम्वदन्तियोंके आधार पर वर्णन. (एशियाटिक रिसर्च, भाग ९, पृ. २६३.)

३३ "स्थल पुराण" से लिया हुआ केप्टेन आई. एस. एफ. मेकेंजीका अवतरण (इन्डियन एन्टीक्वेरी, भाग २, पृ० १३०).

३४ देखो, लु. रा. का श्रवण बेलगोल, भूमिका पृ. ३, (१८८९).

एतदर्थ यह ग्रन्थ भी प्रस्तुत प्रश्नके निर्णयके हेतु प्रमाणकोटिमें नहीं परिगणित किया जा सकता। राजावली-कथे और स्थलपुराणमें, ग्रन्थकर्ताओंने ऐतिहासिक घटनाओंकी यथार्थताके लिए कोई प्रयत्न नहीं किया है, क्योंकि उनका विषय दन्तकथाओं एवं जनश्रुतियोंका संग्रह था। यह सत्य है कि इन कथाओंमें कहीं कहीं ऐतिहासिक सामग्री विद्यमान है, परन्तु उनको तबतक बिना जांचे ऐतिहासिक घटनाएं न मान लेना चाहिए, जबतक अन्य अधिक विश्वस्तसूत्रोंके आधारपर उनकी यथार्थता सिद्ध न हो जाय। स्थलपुराणकी निर्मूल बातोंके उदाहरण स्वरूप यह पंक्ति लिखी जा सकती है—"चामुण्डराज, दक्षिण मदूराका राजा, और जैन-क्षत्रिय-पाण्डु-वंशोत्पन्न था।"[३५] इससे इस बातका पता लगेगा कि किस प्रकार किम्बदन्तियोंमें मन्त्री चामुण्डरायको मदूराका राजा वर्णन किया गया है।

यदि यह सिद्ध करनेके लिए, कि, इस मूर्त्तिको किसने निर्माण कराया, कोई विश्वस्त अथवा समकालीन लेख न होता तो इन किम्बदन्तियोंके आधारपर यह बात संदिग्ध रहती कि चामुण्डरायने स्वयं इस मूर्त्तिको बनवाया। परन्तु हमारे लिए यह सौभाग्यकी बात है कि यह सिद्ध करनेके लिए लेख विद्यमान है कि, चामुण्डराय हीने न कि और किसीने, गोम्मटेश्वरकी मूर्त्ति बनवाई।

सबसे प्रथम, उस मूर्तिके पैरोंवाला शिलालेख है—जिसका वर्णन पहिले हो चुका है—जिसमें यह साफ साफ लिखा है कि चामुण्डरायने इस मूर्त्तिको निर्मित किया। द्वितीय, एक अन्य शिलालेखमें, जिसकी तिथि ११८० ई० है, हम ऊपर देख चुके हैं कि चामुण्डरायने निज उद्योगसे इस मूर्तिको बनवाया। इन लेखोंका समर्थन एक पुस्तकसे होता है, जिसका नाम है गोम्मटसार और जिसको आचार्य नेमिचन्दने, जो चामुण्डरायके समकालीन थे, रचा है। उसमें निम्नलिखित वर्णन है।

"गोम्मटसंग्रहसूत्रकी जय हो, जिसमें गोम्मटगिरि स्थित गोम्मटजिन और गोम्मटराज-निर्मित दक्षिण-कुक्कुट-जिनका वर्णन है।"

"उस गोम्मटकी जय हो, जिसके द्वारा मूर्त्तिका मुख निर्मित हुआ, जिसको सब सिद्ध और देवताओंने देखा।"[३६]

गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके कारण जिस गिरिपर यह स्थित थी उसका नाम गोम्मटगिरि होगया और इस बारेमें नेमिचन्द्र यह शब्द प्रयुक्त करते हैं। "चामुण्डराय द्वारा निर्मित (विणिम्मिय)"। हम कह चुके हैं कि पौदनपुरमें भरत द्वारा स्थापित गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिका नाम कुक्कुटेश्वर हो गया, जब उसके चारों ओर सर्प निकल आए। चामुण्डराय द्वारा स्थापित मूर्त्तिका नाम दक्षिण कुक्कुट-जिन होगया, जिससे उत्तरीय मूर्त्तिसे वह भिन्न जानी जा सके। इस मूर्त्तिको बनवानेके कारण चामुण्डरायका नाम गोम्मटराय पडगया।

इन प्रमाणोंसे इस बातमें कोई सन्देह नहीं रह जाता कि चामुण्डराय ही ने इस मूर्त्तिको निर्माण कराया। इस महान् कार्यके कारण वह स्वयं गोम्मटराय कहलाने लगा। परन्तु यदि उसने केवल मूर्तिका अनुसन्धान ही किया होता तो कदापि यह बात न होती। चामुण्डरायके गुरु नेमिचन्द्र मूर्तिस्थापनके समय अवश्य विद्यमान होंगे (क्योंकि बाहुबली चरित्रतकमें यह लिखा है कि उस अवसरपर नेमिचन्द्र भी उपस्थित थे) अतएव

३५ केप्टेन मैकेन्जी द्वारा उद्धृत 'स्थलपुराण' का अवतरण (इन्डि. एन्टी. भाग २, पृ. १३०) यह कहना भी उचित होगा कि सेनगणकी पट्टाबिलिमें भी ऐसा ही लिखा हुआ है—"दक्षिण मधुरानगर निवासि—क्षत्रियवंश शिरोमणी—दक्षिण तैलंग कर्नाटक देशाधिपति चामुण्डराय प्रतिबोधक—बाहुबील प्रति बिम्ब गोमट प्रतिष्ठापकाचार्य—श्री अजितसेन भट्टारकाणाम्।" (देखो, जैन सिद्धान्तभास्कर, भाग १, सं. १, पृ. ३८.)

३६ "गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ॥
जेण विणिम्मिय-पडिमा-वयणं सवहुसिद्धिदेवेहिं॥
सबपरमोहिजोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ॥
(गोम्मटसार, कर्मकाण्ड, श्लोक ९६८-६९)

नेमिचन्द्रके शब्दोंको, जिनका समर्थन शिलालेखसें होता है, इस प्रश्नके सम्बन्धमें प्रमाणित मानना चाहिए।

तो फिर इसका क्या कारण है कि बाहुबली चरित्र *राजावली कथे आदिग्रन्थोंमें चामुण्डरायको मूर्त्तिका केवल अन्वेषकही लिखा गया है?* शायद कारण यह हो कि इन ग्रन्थोंके लेखक मूर्त्तिको अधिक प्राचीन कहकर अधिक पूज्य और पवित्र बनाना चाहते थे।

गोम्मटरायकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें एक और किम्बदन्ती है जिसमें इस बातका वर्णन है कि ऐसि मूर्त्तिको स्थापन करनेके कारण चामुण्डरायके गर्वने किस प्रकार नीचा देखा। कथा इस प्रकार है:—

"इस मूर्त्तिको स्थापित करनेके अनन्तर चामुण्डराय यह सोचकर मारे गर्वके फूला न समाया कि मैंने अपने ही सामर्थ्यसे, इतने धन और परिश्रमसे इस देवताकी स्थापना करा ली। तदनन्तर जब उसने देवताकी पंचामृत-स्नान-विधि की, तो इस पदार्थसे भरे अनेक पात्र चुक गए, परन्तु देवताकी अलौकिक मायासे, पंचामृत तोंदीसे नीचे न जा सका, जिससे उपासकके व्यर्थाभिमानका नाश हो। कारण न जानकर चामुण्डरायको यह सोचकर अत्यन्त शोक हुआ कि पंचामृतसे समस्त मूर्त्तिको स्नान करानेकी मेरी इच्छा पूर्ण न हुई। जब वह इस अवस्थामें था, देवताकी आज्ञानुसार पद्मावती नाम्नी अप्सरा एक वृद्धा निर्धन स्त्रीका रूप धारणकर प्रकट हुई, जिसके हाथमें एक बेलियगोलमें (छोटी चांदीकी कटोरी) मूर्त्तिके स्नानके हेतु पंचामृत था। उसने चामुण्डरायसे मूर्त्तिको स्नान करानेका प्रस्ताव प्रकट किया। परन्तु चामुण्डराय यह समझकर, उस असंभव प्रस्तावपर हंस दिया, कि जिसको मैं नहीं कर सका उसे यह करने चली है। परन्तु विनोदार्थ उसने उसे यह करनेकी आज्ञा देदी। तब दर्शकोंको यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि उसने उस चान्दीके छोटे पात्रहीसे समस्त मूर्त्तिको स्नान करा दिया। तब चामुण्डरायने अपने अपराध एवं गर्वके लिए शोक प्रकाशित करके, बडे आदरसे, द्वितीय बार स्नानकी विधि की, जिसमें पहिले उसने इतनी सामग्री व्यर्थ खो दी थी, और पूर्ण रूपेण उसने मूर्त्तिके समस्त शरीरको स्नान कराया। उस समयसे इस स्थानका नाम, उस *चान्दीके पात्रके कारण, जो पद्मावती हाथमें लिए थी,* बेलियगोल पड गया।"[३७]

मूर्त्ति निर्माणकी तिथि।

अब हम अनुमानसे उस तिथिका निश्चय करेंगे जिसमें चामुण्डरायने गोम्मटेश्वरकी मूर्त्ति निर्माण कराई। हम कह चुके हैं कि चामुण्डराय मारसिंह द्वितीय और राचमल्ल या राजमल्ल द्वितीयका मन्त्री था। किम्बदन्तीके अनुसार राजमल्लके समयमें मूर्त्ति स्थापित हुई। हम देख चुके हैं कि मारसिंह द्वितीयके शासनकालमें चामुण्डरायने अनुपम शौर्यकी ख्याति प्राप्त की थी और एक शिलालेखमें, जिसमें उसने अपना वृत्तान्त दिया है, वह केवल अपनी जीतोंका वर्णन करता है। उसके द्वारा किए हुए किसी धार्मिक कार्यका उनमें वर्णन नहीं है। यदि मारसिंह द्वितीयके समयमें उसने इस विशालमूर्त्तिका निर्माण कराया होता तो वह इस बातका अवश्य वर्णन करता। क्योंकि इससे उसका नाम अमर हो गया है। मारसिंह द्वितीयकी मृत्यु सन ९७५ ई० में हुई। चामुण्डराय अपने ग्रन्थ चामुण्डराय पुराणमें अपनी वीरताका सविस्तर वर्णन करता है और अपनी समस्त उपाधियोंका वर्णन करके उनके प्राप्तिके कारण भी बताता है; परन्तु गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिके निर्माणका तनिकभी उल्लेख नहीं किया है। इस ग्रन्थके अन्तमें, उसका रचना काल शक ९०० (९७८ ईस्वी) दिया है। अतएव ९७८ ईस्वीके अनन्तर और राजमल्ल या राचमल्ल द्वितीयके शासनके अन्तिम वर्षके पूर्व गोम्मटेश्वरकी इस मूर्त्तिका निर्माण हुआ होगा। राजमल्ल द्वितीयने ९८४ ईस्वीतक राज्य किया। इस लिए

---

३७ एशियाटिक रीसर्च, भाग ९, पृ. २६६। उपरोक्त वर्णनमें श्रवण बेलगोलके नाम पडनेका बिल्कुल दूसरा कारण बताया गया है। अभी कुछ दिन हुए जैनोंने गोम्मटेश्वरका पंचामृत स्नान कराया था।

९७८ और ९८४ ईस्वीके अन्तर्गत कालमें इस मूर्त्तिका निर्माण हुआ होगा।

बाहुबली चरित्रमें एक श्लोक है जो मूर्त्तिस्थापनका ठीक ठीक समय बताता है। वह श्लोक इस प्रकार है—

कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे,
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटितभगणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो वेलुगुलनगरे गोमटेश-प्रतिष्ठाम्॥"

अर्थात्—श्रीचामुण्डरायने बेलगुल नगरमें कुम्भलग्नमें, रविवार शुक्ल पक्ष चैत्र शुक्ल पंचमीके दिन विभवनाम कल्कि-संवत्सर ६०० के प्रशस्त मृगशिरा नक्षत्रमें, गोमटेशकी प्रतिष्ठा की।

यदि हम उपरोक्त तिथिको यथार्थ मान लें, क्योंकि सम्भव है ऐसे उत्तम मुहूर्तमें ऐसा बडा कार्य किया गया हो, तो हमें यह निकालना पडेगा कि ९७८ और ९८४ ईस्वीके अन्तर्गत किस दिन यह सब योग पडते थे। हमने भलीभांति सावधानीसे ज्योतिषकी रीतियोंके अनुसार सर्व सम्भाव्य तिथियोंको जांचा है और उसका परिणाम यह निकलवा है कि रविवार ता० २ अप्रैल सन् ९८० ई० को मृगशिरा नक्षत्र था और पूर्व दिवससे (चैत्रकी बीसवीं तिथि) शुक्ल पक्षकी पंचमी लगगई थी, और रविवारको कुम्भ लग्न भी था। अतएव जिस दिन चामुण्डरायने मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की उसकी हम यही तिथि मान सकते हैं परन्तु उपरोक्त श्लोकमें एक बात है जो प्रथम बार देखनेसे इतिहासके विरुद्ध जान पडती है। इस श्लोकमें यह कहा गया है कि कल्क्यब्द ६०० विभवनाम संवत्सरमें गोम्मटेश्वरकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा हुई। शक सम्वत् महावीरके निर्वाणके ६०५ वर्ष ५ मास पश्चात् प्रारम्भ होता है[३८] और कल्कि संवत् शक संवत्के ३९४ वर्ष ७ मास अनन्तर प्रारम्भ होता है। अर्थात् वीरनिर्वाणके १००० वर्ष अनन्तर कल्कि संवत् आरम्भ होता है। अतएव, कल्कि संवत्का आरम्भ ४७२ ईस्वीसे होता है। इसलिए कल्कि संवत् ६०० (४७२+६००) १०७२ ईस्वी सन् होगा। परन्तु यह बात इतिहासके विरुद्ध है, क्योंकि राचमल्ल द्वितीयका शासन सन् ९८४ ईस्वीमें समाप्त होता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष गणनासे भी यह ज्ञात होता है कि कल्कि संवत् ६०० में चैत्र शुक्ल पक्षकी पंचमी तिथि, चैत्रके तेईसवें दिन शुक्रवारको पडती है, जो उपरोक्त श्लोकसे विरुद्ध है क्योंकि उसके अनुसार उस साल चैत्र शुक्ल पंचमीको रविवार था।

अतएव कल्कि संवत् ६०० का अर्थ कल्कि संवत्की छठी शताब्दी लेना चाहिए। विभव संवत्को ८ वां मानना चाहिए जिससे इतिहासानुसार ठीक ठीक बैठे। इसलिए विभवनाम कल्कि संवत् ६०० के अर्थ लेना चाहिए कल्कि संवत्की छठी शताब्दीका ८ वां वर्ष—अर्थात् ५०८ कल्क्यब्द। यदि हम इस तिथिका स्वीकार कर लें तो ठीक ९८० ईस्वीको यह सम्वत् पडता है और श्लोकमें वर्णित सर्व ज्योतिषके योग भी मिल जाते हैं।

अतएव अब हमारे माननेके लिए दो मार्ग हैं। प्रथम; कि हम बाहुबली चरित्रके श्लोकको इतिहास-विरुद्ध कहकर प्रमाणित न मानें, या जैसा हमने किया है वैसा उसका अर्थ लगावें, जिससें वह शिलालेखकी तिथिसे मिल जाय। और हमारी समझमें तो दूसरा मार्ग ग्रहण करनाही सर्वोत्तम है।

नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती।

अब हम द्रव्यसंग्रहके लेखकके सम्बन्धमें समस्त प्राप्य सामग्री एकत्र करनेका प्रयत्न करेंगे। इस ग्रन्थके अन्तिम श्लोकसे यह पता लगता है कि इसके रचयिता मुनि नेमिचन्द्र थे।[३९] बाहुबली चरित्रमें यह लिखा है

३८ देखो, नेमिचंद्र रचित त्रिलोक सारका निम्न उल्लेख—

'पण छ सवस्स पण मासजुदं
गमिय वीरणिवुइदो सगराजा॥'

अर्थात् वीरनिर्वाणके अनन्तर ६०५ वर्ष और ५ मास व्यतीत होने पर शकराजा हुआ। (इन्डियन एन्टिक्वरी, भाग १२, पृ. २१.)

३९ देखो, द्रव्यसंग्रह (श्लोक ५८)—

'दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदा सुदपुण्णा।
सोधयतु तणुसुत्तधरण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं॥'

कि देशीय गणके नेमिचन्द्र मुनि, चामुण्डराय और उसकी माताके साथ पौदनपुर गोम्मटेश्वरके दर्शनार्थ गये थे। और नेमिचन्द्रने स्वप्न देखा कि विन्ध्यगिरिपर गोम्मटेश्वरकी एक मूर्त्ति है, और चामुण्डरायने मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करानेके अनन्तर उसकी नित्य पूजा और त्यौहारोंके हेतु नेमिचन्द्रके चरनोंपर कुछ ग्राम प्रदान किए जिनकी आय ९६००० मुद्रा थी।[४०]

माइसोरके शिमोगा जिलेके नगर ताल्लुकेमें स्थित पद्मावतीके मन्दिरके हातेमें खुदे हुए लगभग सन् १५३० ईस्वीके एक शिलालेखके निम्नलिखित श्लोकसे यह पता लगता है कि चामुण्डराय नेमिचन्द्रके चरणकमलोंकी पूजा करता था। :—

" त्रिलोकसार-प्रमुख.....
.....भुवि नेमिचन्द्र ।
विभाति सैद्धान्तिक-सार्वभौमः
चामुण्डराजार्चित-पादपद्मः ॥ "

अर्थात् " त्रिलोकसार और अन्य (ग्रन्थों) के रचयिता.....नेमिचन्द्र सिद्धान्त सार्वभौम सुशोभित है, उसके चरणकमल चामुण्डराज द्वारा अर्चित हैं "[४१] यद्यपि इस श्लोकका कुछ भाग मिट गया है, तथापि भाव सुस्पष्ट है। ' सिद्धान्त-सार्वभौम ' सिद्धान्तचक्रवर्ती नामक उपाधिका पर्याय वाची है जो बहुधा नेमिचन्द्रके साथ प्रयुक्त होता है।

स्वयं नेमिचन्द्रने अपने ग्रन्थ गोम्मटसारमें गोम्मटराय या केवल राय की प्रशंसा की है और ऐसा हम देख चुके हैं कि यह चामुण्डरायका उपनाम है। उन प्रशंसात्मक श्लोकोंमें नेमिचन्द्रने लिखाहै कि अजितसेन उस चामुण्डराय के गुरु थे जिसने गोम्मटेश्वरकी मूर्ति निर्माण कराई।[४२]

अभयचन्द्र रचित गोम्मटसारके भाष्यमें लिखा है कि यह ग्रन्थ चामुण्डरायकी इच्छानुसार रचा गया; जिसको जैनियोंके पवित्र ग्रन्थोंमें वर्णित द्रव्योंकी व्याख्याका अध्यन करनेकी अभिलाषा थी। नेमिचन्द्र-रचित त्रिलोकसारकी एक अति प्राचिन सचित्र हस्तालिखित पुस्तकमें एक चित्र है जिसमें चामुण्डराय अनेक सभासदोंके साथ नेमिचन्द्रसे जैन-सिद्धांतोंकी व्याख्या सुन रहे हैं।

नेमिचन्द्रके ग्रन्थ।

नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवतीने इन ग्रथोंकी रचना की:— (१) द्रव्यसंग्रह (२) गोम्मटसार (३) लब्धिसार (४) क्षपणसार, और (५) त्रिलोकसार। बाहुबली चरित्रमें लिखा है कि " नेमिचन्द्र, गोम्मटसार, लब्धिसार, और त्रिलोकसारके रचयिता हैं "[४३] द्रव्यसंग्रहके अन्तिम श्लोकमें नेमिचन्द्रने अपना नाम प्रकट किया है।[४४] इसी प्रकार गोम्मटसारके एक श्लोकसे यह ज्ञात

---

४० " मास्वद्देशीगणाग्रेसररुचिरसिद्धान्तविन्नेमिचन्द्र—
श्रीपादाग्रे सदा षण्णवतिदशशतद्रव्यमूग्रामवर्य्यान्।
दत्वा श्रीगोमटेशोत्सवसवननित्यार्चनावैभवाय
श्रीमच्चामुण्डराजो निजपुरमथुरां संजगाम क्षितीशः।
(बाहुबलि चरित्र, श्लोक ६१.)

४१ एपि. कर्ना. भाग ८, लेख नं. ४६.

४२ "गोम्मट संगहसुत्त गोम्मटासिंहरुवरि गोम्मटजिणे य।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कुडजिणो जयउ॥
जेण विणिम्मियपडिमावयणं सव्वट्ठसिद्धिदेवेहिं।
सव्वपरमोहिजोगिहिं दिट्ठं सो गोम्मटो जयउ॥
वज्जयणं जिणभवणं ईसिपभारं सुवण्णकलसं तु।
तिहुवणपडिमाणिक्कं जेण कयं जयउ सो रायो॥
जेणुव्भियथंभुवरिमजक्करव—किरीटग्गाकिरणजलधोया।
सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ॥
जम्हि गुणा विस्संता गणहरदेवादि—इड्ढिपत्ताणं॥
सो अजियसेणणाहो जस्स गुरु जयउ सो राओ "

४३ सिद्धान्तामृतसागरं स्वमतिमन्थक्ष्माभृदालोड्य मध्ये
लेभेऽभीष्टफलप्रदानपि सदा देशीगणाग्रेसरः।
श्रीमद्गोमटलब्धिसारविलसत् त्रैलोक्यसारामर-
क्ष्माजश्रीसुरधेनुचिन्तितमणिन् श्रीनेमिचन्द्रो मुनिः॥
(बाहुबलि चरित्र, श्लोक ६३)

४४ ' णेमिचंद मुणिणा भणियं जं '
(द्रव्यसंग्रह, श्लो० ५८)

होता है कि नेमिचन्द्रने इसकी रचना की है।[४५] हम समझते हैं, इस स्थानपर नेमिचन्द्रके ग्रन्थोंका संक्षिप्त वृत्तान्त दे देना उत्तम होगा।

गोम्मटसार।

इसका नाम गोम्मटसार पडनेका कारण यह है कि यह चामुण्डरायके पठनार्थ लिखा गया था, और हम बतला चुके हैं कि चामुण्डरायका दूसरा नाम गोम्मटराय था। इस ग्रन्थको पञ्चसंग्रह भी कहते हैं[४६] क्योंकि इसमें इन पाँच बातोंका वर्णन दिया है (१) बन्ध (२) बध्यमान (३) बन्धस्वामी (४) बन्धहेतु और (५) बन्ध-भेद।

यह ग्रन्थ प्राकृतमें है और इसमें १७०५ श्लोक हैं। इसके दो भाग हैं जिनके नाम हैं जीवकाण्ड और कर्मकाण्ड। इनमें क्रमानुसार ७३३ और ९७२ श्लोक हैं। जीवकाण्डमें मार्गणा, गुणस्थान, जीव, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, और उपयोगका वर्णन है। कर्मकाण्डमें ९ अध्याय हैं, जिनके नाम हैं—प्रकृतिसमुत्कीर्तन, बन्धोदयसत्त्व, सत्त्वस्थानभंग, त्रिचूलिका, स्थानसमुत्कीर्तन, प्रत्यय, भवचूलिका, त्रिकरणचूलिका, और कर्मस्थिति-रचना। आठ प्रकारके कर्म और कर्मबन्धका अपनी अपनी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके साथ सविस्तर वर्णन भी दिया हुआ है। कर्मके सम्बन्धके अन्य अनेक विषयोंका भी इसमें वर्णन है। संक्षेपसे गोम्मटसारके प्रथम भागमें जीवोंके स्वाभाविक गुण, और उनकी उन्नतिके उपायों और उपकरणोंका वर्णन है; और दूसरे भागमें उन कर्मबन्ध उत्पन्न करनेवाली अडचणोंका वर्णन है, जिनके निवारण करनेसे जीवोंको मुक्ति प्राप्त होती है। ग्रन्थकर्ता सर्वदा जीवकी उत्तरोत्तर उन्नतिको ध्येय मानता है, और इसी लक्ष्यसे उसने गोम्मटसारमें जैन-आचार्योंके सिद्धान्तोंका सार दिया है। साधारण रूपसे इस ग्रन्थमें जैन-दर्शन शास्त्रके मुख्य मुख्य सिद्धान्तोंका समावेश है।

गोम्मटसारके भाष्य।

स्वयं चामुण्डरायने कानडी भाषामें गोम्मटसारकी एक टीका रची थी। गोम्मटसारके अन्तिम श्लोकमें इस बातका उल्लेख है कि चामुण्डरायने सर्व साधारणकी भाषामें वीर-मार्तण्डी नाम्नी एक टीका रची।[४७] चामुण्डरायकी एक उपाधि-वीर-मार्तण्ड थी, इस लिए उसने अपनी टीकाका नाम रक्खा 'वीर-मार्तण्डी' अर्थात् वीर-मार्तण्डकी रची हुई। चामुण्डरायकी उक्त टीका अब अप्राप्य है, अन्य एक दूसरी टीकामें अब केवल इसका उल्लेख मात्र है, जिसका नाम है केशववर्णीया वृत्ति, (अर्थात् केशववर्णी रचित)। उसके प्रथम श्लोकमें लिखा है "मैं कर्नाटक-वृत्तिके आधारपर गोम्मटसारकी वृत्ति लिख रहा हुं।"[४८] गोम्मटसारपर एक और टीका है जिसका नाम है मन्द-प्रबोधिका, और जिसके टीकाकार हैं अभयचन्द्र।[४९] इन्हीं टीकाओंके आधारपर टोडरमल्लने हिन्दी भाषामें एक टीका लिखी है; जिसका वर्तमान समयके जैन-पंडितोंमें बहुत प्रचार है।

नेमिचन्द्रके गुरु।

गोम्मटसारमें अनेक मुनियोंके नाम दिये हैं जिनको नेमिचन्द्र आचार्य कहकर वन्दना करता है। वे नाम इस प्रकार हैं:—अभयनन्दि, इन्द्रनन्दि, वीरनन्दि,

---

४५ सिद्धं तुदयतडुग्गयणिम्मलवरणेमिचंदकरकालिया।
गुणरयणभूसणं बुहिमइवेला मरउ भुवणयलं॥
(गोम्मटसार, कर्मकांड, गाथा ९६७)

४६ 'श्रीमच्चामुण्डराय प्रश्नानुरूपं गोम्मटसारनामधेयं पञ्चसंग्रहशास्त्रं प्रारंभमानः।'
(अभयचन्द्रराचित गोम्मटसारवृत्ति)

४७ गोम्मटसुत्तलिहणे गोम्मटरायेण या कया देसी।
सो राओ चिरं कालं णामेण य वीरमत्तण्डी॥
(गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गाथा ९७२)

४८ नेमिचन्द्रं जिनं नत्वा सिद्धं श्रीज्ञानभूषणम्।
वृत्तिं गोम्मटसारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तितः॥
(केशववर्णीयावृत्ति)

४९ मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरम्।
टीका गोम्मटसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिकाम्॥
(अभयदेवकी वृत्ति)

और कनकनन्दि।[५०] वीरनन्दि रचित एक 'चन्द्रप्रभ चरितं' नामका ग्रन्थ है जिसके अंतमें लिखा है कि वे अभयनन्दिके शिष्य थे,[५१] और अभयनन्दि गुणनन्दिके शिष्य थे। गोम्मटसारके उल्लेखानुसार कनकनन्दि इन्द्रनन्दिके शिष्य थे।[५२] इससे नेमिचन्द्रकी गुरुपरंपराका टेबल इस प्रकार होता है।

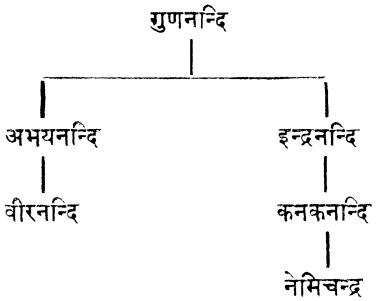

[यह लेख, आरासे जो द्रव्यसंग्रहकी इंग्रेजी आवृत्ति प्रकाशित हुई है, उसकी प्रस्तावनाका अविकल अनुवाद स्वरूप है, ऐसा पीछेसे उसके साथ मिलान करनेसे मालूम हुआ है।

—संपादक जै. सा. सं.]

---

५० "णमिऊण अभयणंदिं सुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं।
वरवीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं वोच्छं॥"

तथा—

"वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं।
सिरिकणयणंदिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं॥"

(गोम्मटसार, कर्मकाण्ड।)

५१ "बभूव भव्याम्बुजपद्मबन्धुः पतुर्मुनीनां गणभृत्समानः।
सदग्रणीर्देशिगणाग्रगण्यो गुणाकरः श्रीगुणनन्दिनामा॥
मुनिजननुतपादः प्रास्तमिथ्याप्रवादः
सकलगुणसमृद्धस्तस्य शिष्यः प्रसिद्धः।
अभवदभयनन्दी जैनधर्माभिनन्दी—
स्वमहिमजितसिन्धुर्भव्यलोकैकबन्धुः॥
भव्याम्भोजविबोधनोद्यतमतेर्भास्वत् समानत्विषः
शिष्यस्तस्य गुणाकरस्य सुधियः श्रीवीरनन्दीत्यभूत्।
स्वाधीनाखिलवाङ्मयस्य भुवनप्रख्यातकीर्तेः सतां
संसत्सु व्यजयन्त यस्य जयिनो वाचः कुतर्काङ्कुशाः॥"

[चन्द्रप्रभचरितप्रशस्तिः। श्लोकः १, ३, ४,]

५२ वरइंदणंदिगुरुणो पासे सोऊण सयलसिद्धंतं।
सिरिकणयणन्दिगुरुणा सत्तट्ठाणं समुद्दिट्ठं॥
(गोम्मटसार, कर्मसार, गा० ३८६)

जंबुद्दीव पण्णत्ति।

(ग्रंथ परिचय)

[ले. श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमी]

जैन साहित्यमें करणानुयोगके ग्रंथोंकी एक समय बहुत प्रधानता रही है। जिन ग्रंथोमें ऊर्ध्वलोक, अधोलोक, और मध्यलोकका; चारों गतियोंका, और यूगोंके परिवर्तन आदिका वर्णन रहता है, वे सब ग्रन्थ करणानुयोगके[1] अन्तर्गत समझे जाते हैं। आजकलकी भाषामें हम जैन धर्मके करणनुयोगको एक तरहसे भूगोल और खगोल शास्त्रकी समष्टि कह सकते हैं। दिगंबर और श्वेतांबर दोनोंही संप्रदायमें इस विषयके सैकडों ग्रन्थ हैं और उनमें अधिकांश बहुत प्राचीन हैं। इस विषयपर जैन लेखकोंने जितना अधिक लिखा है उतना शायदही संसारके किसी संप्रदायके लेखकोंने लिखा हो। परंरापरासे यह विश्वास चला आता है कि इन सब परोक्ष और दूरवर्ती क्षेत्रों या पदार्थोंका वर्णन साक्षात् सर्वज्ञ भगवानने अपनी दिव्य–ध्वनीमें किया था। जान पडता है कि इसी अटल श्रद्धाके कारण इस प्रकारके साहित्यकी इतनी अधिक वृद्धि हुई और हजारों वर्ष तक यह जैन धर्मके सर्वज्ञ प्रणीत होनेका अकाट्य प्रमाण समझा जाता रहा।

हिंदुओंके पौराणिक भूवर्णनको पढनेसे ऐसा मालूम होता है कि दो ढाई हजार बरस पहले भारतके प्रायः सभी संप्रदायवालोंका पृथ्वीके आकार–प्रकार और द्वीप–समुद्र–पर्वतादिके सम्बन्धमें करीब करीब इसी प्रकारकी धारणा थी, जिस प्रकार कि जैन धर्मके करणानुयोगमें पाई जाती है। पृथ्वी थालीके समान गोल और चपटी है, उसमें अनेक द्वीप और समुद्र हैं, द्वीपके बाद समुद्र और समुद्रके बाद द्वीप, इस प्रकार क्रम चला गया है; जम्बूद्वीपके बीचमें नाभीके तुल्य सुमेरु पर्वत है, इत्यादि। परन्तु पीछेसे विद्वान् लोगोंके अन्वेषण और निरीक्षणसे इस विषयका ज्ञान बढता गया, और आर्यभट्ट, भास्कराचार्य आदि महान् ज्योतिषिओंने तो पूर्वोक्त विचारोंको बिलकुलही बदल डाला। इसका फल यह हुआ कि इस विषयका जो प्रारंभिक हिन्दु साहित्य था उसका बढना तो दूर रहा, मगर वह धीरे धीरे क्षीण होता गया और इधर चूंकि जैन विद्वानोंका विश्वास था कि यह साक्षात् सर्वज्ञ प्रणीत है; अतएव वे इसे बढाते चले गये और नई खोजों तथा आविष्कारोंकी और ध्यान देनेकी उन्होंने आवश्यकताही नहीं समझी।

यह करणानुयोगका वर्णन केवल इस विषयके स्वतंत्र ग्रन्थोंमें ही नहीं है, प्रथमानुयोग या कथानुयोगादिके ग्रन्थोंमें भी इसने बहुत स्थान रोका है। दिगम्बर संप्रदायके महापुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराणादि प्रधान २ पुराणोंमें तथा अन्य चारित्र ग्रन्थोंमेंभी यह खूब विस्तारके साथ लिखा गया है। श्वेताम्बर संप्रदायके कथा ग्रन्थोंका भी यही हाल है। बल्कि इस संप्रदायके तो आगम ग्रंथोंमें भी इसका दौरदौरा है। भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति) आदि अंग और जम्बू

---

१ लोकालोकविभक्तेर्युगपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव यथामतिरवैति करणानुयोगं च ॥
—रत्नकरण्ड श्रा०

द्वीप प्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि उपांग ग्रन्थ करणानुयोगकेही वर्णनसे लबालब भरे हुए हैं ।

दिगम्बर संप्रदायमें इस विषयका सबसे प्राचीन और विशाल ग्रन्थ त्रिलोकप्रज्ञप्ति[1] है । इसका और लोकविभाग[2] ग्रन्थका परिचय हम जैनहितैषी (भाग १३—अंक १२) में दे चुके हैं । त्रैलोक्यसार नामक ग्रन्थ मूल प्राकृत और संस्कृत टीका सहित माणिकचन्द्र ग्रन्थमालामें प्रकाशित हो चुका है । आज इस लेखमें हम जम्बुद्दीवपण्णत्तिका परिचय देना चाहते हैं । इसी नामका और एक ग्रन्थ माथुरसंघान्वयी अमितगति आचार्यका भी है । अमितगतिने चन्द्रप्रज्ञप्ति और सार्द्धद्वयद्वीपप्रज्ञप्ति नामक ग्रन्थ भी इसी विषयपर लिखे हैं । परन्तु ये अभीतक हमारे देखनेमें नहीं आये । जम्बुद्दीवपण्णत्ति नामका एक ग्रन्थ श्वेताम्बर संप्रदायका भी है। इसका संकलन करनेवाले गणधर सुधर्मास्वामी कहे जाते हैं । यह छठा उपांग है और आगमग्रन्थोंकी शैलीसे लिखा हुआ है । इसकी श्लोक संख्या ४१४६ है । मुर्शिदाबादके राय धनपतिसिंह बहादुरके द्वारा यह वाचनाचार्य रामचन्द्र गणिकृत संस्कृत टीका और ऋषि चंद्रभाणजीकृत भाषा टीका सहित छप चुका है ।

दिगम्बरसम्प्रदायी जम्बुद्दीवपण्णत्तिकी दो प्रतियां हमने देखी हैं; एक स्वर्गीय दानवीर शेठ माणिकचन्द्रजीके चौपाटीके ग्रन्थभाण्डारमें है और दूसरी पूनेके भांडारकर ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टिटयूटमें । पहली प्रति सावन वदि १२ सं० १९६० की लिखी हुई है और इसे सेठजीने अजमेरसे लिखवाकर मँगवाई थी । दूसरी प्रतीपर उसके लिखे हुएका समय नहीं दिया है; परन्तु वह कुछ प्राचीन मालूम होती है !

यह ग्रन्थ प्राकृत भाषामें है और गाथाबद्ध है । इसमें १३ उद्देश या अध्याय, २४२७ गाथायें और भरत, ऐरावत, पूर्व विदेह, उत्तर विदेह, देवकुरु, उत्तरकुरु, लवणसमुद्र, ज्योतिषपटल आदिकावर्णन है । वर्णन त्रिलोकप्रज्ञप्तिकी अपेक्षा कुछ संक्षिप्त है ।

इसके कर्ताका नाम सिरिपउमणंदि या श्रीपद्मनान्दि है । वेह अपनी गुरुपरम्परा इस प्रकार बतलाते हैं—वीरनान्दि, बलनान्दि , और पद्मनान्दि । अपने लिए उन्होंने गुणगणकलित, त्रिदण्डरहित, त्रिशल्यपरिशुद्ध, त्रिगारवरहित, सिद्धान्तपारगामी, तप-नियम-योग-युक्त, ज्ञानदर्शनचारित्र्योद्युक्त और आरम्भकरणरहित विशेषण दिये हैं । अपने गुरूओंकी भी उन्होंने ज्ञान और तप आदिके विषयमें प्रशंसा की है । उन्होनें ऋषिविजय गुरुके निकट जिनवचन—विनिर्गत सुपरिशुद्ध आगमको श्रवण करके, उनहीके कृपामाहात्म्यसे इस ग्रन्थकी रचना की है । विजयगुरुका विशेष परिचय वे नहीं देते, इससे उनकी गुरुपरम्परापर कोई प्रकाश नहीं पडता । माधनन्दी नामके एक विख्यात आचार्य थे जो राग-द्वेष-मोहसे रहित, श्रुतसागरके पारगामी, प्रगल्भ मतिमान्, और तपःसंयम—संपन्न थे । उनके शिष्य सकलचन्द्र गुरु हुये, जो नव नियमों और शीलका पालन करते थे, गुणी थे और सिद्धान्त महोदधिमें जिन्होंने अपने पापोंको धोडाला था । इनके शिष्य नैन्दिगुरुके लिए—जो सम्यग्दर्शन—ज्ञान-चारित्र्यसम्पन्न थे—यह ग्रन्थ बनाया गया है ।

आचार्य पद्मनन्दि जिस उमय बारानगरमें थे, उस समय यह ग्रन्थ रचा गया है । इस नगरकी प्रशंसामें लिखा है कि उसमें वापिकायें, तालाब, और भुवन बहुत थे, भिन्नभिन्न प्रकारके लोगोंसे वह भरा हुआ था, बहुतही रम्य था, धनधान्यसे परिपूर्ण था, सम्यग्दृष्टिजनोंसे, मुनियोंके समूहसे, और जैन मंदिरोंसे विभूषित था । यह नगर पारियत्त (पारियात्र) नामक देशके

१ इसके कर्ता श्रीयतिवृषभाचार्य हैं, और इसकी रचना लगभग १००० वीरनिर्वाणसंवत् में हुई है ।

२ इसके कर्ता मुनि सर्वनन्दि हैं और यह शक संवत् ३८० में लिखा गया है । इस ग्रन्थका संस्कृत अनुवाद उपलब्ध है ।

१ पुराणसारके कर्ता श्रीचन्द्रमुनि—जो वि. सं. १०७० के करीब हुए हैं—अपने गुरूका नाम श्रीनान्दिलिखते हैं । वे इनसे पृथक् व्यक्ति जान पडते हैं । वसुनन्दि आचार्यकी गुरुपरम्परामे भी एक श्रीनन्दि है ।

अन्तर्गत था। बारानगरके प्रभु या राजाका नाम शक्ति या शान्ति था। वह सम्यग्दर्शनशुद्ध, व्रती, शीलसम्पन्न, दानी, जिनशासनवत्सल, वीर, गुणी, कलाकुशल और नरपतिसंपूजित था।

आचार्य हेमचन्द्रके कोषमें लिखा है—" उत्तरो विन्ध्यात्पारियात्रः "। अर्थात् विन्ध्याचलके उत्तरमें पारियात्र है। यह पारियात्र शब्द पर्वतवाची और प्रदेशवाची भी हैं। विन्ध्याचलकी पर्वतमालाका पश्चिम भाग जो नर्मदा तटसे शुरू होकर खंभाततक जाता है और उत्तर भाग जो अर्बलीकी पर्वतश्रेणीतक है पारियात्र कहलाता है। अतः पूर्वोक्त बारानगर इसी भूभागके अन्तर्गत होना चाहिए। राजपूतानेके कोटा राज्यमें एक बारा नामक कसबा है, जान पडता है कि यही बारानगर होगा। क्योंकि यह पारियात्र देशकी सीमाके भीतरही आता है। नन्दिसंघकी पट्टावलीके[२] अनुसार बारामें एक भट्टारकोंकी गद्दी रही है और उसमें वि. सं. (विक्रमराज्याभिषेक) ११४४ से १२०६ तकके १२ आचार्योंके नाम दिये हैं। इससे भी जान पडता है कि सम्भवतः वे सब आचार्य पद्मनन्दि या माघनन्दि की ही शिष्यपरम्परामें हुये होंगे और यही बारा—कोटा जम्बुद्वीप प्रज्ञप्तिके निर्मित होनेका स्थान होगा।

ज्ञानप्रबोध नामक भाषाग्रन्थमें (पद्यबद्ध) कुन्दकुदाचार्यकी कथा दी है। उसमें कुन्दकुन्दको इसी बारापुर या बाराके धनी कुन्दश्रेष्ठी और कुन्दलताका पुत्र बतलाया है। पाठकोंसे यह बात अज्ञात न होगी कि कुन्दकुन्दका एक नाम पद्मनन्दि भी है। जान पडता है कि जम्बुद्वीपप्रज्ञप्तिके कर्ता पद्मनन्दिकोही भ्रमवश कुन्दकुन्दाचार्य समझकर ज्ञानप्रबोधके कर्ता, कर्नाटकदेशके[३] कुन्दकुन्दका जन्म स्थान बारा[१] बतलानेका प्रयत्न कर बैठे हैं। पर इससे यह बात बहुत कुछ निश्चित हो जाती है कि मालवेके या कोटा राज्यके इसी बारामें यह ग्रन्थ निर्मित हुआ है।

शान्ति या शक्तिराजा जान पडता है कि कोई मामूली ठाकूर होगा। यद्यपि उसे नरपतिसंपूजित लिखा है, परन्तु साथ ही ' बारानगरस्य प्रभुः ' कहा है। यदि कोई बडा राजा या मांडलिक आदि होता, तो वह किसी प्रदेश या प्रान्तका राजा बतलाया जाता। राजाका वंश आदिभी नहीं बतलाया है, जिससे राजपुतानेके इतिहासोंमे उसका पता लगाया जा सके और उससे पद्मनन्दि आचार्यका निश्चित समय मालूम किया जा सके।

पद्मनन्दि नामके अनेक आचार्य और भट्टारक हो गये हैं। उनमें पद्मनन्दिपंचविंशतिकाके कर्ता बहुत प्रसिद्ध हैं। वे अपने गुरूका नाम[२] वीरनन्दि लिखते हैं और प्रज्ञप्तिके कर्ताके गुरु बलनन्दि हैं। इस लिये ये दोनों एक नहीं हो सकते। इसके सिवाय 'पचविंशतिका'[३] अपेक्षाकृत अर्वाचीन ग्रन्थ है। हमारे अनुमानसे वह १३ वीं शताब्दीसे पहलेका नहीं हो सकता। उस समय दिगम्बर मुनि[४] जिनमन्दिरोमें रहने लगे थे और यह उपदेश दिया जाने लगा था कि बिम्बाफलके पत्तेके भी बराबर मन्दिर और जोके भी बराबर जिनप्रतिमा बनवानेवालेके पुण्यका वर्णन नहीं किया जा सकता।

---

१. पूनेकी प्रतीमें सन्ति (शान्ति) और बम्बईकी प्रतीमें सत्ति (शक्ति) पाठ है।

२. देखो जैनसिद्धान्तभास्कर किरण ४; और इन्डियन ॲन्टिक्वेरी २० वी जिल्द।

३ कर्नाटक देशके कोण्डकुण्डनामक ग्रामके निवासी होनेके कारण इनका नाम कोण्डकुण्ड हुआ था। कुन्दकुन्द उसीका श्रुतिमधुर संस्कृत रूप है।

१ सुना है कि बारामें पद्मनान्दिकी कोई निषिद्याभी है।

२ यत्पादपङ्कजरोभिरपि प्रमाणलक्ष्मैः शिरस्यमलबोधकलावतारः। भव्यात्मनां भवति तत्क्षणमेव मोक्षं स श्रीगुरुर्दिशतु मे मुनिवीरनन्दी॥

३ यह ग्रन्थ काशीमें छप चुका है। इसमें अनेक विषयोंके २५ प्रकरण हैं।

४ १. सम्प्रत्यत्र कलौ काले जिनगेहे मुनिस्थितिः।
धर्मस्य दानमित्येषां श्रावका मूलकारणम्॥
उपासकाचार प्रकरण।

२. बिम्बादलोन्नति यवोन्नतिमेव मक्त्या—

प्रज्ञप्तीके कर्ता पद्मनन्दि कब हुए हैं, यह बतानेके लिये अभीतक हमें कोई पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है। परन्तु हमारा अनुमान है कि यह ग्रन्थ विक्रमकी दसवीं शताब्दीके बादका तो नहीं है, पहलेका भले ही हो। क्यों कि—

१) ग्रन्थकी रचनाशैली बिलकुल त्रिलोक प्रज्ञप्तिके सदृश है और भाषा भी अपेक्षाकृत प्राचीन मालूम होती है।

२) नववीं दसवीं शताब्दीके बादके ग्रन्थकर्ता अपनी गुरुपरम्परा बतलाते समय संघ और गण गच्छादिका परिचय अवश्य देते हैं। पर इस ग्रन्थमें किसी संघ या गण गच्छादिका नाम नहीं है। मंगराजकविके शिलालेखके[1] अनुसार अकलंकभट्टके बाद देव, नन्दि, सेन, और सिंह इन चार संघोंकी स्थापना हुई है। अतः हमारी समझमें यह ग्रन्थ अकलङ्क देवसे पहलेका होना चाहिए। अकलङ्क देवका समय विक्रमकी ८ वीं शताब्दी है।

३) ऐसा मालूम होता है कि इस ग्रन्थसे पहले इस विषयका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ नहीं था। पद्मनन्दि मुनिने श्रीविजयगुरुके निकट आचार्य परम्परासे चला आया हुआ यह विषय सुनकर लिखा है। किसी एक या अनेक ग्रथोंके आधार आदीसे नहीं। इस विषयमें नीचे लिखी हुई गाथायें अच्छी तरह विचारने योग्य हैं।

ते वंदिऊण सिरसा वोच्छामि जहाकमेण जिणदिट्ठं।
आयरियपरम्परया पण्णत्तिं दविजलधीणं ॥ ६ ॥

× × × × ×

आयरियपरम्परया सायरदीवाण तह य पण्णत्ती।
संखेवेण समत्थं वोच्छामि जहाणु पुव्वीए ॥ १८ ॥

× × × × ×

.....रिसिविजयगुरुत्ति विक्खाओ ॥ १४४ ॥
सोऊण तस्स पासे जिणवयण विणिग्गयं अमदभूदं।
रइदं किंचुद्देसे अत्थपदं तहव लद्धूणम् ॥ १४५ ॥

यदि यह अनुमान ठीक हो कि दिगम्बर सम्प्रदायमें इस विषयका यह पहला ग्रन्थ है तो अवश्यही यह पुराना है। और आश्चर्य नहीं जो त्रिलोकप्रज्ञप्तिके रचे जाने के[1] समयमें अथवा उससे कुछ पीछे लिखा गया हो। इस ग्रन्थमें 'उक्तं च' कह कर अन्य गाथायें या श्लोकादि भी उद्धृत नहीं हैं। इससे भी इसे प्राचीन माननेकी इच्छा होती है।

यह ग्रन्थ जिन नन्दिगुरुके लिये बनाया गया है, उनके दादागुरुका नाम **माघानन्दि** था, और वे बहुतही विख्यात, श्रुतसागरपारगामी, तपःसंयमसम्पन्न, तथा प्रगल्भबुद्धि थे। इन्द्रनन्दीने अपने[2] श्रुतावतारमें लिखा है कि वीरनीर्वाणसे ६८३ वर्ष बाद तक अंगज्ञानकी प्रवृत्ति रही। उनके बाद अर्हद्बलि आचार्य हुए और उनके कुछ समय बाद (तत्कालही नहीं) माघनन्दि आचार्य हुए। आश्चर्य नहीं जो नन्दिगुरुके दादागुरु यही माघनन्दि हों। उन्हें जो विशेषण दिये गये हैं उससेभी मालूम होता है कि वे कोई सामान्य आचार्य न होंगे। इन्द्रनन्दिके कथनक्रमसे माघनन्दीका समय वीरनिर्वाणसंवत् ८०० लगभग तक आसकता है। और इस हिसाबसे नन्दिगुरु और पद्मनन्दीका समय वीरनिर्वाणकी ९ वीं शताब्दि माना जा सकता है। पर इस विषयमें अधिक जोर नहीं दिया जा सकता कि इन्द्रनन्दिकथित माघनन्दि और यह माघनन्दि एकही होंगे।

इस ग्रन्थमें भगवान् महावीरके बादकी आचार्य-परम्पराके विषयमें जो कुछ लिखा है उसका आशय इस प्रकार है।

विपुलाचलके ऊंचे शिखरपर विराजमान **वर्धमान**

ये कारयन्ति जिनसद्म जिनाकृतिं वा।
पुण्यं तदीयमिह वागपि नैव शक्ता—
स्तोतुं परस्य किमु कारयितुर्द्वयस्य ॥ २२ ॥

१. देखो श्रवण बेल्गोला इन्स्किप्शनका १०८ वां शिलालेख और जैनसिद्धान्त भास्कर किरण ३।

१ वीरनिर्वाण संवत १००० के लगभग।

२ यह ग्रन्थ माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके 'तत्त्वानुशासनादि-संग्रह' नामक १३ वे अंकमें छप चुका है।

जिनेन्द्रने गौतममुनीको प्रमाणसंयुक्त अर्थ कहा। उन्होंने लोहार्यको, लोहार्यने—जिनका नाम सुधर्मा भी है—जम्बुस्वामीको कहा। ये तीनों गणधर, गुणसमग्र, और निर्मल चारज्ञानके धारी थे। ये केवल ज्ञानको प्राप्त करके मोक्षको प्राप्त हुए। इनको मैं नमस्कार करता हूं। इनके वाद नन्दि, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु ये पांच पुरुषश्रेष्ठ चौदह पूर्व और बारह अंगके धारक हुए। इनके बाद क्रमसे विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जय, नाग, सिद्धार्थ, धृतिषेण, विजय, बुद्धिल, गंगदेव और धर्मसेन, ये दस पूर्वधारी हुए। फिर नक्षत्र, यशः पाल, पाण्डु, ध्रुवसेन, और कंस ये पांच ग्यारह अंगके धारक हुए। इनके वाद सुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु और अन्तिम लोह (लोहाचार्य) ये आचारांगके धारक हुए।

इस परम्परासे एक यह विशेष बात मालूम हुई कि सुधर्मास्वामीका दूसरा नाम लोहार्य भी था। लोहार्य नामके एक और भी आचार्य हुए हैं जो आचारांगधारी थे। उन्हें दूसरे लोहाचार्य समझना चाहिए। श्रवण वेल्गोलकी चन्द्रगुप्तवस्तीके [1]शिलालेखके—' **महावीरसवितरि परिनिर्वृते भगवत्परमर्षि—गौतमगणधरसाक्षाच्छिष्य—लोहार्य—जम्बु—××**" आदि वाक्यमें जो लोहार्यको गौतमगणधरका साक्षात् शिष्य लिक्खा है, उसका भी इससे खुलासा हो जाता है। अभीतक इस बातका स्पष्ट उल्लेख कहीं भी नहीं मिला था कि सुधर्मास्वामीका दूसरा नाम लोहार्यभी था।

१ देखो, जैनसिद्धान्तभास्कर किरण १.

इस परम्परामें और त्रिलोकप्रज्ञप्तिकी परम्परामें कोई अन्तर नहीं है। आचार्य गुणभद्रकृत उत्तर-पुराण, ब्रह्म हेमचन्द्रकृत श्रुतस्कन्ध, और इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतारमें भी बिलकुल यही परम्परा न्दी हुई है। परन्तु हरिवंशपुराण, नन्दिसंघ—बलात्कार गण—सरस्वतीगच्छकी प्राकृत पट्टावली, [3]सेनगणकी पट्टावली और [4]काष्टासंघकी पट्टावलीमें नन्दिकी जगह विष्णु नाम मिलता है। इसके सिवाय नन्दिसंघकी पूर्वोक्त पट्टावलीमें और काष्टासंघकी पट्टावलीमें यशोबाहुके स्थानमें भद्रबाहु नाम है। जान पडता है नन्दीका नामान्तर विष्णु और यशोबाहुका भद्रबाहु भी होगा।

लोहाचार्य तककी यह गुरुपरम्परा दिगम्बर संप्रदायमें एकसी मानी जाती है। इसमें कोई मतभेद नहीं है। परन्तु यह बडे आश्चर्यकी बात है कि श्वेताम्बर संप्रदायमें जम्बूस्वामीके बाद जो परम्परा मानी जाती है, वह इससे सर्वथा भिन्न है। यद्यपि ये दोनों संप्रदाय वि० सं० १३६ के लगभग पृथक् हुए कहे जाते हैं। यदि यह समय सही है तो आचारांगधारियों तककी परम्परा दोनों संप्रदायोंमें एकसी होनी चाहिए थी। या तो यह समय ही ठीक नहीं है—जम्बूस्वामीके बादही यह सम्प्रदाय भेद हो गया होगा, या फिर दोनोंमेंसे किसी एकने अथवा दोनोंने ही पीछेसे भूलमाल जानेपर इन्हें गढा होगा। इतिहासके विद्यार्थिओंके लिये यह विषय खास तोरसे विचार करने योग्य है।

१. यह ग्रन्थभी तत्त्वानुशासनादि-संग्रहमें छपा है।
२-३-४ —देखो जैनसिद्धान्तभास्कर, किरण ४।

परिशिष्ट--

जंबुद्दीवपण्णत्तिका आदि और अंतका कुछ भाग नमूनेके तौर पर यहां पर दिया जाता है ।

देवासुरिंदमहिदे दसद्धरुवूण कम्मपरिहीणे । केवलणाणालोए सद्धम्मुवएसदे अरुहे ॥ १ ॥
अट्ठविहकम्मरहिए अट्ठगुणसमण्णिदे महावीरे । लोयग्ग-तिलयभूदे सासयसुहसंट्ठिदे सिद्धे ॥ २ ॥
पंचाचारसमग्गे पंचेंदियनिज्जिदे विगयमोहे । पंचमहव्वयनिलए पंचमगइनायगायरिए ॥ ३ ॥
परसमयतिमिरदलणे परमागमदेसए उवज्झाए । परमगुणरयणणिवहे परमागमभाविदे वीरे ॥ ४ ॥
णाणागुणतवणिरए ससमयसब्भावगहियपरमत्थे । बहुविहजोगज्जुत्ते जे लोए सव्वसाहुगणे ॥ ५ ॥
ते वंदिदूण सिरसा वोच्छामि जहा कमेण जिणदिट्ठं । आयरियपरंपरया पण्णत्तिं दीवजलधीणं ॥ ६ ॥

\+ + + + + +

विउलगिरितुंगसिहरे जिणिंदइंदेण वड्ढमाणेणं । गोदममुणिस्स कहिदं पमाणणयसंजुदं अत्थं ॥ ९ ॥
तेणवि लोहज्जस्स य लोहज्जेण य सुधम्मणामेण । गणधरसुधम्मणा खलु जंबूणामस्स णिद्दिट्ठं ॥ १० ॥
चदुरमलबुद्धिसहिदे तिन्नेदे गणधरे गुणसमग्गे । केवलणाणरईवे सिद्धिपत्ते णमंसामि ॥ ११ ॥
णंदी य णंदीमित्तो अवराजिदमुणिवरो महातेओ । गोवद्धणो महप्पा महागुणो भद्दबाहू य ॥ १२ ॥
पंचेदे पुरिसवरा चउदसपुव्वी हवंति णायव्वा । बारसअंगधरा खलु वीराजिणिंदस्स णायव्वा ॥ १३ ॥
तहय विसाखायरिओ पोट्ठिल्लो खत्तियओ य जयणामो । णागो सिद्धत्थो विय धिदिसेणो विजय णामोय ॥
बुद्धिल्ल-गंगदेवो धम्मसेणो य होइ पच्छिमओ । पारंपरेण एदे दसपुव्वधरा समक्खादा ॥ १५ ॥
णक्खत्तो जसपालो पंडु-ध्रुवसेण-कंस-आयरिओ । एयारस अंगधरा पंचजणा होंति णिद्दिट्ठा ॥ १६ ॥
णामेण सुभद्दमुणी जसभद्दो तहय होइ जसबाहु । आयारधरा णेया अपच्छिमो लोहणामो य ॥१७॥
आयरियपरंपरया सायरदीवाण तहय पण्णत्तिं । संखेवेण समत्थं वोच्छामि जहाणुपुव्वीए ॥ १८ ॥

\+ + + + + +

परमेट्ठिभासिदत्थं उड्ढाधोतिरियलोयसंबंधं । जंबूदीवणिबद्धं पुव्वावरदोसपरिहीणं ॥ १४० ॥
गणधरदेवेण पुणो अत्थं लद्धूण गंथिदं गंथं । अक्खरपदसंखेज्जं अणंतसत्थेहि संहुलं ॥ १४१ ॥
आयरियपरंपरेण य गंथत्थं चेव आगयं सम्मं । उवसंहरीय लिहियं समासदो इहय णायव्वं ॥ १४२ ॥
णाणाणरवइमहिदो विगयममुसंगभंग-उम्मुक्को । सम्मद्दंसणसुद्धो संजय-तव-सील-संपुण्णो ॥ १४३ ॥
जिणवर-वयण-विणिग्गयपरमागमदेसओ महासत्तो । सिरिनिलओ गुणसहिओ रिसिविजय गुरु त्ति विक्खाओ ।
सोऊण तस्स पासे जिणवयणविणिग्गयं अमदभूदं । रइदं किंचुद्देसे अत्थपदं वह व लद्धूणं ॥ १४५ ॥

\+ + + + + +

अहतिरिय-उड्ढलोएसु तेसु जे होंति बहुवियप्पा दु । सिरिविजयस्स महप्पा ते सव्वे वण्णिदा किंचि ॥ १५३ ॥
गयरायदोसमोहो सुदसायरपारओ मइ-पगब्भो । तवसंजमसंपण्णो विक्खाओ माघनंदिगुरू ॥ १५४ ॥
तस्सेव य वरसिस्सो सिद्धंतमहोदहिम्मि धुयकलुसो । णवणियमसीलकलिदो गुणउत्तो सयलचंद गुरू १५५

१ 'एयारसगधारी' भी पाठ है. २ 'भउ' पाठ द्वितीय पुस्तक में है । ३ 'किंचिद्देसे' भी है ।

तस्सेव य वरसिस्सो णिम्मलवरणाणचरणसंजुत्तो । सम्मद्दंसणसुद्धो सिरिणंदिगुरु त्ति विक्खाओ ॥१५६॥
तस्स णिमित्तं लिहियं जंबूदीवस्स तहय पण्णत्ती । जो पढइ सुणइ एदं सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥ १५७ ॥
पंचमहव्वयसुद्धो दंसणसुद्धो य णाणसंजुत्तो । संजमतवगुणसहिदो रागादिविवज्जिदो धीरो ॥ १५८ ॥
पंचाचारसमग्गो छज्जीवदयावरो विगदमोहो । हरिस-विसाय-विहूणो णामेण य वीरणंदित्ति ॥१५९॥
तस्सेव य वरसिस्सो सुत्तत्थवियक्खणो मइप्पगब्भो । परपरिवादणियत्तो णिस्संगो सव्वसंगेसु ॥ १६० ॥
सम्मत्तअभिगदमणो णाणेण तह दंसणे चरित्ते य।परतंतिणियत्तमणो बलणंदि गुरु त्ति विक्खाओ॥१६१॥
तस्स य गुणगणकलिदो तिदंडरहियो तिसल्लपरिसुद्धो । तिण्णवि गारवरहियो सिस्सो सिद्धंतगयपारो।१६२॥
तवणियमजोगजुत्तो उज्जुत्तो णाणदंसणचरित्ते।आरंभकरण रहियो णामेण य पउमणंदीत्ति ॥ १६३ ॥
सिरिगुरुविजयसयासे सोऊणं आगमं सुपरिसुद्धं । मुणि--पउमणंदिणा खलु लिहियं एयं समासेण ॥१६४॥
सम्मद्दंसणसुद्धो कदवदकम्मो सुसीलसंपण्णो ॥ अणवरयदाणसीलो जिणसासणवच्छलो वीरो ॥१६५॥
णाणागुणगणकलिओ णरवइसंपूजिओ कलाकुसलो ॥ वाराणयरस्स पहू णरुत्तमो खत्तिभूपालो ॥ १६६ ॥
पोक्खराणि—वावि—पउरे बहुभवणविहूसिए परमरम्मे । णाणाजणसंकिण्णे धनधन्नसमाउले दिव्वे ॥ १६६ ॥
सम्मादिट्ठिजणोघे मुणिगणणिवहेहि मंडिए रम्मे । देसम्मि पारियत्ते जिणभवणविहूसिए दिव्वे ॥ १६८ ॥
जंबूदीवस्स तहा पण्णत्ती बहुपयत्थसंजुत्तं (त्ता) । लिहियं संखेवेणं वाराए अच्छमाणेण ॥ १६९ ॥
छद्मत्थेण विरइयं जं किंपि हवेज्ज पवयणविरुद्धं । सोद्धं तु सुगीदत्था तं पवयण वच्छलत्ताए ॥ १७० ॥

× × × × ×

विउध-वइ-मउड-मणिगण-कर-सलिलसुधोयचारु पयकमलं । वरपउमणंदि णमियं वीर जिणिंदं णमंसामि ॥१७६॥

इय जंबूदीवपण्णत्तिसंगहे पमाणपरिच्छेदो णाम तेरमी उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥

४ 'रइयं' पाठ पूनेकी प्रतिमें है ।

गिरनारपर्वत—पंचमी टोंक.

अर्हम्

॥ नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय ॥

जै न सा हि त्य सं शो ध क

खंड १] गुजराती लेख विभाग [अंक ४

स प्त भं गी

अथवा

सत्-असत्-तत्त्वमूलक प्रमाण पद्धति

[ले० अध्यापक रसिकलाल छोटालाल परीख. बी. ए.]

जैन दर्शन अथवा आर्हत दर्शनना तत्त्वज्ञाननो मूल पायो सप्तभंगी उपर रचाएलो छे. सप्तभंगी एटले वस्तु तत्त्वना स्वरूपनो संपूर्ण विचार प्रदर्शित करवा माटे योजेली सात प्रकारनी वाक्यरचना. ते आ प्रमाणे छे:—

(१)	[वस्तु]	कथंचित्	छे. *
(२)	,,	,,	नथी.
(३)	,,	,,	छे अने नथी.
(४)	,,	,,	अवाच्य छे.
(५)	,,	,,	छे अने अवाच्य छे.
(६)	,,	,,	नथी अने अवाच्य छे.
(७)	,,	,,	छे,नथी,अने अवाच्य छे.

* संस्कृत वाक्यो आ प्रमाणे:—

(१) स्यादस्ति (४) स्यादवक्तव्यम्

(२) स्यान्नास्ति (५) स्यादस्ति अवक्तव्यम् च

(३) स्यादस्ति नास्ति (६) स्यान्नास्ति अवक्तव्यम् च

(७) स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यं च

आ प्रमाणे सप्तभंगीनी वाक्यरचना छे. सामान्य वाचकने बहु विचित्र, निरुपयोगी अने हास्यजनक लागे तेवुं तेनु बाह्य स्वरूप देखाय छे. परंतु गंभीर विचार-पूर्वक जो ते संबंधी ऊहापोह करवामां आवे तो तेमां रहेलां तत्त्वो सर्वसाधारण अने सर्वव्यापी छे एम स्पष्ट जणाई आवशे. ए विचार पद्धतिमां सत्—असत् अनेक धर्मवत्त्व, अने एक वाक्य एक समये एक धर्मनो निर्देश ज करी शके; ए तत्त्वोनो अन्तर्भाव थएलो छे. ए तत्त्वोए आ विशिष्ट स्वरूप क्यारे अने कई परिस्थितिमां धारण कर्युं तेनो निर्णय करवो हजी सुलभ नथी. परंतु जैन न्यायशास्त्रना अध्ययन उपरथी तेनो विकास अने प्रयोजन तो आपणे चोक्कस जाणी शकीए तेम छीए.

जैनोना आ विशिष्ट सिद्धान्तना इतिहास विषे हालमां हूं आटलुं जणावी शकुं छुं:—उत्तराध्ययन सूत्रमां एनो निर्देश नथी. भद्रबाहुनी आवश्यक सूत्रनी निर्युक्तिमां

पण एनो उल्लेख दुर्लभ छे; तत्त्वार्थाधिगम सूत्रमां पण ते उपलब्ध नथी. पण आना जेवी देखाती चर्चा भगवती सूत्रमां मळी आवे छे. नयचक्रना कर्ता मल्लवादी " नय " ना सिद्धान्त माटे आगम प्रमाण आपती वखते भगवती सूत्रना केटलांक वाक्यो टांके छे. गौतम गणधर भगवान महावीरने पूछे छे ' भगवन् ! आत्मा ज्ञान [मय] छे के नहि ? ' स्वामी समझावे छे 'गोतम ! नियमे करीने ज्ञान [मय] छे. कारण के, ज्ञाननी आत्मा विना वृत्ति देखाती नथी; पण आत्मा ज्ञान पण होय अने अज्ञान पण होय (आया पुण सिय णाणे सिय अन्नाणे) "[1] अहिं आ ' सिय ' शब्द ए ' स्यात् ' नुं प्राकृत रूप छे, ते लक्षमां राखवा जेवुं छे. आ उपरथी जणाय छे के, आ सिद्धांतना बीज जो के जुना आगमोमां मळी आवे ए शक्य छे; छतां आ विशिष्ट स्वरूप तो तेना करतां अर्वाचीन छे. आ सिद्धांत एना आ स्वरूपमां तो सौथी पहेलो कुंदकुंदाचार्यना पंचास्तिकायमां अने प्रवचनसारमां मळी आवे छे. दिगंबरो कुंदकुंदाचार्यने घणा प्राचीन गणे छे[2] तेमनी परंपरा प्रमाणे तेओ विक्रमनी पहेली शताब्दीमां थएला छे. ते पछीना तो जैन न्यायना—श्वेतांबर अने दिगंबर बंनेना—प्रत्येक ग्रंथमां ए सिद्धान्तनी स्फुट चर्चा मळी आवे छे अने तेना विषयमां दरेकनो समान मत छे.

आ सिद्धान्तनी प्रमाणनी दृष्टिए चर्चा कर्या पहेलां तेमां वस्तुस्वरूपना जे तत्त्वो रहेलां छे तेनी चर्चा कर्याथी विषय समजवामां वधारे सरळता थशे.

सौ कोई सहेलाईथी समजी शके छे के वस्तु सत्स्वरूप छे. पण वस्तु असत्स्वरूप छे अने वळी एक साथे ते सदसद्रूप छे, एम सांभाळीने तो घणा डाह्या माणसो आश्चर्य पाम्या वगर रहे नहि. ज्यारे एलीयाना मुसाफरे थीएटेटसने कह्युं के " अमुक अर्थमां " असत् छे, अने " सत् " नथी[3] " त्यारे तेना मनमां स्थिति एवीज थई हशे. एने जो एम कहेवामां आव्युं होत के " सदसद्रूपं वस्त्वङ्गीकर्तव्यम् " त्यारे पण तेना मनमां एवोज भाव थात. परंतु असत् अथवा अभाव शब्दनो अर्थ जरा वधारे उंडाण साथे समजवामां आवे तो आ बाबत समजवी सहेली थई पडे. प्लेटो ना सोफीस्ट नामना संवादमां एलीयानो मुसाफर कहे छे के—"ज्यारे आपणे असत् विषे बोलीए छीए त्यारे, हुं धारुं छुं के, आपणे सत्थी विरुद्ध एवी कोई वस्तु विषे बोलता नथी पण आपणे फक्त अन्यना अर्थमां वापरीए छीए."

न्यायदर्शनमां चार प्रकारना अभाव मानेला छे—१) प्रागभाव, २) प्रध्वंसाभाव. ३) अत्यन्ताभाव अने ४) इतरेतराभाव. आमां पहेला त्रण वस्तुना स्वरूपने लगता छे ज्यारे इतरेतराभाव ए अन्य वस्तुनी अपेक्षाए तेनो अभाव छे. आ तत्त्व वस्तुओने तेमना विशिष्ट स्वरूप अर्पे छे अने आ अर्थमां जैन आचार्यो कहे छे के वस्तु सदसद्रूप छे; सत्—स्वभावनी अपेक्षाए; अने असत्—अन्यवस्तुनी अपेक्षाए. आ सिद्धि करवा जैन आचार्यो जेवी रीते चर्चा करे छे अने जे प्रमाणो आपे छे ते जाणवा जेवा छे. तेथी तेनुं संक्षिप्त स्वरूप हुं अहिंया आपुं छुं.

---

१ सर्वनयानां जिनप्रवचनस्यैव निबन्धनत्वात् । किमस्य निबन्धनमिति चेत्—उच्यते—निबन्धनं चास्य ' आया भन्ते नाणे अन्नाणे ' इति स्वामी गौतमस्वामिना पृष्टो व्याकरोति ' गोदमा णाणे नियमा । ' अतो ज्ञानं नियमादात्मनि । ज्ञानस्यान्यव्यतिरेकेण वृत्त्यदर्शनात् ।

—' आया पुण सिय णाणे सिय अन्नाणे । '

—नयचक्र, द्रव्यार्थस्यादस्ति प्रकरणने अंते. आ उतारामाटे हुं पूज्य मुनिश्रीजिनविजयजीनो आभारी छुं.

२ पंचास्तिकाय, अधिकार १, गाथा ८, १४. प्रवचनसार, स्कन्ध २, गाथा २२—२३.

३. "……In certain sense not-being is, and that being, on the other hand, is not." पा. ३७० वा.४ The Dialogues of Plato— (त्रिजी आवृत्ति.)

४ " When we speak of not-being, we speak, I suppose not of something opposed to being, but only different, " पा. ३६१ वा. ४. Dialogues of Plato.

अष्टसहस्रीना कर्ता विद्यानन्दी कहे छे के " तेमां ' सत्त्व ' वस्तु धर्म छे; तेनो अस्वीकार करतां गधेडाना सींगडानी माफक वस्तु वस्तुत्व विनानी थई जाय छे; ते प्रमाणे कथंचित् ' असत्त्व ' छे, कारण के स्वरूपा-दिथी जेम सत्त्व अनिष्ट नथी तेम पर रूपादिथी पण अनिष्ट न होय तो प्रतिनियत स्वरूपना अभावथी वस्तु प्रतिनियमनो विरोध थाय तेथी[५] (एम मानवुं जोईए के स्वरूपनी अपेक्षाए जेम सत् इष्ट छे तेम पररूपादिनी अपेक्षाए नथी.)

अनेकान्तजयपताकाना कर्ता हरिभद्र सूरि कहे छे के " ते (वस्तु) स्वद्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-रूपे सत् छे, अने-परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भावरूपे ' असत् ' छे. तेथी ते 'सत् अने ' असत् ' छे. नहिं तो तेना अभावनो प्रसंग आवे (घटादिरूप वस्तुनो अभाव थाय) एटले के—जो ते जेम स्वद्रव्य क्षेत्र काल भाव रूपे ' सत् ' छे, तेम परद्रव्यादिरूपे पण होय, तो ते घट वस्तुज न थाय. कारणके ते परद्रव्यादिरूपे पण, तेनाथी अन्य पोताना स्वरूपनी माफक, हयात छे. ते प्रमाणे जो जेम परद्रव्य क्षेत्र काल भावरूपे ते ' असत् ' छे तेम स्वद्रव्यादिरूपे पण ' असत् ' होय, तो एम पण गधेडाना सींगडानी माफक घट वस्तुज न थाय. आ प्रमाणे तेनो (वस्तुनो) अभाव थाय तेथी ते सदसद्रूप ज कबुल करवी जोईए."[६]

ते ज ग्रंथमां अन्य स्थाने हरिभद्रसूरि जणावे छे के ' न हि स्वपरसत्ताभावाभावरूपतां विहाय वस्तुनो विशिष्टतैव सम्भवति । ' स्वसत्तानो भाव अने परसत्तानो अभाव न होय तो वस्तुनी विशिष्टतानो ज सम्भव नथी" प्रमेयरत्नकोषमां चन्द्रप्रभसूरि आवुं ज तत्त्व दर्शावे छे. ते कहे छे के जो आ तत्त्व स्वीकारवामां न आवे तो एक ज घटादि वस्तु सर्वत्र व्यापि अने तेथी एक वस्तु सर्व पदार्थ थवानो दोष नीपजे.[७]

जोसेफ ' Introduction to Logic ' नामना पोताना ग्रंथमां पण आज मुद्दानी वात करे छे. ते कहे छे के " निषेधात्मक वचनेन आपणे वस्तुओनो वास्तविक व्यवच्छेद दर्शावनार गणवुं जोईए.....अमुक धर्मोनी अने अस्तित्वना अमुक प्रकारोनी परस्पर व्यवच्छेदकता ए निषेधमां रहेलुं वास्तविक सत्य छे. जो एम न होय तो दरेक वस्तु दरेक अन्य वस्तु थई जाय; एटले के अस्तित्वना आ विविधप्रकारना जेटली विध्यात्मक थई जाय. "[८]

हरिभद्र सूरि आ प्रमाणे वस्तु तत्त्वनी दृष्टिए ऊहापोह करी तेनी सदसदात्मकता सिद्ध करी ज्ञान तत्त्वनी दृष्टिए पण एज बाबत सिद्ध करे छे. ' स्वपररूपानुवृत्तव्यावृत्तरूपमेव तद्वस्त्वनुभूयते । '—स्वरूपे अनुवृत्त अने पररूपे व्यावृत्त ज अमुक वस्तु अनुभवाय छे. टुंकामां एमना कारणो आ प्रमाणे छे. ' प्रथम तो संवेदन वस्तु छे. अने वस्तु उभय रूप छे, माटे ते पण उभय रूप छे.' आनो अर्थ आपणे एम ज करवो जोईए के अमुक संवेदन स्वरूपे सत् छे अने अन्य संवेदन दृष्टिए असत् छे. एटले आ पण वस्तु तत्त्व विचारमां ज समाई जाय छे. पण

५ तत्र सत्त्वं वस्तुधर्मः, तदनुपगमे वस्तुनो वस्तुत्वायोगात्, खरविषाणादिवत् । तथा कथंचिदसत्त्वं, स्वरूपादिभिरिव पररूपादिभिरपि वस्तुनोऽसत्त्वानिष्टौ प्रतिनियतस्वरूपाभावाद् वस्तुप्रति नियमविरोधात् । अष्टसहस्री पृ. १२६

६ यतस्तत् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण सद्—वर्तते, परद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण चासत् । ततश्च सच्चासच्च भवति । अन्यथा तदभावप्रसंगात् । (घटादिरूपस्य वस्तुनोऽभावप्रसंगात्) इत्यादि। अनेकान्तजयपताका, पृ० ३०

७ तदा यथा स्वद्रव्याद्यपेक्षया सत्त्वं तथा परद्रव्याद्यपेक्षयापि सत्त्वं, तथा तदेव घटादि वस्तु सर्वत्र प्राप्नोति । ततश्च सर्वपदार्थापत्तिलक्षणं दूषणमापद्येत । प्रमेयरत्नकोष,० पृ०

८. " Hence we must accept the negative Judgment as expressing the real limitation of things.....The reciprocal exclusivness of certain attributes and modes of being is the real truth underlying negation But for that every thing would be every thing else; that is as positive as these several modes of themselves. " पृष्ठ १७२–१७३.

बाह्य विषयनी दृष्टिए पण वस्तु-अनुरूप-संवेदन पण उभय रूप ज छे. "आगल रहेलो घट पोताना भाव अने इतरना अभावना अध्यवसाय एटले के निर्णय रूपे ज ओळखाय छे.....सदसद्रूप वस्तुनुं केवल सदात्मक ज्ञान खरूं ज्ञान नथी. कारण के ते सम्पूर्ण अर्थनुं प्रतिभासन करतुं नथी. जेम नरसिंहना रूपनुं ज्ञान केवल सिंहना ज्ञानथी पूरूं थतुं नथी. अने आ प्रमाणे उभयनो प्रतिभास करतुं ज्ञान न थाय एम नथी, कारण के संवित्ति तदन्य-विविक्तताथी विशिष्ट छे (एटले के अन्य पदार्थथी जे भिन्नता, तेनाथी विशिष्ट छे) अने तदन्य विविक्तता एटले अभावे. "

उपर जे अवतरणो आप्यां छे ते उपरथी जैनाचार्योनो वस्तुस्वरूपविषयक ख्याल स्पष्ट थाय छे. प्लेटोना शब्दोमां ते नीचे प्रमाणे मूकी शकाय "त्यारे अभाव गति अने अन्य पदार्थ वर्गमां छे; कारण के अन्यत्व ते सर्वमां व्याप्ती प्रत्येकने अस्तित्वथी अन्य करे छे. एटले के ' असत् ' करे छे. अने तेथी आ रीते आपणे ते बधा विषे आस्तिकताथी कही शकीए के ते बधा ' असत् ' छे अने वली तेओ अस्तित्व वाळा छे माटे एम कही शकाय के ते सत् छे."[१०]

आ प्रमाणे वस्तुना सदसदात्मक स्वभावनी समजणथी सप्तभङ्गीनुं एक तत्त्व सुगम थाय छे. तेमां बीजुं जे तत्त्व रहेलुं छे ते अनेकान्ततानुं छे. म्हारा समजवा प्रमाणे आ तत्त्व जैन तत्त्वज्ञानना इतिहासमां ' सदसत् ' ना करतां वधारे प्राचीन हशे अने जैन मार्गनुं तेना उत्पत्तिना समयमां विशिष्ट लक्षण हशे. विक्रम पूर्वेनी पांचमी अने छठ्ठी शताब्दिमां आर्यावर्तमां अनेक मतो अने सम्प्रदायो उत्पन्न थया हता; ते समए आ अनेक अने केटलीक वार विरुद्ध तत्त्वोने प्रत्येकनी दृष्टिए

९.....सदसद्रूपस्य वस्तुनो व्यवस्थापितत्वात् । संवेदनस्यापि च वस्तुत्वात् । तथा युक्तिसिद्धश्च । तथाहि संवेदनं पुरोऽवस्थित घटादौ तदभावेतराभावाध्यव सायरूपमेवोपजायते । .....न च सदसद्रूपे वस्तुनि सन्मात्रप्रातभीस्वये तत्त्वतस्तत्प्रतिभास्येव, संपूर्णार्थाप्रतिभासनात्, नरसिंह-सिंहसंवेदनवत् । न चैतदुभयप्रतिभासि न संवेद्यते तदन्यविविक्तताविशिष्टस्यैव संवित्तेः । तदन्यावेविक्तताचाभावः । अनेकांतजयपताका. पृ. ६३.

आ साथे जहॉन केर्डना नीचेना विचारो सरखावा जेवा छे:—

Nor, again, can you reach this unity merely by predication or affirmation, by asserting, that is, of each part or member that it is and what it is. On the contrary, in order to apprehend it, with your thought of what it is you must in seperably connect that also of what it is not. You cannot determine the particular number or organ save by reference to that which is its limit or negation . It does not exist in and by itself, but in and through what is other than itself..... It can exist only as it denies or gives up any seperate self-identical being and life–only as it finds its life in the larger life and being of the whole. You cannot apprehend its true nature under the category of ' Being alone, for at every moment of its existence it at once is and is not; it is in giving up or losing itself; its true being is in ceasing to be. Its notion includes negation as well as affirmation. " An Introduction to the Philosophi of Religion. P. 219.

१०. Then not-being necessarily exists in the case of motion and of every class; for the nature of the other entering into them all, makes each of them other than being and so non-existent; and therefore, of, all of them, in like manner, we may truly say that they are not; and again in as much as they partake of being, that they are and are existent पा. ३९१. Dialogues of Plato. Vol. IV.

जोई तेनो समन्वय जैन दर्शने अनेकांतता द्वारा कर्यो होय एम मानवाने वांधो लागतो नथी.*

आ तत्त्व समजवुं बहुज सहेलुं छे; अने जैन तत्त्वज्ञान ते वडे व्याप्त थएलुं छे. प्रमितिनी दृष्टीए कहीए तो एक वस्तुविषे अनेक धर्मोनो आरोप करवो शक्य छे, वस्तुनी दृष्टीए कहीए तो वस्तु अनेक गुणमय छे अने अनेक पर्यायो धारण करे छे. वस्तु स्वभावना आ तत्त्वना स्वीकारथी कोई पण प्रकारना सदैकान्तिक के असदैकान्तिक मतथी आ सिद्धान्त स्पष्ट रीते जुदो पडी जाय छे.

आपणे जोई गया के जैनाचार्यो वस्तुनो स्वभाव सदसदात्मक सिद्ध करे छे. आ सिद्धान्तमांथी सामान्य अने विशेषनो सिद्धान्त सहेलाई थी निपजावी शकाय छे. कारण के वस्तुना सामान्य गुणो ' सन्मूलक ' अने विशेष गुणो 'असन्मूलक' छे. (असत् शब्दनो अर्थ उपर जणाव्या प्रमाणेज लेवानो) शाथी जे,' वस्तु अमुक विशिष्ट वस्तु बीजी वस्तुओ नथी तेना वडे छे. एटले के विशिष्टतानो आधार ' असत् ' उपर छे, अने तेथी जैनाचार्यो कहे छे के वस्तु सामान्य विशेष मय छे. ' सत्कार्य ' अने ' असत्कार्य ' नो सिद्धान्त पण आमांथी ज निकली शके छे. अमुक वस्तु अथवा कार्य पोताना कारणमां ऊर्ध्व सामान्य पूरतुं तो छे ज. अने पोताना विशेष वडे पोताना कारणमां नथी. तेथी कारणमां कार्य सत् अने असत् बन्ने छे. आवां अनेक द्वन्द्वो जैनाचार्यो घटावे छे अने चन्द्रप्रभ सूरिना शब्दोमां कहीए तो " वयं खलु जैनेन्द्राः एकं वस्तु सप्रतिपक्षानेकधर्मरूपाधिकरणं ' इत्याचक्ष्महे । " अमे जैनेन्द्रो एक वस्तु प्रतिपक्ष युक्त अनेक धर्मोनुं अधिकरण छे एम मानीए छीए. " [११]

ग्रीक फीलसुफ प्लेटोनी, वस्तुनी सदसदात्मकता विषेनी मान्यता आपणे पहेलां जोई गया. अनेकान्तता विषे पण तेनी आने मलतीज मान्यता छे अने ते आ प्रमाणे छेः—

" एलीयानो मुसाफर—अनेक वस्तु विषे आपणे शी रीते अनेक धर्मोनो आरोप करीए छीए, ते बाबत आपणे विचार करीए.

थीएटेटस—उदाहरण आपो.

मुसाफर—उदाहरण तरीके हूं एम कहेवा मांगु छूं के एक माणस विषे आपणे अनेक नामो वडे व्यवहार करीए छीए—एटले के तेने विषे रंग, रूप, परिमाण, गुण अने दोषादिनो आरोप करीए छीए. आमां अने बीजा सेंकडो उदाहरणोमां आपणे तेने माणस कहीए छीए एटलुंज नहीं पण तेने ' ते भलो छे ' अने एवा अनेक गुणवालो छे एम कहीए छीए. अने ए ज रीते हर कोई वस्तु जेने आपणे शरूआतमां एक धारता होईए छीए तेने आपणे अनेक कहीए छीए अने अनेक नामो वडे तेनो व्यवहार करीए छीए.

थीएटेटस—बराबर छे.[१२]

---

*प्रारंभना समयमां एम ज्ञेय के न होय तो पण सिद्धसेन दिवाकरना न्यायावतार उपर टीका करनार सिद्धर्षि आ रीते अनेकान्तवाद ने समजावे छे. लेखक.

११ सरखावो—' अनेकात्मकं वस्तु गोचरः सर्वसंविदाम् । ' न्यायावतार.—वळी ' तंदेवमनेकधर्मपरीतार्थग्राहिका बुद्धिः प्रमाणम् । न्या टीका.

१२ जुओ.—Dialogues of Plato-Vol. iv. पा. ३८३ (आवृत्ति त्रीजी.)

Str. Let us enquire, then, how we come to predicate many names of the same thing.

Theart. Give an example.

Str. I mean that we speak of man, for example under many names—that we attribute to him colours and forms and magnitudes and virtues and vices, in all of which enstances and in ten thousand others we not only speak of him as a man, but also as good, and having numberless other attributes; and in the same way anything else which we originally supposed to be one is describ-

अहिंयां एक बाबत विषे सावधान रहेवानी जरूर छे. अनेकान्तताने अनिर्धारणात्मकता के अनिश्चितस्वरूपता गणवानी भूल थई जवानो संभव छे. म्हारा समजवा प्रमाणे जैनाचार्यो कदी पण कहेता नथी के वस्तुनुं स्वरूप अनिश्चित के अनिर्धारणात्मक छे. शंकराचार्ये स्याद्वादना खंडनमां आज भूल करी छे. डॉ. बेलवेलकर जेवा विद्वाने पण आ भूलनुं अनुसरण कर्युं छे. जैनाचार्यो फक्त एटलुं ज कहे छे के वस्तु अनेक धर्मात्मक छे; अने एक वखते एक ज धर्मनो निर्देश थई शके. तेथी एक वाक्यमां वस्तु स्वरूपनुं संपूर्ण कथन करवुं अशक्य छे. वस्तु स्वरूप निश्चित ज छे. पण साधारण माणस अने सर्वज्ञमां ए अन्तर छे के सर्वज्ञ सर्व पदार्थो ने संपूर्ण रीते एना विविध स्वरूपमां एक साथे जाणे छे ज्यारे साधारण माणस एक वस्तुने पण पूर्ण रीते जाणी शकतो नथी.[13] पण वस्तुनुं आ स्वरूप ध्यानमां रहे तेथी तेओए वाक्य रचना एवी करी छे के उपर उपरथी जोनारने एम लागे के आ बधां वाक्यो संशयमूलक छे. पण वस्तुस्थिति एम नथी ए अकलंकदेवना तत्त्वार्थसूत्रउपरना राजवार्तिकना नीचेना वार्त्तिकोथी स्पष्ट थाय छे.

" संशयहेतुरिति चेन्न विशेषलक्षणोपलब्धेः (सू. ६ वा. ५)

तेना उपर टीका आ प्रमाणे छे.

इह प्रत्यक्षाद् विशेषाप्रत्यक्षाद् विशेषस्मृतेश्च संशयः । .....नच तद्वदनेकान्तवादे विशेषानुपलब्धिर्यतः स्वपराद्यादेशवशीकृता विशेषा उक्ता । व्यक्ताः प्रत्यर्थमुपलभ्यन्ते ।

'जो कोई एम कहे के सप्तभंगी संशयनो हेतु छे तो तेम नथी.—शाथी जे विशेष लक्षणनुं ज्ञान थाय छे " अहिंयां [अमुक] प्रत्यक्ष थवाथी [जेना बडे वस्तु निश्चय थाय ते] विशेष न देखावाथी अने विशेषोनी स्मृति थवाथी संशय थाय छे.....ते प्रमाणे अनेकान्तवादमां विशेषनी उपलब्धि थति नथी एम नथी; शाथी जे स्वादेश अने परादेश ने वशेकरी विशेषो प्रत्येक अर्थमां कहेला अथवा सूचवेला (व्यक्त ?) जणाई आवे छे. आगल कहे छे.—

" विरोधाभावात् संशयाभावः " । सू. ६, वा. ५

[विशेषोमां] विरोध न होवाथी संशयनो अभाव छे "

" अर्पणाभेदादविरोधः पितापुत्रादिसंबंधवत् । सू. ६ वा. १०

" अर्पणाना भेदथी (एटले के दृष्टिबिन्दुना भेदथी) विरोध रहेतो नथी. एक ज माणसने विषे पिता पुत्र विगेरेना संबंधनी माफक (जेम एकज माणसने जुदा जुदा संबंधनी जुदी जुदी दृष्टि अथवा अर्पणा वडे पिता पुत्र भाई इत्यादि कहेवामां विरोध नथी तेम स्व अने परना दृष्टि बिन्दुथी सत् अने असत् कहेवामां विरोध नथी.)

आ प्रमाणे आपणे सप्तभङ्गीना सिद्धान्तना आधार रूप बे तत्त्वो जोया. आ तत्त्व विचारमांथी बे बाबत स्पष्ट थई आवे छे:—एक तो सप्तभंगीनी वाक्यरचनामां ' सत् ' अने ' असत् ' नो शो अर्थ छे ते, अने बीजी ' स्यात् ' शब्द प्रत्येक वाक्यना प्रारंभमां केम मुकवमां आवे छे ते.

स्यात् ए सर्वथात्वनो निषेधक अने अनेकान्तता द्योतक कथंचित् अर्थमां वपरातुं अव्यय छे.[14] जे तत्त्वज्ञो वस्तुने अनेक धर्मात्मक मानता होय अने एम मानता होय के तेना निरूपणमां वपरातां वाक्योमां एक साथे एक ज बाबतनुं निरूपण थई शके; तेओ अनेकान्तता सूचक आवो कोई शब्द मुंके ए स्वाभाविक छे. जो के एम कर्याथी ते वाक्यो संशयात्मक देखाय छे अने वांचनारने भ्रमणामां नाखे छे. परंतु एम

ed as many, and under many names.

Theart. That is true.

१३ प्रवचनसार, १—५२

१४ अत्र सर्वथात्वनिषेधकोऽनेकान्तिकताद्योतकः कथंचिदर्थे स्याच्छब्दो निपातः । पंचास्तिकायटीका पृ० ३०.

कर्यानो मोटो फायदो ए छे के माणस कदाग्रही न थई शके.

सप्तभङ्गीनुं वधारे पृथक्करण कर्या पहेलां शंकराचार्ये तेनुं जे खंडन कर्युं छे तेनो टुंकामां उल्लेख करी जईए. सौथी प्रथम तो जणाववानुं ए छे के तेमणे पूर्व पक्षनुं कथन पूरेपूरू कर्यूं नथी. सप्तभङ्गीनुं स्यादस्ति स्यान्नास्ति इत्यादिथी वर्णन करती वखते तेमणे '**स्वरूपेण**' अने '**पररूपेण**' ए अगत्यना शब्दो छोडी दीधा छे. जो ए ध्यानमां होय तो ते छोडवामां वांधो नथी. पण शंकराचार्ये ए बाबत उपर लक्ष्य ज नथी आप्युं. अने एमनुं आखुं खंडन आ भूल उपर रचायेलुं छे. एमनो पहलो वांधो ए छे के "एक धर्ममां एक साथे असत्त्वादि विरुद्ध धर्मनो समावेश सम्भवे नहिं. शीतोष्णनी माफक."[१५]

जो शंकराचार्ये स्वरूपेण अने पररूपेण ए शब्दो ध्यानमां लीधा होत अने सत् अने असत् शब्दने पूर्व पक्षीना अर्थमां समजवा प्रयास कर्यो होत तो तेमने समजात के 'सत्' अने 'असत्' एटला बधा विरोधी नथी. बीजो वांधो ए छे के जेनुं स्वरूप अनिर्धारित छे ते ज्ञान संशयनी माफक प्रमाण न थाय.[१६] आ अने बीजा वांधाओ अनेकान्तताने अनिर्धारणात्मक गणवानी अने संशयमूलक गणवानी भूलने परिणामे छे. तेनो रदियो अकलङ्कदेवना उपर आपेला वार्तिकमां आवी जाय छे. त्रीजो वांधो उपर जणाव्युं ते प्रमाणे अनेकान्तताने जे अनिर्धारणात्मक गणवामां आवे छे ते छे. चोथो ए छे के ज्यारे वस्तुने वक्तव्य कहो छो त्यारे वळी शी रीते ते अवक्तव्य कहेवाय. आ केवल शब्दखेल छे.

शंकराचार्यना मत अने जैनमत बच्चे विरोध बन्नेना वस्तुस्वभावना ख्यालमां छे. शंकराचार्य जगत्ने एक मात्र ब्रह्ममय माननार छे ज्यारे जैन अनेकान्त तत्त्वनुं प्रतिपादन करे छे. तेथी शंकराचार्ये जो आ दृष्टिए खंडन करवा प्रयास कर्यो होत तो ते वधारे योग्य कहेवात. तेमणे करेलुं खंडन तो भूल अने भ्रमणा उपर रचायेलुं छे.

हवे सप्तभंगीनो प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए विचार करीए अने आ विचारो आ विशिष्ट रूपमां कया प्रयोजनथी मुकाया ते पण जोईए.

प्रथम प्रश्न ए छे के प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए साते भंगो आवश्यक छे? एटले के वस्तुस्वभाव नक्की करवा माटे सातेनी आवश्यकता छे? आ बाबत तो स्पष्ट छे के एक विधान एक वखते एक ज निर्देश करी शके. विध्यात्मक के प्रतिषेधात्मक. सघला विध्यात्मक वाक्योनो एक वर्ग अने निषेधात्मकनो एक वर्ग करी आपणे विध्यात्मक वर्गने विधि-विधान कहीए अने निषेधात्मक वर्गने निषेध-विधान कहीए. हवे प्रश्न ए छे के वस्तु समजवा माटे आवा केटला विधानोनी जरूर छे. स्वाभाविक रीते प्रथम वस्तु पोते शुं छे तेनो निर्णय करीए. ए दृष्टिए 'स्यादस्ति' वाक्य बराबर छे. पछी वस्तु शुं नथी ते नक्की करीए अने ते दृष्टिए 'स्यान्नास्ति' भङ्ग बराबर छे. आ बन्नेमांथी नीपजतुं वस्तुस्वरूप '**स्यादस्ति नास्ति**' ते द्विवाक्यात्मक भंगथी दर्शावी शकाय. आ रीते प्रथम त्रण भंगोनी जरूर तो 'स्यादस्ति स्वरूपेण घटः; स्यान्नास्ति पररूपेण घटः; अने स्यादस्ति 'नास्ति क्रमेण'थी समजी शकाय. चोथो भङ्ग 'स्यादवक्तव्य' छे. आ भाषा तत्त्वनी दृष्टिए समजी शकाय तेम छे. एक वखते एक ज वाक्यमां विधि अने प्रतिषेध थई शके नहिं. तेथी ते अपेक्षा समये वस्तु अवक्तव्य कहेवाय.[१७]

पण सप्तभंगीना निरूपणनुं बीजुं पण एक दृष्टिबिन्दु छे अने ते ए छे के सप्तभंगी अमुक प्रकारनी वाद पद्धतिमांथी उत्पन्न थएली छे अने आथी सप्तभंगीनुं प्रयोजन विशेष समजाय छे. आ साते भंगो सात प्रकारना प्रश्नोना

---

१५ न ह्येकस्मिन् धर्मिणि युगपत्सदसत्त्वादिविरुद्धधर्मसमावेशः संभवति शीतोष्णवत्। शांकरभाष्य, २-२-२१,२३.

१६ अनिर्धारितरूपं ज्ञानं संशयज्ञानवत् प्रमाणमेव न स्यात्।

१७ अतस्तदुभयात्मकोऽसौ क्रमेण तच्छब्दवाच्यतामवस्कन्दन् स्याद् घटश्चाघटश्चेत्युच्यते। यदि तदुभयात्मकं वस्तु घट इत्येवाच्येत, इतरात्मासंग्रहादतत्त्वमेव स्यात्। अथाघट एव इत्युच्येत घटात्मानुपादनादनृतमेव स्यान्न वस्तु तत्त्वदेशेति। न चान्यः शब्दस्तदुभयात्मकावस्थतत्त्वाभिधायी विद्यतेऽतोऽसौ घटो वचनगोचरातीतत्वात 'स्यादवक्तव्य' इत्युच्यते। राजवार्तिक पृ—६.

उत्तर रूपे छे. आ बाबत अकलंकदेवे आपेला तेना लक्षण-थी स्पष्ट थाय छे. "प्रश्नने लईने एक वस्तुमां अविरोध थी विधि प्रतिषेधनी कल्पना ते सप्तभंगी" (अविरोध-थी एटले दृष्ट अने इष्ट प्रमाण अविरुद्ध). जे माणसे सप्तभंगीनी प्रथम रचना करी हशे तेनो उद्देश ए शोधी कढाडवानो हशे के पुनरुक्ति कर्या विना माणस अमुक वस्तु स्वभाव विषे केटला प्रश्नो पूछी शके. (अथवा तो आपणे एम मानीए के सप्तभंगीनो विकाश धीमे धीमे थयो तो जे माणसे छेल्लां त्रणा वाक्यो उमेर्या हशे तेनो उद्देश तो आवो ज कोई होवो जोईए.) दाखला तरीके कोई एम पूछे के 'स्यादवक्तव्य' ने आठमा भंग तरीके केम स्वीकार्यो नथी ? तो एनो एवो जवाब अपाय के ज्यारे वस्तु विषे स्यादस्ति नास्ति कहेवामां आवे छे त्यारे ते वक्तव्य थाय छे. तेथी तेने आठमा भंग तरीके स्वीकारवानी जरूर नथी. आ रीते एक बाजुथी सप्तभंगी सत् अने असत् विषे उत्पन्न थता सर्व प्रश्नो-नो उत्तर आपी शके छे अने बीजी बाजुए केवल सत् असत् माननारनुं खंडन करे छे. छतांए मने एम लागे छे के प्रमाण पद्धतिनी दृष्टिए तो प्रथम त्रण ज भंग आवश्यक छे; चोथाने भाषा–दृष्टिए स्थान छे पण छेल्ला त्रणनो तत्त्वज्ञाननी दृष्टिए खास उपयोग जणातो नथी.[१८]

हवे जैन प्रमाण शास्त्रमां सप्तभंगीनुं स्थान क्यां छे ते आपणे जाणवुं जोईए. श्रीवादिदेवसूरि प्रमाणना बे भाग करे छे प्रत्यक्ष अने परोक्ष. परोक्षना पांच विभाग करे छे–स्मरण, प्रत्यभिज्ञा, तर्क, अनुमान अने आगम. आगमनुं बीजुं नाम शब्द प्रमाण छे. आप्त वचनमांथी निपजतुं ज्ञान शब्द प्रमाण. ते वचन, वर्ण, पद अने वाक्योनुं बनेलुं होय छे. शब्द स्वशक्तिथी अने समयथी ज्ञान पेदा करे छे. आ पछी वचननो सप्तभंगी साथे संबंध दर्शावे छे. " दरेक जग्याए आ शब्द विधिप्रतिषेध वडे पोताना अर्थने जणावतो सप्तभंगी ने अनुसरे छे."[१९] आ रीते आपणे जोई शकीए छीए के सप्तभंगीनो आगम अथवा शब्दप्रमाणमां समावेश थाय छे.

आ निबंधमां जेनुं विवेचन कर्युं छे तेने प्रमाण सप्तभंगी कहे छे. आने मळती ज बीजी एक सप्तभंगी छे ते नय सप्तभंगी कहेवाय छे. प्रमाण अने नयमां ए तफावत छे के प्रमाण वस्तुना सकल स्वरूपनुं निरूपण करे छे, ज्यारे नय वस्तुना अंश मात्रनुं करे छे.[२०] पण एनी विशेष चर्चा आ निबंधमां थई शके एम नथी तेने माटे बीजो निबंध लखवानी जरूर रहे छे. इत्यलम्.

॥ ॐ शांतिः ॥

---

१८ 'सप्तविध एव तत्र प्रश्नः कुत इति चेत्, सप्तविधजिज्ञासा-घटनात्। सापि सप्तधा कुत इति चेत्, सप्तधा संशयोत्पत्तेः। सप्त-धैवसंशयः कथमिति चेत्, तद्विषयवस्तुधर्मसप्तविधत्वात्।
अष्टसहस्री, पृ. १२५

१९ तत् (प्रमाणं) द्विभेदं प्रत्यक्षं परोक्षं च। स्मरण-प्रत्यभिज्ञा तर्का–नुमाना–गमभेदतस्तत्पंच प्रकारकम्।

२० आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसंवेदनमागमः। वर्णपदवाक्यात्मकं वच नम्। स्वाभाविकसामर्थ्यसमयाभ्यामर्थबोधनं शब्दः। सर्वत्रायं ध्वनिर्विधिप्रतिषेधाभ्यां स्वार्थमभिदधानः सप्तभंगीमनुगच्छति, ननु चोदाहृता नयसप्तभंगी, प्रमाणसप्तभंगीतस्तु तस्याः किंकृतो विशेष इति चेत् सकलविकलादेशकृत इति ब्रूमः। विकलादेश-स्वभावा हि नयसप्तभंगी वस्त्वंशमात्रप्ररूपकत्वात्। सकलादेश-स्वभावा तु प्रमाण–सप्तभंगी यथावद्वस्तु प्ररूपकत्वात्।
प्रमेयकमलमार्तंड, पृ. २०६.

बे नवा क्षेत्रादेश पट्टक

१

गया अंकमां जे क्षेत्रादेश पट्टकोनी नकलो आपी छे तेमां सौथी जूनो पट्टक वि. सं. १७७४ नी सालनो छे. परंतु पाछळथी एक तेनाथी पण १०० वर्ष जेटलो वधारे जुनो पट्टक मळी आव्यो छे जे अहिं आपवामां आवे छे. ए पट्टक तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य विजयसेन सूरि तरफथी संवत् १६६७ नी सालमां लखाएलो छे. आ पट्टक फक्त मेवातदेश माटेनो छे. आगरा अने तेनी आसपासना प्रदेशने ते वखते मेवात देशना नामथी ओळखवामां आवतो हतो. संवत् १६६७ नी सालमां जे यतियो ए प्रदेशमां रहेता—विचरता हता तेमनां चातुर्मास स्थळो जाहेर करवा माटे आ पट्टक लखायो हतो; गुजरात के राजपूताना आदि बीजा देशो माटे नथी. तेथी आमां फक्त १७ यतियोनां नामोज आपवामां आव्यां छे. नहीं तो विजयसेन सूरिनो यति समुदाय तो लगभग बे हजार जेटली संख्या वाळो हतो. आनी लंबाई ५ इंच अने पहोळाई ३¾ इं. छे. पंक्ति कुल २० छे.

पट्टकनी नकल

ई०।। श्रीहीरविजय सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः। संवत् १६६७ वर्षे श्रीविजयसेनसूरिभिर्ज्येष्ठस्थित्यादेशपट्टो लिख्यते ।। मेवात देशे ।।

उपाध्याय श्री विवेक हर्ष गं० आगरुं १ पार २

उपाध्याय श्री भानुचंद्र ग० आगरामध्ये

पं. जयविजय ग. पं. विजयहंस सत्क सांगानेर १

पं. हर्षविजयगणि नरायणुं १

पं. भीमविजय ग. पं. यसविजय गणि सत्क मालपुर १

पं. महानंद गणि अलवर १

पं. धनचंद्र गणि रयवाडी तथा दिल्ली १

पं. जयविजय ग. उ. श्री कल्याणविजय ग. सत्क शमाणुं १

पं. कमलविजय गणि हंसार १ महिम २

ऋ. पद्मकुशल गणि अभिरामाबाद १

ऋ. रत्नविमल गणि मांडलि १

ऋ. हर्षविमल गणि अणिआरुं १

ऋ. लाभकुशल पर्वतसर १

ऋ. मुनि सौभाग्य ग. सेरपुर १

ऋ. शिवविजय ग. टुंक १

ऋ. कनकसागर मसूदुं १

ऋ. रविसागर ग. टोडा. १

ऋ. भोजविमल सिरवाडी १

२

हालमां, पं. श्रीगुलाबविजयजीना शास्त्रसंग्रहमांथी एक बीजो पट्टक मळी आव्यो छे जे आ नीचे आपवामां आवे छे. आ पट्टक सं. १८४५ नी सालनो छे. ते वखते आचार्यपद उपर विजयजिनेन्द्र सूरि हता.

॥ श्री ॥

।।ॐ०।। श्रीविजयधर्म्म सूरीश्वर गुरुभ्यो नमः

सं. १८४५ वर्षे भ। श्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वर गुर्जर देशे ज्येष्ठस्थित्या देश पट्टको लिख्यते ॥

पं. सौभाग्यविजय ग। श्रीजीसपरिकरा सूरति १ नवसारी २ वसरावी ३ बोराकठोर ४

उ. श्रीखुशालविजय ग। वृद्धश्रीजी स। पं. कल्याणचंद्र पं. खूषाल स। बिरमगाम १ भोजया २ गोरीआ ३ ठा ४ अस्मत् पार्श्वे ।

पं. हितविजय ग। पं. हंसविजय ग। पं. सुजाण स। खंभात १ धारापरो २ वडोदरा ३

पं. न्यानविजय । पं. नेम स । पाटण १ कुणगर २

पं. जयविजय ग । पं. दीप स । राजनगर १ शरषेज २ रायपर ३ प्रोसायो ४ नवोवास ५

पं. भक्तिवि. । पं. कांति स । पं. कृष्णवि । पं. राज स । पं फतेवि । पं. कुसल स । राधनपूर १ कमालपूर२ मोलोट ३ सोनेथ ४ धंधाणा ५

पं. कल्याणवि । पं. प्रसिद्ध स । पं. जीन वि । पं. पद्म स । चाणसमो १ कंबोई सोलंकीनी २

पं. मोहनवि । पं. नय स । पं. पुन्यवि । पं. भक्ति स। वीसनगर १ कडा २ जासका ३ गोठुया ४

पं. उत्तमविजय । पं. सुमति स । रानेर ठा ४ अस्मत् पार्श्वे

पं. मुक्तिवि । वृद्धश्रीजी स । पं. डुंगरवि । पं. मुक्ति स पादरु १

पं. रत्नकुशल । पं. विनित स । पं. न्यान पं. रत्न स । वाराही १ धोलकडूं २ कोरडा ३ झझाम ४

पं. मनरूपसागर । पं. अनंत स । मालवदेशे

पं. कनकविजय । पं. शुभ स । पं. राजेंद्र । पं. कनक स । मियांगाम १

पं. अमृतविजय ग । पं. विवेक स । भरुयच्च १ देजबारुं २

पं. घुशालविजय । पं. जिन स । सोरठदेशे

पं. घुशालविजय पं. ऋद्धि स । धागधरु १ सायला २ पालीयाद ३ मडढा ४

पं. राजवर्धन । पं. सकल स । पं. विवेकवर्धन । पं. मेघ स । वढवाण १ पाणसाणा २

पं. सुबुद्धिविजय पं. रुप स । हेवदपूर १

पं. विनीतविजय । पं. नेम स । पाटडी १

पं. हीराचंद्र । पं. गुलाब स । पं. धीर्यचंद्र । पं. हीर स । ईडर १ षेराडू २ सीपर ३ प्रांतेज ४

पं. पद्मविजय । पं. उत्तम स । राधनपुर मध्ये

पं. हस्तिविजय ग । पं. कुशल स । विजापूर

पं. अमीविजय ग । पं. सुख स । थिराद १ कोटबाबली २

पं. हंसविजय ग । पं. गज स । मालण १

पं. लालविजय ग । पं. रत्न स । लींबडी १ अंचेवालीउं २

पं. माणिक्यविजय पं. मोहन स । इलोल १

पं. गुलालविजय ग । पं. राम स । सावली १

पं. लक्ष्मीविजय ग । पं. राम स । जामला १

पं. हेमविजय ग । पं. कपूर स । पंचासर १

पं. घुश्यालविजय । पं. राज स । वडावली १ आंकरा २

पं. जिनविजय ग । पं. जय स । दमण १ उडपाड २ अगासी ३

पं. शांतिविजय ग । पं. रंग स । मावड १ गोठडा २

पं. भाग्यविजय ग । पं. श्रीजी स । वेंड १

पं. उमेदविजय ग । पं. वृद्धि स । आगलोड १

पं. पद्मविजय ग । पं. उमेद स । मेंसाणा १ साभेतरा २

पं. लालविजय ग । पं. माणिक्य स । चीलोडो १ बदरघु २

पं. हर्षविजय ग । पं. मोहन स । वडनगर १ उंमता २

पं. हस्तिविजय ग । पं. रंग स । राणकपूर १

पं. ज्ञानविजय ग । पं. लक्ष्मी स. । साचोर १

पं. हस्तिविजय ग । पं. चतुर स । मातर १ वटादरुं २

पं. सुबुद्धिविजय ग । पं. जीव स । शमी १ दूधषा २ अणवरपूर ३ राफु ४

पं. वृद्धिविजय ग । पं. देव स । पं. तेजविजय । पं. रंग स । कंबोइ कोलीनी १ आंगणवाडू २

पं. घुशालविजय ग । पं. कपूर स । केसरडी १

पं. कस्तूरविजय ग । पं. मान स । इटोलू

पं. वृद्धिविजय पं. सुजाण स । पं. रुपविजय पं. घुष्याल स डभोइ १ कारवण २

पं. रत्नविजय । पं. न्यांन स । लांघणोज १

पं. माणिक्यविजय । पं. मोहन स । पाटण मध्ये

पं. बुद्धिविजय ग । पं. मोहन स । वावि १ माढकुं २

पं. विवेकविजय । पं. ऋद्धि स । रानेर १ उंबरी २

पं. रविविजय । पं. केसर स । भांभेर १ तेंरवाडु २

पं. मोहनविजय । पं. रत्न स । वसु १ मेंता २

पं. गौतमविजय । पं धन स । दसाडो १ कलाडो २
पं. अमृतविजय पं. प्रताप स । गणाद्वहिः
पं. प्रतापचंद्र । पं. दान स । पं. मावचंद्र । पं. दोलत स। कुकुआव १
पं. जयविजय । पं. कांति स । कटोसण १ डांगरवुं २
पं. गुलाबविजय पं. कुंवर स । झीणोट १
पं. दयाचंद्र पं. हर्ष स । खेड ब्रह्मानी १
पं. नायक विजय पं. विनय स । दक्षण देशे
पं. माणिक्यविजय पं. विनित स । कुंवर १ मुंजपर २
पं. चंद्रविजय पं. उत्तमविजय स । राजनगरमध्ये.
पं. हर्षविजय पं. जस स । धोलकेा १ मोरीयेा २
पं ऋद्धि सागर पं. षिमेंद्र स । छठीयाडो ।
पं. ज्योतिविजय पं. रत्न स । व्यारा १ बुहार २
पं. हीरविजय पं. भाण स । चंदूर १ लोलारू २
पं. कांतिविजय पं. नायक स । पेटलाद १ वसोर २ वासज ३
पं. प्रेमविजय पं भाण स । देवाडभू १
पं. अमृतवि । पं. चंद्र स । पं. तेजवि । पं. भाण स । छनायार १ देकावाडू २
पं. माणिक्यविजय पं. सुबुद्धि स । कोठ १
पं. जीवणविजय पं. लाल स । गांभू १ सरदारपूर २
पं. प्रेमवि । पं. दर्शन स । पं. रुपवि । पं. प्रेम स । वागड देशे
पं. कांतिविजय पं. दर्शन स. । वखतापुर १ वलासणु २
पं. षीमविजय पं. षुष्याल स । लींच १ पीपलदलकरवटीउं २
पं. देवविजय पं. दीप स । कडी १
पं. विनयचंद्र पं. भक्ति स । वडगाम १ धोतासकलाणा २
पं. हेमविजय पं. भीम स । काकर १
पं. कपूरवि. । पं. देवविजय १ पं. अमी स । पालणपुर १ वगदा २ मयादर ३ दांतावसही ४
पं. नायकविजय पं. गुलाल स । द्यावड १
पं. वसंतविजय पं. माव स । डभोई १
पं. नित्यविजय पं. भाण स । गोधावी १
पं. रत्नविजय पं. प्रेम स । नडियाद १
पं. गोविंदविजय पं. हेम स । लेंणप १ मोरवाडू २
पं. मेघविजय । पं. माणिक्य स । गोत्रकुं १
पं. जीवणचंद्र ग । पं. उदय स । थिरा १ वडा २ झालिम ३
पं. उत्तमचंद्र । पं. उदय स । लूंणपूर १ छत्राला २
पं. दोलतिवि । पं. लक्ष्मीविजय पं. महिमा स । मुंडेठ १ नेवडा २
पं. राजविजय पं. सुंदर स । टषर १ वलण २
पं. षूष्यालविजय पं. प्रेम स । वडाली १
पं. जसविजय ग पं. प्रताप स । शंखेश्वर १
पं. सोभाग्यविजय पं. षिमा स । मुजपूर १ रचियाणुं २
पं. गुणविजय पं. षूष्याल स । पं. रविविजय पं. दोलत स । समु १ वाव २
पं. माणविजय पं. केशर स । वजाणुं १
पं. वृद्धिविजय पं. कांति स । पीलुचुं १ मगरवाडू २
पं. जसविजय पं. कनक स । सोजतरा १
पं. नायकविजय पं. इंद्र स । मणोद १ संडेर २
पं. रविविजय पं. कनक स । नानोदरु १
पं. हंसविजय पं. जीवण स. । अहमदनगर १
पं. पुन्यसोम पं. केसर स । सोवनगढ १
पं. पानाचंद पं. उदय स । झेरडा १ वरापाल २ झिणाल ३
पं. माणिक्यविजय पं. दीप स । धेणोंज १
पं. इंद्रविजय ग पं. अमृत स । गणाद्वही
पं. जिनविजय ग । पं. दर्शन स । हरसोर १ बलोल २
पं. वृद्धिविजय ग । पं. विनय स । गांगद १ फेदरा २
पं. कृष्णविजय ग पं. षूष्याल स । सीद्धपूर १ लालपर २ कलांणा ३
पं. विनयविजय पं. राघव स । धाषां १ धनेरा २
पं. उग्रचंद्रगणी । पं. मोहन स । डीसा १ राजपूर २ वडाल ३
पं. जीवनविजय पं. जीत स । आत्रोली १

पं. भवानविजय पं. नायक स । कसरा १
पं. रूपविजय पं. गौतम स । जामपूर १ वासाबावल बाडीया
पं. भवानविमल पं. ऋद्धि स । कुयारज १
पं. वसंतविजय पं. देव स । चांगा १
पं. मानविजय पं. रत्न स । गोला १
पं. हर्षविजय पं. घूष्याल स । नंदासण १
पं. न्यानविजय पं. कपूर स । भलगाम १
पं. भाग्यविजय पं. जस स । मांडल १
पं. मोहन सोभाग्य पं. भाग्य स । पाडला १
पं. मणिकविजय पं. मान स । रणोद १
पं. रत्नविजय ग । ऋ. देव स । सांपरा १
पं. गुणविजय पं. प्रेम स । वेमाण १
पं. षीमारुचि पं. गणेश स । वणोद १
पं. देविंद्रविजय पं. हर्ष स । बालोल १
पं. भाग्यविजय पं. कुसल स । सांडवा १
पं. माणिक्यविजय पं. राम स । अस्मत्पार्श्वे
पं. रामविजय पं. तेज स । साहाणी १
पं. ज्ञानसागर पं. उदय स । मालक १
पं. दयासोम पं जीत स । मोभा सादडा १
पं. रविविजय पं. विनीत स । गणद्वही १

बृहट्टिप्पनिका नामक प्राचीन जैन ग्रंथ सूचि

बीजा अंकमां परिशिष्ट रूपे ए सूचि प्रकट करवामां आवी छे. ए सूचि कोणे अने क्यारे बनावी छे तेनो कांई पतो लाग्यो नथी. परंतु एमां आवेला ग्रंथोना नामो उपरथी एटलुं अनुमान करी शकाय छे के विक्रमना पंदरमा सैकाना मध्य भागमां कोई विद्वाने आ सूचि तैयार करी छे. कारण के सालवारना जे ग्रंथनामो आमां आपेलां छे तेमां सौथी छेवटनुं नाम, संवत् १४४३ मां रचाएला कुलमंडनसूरिना 'प्रवचन पाक्षिकादि आलापक संग्रह'नुं छे (नं. १६४). तेना पछीनी सालनो रचाएलो कोई ग्रंथ ए सूचिमां दाखल थएलो जणातो नथी. तेनी पहेलां, सं. १४३६ मां रचाएला उपदेश चिंतामणि, (नं. २२३) सं. १४२९ मां रचाएली प्रश्नोत्तर रत्नमालावृत्ति (नं २२२), १४२६ मां बनेली भक्तामरस्तवटीका (नं. १३२); इत्यादि ग्रंथोनी नोंध थएली एमां अवश्य जोवाय छे. परंतु ते पछीनुं एके नाम जोवातुं नथी. लगभग पंदरमां सैकाना त्रीजा ज पादमां थएला सोमसुंदर, मुनिसुंदर, गुणरत्न, ज्ञानसागर आदि प्रसिद्ध ग्रंथकारोना ग्रंथोनी नोंध एमां बिलकुल लेवाई नथी. तेथी हुं ए सूचिनी तैयार थवानी तारीख वि. सं. १४४० थी ६० नी वच्चे मूकुं छुं. एटले आज थी लगभग सवापांचसो वर्ष पहेलां ए सूचि थएली छे.

सूचि करनार कोई समर्थ विद्वान् अने उत्कृष्ट साहित्य प्रिय यातेजन ज होवो जोईए. तेणे ए सूचि घणीज बारीकी थी पूरेपूरी जांच साथे करेली छे. ग्रंथोने विषयवार तारवी काढ्या छे अने दरेक ग्रंथने तपासी तपासीने नोंध्यो छे. सूचिमां ग्रंथ, तेना कर्ता, तेनी रचायानी साल अने तेनी एकंदर श्लोकसंख्या; एम चार बाबतो लीधी छे अने दरेक ग्रंथना संबंधमां शोध करी करी छेवटे आ ४ बाबतोमांथी जेटली मळी तेटली नोंधी छे.

सूचिकर्ताए मुख्य करीने पाटण (अनहिलपुर पत्तन), खंभायत (स्तंभतीर्थ), भरूच (भृगुपुर) अने प्रभास पाटण (देवपत्तन) ना मुख्य पुस्तक भंडारो जोईने आ सूचि बनावी छे. मारवाडना सुप्रसिद्ध जैसलमेरना ज्ञानभंडारनुं आमां नाम नथी तेथी ते जोवायो होय तेम जणातुं नथी. ए उपरथी एम पण अनुमानाय छे के सूचिकर्ता कोई गुजरातनो अने खास करीने तपागच्छनो विद्वान् होवो जोईए.

सूचिकर्ता नी शोधकबुद्धिनो नमुनो आपणने १५५ नंबरवाळी नोंध उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. ए नोंधमां 'शत्रुंजय महात्म्य' जेवा प्रसिद्ध अने प्रामाणिक कहेवाता ग्रंथने स्पष्टरुपे 'कल्पित' अने 'आधुनिक धनेश्वरकृत' बताव्यो छे ! मूळ ग्रंथमां तो ग्रंथ कर्ताए ए 'माहात्म्य' ने घणुं ज प्राचीन अने तेथी घणुं ज प्रामाणिक होय तेवुं बतावबा माटे आकाश–पाताळ एक कर्यां छे. परंतु शोधक विद्वान्ना हाथमां जतां ते बधी कर्त्रिमता एकदम उघाडी पडी गई अने तुरत ज तेना माटे तेणे 'कल्पितता' नो चोखो शेरो मारी दीधो. प्रो. वेबर अने डॉ. बुल्हरने जो आ शेरानी खबर पडी होत तो ए महात्म्यने कल्पित सिद्ध करवा माटे जे मोटी महेनत तेमने उठाववी पडी हती ते जराए न पडत अने मात्र आ एक ज प्रमाणथी तेमनो सिद्धांत सत्य साबीत थई शकत. अस्तु.

आ सूचिमां जणावेला केटलाक ग्रंथोनो आजे क्यां ए पतो संभळातो नथी. तो ते माटे विद्वानोए शोध करवानी खास आवश्यकता छे. दाखला तरीके 'सम्मतितर्क' जेवा सुप्रसिद्ध अने जैन साहित्यभूषण ग्रंथनी आजे मात्र एक बृहद्वृत्ति ज मळी आवे छे. परंतु ए सूचिमां तेनी त्रण वृत्तिओ नोंधेली छे. (जुओ क्रमांक ३५८) तेमां प्रथम वृत्ति तो बहु ज महत्त्वनी छे, कारण के तेना कर्ता मल्लवादी जणाव्या छे. मल्लवादी सूरिए सम्मति उपर कांईक विवरण लख्युं छे तेनो पुरावो तो आपणने हरिभद्रसूरिना लेखमांथी पण मळी आवे छे. ऐतिहासिक

दृष्टिए मल्लवादीनी ए टीकानुं घणुं ज महत्त्व होई शके छे. कारण के तेना आधारे न्याय शास्त्रना विकास अने इतिहास संबंधी अनेक प्रश्नोनो विशिष्ट ऊहापोह करी शकाय छे; अने ते उपरथी अनेक अज्ञात बाबतोनुं ज्ञापन अने संदिग्ध वातोनुं निराकरण करी शकाय छे. तेथी सम्मतिनी ए टीकानी शोधखोळ करवा माटे दरेक विद्वानने आग्रहपूर्वक भळामण करवामां आवे छे.

सम्मतिनी एक त्रीजी टीकानी पण एमां नोंध करेली छे. तेनो कर्ता कोण छे ते एमां जणाव्युं नथी. फक्त ' अन्य कर्तृक' छे, एम जणावी छे. कदाच ए टीका कोई दिगंबर विद्वान् कृत होय, जेना संबंधमां अमारा विद्वान् मित्र श्रीयुत नाथू रामजी प्रेमीए जैनहितैषीना सन् १९२१ ना जान्युआरी-फेब्रुआरी मासना संयुक्त अंकमां एक महत्त्वनी टिप्पणी प्रकाशित करी छे. तो शोधक जनोए ए टीकानी पण गवेषणा करवी आवश्यक छे. आवी ज रीते बीजा पण अनेक ग्रंथोनां नामो जोवामां आवे छे के जे ए सूचिमां नोंधायला छे पण अत्यारे उपलब्ध थता नथी.

आ सूचि बे हस्तलिखित प्रतो उपरथी मुद्रित करवामां आवी छे जेमांनी एक प्रत तो लगभग ३००–४०० वर्ष जेटली जुनी हती अने एक नवी लखाएली हती. बंने प्रतो वडो दरानो जैन ज्ञानमंदिर वाळा प्र. श्री कांतिविजयजीना शास्त्र संग्रहमांनी हती.

एक ऐतिहासिक पत्र

[**नोट**:—आ नोटनी नीचे आपेलो पत्र मने एक जूना भंडारमां पडेला रद्दी कागळोना ढगलामांथी मळ्यो छे. कोई कोई वार रद्दी कागळोमांथी बहु महत्त्वनी चीजो मळी जाय छे के जेने साधारण मनुष्य नकामी गणीने कचरामां फेंकी दे छे. आ पत्र विक्रम संवत् १८३१ मां लखायलो छे. ते मेवाड राज्यना प्रसिद्ध देवस्थान ' नाथदुआरा ' थी तपागच्छना यति ऋषभविजयजीए पोताना कोई वृद्ध अने पूज्य यतिना उपर लखेलो छे. तेमनुं नाम पत्रनी किनारी फाटी जवाथी जतुं रहयुं छे. पत्रनी भाषा राजपूतानी—मुख्यत्वेकरी मेवाडी छे. आ पत्रमां ए समयनी राजपुतानानी राजकीय परिस्थितीनो बहु सारो अने मजेदार चितार आपेलो छे. ए जुना वखतमां ज्यारे रेलवे, टपाल, तेमज समाचारपत्र विगेरे साधनो न होतां त्यारे लोकोने एक बीजा प्रांतमां किंवा राज्यमां शी शी हीलचालो थई रही छे ए बहु ओछुं जाणवामां आवतुं हतुं. ए जमानामां सर्वसाधारण लोकोना करतां यति, संन्यासी, बनजारा अने बाजीगर आदि जे मनुष्य हमेशां देशाटण अथवा परिभ्रमण करता रहेता तेओ ज राष्ट्रीय तेम ज सामाजिक परिस्थितिथी विशेष वाकेफ रहेता. ए बीना आ कागळ उपरथी स्पष्ट थाय छे. राज्यक्रान्तिना वखतमां लोकोने केवा केवा संकटो भोगववा पडे छे, एनो पण ख्याल आ कागळ उपरथी थई शके छे. संसारनो संसर्ग तजीने यति—संन्यासी थयेला मनुष्योने पण देशनी अस्वस्थताने लीधे केवुं अस्वस्थ थई जवुं पडे छे ए बाबतनुं पण स्पष्ट अने अनुभूत वर्णन आ पत्रमां छे. संवत् १८३१ मां राजपूतानानी—विशेषतः मेवाडनी—सामाजिक, आर्थिक अने राजकीय परिस्थिति केवी हती एनुं संक्षेपमां पण पूर्ण विश्वसनीय वर्णन आ पत्रमां छे. ऋषभविजयजी एक सारा विद्वान् यति हता (जेना प्रमाण मने बीजा अनेक उल्लेखोमांथी मळ्या छे परन्तु ए बधांनो अत्रे उल्लेख करवानी आवश्यकता नथी.) एथी तेमनी पासे अनेक प्रकारना मनुष्योनुं आवागमन रहेतुं ज हशे.

बीजूं मेवाड राज्यना घणा खरा कर्मचारीओ जैनी ओसवाळ ज वधारे हता, एथी तेमनी मारफते यति–साधुओनी पासे एवी बातोना विश्वसनीय खबरो विशेष रूपमां आवे ए पण स्वाभाविक छे. यतिवर्गना अधिकारवाळा जूना भांडारोमांथी जो आवी जातना साहित्यनी शोध खोळ करवामां आवे तो एमांथी अनेक प्रकारना एवां ऐतिहासिक साधनो मळी शके के जे धर्म अने देश एम उभय दृष्टिथी बहु महत्त्वना थई पडे तेम छे.—संपादक]

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीपार्श्व परमेश्वरं प्रणम्य श्रीमति तत्र श्रीजीदुआरातो से । ऋषभविजयस्सानंदेन लिखत्यपरं वंदणा १०८ वार अवधारवीजी. अत्र सुष व श्रेय छइं तथा श्रीपंडितजीना सुख पत्र देई हर्ष पोष करवाजी. अपरं श्रीपंडितजी परमेष्ट श्रेष्ठ सकल गुणगरिष्ठ विद्वज्जन वरिष्ठ संत दंत सज्जनसिरोमणि कृपानिधान सर्वत्र राजसभायां लब्धसन्मान गुणालंकृत परम प्रीतिपात्र गुणग्राहक मोटा सरपुरुष छो. सेवकोपरि सदा हितप्रीति सुदृष्टि राषो छो तिमज राषवीजी. जे दिवसै श्रीपंडितजीस्युं मिलस्युं वातो करस्युं ते दिवस घणुं सफल करी जाणस्युं जी. अप्रंच गत वर्षै पत्र १ श्रीपंडीतजीनो गोढवाडनो, एक अनुचर हस्ते श्रीजीदुआरामें आव्यो हतो, वैशाष द्वितीय मैः ते हस्ते पत्र १ श्रीपंडितजीना नामनो...हस्ते मूक्यो हतो ते पोहताना समाचार नाव्याजीः बीजुं ईकतीसानो चोमासो श्रीजीदुआरै थयोजीः उदेपुरमै ठांणुं २ बैठा राख्या छेः वस्तुभाव कुशल षेमै रह्यौ छैः ओर सर्वस्थानक नष्ट थया पिण आपणो आलय कुशल षेमे रह्यो छेः भगवान राष्यो छे; माल्यानो साजबाज भंडाऱ्या मध्ये मूकी बे मालिम करी ने हुं श्रीजीदुआरे आव्योः सर्व वणिक दिसोदिस नीकले गयाः सकल साधासुं दषल थई. सात दिवस फतेषांन मावथनी ओरीयै ठांणुं १५ संघातै बैठा रह्याः सर्व महाजन चोरासीगच्छना मिली राद्य सहस्त्र तूक दीधा पंडित जमांन थयो त्यारै सातमे दिवस घडी २ दिन रहते अठे आव्या. सर्व श्रावक साथे पंडित साथै आवी साधांने पारणो कराव्योः पछे वणिक पिण नीकल्या ने अमे पिण नीकली आघाट आव्याः मास बे तिहां रह्या; तिहां पिण पंडितजीनो कारण संधीइ लोप्युं त्यारै पंडित जाबतो करी नाथदुआरे पोहचता कऱ्या; हवै रावत अर्जुनसिंघजी मैहतो लषमीचंद विजैसिंघ नाणाविटी दिषणीना पंडित रूपनगर वालानो कांमदार देवीदास मुंणोत मिली उदेपुर आव्या; च्यार लाष रुप्या जूना देई ने संधी (सिंधी—काबुली) सर्व ने बारे काढ्या छेः दीवांण हमीर पासे रजपूतनो साथ मूकी संघनी चोकी रावला मांहिथी घणा कष्टथी काढी छेंः हवे सतानी ठव्यारडानै थई छै जीः त्वारांनो जोर घणो वधी गयोः सहिर मध्ये नोग्यारो क्रोडां पांनै पड्यो; सर्व षोदे षणे ग्यारो ग्राह्य कीधो; हजी हजार ५० जूना देणा छैः ते दीधे सर्व नीकलस्यैः पंच महाजन नाडोल हता ते रावत अर्जुनसिंवना पत्रथी आव्या छेः वराड फेर हजार २८ नो नांष्यो छेः रुप्या हम्मीरसाई उदेपुरमै नवा पडे छेः टका २० चाले छेः ते दीधे संधीनो काटलो कटस्ये त्यारै लोक उदेपुर मै पाछा आवश्ये जीः हजी देशनो बिग्रह मिट्यौ नहीं छैः दोय राणा छैः हमीरजी तो अडसीने पाट उदेपुर मै छेः रतनसिंघ कुंभलमेर मै बैठा छेः जोगी साबत छे; गोढवाड विजेसिंघजी ने छेः चीतोड, मांडलगढ, उदेपुर, राजनगर; ए जायगां राणा हमीरजीनो अमल छे. सेरोनलो, कुंभलमेर, कैलवाडो, देवगढ रतनसिंघजीनो अमल छैः देश मै लूटा षोसो पकडणो मारणो आमो सामो लागे रह्यो छे; नाथदुआरे महाराजनी फोज हजार बारेसे पड्या छेः ते तिमज छेः महाराज विंजैसिंघनी फोज रांवोदास मिली देवसूरी वाला ऊपरे आव्या हताः वास राट धूलधाणी मिली पिण देवसूरीवालो महाराजसुं नम्यो नही, सोलंषीनो मजो रह्योः फोज झषमारे पाछी गई. ढाणां मै बैठो छैः नाल देवसूरीनी कोई छोडी नहींः बीरम मेडत्यो चांणोदवालो जोधपुर चाकरी मै पड्यो रडवडे छेः सोलंषी नी टेक घणी रहीः रांडने पगे लागो तथा विजेसिंवने पगे लागोः चाकर चितोडरो छुं. आउआ वालां जेतसिंघने महाराज विजेसींघे ठारयो. चांपावत तेहना बेटा गुणावल कडुंजै छांडी आव्या छेः इस्यो रूप बणे रह्यो छेः जैपुर मैं पिण मेवाड सरीषो विषो लागे छै. रावत जसूंतसिंवजी ने जैपुरमांहिथी परा काढ्या छेंः सोवोकरजी

आया सुण्या छेः रावत अर्जुनसींघजी लेवा जासीः एकलींगजी भेला वेसीः इसी बात छैः पछै तो वणै सो षरीः उदेपुर नो.....नही पिण हवे रजपूत राणावतांरो साथ हजार दोय सहर मै आवे.....यो हवे संधी सर्व बारै डेरा दीधा छे.....मांही छे बाकी रुप्या दीधासुं निजर आवसी. राज–देशविग्रह भारी ठेरयो मिटणो तो साहिबरे हाथ छैः वले एक टिंखल थयो छेः सलूंबरना घरमे पहाडसिंघ रावत उजेणनी राडि मै काम आव्या पछे भीमसिंघजीने तरवार बंधावी राणे अडसीजाइ सलूंबरनी गादी बैठा. हवै पांच वरस पछी पाछा पहाडसिंगजी प्रगट थया छे. ए विग्रह नवो प्रगट्यो छे. हवणा महीना ५ छ थया छैः डुंगरपुरने चोषले आव्या छे. भीमसिंघजी चीतोड ऊपरे हता तिहांनो जाबतो करी थांणो मेलीने सलूंबर दाषल थया छे. विग्रहमे पाछ नही छै. और समाचार छे ज्युं छे. अत्रत्य पं. नरोत्तमविजयगणि पं. प्रतापविजयगणि विनयविजयगणि लघुशिष्य गिरधरनी वंदणा जाणवीजी पं. क्षेमानंद ग. नेमविजयगणि ठाणु२उदेपुरमें मेल्या छेः हेमविजयजी ग. झाडोल छे. ठाणुं २जासमे छे. रत्नानंद ग. मानविजयगणि, उदयपुरनो ढंग महीना एक दोयमें सुदरस्ये जी त्यारे उदेपुर नो ढंग सुदरसी जदी बुलावो आव्ये उदेपुर जावो थास्ये जी ते जांणवुंजी. तत्र पार्श्वस्थ साधुसमुदायने पं. सौभाग्यविजय ग० पं. जयविजयग० पं. भाग्यविजयग० पं. फतेंद्रसागरगणि प्रमुष सर्व साधुसमुदायेन वंदणा कहवीजीः पं. हेमसोभाग गणिनी वंदणा पण जांणवीः पं. गुलाबहंसगणि ठाणुं २ नी वंदणा जांणवीः × × × मेदपाटमे ग्राम.....कोई कोई जायगा वसती छेः इस्यो ढंग ढोल देशनो छे जीः केटलुं लषवामें आवैजीः कृपापत्र वलमान कृपा करवी जीः देवदर्शनमें संभारवा मिती संवत् १८३१ रा मिगसरवदि अष्टम्यां रात्रो पत्र—तुराई लष्युं छे जीः

एक श्रीमाली जैन कुटुंबनी जुनी वंशावली

श्वेतांबर जैन संप्रदायने अनुसरनारी मुख्य त्रण वैश्य जातो छेः १) ओसवाल, २) श्रीमाली, अने ३) पोरवाड. ओसवाल जातिनुं मूल उत्पत्ति स्थान ओसिया नगरी मनाय छे जे मारवाडनी जोधपुर राजधानीनी पासे आवेली छे. ए जातिनी वधारे वसती राजपूताना अने मालवामां रहेली छे. श्रीमाली जातिनुं मूल स्थान श्रीमाल नगर कहेवाय छे. एने हालमां भिन्नमाल कहे छे अने ए पण मारवाडना जोधपुर राज्यमां, राज्यनी उत्तरनी सीमा तरफ आवेलुं छे. ए जातिनी वधारे वसती गुजरात अने काठियावाडमां आवेली छे. पोरवाड जातिनुं जन्म स्थान क्यां छे ते चोक्कस जणातुं नथी पण किम्बदन्ती प्रमाणे अरवलीनी पर्वतमालामां वसेलो वागडदेश तेनुं उत्पत्ति स्थान होय एम जणाय छे. पोरवाडोनी मोटी संख्या मारवाड राज्यना गोडवाड—के जेने नानी मारवाड पण कहेवामां आवे छे—प्रांतमां प्रसरेली छे. गुजरात अने मालवामां पण ए जातिनी साधारण वसती छे. ए जातोनुं जन्म क्यारे अने कई रीते थयुं तेनो सविस्तर निर्णय करवा जेटलां साधनो हजी ज्ञात थयां नथी. साधारण मान्यता प्रमाणे जैनाचार्यो ए, ते ते प्रदेशमां वसता रजपूतो अने बीजा तेवा लोकोने धर्मबोध आपी जैन बनाव्या अने तेमने, पूर्वना बीजा बीजा व्यवसायो छोडी दई व्यापारनो व्यवसाय करवा तरफ प्रेरणा करी. ए जातोनुं निर्माण कोई एक ज आचार्य द्वारा अने एक ज वखते थयुं छे एम नथी. परंतु प्रथम एक आचार्ये केटलाक कुटुंबोने जैन बनावी तेमनी एक जात बनावी अने पछीथी बीजा बीजा आचार्योए प्रसंगे प्रसंगे बीजा बीजा स्थळोना लोकोने जैन बनावी बनावी ते ते जातिमां दाखल करता गया, अने तेम करी ए त्रणे जातिनी संख्यामां क्रमे क्रमे वधारो करता गया. श्रीमाली अने पोरवाड जातिनी आवी रीते क्यां सुधी वृद्धि थती रही तेनी तो माहिती हजी सुधी मळी नथी परंतु ओसवाल जातिनी तो छेक विक्रमना १७ मा सैका सुधी वृद्धि चालू रही होय एम जणाई आवे छे.

लोकमान्यता प्रमाणे, उपर जणाव्युं तेम, मूल तो ए त्रणे प्रसिद्ध अने समृद्ध जैन जातो मारवाडनी सीमामां ज उत्पन्न थएली, परंतु पाछळथी जनसंख्यानी वृद्धिने लईने, व्यापारना निमित्तने लईने, तेम ज राज्योनी उथल पाथलना कारणने लईने भारतना जुदा जुदा प्रदेशोमां ए प्रसरती गई.

ए जातोमां अनेक गोत्रो छे अने दशा-वीसा आदि जेवा केटलाक पेटा-भेदो छे. गुजरात अने काठियावाडमां वसनारा लोकोने फक्त दशा-वीसाना भेदनी तो माहिती रहेली छे परंतु गोत्रनुं ज्ञान तो लगभग सर्वथा भुलाई जवायुं छे. मारवाडमां वसता लोकोने—अने तेमां खास करीने ओसवालोने—पोताना गोत्रोनी माहिती अवश्य होय छे. ए माहिती होवानुं खास कारण ए छे के त्यांना लोकोना कुलगुरु हजी हयात छे जेओ दरेक कुटुंबना विवाह आदि शुभ प्रसंगो उपर हाजर थई ते ते कुटुंबनी वंशावलि विगेरे वारंवार संभलावता रहे छे. ए वंशावलिओमां १०-१०, २०-२० पेढी सुधीना पूर्वजोनां नामोनी तेमज केटलाकना ठाम अने मोटा कामोनी पण नोंधो करेली होय छे. जो के ए नोंधोमां कपोलकल्पित जेवुं पण घणुं होय छे तो पण जेटली नोंध —नोंधनी वही—वधारे जुनी होय तेटली ते वधारे विश्वसनीय होई शके छे. गुजरातमां तेवा कुलगुरुओनो सर्वथा अभाव थई गयो छे तेथी त्यांना वतनिओ पोताना गोत्रो पण भूली गया छे.*

* अने हवे तो केटलाक पोतानी जातीने पण भूली जवानी कोशीस करता नजरे पडे छे ! थोडा दिवस उपर अमदाबादना एक श्रीमंत जैन गृहस्थना बालकोने तेमनी जाति पूछतां तेओ तेनो जबाब आपवा असमर्थ निवडया हता. (त्यारे बीजी बाजुए तेओ इंग्लांडना इतिहासनी वातो अने आयरीश, इंग्लीश, स्काच विगरे जातोना परिचयो झटापट आपी देता हता.) जे बालको

गुजरातना वासिओने भाग्ये ज पोताना पूर्वजोना संबंधमां कांई माहिती होय छे. तेओ पोतानी ३-४ पेढी उपरांतना वडावाओनां नामो सुधां जाणी शकता नथी तो पछी तेओ क्यांथी आव्या अने क्यां वस्या, तेमना पूर्वजो ए शां कामो कर्यां इत्यादि तो जाणे ज क्यांथी. तेमने कुलगुरुओ अने तेमनी नोंधवाहिओनी पण कल्पना आवी शकती नथी.

आ नीचे एक श्रीमाली जैन कुटुंबनी जुनी वंशावलि आपवामां आवे छे, जे एक कुलगुरूनी जुनी नोंधवहीमांथी उतारी लेवामां आवी छे. ए नोंधवही लगभग ४०० ५०० वर्ष जेटली जुनी छे अने कपडा उपर लखेली छे. आ वही पाटणना एक प्राचीन पुस्तक भंडारमा छे. आ वंशावलिमां श्रीमालिजातिना नोडा नामना शेठनी वंशपरंपरा आपेली छे. ए शेठ, आ नोंधमां जणाव्या प्रमाणे, भिन्नमाल (जे श्रीमालनुं बीजुं नाम छे) नगरमां रहेतो हतो. एनुं रहेठाण, नगरना पूर्वना दरवाजा तरफ आवेली भट्टनी पोलमां हतुं. मूल जातिए ए भारद्वाज गोत्रीय (ब्राह्मण ?) हतो. संवत् ७९५मां कोई आचार्यना प्रतिबोधथी ए जैन थयो हतो. ए मोटो व्यापारी हतो अने पांच क्रोडनी आसामी गणातो. एनी गोत्रजा अंबाई माता हती. तेनुं स्थान, नगरनी पासे आवेला गो...णी नामना सरोवरना कांठे, जे देविओनुं स्थान हतुं, तेमांनी ईशान कोनमां आवेली चंपकवाडीमां हतुं. ते वाडीमां, चारे बाजु आंबाना झाडोथी ढंकाएलुं एक मन्दिर हतुं जेमां चार भुजा वाळी ए अंबामातानी रूपानी बनेली मूर्ति स्थापित हती. आसो अने चैत्र मासनी सुदी ९ ना दिवसे ए माताने नैवेद्य चढावी पूजा करवामां आवती. नैवेद्यमां लापसी, पुडला अने जवारनुं खीचडुं मुकवामां आवतुं.

ए शेठ नोडानी १७ मी पेढिए नान्हा नामे पुरुष थयो. तेना वखतमां, संवत् ११११ नी सालमां, भिन्नमाल शहर भांग्युं. तेमां संख्याबन्ध माणसो मार्या गया तथा केदमां पकडाया. ते अवसरे शेठ नान्हा त्यांथी नासी छूट्यो अने कोलिहाराना पायची नामे गाममां जईने वस्यो. त्या तेना पुत्र-पौत्र विगेरेनो परिवार वध्यो अने तेना वंशजो पाछळथी यथा समये पाटण, नरेली (गांभू पासे), मोढेरा, वलाद, सलखणपुर इत्यादि अनेक गामोमां जई जईने वस्या. एमांना केटलाकोए संघो काढया, मान्दिरो बन्धाव्या, महोत्सवो कर्या, जमण जमाड्या अने कोईक तो संसार छोडी यति पण थया. आवी रीते आ वहीनी अंदरथी केटलीए जाणवा जोग हकीकतो मळी आवे छे.

उपर जणाव्युं छे तेम ए वही ४००–५०० वर्ष जेटली जुनी छे तेथी एमां छेवटे जणोवला कुटुंबोना वंशोक्यां सुधी पहोंच्या अने आजे तेमांनो कोई वंश हयात छे के नहिं ते जाणवा-जणाववानुं कशुं साधन नथी.

आ वंशावलिनी भाषा अस्सल प्रमाणे ज कायम राखी छे. तेम ज एमां फक्त नामो सिवाय बीजी कोई विशेष हकीकत पण जेथी वाचनारने कोई जातनी कठिनता पडे तेम पण नथी.

गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर
भाद्रपद पूर्णिमा } —संपादक.

अथ भारद्वाज गोत्रे संवत् ७९५ वर्षे प्रतिबोधित श्रीश्रीमालीज्ञातीयः श्रीशान्तिनाथ गोष्ठिकः । श्रीमिन्नमालनगरे भारद्वयज गोत्रे श्रेष्ठि नोडा. तेहनो वास पूर्वीली पोली भट्टनई पाडइ. कोडी पांचनो व्यवहारियो. तेहनी गोत्रजा अंबाई. नगरीनी परिसरि गो...एणी सरोवरी देव्यानां ठाम नेऊ सहिस तेहमांहि ईशाणकुणदिसि चंपकवाडी तेहमांहि चैत्य. चिहुपासइ आंबाना वृक्ष तिण स्थानाकि चतुर्भुजा गोत्रज स्वरूप रुप्यमई हादरि न हुई तुं कुंकुनी लीटी पाटली ३ कीजइ नैवेद्य लापसी पूडला खीचडुं जवारिनुं. चैत्री आसोइ ९, पुत्र जन्मइ पारणे त्रि मुंडाणिं जमणीनुं कापडुं. फाइनइ सहर्षी १ पुत्र जन्मइ पुत्रीई अर्द्धकर कीजई ॥

आजे आवी रीते पोतानी जातिने भूली जवानी तैयारीमां छे तेओ काले पोताना धर्म अने परम दिवसे देशने पण केम न भूली जाय ?

[सेठ नोडानी वंशपरंपरा—]

श्रेष्ठ नोडा, भार्या सूरमदे—

पुत्र गुणा, भार्या रंगाई—

पु. हरदास, भा० माहवी—

पु. भोला, भा० गंगाई—

पु. गोवाल, भा० मर्घी—

पु. असा, भा० पुहती—

पु. वर्जांग, भा० करमी—

पु. शीवा, भा० पती—

पु. महीराज, भा० कमाई—

पु. राजा भा. पूरी—

पु. गुणपति, भा. रही—

पु. झांझण, भा० कपू—

पु. मणोर, भा० हापी—

पु. कुंयरपाल, भा० वाछी—

पु. पासा, भा० प्रेमी—

पु. वस्ता, भा० वनादे—

पु. कान्हा, भा० सांपू—

पु. नान्हा संवत् ११११ वर्षे श्रीभिन्नमाल-भग्नं. मनुष्यनी कोडी मरण गई. बंदि पड्या. श्रेष्ठी नान्हा नाठा. कोलीहारामांहि पायची ग्रामे वास्तव्य.

श्रेष्ठी नान्हा, भा० पूगी—

पु. अमरा, भा० आऊ—

पुः—१ हरदे, २ वरदे, ३ नरदे, ४ नगा.

हरदे भार्या हांसलदे

पु.—१ गोपी, २ पदमा

गोपी भा० गुरीदे

पु. जोगा, भा० हापू—

पु. नांदिल. भा. नांदलदे

पु. १ सारिंग २ महिपा ३ संघाड ४ धपा.—पत्तनि वास्तव्य सासरिं संवत् १२२५ वर्षे फोफलीया वाडिं—सारंग भा. नारिंगदे पु. १ सीधर २ जीवा.

सीधर भा. सरीयादे, एउ चली. गांभूपासे नरेली ग्रामे वास्तव्य सासरइं संवत् १२८५ वर्षे.

सीधर भा. सिरियादे—पु. १ अना, २ वन्ना.

अना भा. अनादे—पु. मूला.

—१ श्री आदिजिन बिंबं चउवीस वट्ट भराव्यउं. संवत् १३१६ वर्षे श्री अंचलगच्छे श्री अजितसिंह सूरीणा-मुपदेशेन प्रतिष्ठितं. एक कूप, गोत्रजा चैत्य, मूलाकेन एवं कृतं।

मूला भा. मालणदे पु. १ वर्धमान, २ जइता.

वर्द्धमान भा. वयजलदे—पु. १ करमण, २ लाला.

एउ चली मोढेरइ वास्तव्य. तेणइ मोढेरइ दाधेलीऊ महं. कर्मा ते साह्र तेणि सगपणि संवत् १३९५ वर्षे महं. ।

करमण भा. करमादे

पु. महुया, भा. सोहागदे. पु. १ धना, २ हीरा ३ खीमा, ४ चुथा.

२ हीरा भा. हीरादे—पु. हेमा.

संवत् १४४५ वर्षे बिंब चुवीसवट्टो प्रतिष्ठामहोत्सव श्री अंचल गच्छे श्रीमेरुतुंग सूरि चोमासि कराव्या प्रतिष्ठितं महोच्छव करावी,

मोढेरि हेमा भा. हेमादे—

पु. भावड, भा. पूनी पुः—१ देवा, २ पर्वत, ३ नंदा.

देवा भा. सरियादे—पु. १ सूरा, २ लखमण.

लखमण भा. लखमादे. पु. १ हर्षा, २ जगा. हर्षा भा. पूरी पुः—१ नरपाल, २ वरजांग, ३ फतना, ४ रतना.

१ नरपाल भा. लीलादे.

पु. नरबद भा. नांमल दे, पु. वस्ता.

२ वरजांग भा. सखी पु. १ राणा, २ श्रीवंत, ३ भाणा, ४ महीराज.

३ फतना भा. महणादे

पु. वेणा, भा. मरघादे पु. १ भीमा, २ अमा, ३ लहुया.

जगा भा. जस्मादे पु. १ सीपा, २ सामल

पर्वत भा. प्रेमलदे, पु. १ रामा, २ पदमा, ३ मादा.

१ रामा भा. ढढू, पु. १ नाथा, २ नारद, ३ सोमा.

नाथा भा. नागल दे

पु. आनंद नाकर भा. टांक, पु. १ सधारण, २ शिवसी, ३ गोपी.

वलाद्रग्रामे

नंदा भा. लाखू, पु. १ रूपा, २ आसा.

रूपा भा. कुंअरी पु. १ भचा, २ अजु, ३ महिपा, ४ कान्हा ।

भचा भा. नाथी.

पु. राघव भा. रीजलदे, पु. १ धना, २ वर्द्धमान ३ पोचा, ४ पोपट.

आजु भा. अजादे पु. १ रूडा, २ राजा, ३ नायक. रूडा भा. २ वयजलदे,—माणिकदे. वयजलदे पु. १ मेघजी, २ जगमाल.—माणिकदे पु. अभयराज.

नायक भा. नारिंगदे पु. १ देवराज, २ संघराज.

वलद्रि मं. नंदाख्येन मल्लिनाथ बिंब भराव्यो. ए आदे कुटुंबि बिंब ३ भराव्या. श्री अंचलगच्छे श्री विजयकेसरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं.

मं. नंदा भार्या हीरू

पु. साहू भा. सुहागदे.

पु. रतीमा भा. देवलदे, पु. १ वीसा, २ देशल, ३ लाला.

वीसा भा. टूबी

पु. सहिसा भा. मरघाई, पु. सिंघा.

देशल भा. मकू.

पु. लाखा भा. खीमाई पु. १ हरखा, २ मेघा, ३ जगा, ४ आणंद, ५ कीमा, ६ पोमा—दीक्षा लीधी, ७ अर्जण.

हरखा भा. गुरी पु. १ वर्द्धमान, २ ठाकुर.

अर्जण भा. अहिवदे पु. मांडण.

पूर्वि करमण भाई लाला भा. लाडमदे.

पु. हरदास भा. हांसलदे पु. रहिया, २ महिया—दीक्षा लीधी,

महिया भा. मानबाई पु. हीरा—

एउ चली गोलवाडी वलहग्रांमि वास्तव्य. मं. हीरा, भा. सखू—तेहनि डालिं सिद्ध शीकोत्तरी भाव. तेह कारणिं पूछी कहीऊं माहरइ गोत्रज जुहारू. तेह कारणे पांजरी नाम लेई गोत्रज जुहारइ. नणंदनइ सेर २ नी माल. पारणे त्रिमुंडाणिं. माणा ४ ना लाडू कुटुंबमाही लाहि फईनंइ सहर्षि १.

मं. हीरा भा. सखू—

पु. चाचा भा चांपल दे पु, १ पोमा, २ मक्का.

पोमा भा. प्रेमलदे.

पु. श्रीवंत भा. सरियादे

पु. भोला भा. भावलदे

पु. रीडा भा. सोभी

पु. सिंघा भा. जयवंती पु. १ कीला, २ अर्जुन, ३ वन्ना.

काला भा. मरघु पु. १ देवा, २ भीमा

देवा भा. नानु

पु. दूदा, भा. आनी पु. जसा

भीमा भा. भरमादे

पु. जोधा भा. जसमादे

अर्जुन भा. माणिकदे

पु. नाकर भा. पुहती पु. १ सीहा, २ पेथा, ३ नाईया ४ नगा, ५ पांचा.

सीहा भा. सरियादे पु. १ देवराज, २ शिवराज.

पत्तणिनगरे

पूर्वि महुया चतुर्थ पुत्र चुथा भा. चाहणिदे पु. सोभा संग्रहणं कृतं. नोरते वास्तव्यः संप्रति पत्तनि वास्तव्यः । संवत् १४४१ वर्षे लघुशाखी बभूव ।

सोभा भा. रंगाई—

पु. माहव भा. देमी पु. १ रंगा, २ जागा.

रंगा भा. रंगादे

पु. वरसंग भा. जिस्मादे पु. १ सुंटा, २ राईया.

दीक्षा लीधी.

सुंटा भा. करमादे पु. १ राजपाल, २ विजपाल, ३ ब्रह्मदास.

लहरी सलखणपुर पार्श्वे मं. जगा फडीयाना व्यापारथी फडीया अडक. जगा भा. जिस्मादे पु. १ जोगा.

पूर्वि वर्द्धमान भाई जयता. एऊ चली चाहणसांमि वास्तव्यः सासरा मांहि तंव श्री भट्टेवा श्री पार्श्वनाथ चैत्यं कारापितं संवत् १३३५ वर्षे श्री अंचलगच्छे श्री अजितसिंह सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं।

मं. जयता भा. जयवंती

पु. हपा भा. देमाई

पु. मांडण भा. मालणदे

पु. रहिया भा. रहियादे

पु. वस्ता. एउ चली गेगूदणि वास्तव्यः

वस्ता भा. वलादे

पु. वागुरणसी भा. रमादे पु. १ मदा, २ वाछा, ३ रामा.

मदा भा. सलखू पु. १ नगा, २ हापा, ३ तेजा.

नगा भा. धनी

हापा भा. मानू

पु. करमसी भा. भोली पु. १ होईया, २ भीमा, ३ गल्या

भीमा भा. करमी पु. १ नायक, २ माली, ३ हरखा, ४ गोरा, ५ सामल, ६ कुंरा.

नायक भा. नायकदे

माली भा. मानूं पु. १ सीहा, २ सरवण, ३ करमण

सीहा भा. टाकू पु. १ जागा, मेघा

जागा भा. जीवादे

सरवण भा. सहिजलदे पु. १ वीरम, २ खोखा, ३ जूठा. वीरम भा. वनादे

करमण भा कामलदे पु. १ रीडा, २ लखा

रीडा भा. राजलदे

पु. रावसी भा. सुषमादे

पु. लखा भा. लखमादे पु. १ जगसी, २ हरखा

,, ,, माणकदे पु. १ मेला, २ मांका, ३ जीवा, ४ नाथा.

मांका भा. मालणदे पु. १ श्रीवंत, २ वीणा, ३ धना, ४ धरमसी, ५ अजा

श्रीवंत भा. सरीयादे पु. १ पूंजा, २ देवा

पुंजा भा. रत्नादे

पु. वीणा भा. वलादे पु. रांका

डहिरवालिया

पूर्वि सीधर भाई जीवा पत्तनि. मं. जीवा भा. जीवादे पु. जिणदत्त भा. पकू. पु. १ वना, २ विजय-**दीक्षा लीधी.** वना. एउ चली सासरइ जांबूथी डाहरवालिवास्तव्य सं. १२९५ वर्षे

मं. वना भा. सखू

पु. माधव भा. सांपू पु. १ नयणा, २ नगा, ३ रंगा

नयणा भा. नारिंगदे पु. सारिंग वयजलके वास्तव्य.

सारंग भा. सारियादे

पु. जेसा भा. नाकू पु. १ रंगा, २ मेला, ३ रामा

रंगा भा. जोमी पु. वाछा श्रीपार्श्वनाथ चैत्यं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगच्छे श्रीभुवनतुंगसूरीणामुपदेशेन

मं. वाछा भा. माऊ पु. १ करमण, २ लखमण

चारित्र लीधुं.

करमण भा. करमादे

पु. मोका भा. पूगी पु. १ महीराज, २ मांडण

महिराज भा. माणिकदे पु. १ देवा, २ नगा.

मं. देवा भा. देवलदे

पु. माना भा. मानू

पु. जागा भा. देगी

पु. धरणि भा. पूरी

पु. पासा भा. अजी पु. १ शीवा, २ पोचा

शीवा भा. वलादि पु. १ जाणा, २ भाणा, ३ भावड, ४ नरसंघ, ५ करमसी

वढवाण पांसि बलदाणु

पूर्वि महिराज भाई मांडण, भा. सोभी पु. १ वरधा

२ काला, ३ नोला, ४ लखा.

वरधा भा. देगी

पु. सांगा भा. सांगारदे

पु. कान्हडदे, एउ चली वडुद्रइ वास पछी बलदाणा वास्तव्यः । तत्र वसही कारापिता मूल नायक श्रीपार्श्वनाथ बिंब ।

कान्हडदे भा. कपूरदे पु. १ चांपा, २ अमीया

चांपा भा. प्रेमलदे

पु. सहसा भा. सरियादे पु. १ जीवा, २ खीमा. जीवा भा. टूबी पु. १ भीमा, २ शाणा, ३ भुजवल ४ जसा, ५ जाणा, ६ जोधा.

भीमा भा. भावलदे पु. १ श्रीवंत, २ जयचंद, ३ रंगा.

पूर्वि बलदांणे अधुना नागतेशठिं–

शाणा भा. समाई

पु. शिवराज भा. अजादे पु. १ सामल, २ श्रीमल ३ भला, ४ भोजा

सामल भा. सुरमदे पु. १ वाघा, २ नागजी, ३ हेमराज.

बाघा भा...पु. १ आंबा, २ सिद्धराज.

नागजी भा. देवकी पु. १ सुरजी, २ हेमराज

,, ,, भेला पु. सहिजपाल, २ खेता.

—श्रीमल भा. शणगारदे पु. १ मेघा, २ भेला

मेघा भा. सवीरा, पु. १ शिवगण, २ श्रीपाल.

श्रीमल द्वितीय भा. वीरमदे, पु. वेला.

खंभायत पासिं तारापुरिं—

पूर्वि माधवपुत्र नगा भा. नागदे पु. १ गोगन, २ गणपति । संवत् १४४५ वर्षे श्रीशत्रुंजय तीर्थनी यात्रा कृता । श्रीरंगरत्नसूरिनिं आचार्यपद स्थापना श्रीअंचलगच्छे गुजरातीं सोरठी चोरासी गच्छना यतिनिं वेस वुहराव्या । वाणोत्र मेलीनी एणिं कारणिं डहरवालीया प्रासिद्ध बिरुद ।

—गोगन भा. गुरादे पु. १ मंगल, २ जिणदत्त.

मंगल भा. मयगलदे पु. १ खोजा, २ कान्हा.

खोजा भा. सहिजलदे पु. १ गहगा, २ गणपति

गहगा भा. मनाई पु. १ कुंभा, २ कुंरा.

कुंभा भा. कुंभलदे पु. १ पोपट, २ लाला, ३ वाला.

पोपट भा. माई

पु. विद्याधर भा. हर्षादे पु. १ वाछा, २ सहसा — दीक्षा लीधी. वाछा भा. दाडिमदे पु. १ भोजा, २ भीमा, ३ संतोषी.

भोजा भा. धनी पु. शिवसी अधुना.

—पूर्वि सारिंग भाई महिपा भा. फूलां, पु. भाटा, ते सिद्धराज जेसिंगदेव राज्ये व्यापारी सहसलिंग उपरिरायनुं आदेश चित्तकरी तिहां पाषाण अणावि ते पांच गज लाडलां दीठ रखावई. वरतण माटे रायें गोभलेज गाम आप्यउ छई. चिडोत्तर मांहि मातर पासिं. तिणिं गांमि पाषाण मोकलई तिणि गांमि तलाव १ कूप १२ कराव्या । श्रीशत्रुंजये प्रासादबिंबं प्रतिष्ठितं अंचलगच्छे । पछि कालांतरे राजा रूठो देखी ए पाषाणनी राव (?) कीधी ।

मं. भाटा मंडपदुर्गे वास्तव्यः । भाटा भा. देमी–

पु. लंभा भा. मानी पु. १ माधव, २ केशव

माधव भा. मालणदे पु. १ गांगा, २ गोरा.

गांगा भा. रूपी.

पु. जयवंत भा. जीस्मादे पु. १ मूंभच, २ भरमा.

मूंभच भा. रजाई पु. १ नाका, २ माका.

नाका भा. नयणादे पु. सोभा. एउ चली वडोदरे वास खेतसीइ पागटिं.

मं. सोभा भा. सरियादे पु. १ करमा, २ धरमा.

करमा भा. करमादे पु. भीमड, २ भावड.

भीमड भा. भीमादे.

पु. देवड भा. देमाई पु. १ राजड, २ चांपा.

राजड भा. पदमाई पु. १ मावड, २ भरमा.

भावड भा. रुपाई पु. ठाकरसी. एउ चली खंभायति पार्श्वे तारापुरि वास्तव्यः । पछी सीगी वाडई.

ठाकरसी भा. मलाई पु. १ जेसंग, २ वट्टा.

जेसंग भा. जिस्मादे. पु. सोभा भा. रूडी.

(समाप्त)

डॉ हर्मन जेकोबीनी जैन सूत्रोपरनी प्रस्तावना

(भाग बीजो)

[अनुवादकः—श्रीयुत अंबालाल चतुरभाई शाह बी. ए. जैन साहित्य संशोधक कार्यालय]

[प्रथम अंकमां डॉ. हर्मन जेकोबीनी कल्पसूत्र (मूल आवृत्ति) नी प्रस्तावना आपवामां आवी हती अने बीजा अने त्रीजा अंकमां, ' सेक्रेड बुकस् आफ धी ईष्ट ' नामनी प्रख्यात ग्रंथमाळाना २२ मां पुस्तकमां प्रसिद्ध थएला जैनसूत्रोना प्रथम भागनी प्रस्तावना प्रसिद्ध करवामां आवी छे. आ अंकमां ए ज जैन सूत्रोना बीजा भागनी (जे उक्त ग्रंथमाळाना ४५ मा पुस्तकरूपे बहार पडेल छे) प्रस्तावना आपीए छीए. आ भागमां, सूत्रकृतांग अने उत्तराध्ययन एम बे सूत्रोनुं इंग्रेजी भाषान्तर आपेलुं छे. डॉ. जेकोबीनी आ त्रणे प्रस्तावनाओए युरोपीय विद्वानोना जैनधर्मविषयक जुना विचारोमां घणुं संशोधन कर्युं छे अने सर्व साधारणमां जैन संबधी व्यापेला अज्ञानने घणे अंशे दूर कर्युं छे. इंग्रेजी केळवणी पामेली आलमने जैनधर्मनुं जे कांई थोडुं घणुं खरुं ज्ञान मळ्युं होय तो तेनो बधो यश डॉ. जेकोबीनी आ महत्त्वनी प्रस्तावनाओने घटे छे. बौद्ध धर्मथी जैनधर्म तद्दन स्वतंत्र अने तेना करतां जुनो छे ए सिद्धान्त डॉ. जेकोबीए ज सौथी प्रथम अने सचोट रीते स्थापित कर्यो छे. जैनधर्मना सामान्य स्वरूपने समजवा माटे आ त्रणे प्रस्तावनाओ विद्वानोमां खास प्रमाणभूत मनाय छे.

आ साथे एक आटली सूचना करी लेवानुं हुं उचित समजुं छुं के आ प्रस्तावनाओमांना बधा विचारो मने सम्मत छे एम कोईए समजी लेवानी भूल न करवी जोईए. आमांना केटलाए विचारो साथे मारो मतभेद छे के जे हुं भविष्यमां सविस्तर प्रकट करवा इच्छुं छुं; अने ए ज विचारथी में आ प्रस्तावनाओ साथे कोई पण प्रकारनी टीका-टिप्पणी लखी नथी के जेम करवामाटे मने घणाक सज्जनो तरफथी सूचनाओ सुधां मळी हती.

आ अनुवादो में मारी जातीय देखरेख नीचे कराव्या छे अने पाछळथी घणी काळजी अने महेनत पूर्वक मूळ साथे संपूर्ण सरखाव्या छे. छतां जो कोई सज्जनने आमां क्यांए स्खलन विगेरे जणाय तो ते खास लखी जणाववा सूचना छे जेथी तेनुं संशोधन करी देवामां आवे.—संपादक.]

जैनसूत्रोना मारा भाषान्तरना प्रथम भागने प्रकट थए दश वर्ष थयां. ते दरम्यान केटलाक उत्तम विद्वानोद्वारा जैनधर्म अने तेना इतिहासविषयक आपणा ज्ञानमां घणो अने महत्त्वनो वधारो थयो छे. हिंदुस्तानना विद्वानोए संस्कृत अने गुजरातीमां लखेली सारी टीकाओ साथे सूत्र ग्रंथोनी साधारण आवृत्तिओ बहार पाडी छे. प्रो. ल्युमन[1] अने प्रो. होर्नले[2] आ सूत्र ग्रंथोमांना बे सूत्रोनी गुण—दोषना विवेचनवाली आवृत्तिओ पण प्रकट करी छे; अने तेमांए प्रो. होर्नले तो पोतानी आवृत्ति साथे मूळनुं काळजीपूर्वक करेलुं भाषान्तर अने पुरतां उदाहरणो पण

१ दस्, औपपातिक सूत्र, Abhandlungen fur die kunde des Morgenlondes नामनी ग्रंथमाळा, पुस्तक ८; दशवैकालिक सूत्र अने निर्युक्ति, जर्नल आफ धी ओरिएन्टल सोसायटी, पु. ४५.

२ उवासग दसाओ (बिब्लिओथिका इन्डिका) भाग १ मूळ अने टीका, कलकत्ता १८९०, भाग २, इंग्रेजी भाषान्तर, १८८८.

आप्यां छे. प्रो. वेबरे पोते तैयार करेला बर्लिनना हस्तलेखोना विस्तृत सूचिपत्रमां संपूर्ण जैन साहित्यनुं साधारण अवलोकन कर्युं छे. तेम ज तेमणे जैन सूत्रो उपर एक अति विद्वत्तापूर्ण मोटो निबंध पण प्रकट कर्यो छे.[४] प्रो. ल्युमने वळी जैन वाङ्मय अने शास्त्रना विकासनुं सारु अध्ययन कर्युं छे, तथा केटलीक जैन कथाओ अने तेना ब्राह्मण अने बौद्ध कथाओ साथेना संबंधनी तपासणी पण करी छे[५]. श्वेताम्बर संप्रदायना जुना इतिहासनी माहिती आपनारो एक महत्त्वनो ग्रंथ में पण संपादित कर्यो छे[६]; तथा तेमना केटलाक गच्छोनो इतिहास होर्नले अने क्लाट द्वारा जाहिरमां आव्यो छे. आमांनो छेल्लो विद्वान (क्लाट) जे अत्यारे आपणी वच्चे मौजुद नथी, तेणे सघळा जैन लेखको अने ऐतिहासिक पुरुषोनो एक जीवन चरित्रात्मक महान् नामकोष (Onomasticon) तैयार कर्यो छे अने जेना केटलाक नमुना प्रकट पण थया छे. होफ्रेट बुल्हरे सर्वविद्याविशारद एवा प्रसिद्ध विद्वान् हेमचंद्रनुं विस्तृत जीवन चरित्र लख्युं छे[७]. वळी तेमणे घणाक जुना शिलालेखोना अर्थो पण प्रसिद्ध कर्या छे. डॉ. फुहररे मथुरामांथी खोदी काढेला कोतर कामोनुं विवेचन कर्युं छे[८], अने मि. लेवीस राइसे श्रवण बेल्गोलमांना घणाक महत्त्वना शिलालेखो बहार पाड्या छे[९] एम्. ए. बार्थे जैनधर्म विषयक आपणा ज्ञाननी समालोचना करी छे[१०]. बुल्हरे पण एक नानो निबंध लखी तेवी आलोचना प्रकट करी छे[११]. अने छेवटे भांडारकरे संपूर्ण जैन धर्मनी एक महत्त्वनी अने घणी उपयोगी रूपरेखा आलेखी प्रसिद्धिमां मुकी छे[१२]. आ रीते, आपणा जैन धर्म विषयक ज्ञानमां थएला वधाराओए (जेमांना मात्र खास नोंधवा लायक ग्रंथोनो ज में अहिं उल्लेख कर्यो छे) आ आखा विषय उपर एटलुं बधु अजवाळुं पाड्युं छे के जेथी हवे मात्र कल्पनाने आ विषयमां घणो ज थोडो अवकाश रहेशे. अने ऐतिहासिक तेम ज भाषाविज्ञानात्मक साची पद्धति, ते साहित्यना सघळा भागोने लागु पाडी शकाशे. तेम छतां, हजी केटलाक मुख्य प्रश्नोना खुलासा करवा बाकी रह्या छे, तथा जे निराकरणो आ अगाउ थई गयां छे ते हजी बधा विद्वानोने मान्य थयां नथी; तेथी आ सुअवसरनो लाभ लई आनंद पूर्वक हुं अहिं केटलाक विवादग्रस्त मुद्दाओनुं स्पष्टीकरण करवा इच्छुं छुं. आ मुद्दाओना खुलासाओ माटे आज पुस्तकमां भाषान्तरित एथला सूत्रोमांथी घणी किंमती सहायता मळी शके तेम छे.

ए बाबत तो हवे सर्व सम्मत थई चुकी छे के नातपुत्त (ज्ञातपुत्र) जे साधारण रीते महावीर अथवा वर्धमानना नामे ओळखाय छे ते बुद्धना समकालीन हता. निगण्ठो (निर्ग्रन्थो)[१३] जे हालमां जैन अथवा आर्हतना नाम-

३ बार्लिन १८८८ अने १८९२.

४. Indische Studien पु. १६, पृ. २११ आदि. इ. ए. मां अनुवाद तथा जुदा पुस्तक रूपे, मुंबई १८९३.

५. Actes du VI Cougres International des Orientalistes, section Arienne पृ. ४५९ तथा Wienerzeitschrift fur die Kunde des Morgenlandes पु. ५ अने ६. वळी,जर्नल आफ दी जर्मन ओरिएन्टल सोसायटी, पु. ४८.

६. हेमचंद्राचार्य रचित परिशिष्ट पर्व, कलकत्ता.

७. Denkschriften der philos-histor. Classe der Kaiserl. Akademie der Weissens chaften, Vol. XXXVII, p.171ff

८. Wiener Zeitschrift fur die Kunde des Morgenlandes, Vols II and III. Epigraphia Indica, Vols. I and II.

९. बेंगलोर १८८९.

१०. The Religions of India. Bulletin des Riligions de l'Iande, 1889-94

११. Uber die Indische Secte der Jaina, Wien 1881.

१२. रीपोर्ट सन १८८३-८४.

१३. निगण्ठ ए स्पष्टरूपे मूळ रूप ज होय एम जणाय छे. कारण के अशोकना शिलालेखोमां, पालीमां, अने केटलीक वखतें जैन ग्रन्थोमां पण ए ज रूपे मळी आवे छे. पण आ त्रणे बोलीओना स्वरशास्त्रना नियमो प्रमाणे तो तेनुं वधारे वास्तविक रूप 'निग्गन्थ' एवुं थवुं जोईए. अने आवुं रूप जैन ग्रंथोमां स्वीकारेलुं पण मळी आवे छे.

थी वधारे प्रसिद्ध छे; तेओ, ज्यारे बौद्ध धर्म स्थपाई रह्यो हतो त्यारे एक महत्त्वशाली संप्रदाय तरीके क्यारनाए प्रसिद्ध थई चुक्या हता. परंतु हजी ए प्रश्ननुं निराकरण थवुं बाकी रह्युं छे के—ए प्राचीन निर्ग्रन्थोनो धर्म, ते खास करीने वर्तमान जैनोना आगमो अने बीजा ग्रंथोमां जे वर्णवेलो छे ते ज हतो, के सिद्धान्तो पुस्तकारूढ थया त्यां सुधीना समयमां घणो रुपान्तरित थई गयो हतो.

आ प्रश्ननुं निराकरण करवा माटे, अत्यार सुधीमां प्रकट थएला बधा बौद्ध ग्रंथोमां, जेमने आपणे सौथी जुना समजीए छीए तेमांथी जैन निगण्ठो, तेमना सिद्धान्तो अने तेमना धार्मिक आचारोना विषयमां जेटलां प्रमाणो जडी आवे ते बधांनो ऊहापोह करवो जोईए.

अंगुत्तरनिकाय ३,७४ मां, वैशालीना लिच्छविओमांनो अभय[१४] नामे विद्वान राजकुमार निगण्ठोना केटलाक सिद्धान्तोनुं नीचे प्रमाणे वर्णन करे छे:—'भदन्त! निगण्ठ नातपुत्त जे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे, जे संपूर्ण ज्ञान अने दर्शनथी संपन्न होवानो (आ आगळ जणावेला शब्दोमां) दावो करे छे के " चालतां, उभतां, ऊंघतां अने जागतां हुं सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छूं " ते जुना कर्मोनो तपस्या वडे नाश थवानुं प्ररूपे छे. अने संवरद्वारा नवां कर्मोने रोकवानो उपदेश आपे छे. ज्यारे कर्मनो क्षय थाय छे त्यारे दुःखनो क्षय थाय छे. ज्यारे दुःखनो क्षय थाय छे त्यारे वेदनानो अंत आवे छे. ज्यारे वेदना मटशे त्यारे सर्व दुःखनो क्षय थशे. आ रीते ज्यारे पापनो पूरो ध्वंस थशे त्यारे मनुष्य वास्तविक मुक्ति मेळवशे. "

आ विचारोनुं जैन प्रतिबिंब उत्तराध्ययनना २९ मा अध्ययनमां मळी शके छे:—' तपथी मनुष्य कर्मने छेदी शके छे २७. ' 'योगना त्यागथी अयोगपणुं प्राप्त थाय छे; कर्म रोकवाथी ते नवीन कर्मने ग्रहण करी शकतो नथी अने पूर्वे ग्रहण करेला कर्मोनो क्षय करे छे. ३७ ' आ प्रकारनी प्रवृत्तिनी बे अन्तिम दशाओ (सूत्र ७१ अने ७२ मां) वर्णवामां आवेली छे. अने वळी अध्ययन ३२, गाथा ५, ७ मां आवती नीचेनी हकीकत वांचीए छीए:—' जन्म अने मरणनुं कारण कर्म छे अने जन्म अने मरण ए ज दुःख कहेवाय छे. ' आ उपरांत बीजी पण उपरना अर्थने मळती ३४, ४७, ६०, ७३, ८६ अने ९९ मी गाथानो संक्षिप्त अर्थ नीचे प्रमाणे छे:— ' परंतु जे मनुष्य इंद्रियोना विषयोथी अने मानसिक लागाणीओथी [आनो अर्थ बौद्ध तत्त्वज्ञाननी 'वेदना' ना अर्थ साथे घणो ज मळतो आवे छे] उदासीन रहे छे तेने शोक स्पर्श करी शकतो नथी. जो के ते संसारमां मौजुद छे तो पण ते दुःख परंपराथी, जेम कमलनुं पान पाणीथी अलिप्त रहे छे तेम, ते मनुष्य पण अखिन्न रहे छे. '

आ सिवाय बौद्ध ग्रंथमां, नातपुत्त सर्वज्ञान अने सर्व दर्शन प्राप्त करवानो दावो करे छे—ए प्रकारनुं जे कथन छे तेने स्पष्ट करवा माटे प्रमाण आपवानी जरूर नथी. कारण के आ तो जैन धर्मनुं खास एक मौलिक मंतव्य ज छे.

निगण्ठोना सिद्धांत विषयक बीजी वधारे माहिती महावग्ग ६, ३१ (S. B. E, पु. १७, पृ. १०८) आदिमांथी मळी आवे छे. ए स्थळे सीह[१५]नुं एक वृत्तान्त आपेलुं छे. ते सीह लिच्छविओनो सेनापति हतो अने नातपुत्तनो उपासक हतो. ते बुद्धने मळवा इच्छतो हतो परंतु नातपुत्त क्रियावादी होई बुद्ध अक्रियावादी हतो तेथी तेनी पासे जवानी तेने ना कहेवामां आवती

१४ आ नामना, स्पष्टरीते, बे पुरुषो मळी आवे छे. बीजो अभय श्रेणिकनो पुत्र हतो अने जैनोनो सहायक हतो. तेनो जैनोना सूत्रो तेम ज कथाओमां उल्लेख थएलो छे. मज्झिम निकायना ५ मां (अभय कुमार) सुत्तमां एवुं वर्णन छे के निगण्ठ नातपुत्ते तेने बुद्धनी साथे वाद करवा मोकल्यो हतो. प्रश्न एवो चालाकी भरेलो तैयार करवामां आव्यो हतो के बुद्ध तेनो गमे तेवा हकार अगर नकारमां जवाब आपे पण ते स्वविरोध वाळा न्यायशास्त्र प्रसिद्ध दोषमां सपडाया वीना रहे ज नहिं. परंतु आ युक्ति सफळ थई नहिं अने परिणाम तेथा उलटुं ए आव्युं के अभय बुद्धानुयायी थई गयो. आ वर्णनमां नातपुत्तना सिद्धांत उपर प्रकाश पाडे एवुं कांई तत्त्व नथी.

१५ ' सीह ' नुं नाम भगवती [कलकत्ता आवृत्ति, पृ. १२६७ जुओ होर्नलनी उवासगदसाओ, परिशिष्ट, पृ. १०] मां महावीरना एक शिष्य तरीके पण आवेलुं छे,परंतु ते साधु होवाथी महावग्गमां आवता आ नाम साथे तेनी एकता बतावी शकाय तेम नथी.

हती. परंतु ते तेमनी आज्ञाने उल्लंघी पोतानी मेळे बुद्ध पासे गयो अने बुद्धनी मुलाखातना परिणामे ते तेनो अनुयायी बन्यो. आ वृत्तान्तमां निगण्ठोने जे क्रियावादी जणाववामां आव्या छे, ते बाबत आ पुस्तकमां अनुवादित सूत्रोना उल्लेखथी सुसिद्ध थाय छे:—सूत्रकृताङ्ग १, १२,२१, (पृ० ३१९) मां जणावे छे के ' तीर्थंकर—अर्हतने क्रियावाद प्ररूपवानो—उपदेशवानो अधिकार छे. ' आचारांगसूत्र १, १, १, ४ (भाग १ पृ० २) मां पण आ विचार, आ प्रमाणे दर्शावामां आव्यो छे:— ' ते आत्माने माने छे, जगत्ने माने छे, फळने माने छे, कर्मने माने छे, (एटले के ते आ पणां ज करेला छे अने जे आ प्रमाणेना विचारोथी स्पष्ट जणाय छे) ते कर्म में कर्युं छे; ते बीजा पासे करावीश; ते हुं बीजाने करवा दईश. ' इत्यादि.

महावीरना जे बीजा शिष्यने बुद्धे पोतानो अनुयायी बनावी लीधो हतो तेनुं नाम उपालि हतुं. मज्झिमनिकायना ५६ मां प्रकरणमां जणाव्या प्रमाणे तेणे बुद्धनी साथे, ए बाबतनो वाद कर्यो हतो के—'निगण्ठ नातपुत्त कहे छे तेम कायिक पाप मोटुं छे, के बुद्ध माने छे तेम मानसिक पाप मोटुं छे ? ए संवादना प्रारंभमां उपालि कहे छे के, मारा गुरु साधारणरीते कर्म अथवा कृत्य माटे दण्ड (शिक्षा) शब्दनो उपयोग करे छे.' जो के आ उल्लेख साचो छे परंतु संपूर्णरूपे नहिं. कारण के जैनसूत्रोमां कर्म अर्थमां पण ' कर्म ' शब्दनो तेटलो ज उपयोग थएलो छे. अने दण्ड शब्दनो पण तेटलो ज थएलो छे. सूत्रकृताङ्ग २, २ (पृ० ३५७) मां १३ प्रकारना पापकर्मनुं वर्णन करेलुं छे जेमां पांच स्थळमां ' दण्डसमादान ' शब्द आवेलो छे अने बाकीनां स्थळमां ' किरियाथान ' शब्द आवेलो छे.

निगण्ठ उपालि विशेषमां जणावे छे के कायिक, वाचिक अने मानसिक एम त्रण प्रकारनो दण्ड छे. उपालिनुं आ कथन, स्थानांग सूत्रना त्रीजा प्रकरणमां (जुओ इन्डि. एन्टि. पु. ९, पृ० १५९) जणावेला जैन सिद्धान्तनी साथे पूर्ण मळतुं आवे छे.

उपालिनुं बीजुं कथन के, जेमां ते निगण्ठोने मानसिक पापो करतां कायिक पापोने वधारे महत्त्व आपनारा जणावे छे, ते कथन जैन सिद्धान्त साथे बराबर मळतुं आवे छे. सूत्रकृतांग २, ४ (पृ० ३९८) मां एवा एक प्रश्ननी चर्चा करवामां आवी छे के अणजाणपणे कराएला कृत्यनुं पाप लागे के नहिं. त्यां आगळ स्पष्ट रीते जणावेलुं छे के निश्चित रीते तेवुं पाप लागे छे. (सरखावो पृ० ३९९ टिप्पण ६) वळी ते ज सूत्रना ६ ठा अध्ययनमां (पृ० ४१४) बौद्धोना ए मंतव्यनुं के— ' अमुक कर्म पापयुक्त छे के पापरहित छे तेनो निर्णय ते कर्म आचरनार मनुष्यना आशय उपर आधार राखे छे, ' खूब खण्डन अने उपहास करवामां आव्यो छे.

अंगुत्तर निकाय ३,७०,३ मां निगण्ठ श्रावकोना आचारोनुं वर्णन आपेलुं छे. ते भागनुं नीचे प्रमाणे भाषान्तर आपुं छुं. ' हे विशाखा, निगण्ठनामे ओळखातो श्रमणोनो एक संप्रदाय छे. तेओ श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आपे छे. " हे भद्र, अहींथी पूर्वदिशा तरफ एक योजन प्रमाण भूमिथी बहार रहेता जीवतां प्राणिओनी हिंसाथी तमारे विरमवुं, तेवी ज रीते दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर दिशा तरफनी योजन प्रमाण भूमिथी बहार रहेता प्राणिओनी हिंसाथी विरमवुं " आ रीते तेओ केटलांक जीवतां प्राणिओने बचाववानो उपदेश आपी दयानो उपदेश करे छे; अने एज रीते वळी तेओ केटलांक जीवतां प्राणियोने न बचाववानो बोध करी क्रूरता शिखडावे छे. ' ए समजाववुं कठिण नथी के आ शब्दो जैनोना दिग्विरति व्रतने उद्देशीने कहेला छे के, जे व्रतमां श्रावकने अमुक हद बहार मुसाफरी के व्यापार विगेरे नहिं करवा संबंधीनो नियम उपदेशवामां आव्यो छे. आ व्रतनुं पालन करनार मनुष्य, अलबत्त, पोते छूटी राखेली भूमि बहारना प्राणीनी हिंसा तो न ज करी शके ए तो स्पष्ट ज छे. परंतु, आवा एक निर्दोष नियमने विरोधी सम्प्रदाये केवा विकृत रूपमां आलेख्युं छे ? पण एमां ए आश्चर्य जेवुं कशुं नथी. कारण के कोई पण धार्मिक सम्प्रदाय पासेथी, तेना विरोधी मतना सिद्धान्तोनुं यथा-

र्थ अने प्रामाणिक आलेखन मेळववानी आपणे आशा न ज राखवी जोईए. तेओ स्वाभाविक रीते, ते सिद्धान्तोनुं आलेखन एवा ज रूपमां करशे के जेथी तेमां देखाई आवता दोषो वधारे मोटा प्रमाणमां बतावी शकाय. जैनो पण आ बाबतमां बौद्धो करतां लेशमात्र उतरे तेम नथी. तेमणे पण बौद्धोना सिद्धान्तोने आ ज प्रमाणे विकृत रूपमां आलेख्या छे. बौद्धोना ए मंतव्यनुं के—पाप ए तेना आचारनारने आश्रय उपर आधार राखे छे, तेनुं जैनोए, आ पुस्तकना पृ० ४१४ उपर, केवुं असत्य निरूपण कर्युं छे ते जोवा जेवुं छे. ए ठेकाणे जैनोए बौद्धोना एक महान् सिद्धान्तने मिथ्या कल्पित अने मूर्खतापूर्ण उदाहरण साथे मेळवी उपहास पात्र बनावी दीधो छे.

अंगुत्तर निकायनो एक उल्लेख जेनी थोडीक चर्चा आ उपर करवामां आवी छे तेमां वळी आगळ चलावतां जणाववामां आव्युं छे के—'उपोसथना दिवसोमां तेओ (निगण्ठो) श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आपे छे के "भद्र, तमारे सघळां वस्त्रो काढी नांखवां जोईए अने कहेवुं जोईए के—हुं कोईनो नथी अने मारुं कोई नथी." अहीं विचारवानुं छे के, तेना माता—पिता तेने पोतानो पुत्र तरीके माने छे अने ते पण तेमने पोताना माता—पिता माने छे. तेनो पुत्र अगर तेनी पत्नी, तेने पिता अगर पतिरूपे माने छे. अने ते पण तेमने पोताना पुत्र अगर पत्नी तरीके माने छे. तेना गुलामो अने नोकरो तेने पोतानो मालिक या शेठ माने छे अने ते पण तेमने तेओ पोताना गुलामो अगर नोकरो छे, तेम माने छे. आ कारणथी (निगण्ठो) तेमने (श्रावकोने) उक्त रीते बोलवानुं कही तेमनी पासेथी असत्य भाषण करावे छे. वळी ए रात्री व्यतीत थया बाद, तेओ, ते ते वस्तुओनो उपभोग करे छे जे सर्व (तेमना माटे) अदत्तादानरूप छे. आथी हुं तेमने अदत्तादान लेवाना पण दोषी तरीके मानुं छुं.'

आ वर्णन उपरथी समजाय छे के निर्ग्रन्थ—उपासकना उपोसथना दिवसोवाळा नियमो साधुजीवनना नियमो जेवा ज होवा जोईए. गृहस्थ अने साधुजीवनना नियमोनुं भिन्नत्व बीजा दिवसोमां रहेतुं हतुं. परंतु आ वर्णन जैनोना पोसहव्रतना नियमो साथे पूरेपूरुं मळतुं आवतुं नथी. प्रो. भांडारकर, तत्त्वार्थसार-दीपिकाना आधारे पोसहव्रतनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे आपे छे; अने आ वर्णन बीजा तेवा वर्णनो साथे बराबर संगत थाय छे. भांडारकर लखे छे:—'पोसह एटले दरेक पक्षनी अष्टमी अने चतुर्दशीना पवित्र दिवसे उपवास करवो अथवा एकाशन करवुं अथवा एक ज ग्रास खावो. ते दिवसोमां यतिनी माफक वैराग्य धारण करी स्नान, लेपन, आभरण, स्त्री संगमन, सुगन्धी धूप—दीप इत्यादिनो त्याग करवो' जो के वर्तमान जैनोनुं ए पोसहव्रत—पालन बौद्धो करतां घणुं सख्त छे, ए वात खरी छे; तो पण ते, निगण्ठ—नियमो के जेमनुं वर्णन उपर आपवामां आव्युं छे, तेना करतां घणुं शिथिल होय तेम जणाय छे. मारा जाणवा प्रमाणे जैन गृहस्थ, पोसहमां कपडांनो त्याग करतो नथी. पण बाकीना आभूषणो अने बीजा विलासोनो त्याग करे छे. तेम ज दीक्षा ग्रहण करती वखते जेम साधुने त्यागना सूत्रो बोलवा पडे छे तेम तेने बोलवा पडतां नथी. आ उपरथी एम जणाय छ के—कां तो बौद्धोनुं आ वर्णन मूल भरेलुं अगर असत्यमूलक होय अने कां तो जैनोए पोताना नियमोमां कांईक शिथिलता दाखलां करी होय.

दीघनिकाय १, २, ३८ (ब्रह्मजाल सूत्र) मां आवता निगण्ठ विषयक उल्लेख उपरनी पोतानी टीकामां एक ठेकाणे बुद्धघोष लखे छे के—'निगण्ठो आत्मा वर्णरहित छे एम माने छे; अने आजीविको आत्माना वर्णनी अनुसार समस्त मानव जातिना ६ विभागो पाडे छे. परंतु मृत्यु पछी पण आत्मानुं अस्तित्व धरावे छे अने ते बधा रोगोथी मुक्त (अरोगो) होय छे, ए बाबतमां निगण्ठो अने अजीविको बंने समानमत वाळा छे.' छेवटना शब्दोनो अर्थ गमे तेम हो, परंतु तेनी उपरनुं वर्णन तो, आ पुस्तकना पृ. १७२उपर आपेला जैनोना आत्मस्वरूपना वर्णन साथे बराबर मळतुं आवे छे. एक बीजा

फकरामां (I c p 168) बुद्धघोष जणावे छे के निगण्ठ नातपुत्त थंडा पाणीने सचेतन माने छे (सो किर सीतोदके सत्तसञ्ञी होति) अने तेथी ते तेनो उपयोग करता नथी. जैनोनुं आ मंतव्य अत्यंत प्रसिद्ध होवाथी तेनी साबीती आपवा माटे सूत्रोमांथी अवतरणो आपवानी आवश्यकताने हुं निरर्थक मानुं छुं.

पाली ग्रन्थोमांथी प्राचीन निगण्ठोना मंतव्यो संबंधी जे कांई माहीती हुं एकत्र करी शक्यो छुं, लगभग ते बधी उपर आपी दीधी छे. जो के आपणे इच्छीए तेना करतां ते घणी अल्प प्रमाणमां छ, तो पण तेथी तेनी किंमत बिल्कुल ओछी गणाय तेम नथी. प्राचीन निगण्ठोना मंतव्यो अने आचारोना संबंधमां जे उल्लेखो आपणे एकत्र कर्या छे ते सघळा, एक अपवादने बाद करतां, वर्तमान जैन मन्तव्यो अने आचारो साथे मळता आवे छे अने तेमांना केटलाक तो जैनोना खास मौलिक विचारो छे. आ उपरथी आपणने एम संदेह करवानुं जराए कारण नथी जडतुं के आ बौद्ध ग्रन्थोमांनी नोंधो अने जैन सिद्धान्तोनी रचना वच्चेना–अंतर्वर्ती काळमां जैन सिद्धान्तोमां झाझो फेरफार थयो होय.

में जाणी जोईने ज निगण्ठ नातपुत्तना मत विषयक एक प्रधान फकरानुं विवेचन करवुं आ स्थळे मुलतवी राख्युं छे. कारण के ए फकरामां आपेली बाबत उपरथी आपणने एक नवी ज पद्धतिए तपास करवानी जरूरत रहे छे. आ फकरो दीघनिकायनां सामञ्ञफलसुत्तमां आपेलो छे. हुं तेनुं अहिं सुमङ्गलविलासनी नामे बुद्धघोषवाळी टीकाना अनुसारे भाषान्तर आपुं छुं–' महाराज, अहिंयां एक निगण्ठ चारे दिशाना नियमनथी सुरक्षित छे (–चातुयाम संवरसंवुतो). हे महाराज, केवी रीते निगण्ठ चारे दिशाना संवरथी रक्षित छे? महाराज, आ निगण्ठ सघळुं [थंडुं] पाणी वापरता नथी. सर्व दुष्ट कर्म करता नथी. अने सघळा दुष्कर्मोना विरमणवडे ते सर्व पापोथी मुक्त छे. अने सर्व प्रकारना दुष्कर्मोथी, सघळा पापकर्मोथी निवृत्ति अनुभवे छे. आ प्रमाणे हे महाराज, निगण्ठ चारे दिशाना संवरथी संवृत छे. अने महाराज, आ प्रमाणे संवृत होवाथी ते निगण्ठ नातपुत्तनो आत्मा मोटी योग्यतावाळो, संयत अने सुस्थित छे.[1]' अलबत्त, आ जैनधर्मनुं यथार्थ तेम ज संपूर्ण वर्णन नथी. परंतु तेमां जैनधर्मनुं विरोधी तत्त्व पण नथी. आना शब्दो जैनसूत्रोना शब्दो जेवा ज छे. में बीजे[2] स्थळे जणाव्युं छे तेम ' चातुयाम संवर संवुतो ' ए वाक्य मात्र टीकाकारे ज नहीं परंतु मूळ ग्रन्थकारे पण खोटी रीते समजेलुं छे. कारण के पाली शब्द ' चातुयाम ' ते प्राकृत शब्द ' चातुज्जाम ' नी बराबर थाय छे. अने आ प्राकृत शब्द नो एक प्रसिद्ध जैन पारिभाषिक शब्द छे जे महावीरना (पंच महव्वय) पांच महाव्रतोथी भिन्न एवा पार्श्वनाथना चार व्रतोनो वाचक छे. आथी आ स्थळे बौद्धोए, जे सिद्धान्त वास्तविकमां महावीरना पुरोगामी पार्श्वनाथने लागू पडे छे तेने, महावीर उपर आरोपित करवामां भूल करेली छे, एम हुं धारुं छुं. आ उपरथी एम सूचित थाय छे के बौद्धोए आ शब्दने निगण्ठोना धर्मवर्णनमां लीधेलो होवाथी तेमणे ते पार्श्वनाथना अनुयायियोना मुखेथी सांभळ्यो हशे; अने बीजी ए पण कल्पना थई शके के महावीरना संशोधित मतो जो बुद्धना समयमां सर्व सामान्यरीते स्वीकाराया होत तो पार्श्वनाथना अनुयायियो पण ते वखते ते शब्दनो उपयोग नहीं करता होत. बौद्धोनी आ भूल द्वारा हुं जैनोनी ए परंपराने सत्य स्थापित करी शकुं छुं के महावीरना समयमां पण पार्श्वनाथना शिष्यो विद्यमान हता.

आ पद्धतिए तपास करवानी शरुआत करतां पहेलां हुं बौद्धोनी एक बीजी पण अर्थपूर्ण भूल तरफ

१ सुमंगलविलासिनी [पाली टेक्स्ट सोसायटी] पृ. ११९

१ ग्रीमब्लोट्, Pali sept suttas मां, गोगर्ली (Gogerly) अने बर्नफ (Burnouf) नां जे भाषान्तरो आपेलां छे ते तेमणे टीकानी सहायता लीधा विना करेलां होवाथी दुर्लक्ष्य करवा जेवां छे. बुद्धघोषनुं वर्णन परंपरागत हतुं के कल्पित हतुं ते संदिग्ध छे.

२ जुओ. इन्डि. एन्टि भा. ९. पृ.१५८ मां प्रकट थएलो मारो On Mahavir and his Predecessors नामनो निबन्ध.

वाचकनुं ध्यान खेंचवा मांगुं छुं: बौद्धो नातपुत्तने अग्गिवेसन अर्थात अग्निवैश्यायन कहे छे, परंतु जैनोना मतानुसार ते काश्यप हता; अने पोताना तीर्थंकरो संबंधी आवी बाबतोमां जैनोनुं ज कहेवुं विश्वासपात्र मनावुं जोईए. वळी महावीरनो एक मुख्य शिष्य, जे सुधर्मा नामे हतो अने जेने सूत्रोमां महावीरना धर्मना मुख्य उपदेशक तरीके बतावेलो छे ते पोते अग्निवैश्यायन हतो; अने तेणे जैन धर्मनो प्रसार करवामां मुख्य भाग भजवेलो होवाथी बहारना बीजा माणसो शिष्यने गुरु समजी लेवानी भूल करी होय अने तेथी करीने शिष्यनुं गोत्र गुरुने लगाडी देवामां आव्युं होय, ते घणुं संभवित छे. आ रीतनी बौद्धोए करेली बेवडी भूल महावीरनी पूर्वे पार्श्वनामना तीर्थंकरनी तथा महावीरना मुख्य शिष्य सुधर्मानी हयातीनी साक्षी आपे छे.

पार्श्व ए एक ऐतिहासिक पुरुष हता ते वात तो बधी रीते संभावित लागे छे. केशी[1] के जे महावीरना समयमां पार्श्वना संप्रदायनो एक नेता होय तेम देखाय छे तेनो तथा अन्य पण तेवा अनुयायीओना जैन सूत्रोमां घणे ठेकाणे उल्लेखो थएला छे; अने ते उल्लेखो एवी सरळ रीते थएला छे के जेथी करीने तेनी सत्यासत्यताना संबंधमां शंका उठाववाने कारण मळतुं नथी. उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययनमां जुना अने नवा संप्रदायनो परस्पर मेळ केवी रीते थई गयो हतो ते बतावनारी; एक कथा आ विषयमां घणी ज अगत्यनी छे. केशी अने गौतम के जेओ बंने जैन धर्मना बे संप्रदायोना प्रतिनिधि तथा नेता हता, तेओ पोताना शिष्यपरिवार सहित एक वखते श्रावस्ती पासेना उद्यानमां भेगा मळे छे, अने महाव्रतोनी संख्या विषयक तथा सचेलकाचेलक अवस्था विषयक तेमना धार्मिक मतभेदो वधारे विवेचन कर्या सिवाय मात्र सहज समजावीने दूर करवामां आवे छे. अने त्वरायी मौलिक नीतिविषयक विचारोना संबंधमां प्रत्येक पक्ष दृष्टान्तो द्वारा एक बीजाना विचारो समजी समजावी निःशंक बनी संपूर्ण एकमत थाय छे. बन्ने संप्रदायो वच्चे कांईक मतभेद जेवुं जोवामां आवे छे, परंतु परस्पर द्वेष या वैर बिलकुल जोवातुं नथी. जो के प्राचीन संप्रदायना अनुयायिओने 'पंच महाव्रत प्रतिपादनार' महावीरना धर्मनो स्वीकार करवो पडयो हतो, ए वात खरी छे; तो पण तेओ पोतानी केटलीक जूनी रूढिओने पण वळगी रह्या हता. खास करीने वस्त्र वापरवाना विषयमां के जे रूढीनो महावीरे त्याग कर्यो हतो, तेम आपणे मानवुं जोईए. आ कल्पनानुसार आपणे श्वेताम्बर अने दिगम्बर संप्रदायरूपी बे फिरकानी उत्पत्तिनुं मूळ कारण पण बतावी शकीए छीए, के जेना संबंधमां श्वेताम्बर अने दिगम्बर बने संप्रदायमां भिन्न भिन्न अने परस्परविरोधी दंतकथाओ प्रचलित छे.[1] आ भेद देखीती रीते ज कांई आकस्मिक थयो न हतो; परंतु असलनो एक मतभेद [उदाहरण तरीके जेवो के श्वेताम्बर मतना केटलाक गच्छोनी वच्चे अत्यारे ए हयाती धरावे छे] काळे करीने विभागना रूपमां परिणत थयो अने आखरे तेणे एक महान् धर्मभेदनुं रूप लीधुं.

बौद्ध ग्रन्थोमां मळी आवता उल्लेखो, नातपुत्तनी पूर्वे पण निर्ग्रन्थोनी हयाती हती, ए प्रकारना आपणा विचारने दृढ करे छे. ज्यारे बौद्ध धर्मनो प्रादुर्भाव थयो त्यारे निर्ग्रन्थोनो संप्रदाय एक मोटा सम्प्रदायरूपे गणातो होवो जोईए. ए निर्ग्रन्थोमांना केटलाकने बौद्ध पिटकोमां, बुद्धना अने तेना शिष्योना विरोधी तरीके अने वळी केटलाकने तेना अनुयायी थएला तरीके वर्णवेला छे के जे उपरथी आपणे उपर प्रमाणे अनुमान करी शकीए छीए. एथी उलटुं ए ग्रंथोमां कोई पण स्थले एवो उल्लेख के सूचन सरखुं पण थएलुं जोवामां नथी आवतुं के निर्ग्रन्थोनो सम्प्रदाय ए एक नवीन सम्प्रदाय छे. आ उपरथी आपणे अनुमान करी शकीए छीए के निर्ग्रन्थो बुद्धना जन्म पहेलां घणा लांबा कालथी अस्तित्व धरा-

१ राजप्रश्नीमां पार्श्वने (?) राजा पएसी साथे संवाद थयो हतो अने त्यार बाद राजाने तेणे पोतानो धर्मानुयायी बनाव्यो हतो.

१ श्वेताम्बर अने दिगंबर सम्प्रदायोनी उत्पत्तिना संबंधमां जर्मन ओरिएन्टल सोसायटीना जर्नलना ३८ मा भागमां प्रकट थएलो मारो निबंध जूओ।

वता हशे. आ अनुमानने बीजी एक बाबत द्वारा पण टेको मळे छे. बुद्ध अने महावीरना समकालीन एवा मक्खलि गोसले मनुष्य जातिनी छ वर्गोमां वहेंचणी करी हती.[1] बुद्धघोषना [2]कहेवा मुजब आ छ वर्गमांना त्रीजावर्गमां निर्ग्रन्थोनो समावेश करवामां आव्यो हतो. हवे विचारीए के निर्ग्रन्थो जो ते ज अरसामां हयातीमां आव्या होत तो तेमनी गणना एक खास–एटले के मनुष्य जातिना एक स्वतंत्र–पेटाविभाग तरीके कदापि न करवामां आवी होत. जरूर तेणे निर्ग्रन्थोने एक महत्त्वना अने साथे मारा मानवा प्रमाणे प्राचीन बौद्धो मानता हता तेम एक प्राचीन संप्रदायरूपे लख्या हशे. मारा उपरोक्त छेल्ला मतनी पुष्टिमां नीचे मुजबनी दलील पण छे. मज्झिमनिकाय, ३५ मां बुद्ध अने सच्चक नामना एक निर्ग्रन्थपुत्र वच्चे थएला वादनुं वर्णन आपेलुं छे. सच्चक वादमां नातपुत्तने हराव्यानी बडाई मारतो होवाथी ते निर्ग्रन्थ होय तेम लागतो नथी. अने बीजुं ए के जे सिद्धान्तोनुं ते समर्थन करवा मथे छे ते सिद्धान्तो जैनोना नथी. आ उपरथी ए विचारवा जेवुं छे के एक प्रसिद्ध वादी के जेनो पिता निर्ग्रन्थ हतो अने जे पोते बुद्धनो समकालीन हतो, तेना पुरावा उपरथी निर्ग्रन्थोनो संप्रदाय बुद्धना समयमां स्थापित थयो हतो तेम मान्ये ज मानी शकाय.

हवे आपणे जे जे जैनेतर पाखंडी मतावलंबिओ सामे जैनोए पोतानो तात्त्विक विरोध बताव्यो छे, अने ते संबंधे जे उल्लेखो तेओए कर्या छे, ते तपासीए, अने तेनी साथे बौद्धोना उल्लेखो सरखावीए. सूत्रकृतांग २, १, ५५ (पृ० ३८८) अने २१ (पृ० ३४३) मां घणे अंशे परस्पर मळता आवता एवा बे जडवादी सिद्धान्तोनो उल्लेख छे. पहेला सूत्रमां जे लोको आत्माने एक अने अभिन्न माने छे तेमना एक अभिप्रायनुं वर्णन छ, अने बीजा सूत्रमां पंचभूतने नित्य अने बधुं तेनुं ज बनेलुं छे तेम माननार एक सिद्धान्तनुं वर्णन आपेलुं छे. बन्ने मतना अनुयायिओ जीवतां प्राणीनी हिंसा करवामां पाप मानता नथी. आवा ज प्रकारनो मत सामञ्ञफलसुत्तमां पूरण कस्सप अने अजित केशकंबलिनो होवानुं बताव्युं छे. पूरण कस्सप पुण्य अगर पाप जेवी कोई वस्तुने मानतो नथी अने अजित केसकम्बलिनो एवो सिद्धांत छे के अनुभवातीत मंतव्य के जे लोकोमां प्रचलित छे तेने मळतुं कोई तत्त्व ज नथी. आ उपरान्त ते एम माने छे के 'माणस (पुरिसो) चार भूतोनो बनेलो छे; ज्यारे ते मरी जाय छे त्यारे पृथ्वी पृथ्वीमां, पाणी पाणीमां, अग्नि अग्निमा, वायु वायुमां, अने ज्ञानेंद्रियो हवामां[1] (अथवा आकाशमां) विलीन थई जाय छे. ठाठडीने उपाडनार, चार पुरुषो मुडदाने स्मशानभूमिमां लई जाय छे त्यारे कल्पांत करे छे; कपोत रंगना हाडकां बाकी रहे छे अने बीजा सघळां (पदार्थो) बळीने भस्मीभूत थई जाय छे. आ छेल्लं सूत्र थोडा फेरफार साथे सूत्रकृतांग ना पृ० ३४० उपर आवे छे:—'अन्य जनो मुडदाने बाळवा माटे लई जाय छे. ज्यारे अग्नि तेने बाळी नांखे छे त्यारे मात्र कपोतरंगना हाडकां बाकी रहे छे अने चार उपाडनारा ठाठडीने लई गाम तरफ पाछा वळे छे.[2]

जडवादना बीजा सिद्धांत (पृ. ३४३, २२, अने पृ. २३७) ना संबधमां एक बीजी शाखानो पण उल्लेख

१ दीघनिकाय, सामञ्ञफलसुत्त. २०.

२ सुमंगलविलासीनी पृ. १६२मां बुद्धघोष स्पष्ट जणावे छे के गोसाले पोताना शिष्यो जे चतुर्थ वर्गना हता तेना करतां निर्ग्रन्थोने हलकी प्रतिना गण्या छे. गोसाले तो भिक्खुओने तेथीए हलका प्रकारना गण्या छे के जे बाबत उपर बुद्धघोषे लक्ष्य आप्युं नथी. ते उपरथी स्पष्ट जणाय छे के आ भिक्खुओने बौद्ध साधुओ करतां बे भिन्न मानतो हतो.

१ आकाशने बौद्ध ग्रंथोमां पांचमां तत्त्व तरीके मान्युं नथी, परन्तु जैन ग्रंथोमां ते मान्युं छे. जुओ आगळ पृ० ३४३ अने पृ० २३७ गाथा १५. आ मात्रे एक शाब्दिक भेद छे नहींके तात्त्विक.

२. हुं आ स्थळ बेन मूळ सूत्रोने सामसामे मुकुं छुं जेथी करीने तेमनी वच्चेनुं साम्य वधारे स्पष्टरीते समजी शकायः—

आसन्दि पञ्चमा पुरिसा मतमा- | आदहणाए परंडि मिज्जइ;
दाय गच्छन्ति याव अळाहना | अगणिज्झामेत सरीरे कवोपदाणि पञ्चापेन्ति, कापोतकानि | तवण्णाइं अट्ठीनि आसन्दि
अट्ठानि भवन्ति भस्सन्ता हुतियो | पञ्चमा पुरिसा गामं पञ्चा
गच्छन्ति

थएलो छे. ते मतमां पांच भूत उपरान्त छठुं तत्त्व नित्यात्मा मनाय छे. आ मत ते अत्यारे वैशेषिक नामना दर्शनथी जे प्रसिद्धिमां आवेलुं छे तेनुं प्राचीन अथवा लोकप्रसिद्ध रूप छे. बौद्धग्रंथमां आ दर्शनना संस्थापक तरीके पकुध कच्चायन निर्दिष्ट थएलो छे. तेनो मत एवो हतो के आखुं विश्व सात वस्तुनुं (पदार्थोनुं) बनेलुं छे. अने ते सर्वे पदार्थो नित्य निर्विकार अने परस्पर स्वतंत्र छे. ते पदार्थो चार भूत, सुख, दुःख अने आत्मा ए प्रमाणे छे. आ सर्वेनी एक बीजा उपर कांई असर थती नहीं होवाथी कोई पण पदार्थनो वास्तविक नाश थतो नथी. मारे कहेवुं जोईए के सुख अने दुःखने नित्य मानवा छतां पण ते बन्नेनी आत्मा उपर कांई असर थती न मानवी ते मारा अभिप्राय प्रमाणे तो अज्ञानता भरेलुं छे. परन्तु बौद्धोए कदाच असल सिद्धान्तोनुं असत्य आलेखन कर्युं होय तो ते पण संभवित छे. पकुध कच्चायनना विचारो अवश्य करीने अक्रियावादमां अंतर्गत थाय छे. अने आ बाबतमां ते वैशेषिक दर्शन के जे क्रियावादी छे तेनाथी भिन्न पडे छे. आ बन्ने वादो बौद्ध तेम ज जैन साहित्यमां आवता होवाथी तेमनी विशेष व्याख्या करवी अहीं अस्थाने नहीं गणाय. जे सिद्धान्त आत्माने क्रियाशील अने क्रियालिप्त (क्रियाथी जेना उपर असर थाय तेवो) माने छे ते क्रियावादी कहेवाय छे. आ वर्गमां जैनधर्म, ब्राह्मणधर्मो पैकी वैशेषिक अने न्यायदर्शनो (आ बे दर्शनोना स्पष्ट उल्लेखो बौद्ध अने जैन धर्मशास्त्रोमां थएला नथी) तथा बीजां पण एवां केटलांक दर्शनो–के जेनां नाम अत्यारे उपलब्ध थई शकतां नथी परंतु जेनी हयातीनी माहीती आपणे आपणा आ ग्रंथोमांथी मेळवी शकीए छीए, ते सर्वेनो–समावेश थाय छे. अक्रियावाद ते सिद्धान्त कहेवाय छे जेमां आत्मानुं नास्तित्व अगर निष्क्रियत्व अथवा कर्मालिप्तत्व प्रतिपादन करवामां आवे छे. आ वर्गमां सघळा जडवादी मतो; ब्राह्मणधर्मो पैकी वेदान्त, सांख्य अने योगदर्शनो; तथा बौद्ध धर्मनो अंतर्भाव थाय छे. बौद्ध धर्मना क्षणिकवाद तथा शून्यवादनो उल्लेख सूत्रकृतांग १, १४, ४ थी अने ७ मी गाथामां थएलो छे. साथे ए पण जणाववुं जोईए के वेदान्तिओ अथवा तेमना मंतव्योनो पण सिद्धान्तोमा घणे स्थले उल्लेख आवे छे. सूत्रकृतांगना बीजा पुस्तकना पहेला अध्ययनमां, पृ. ३४४ उपर, त्रीजा पाखंड मत तरीके वेदान्तनुं वर्णन थएलुं छे. छठ्ठा अध्ययनमां, पृ. ४१७ उपर, तेनुं फरीथी वर्णन आवेलुं छे. परंतु बौद्धोए गणावेला छ तीर्थीकोमां आ मतनो कोई पण आचार्य नहीं होवाथी आपणे ते उपर आ स्थळे ध्यान देता नथी. [1]

सूत्रकृतांगना बीजा भागना प्रथम अध्ययनमां, चोथा पाखंड मत तरीके दैववाद (Fatalism) नुं वर्णन आवेलुं छे. सामञ्ञ फलसुत्तमां आ मतनुं मक्खली गोसाल नीचे प्रमाणे प्रतिपादन करे छे:—' महाराज, जीवात्माओनी अपवित्रतामां कोई हेतु अगर पहेलां हयाती धरावतुं एवुं कांई कारण नथी. ते अनन्यकृत छे. तेम ज ते पहेलां हयाती धरावती कोई बीजी वस्तुथी उत्पन्न थयेली नथी. (तेवी ज रीते) जीवात्माओनी पवित्रतामां पण कोई कारण अगर पूर्वे हयाती धरावतो कोई हेतु नथी. ते अनन्यकृत छे. तेम ज तेनुं कोई उपादान कारण नथी. आनी उत्पत्ति व्यक्तिओना कोई आचारनुं परिणाम नथी. तेम ज पापकाना कार्योनी पण तेना उपर असर नथी. तेम मनुष्यप्रयत्ननुं पण ते फल नथी. जेने उत्पन्न करवामां, पुरुषनी शक्ति, प्रयत्न, बल, धैर्य, अगर सामर्थ्य एमांनुं कोई कारणभूत थतुं नथी. सर्वे सत्त्व, सर्वे प्राणिओ, सर्वे भूतो, अने सर्वे जीवो,* पछी ते पशु, अगर वनस्पति

१ एक वात याद राखवा जेवी छे के वेदान्तिओ पण बुद्धना प्रतिस्पर्धी तरीके काम बजावता अने तेओ वैदिक धर्मना तत्त्वज्ञोमां आगळ पडता होवाथी आपणे एम अनुमान करवुं जोईए के बौद्ध धर्मनी असरवाळा लोकोथी विद्वान् ब्राह्मणो दूर ज रहेता.

* मूळमां ' सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, एवो पाठ छे. जैन सूत्रोमां पण आ ज क्रमथी अनेक ठेकाणेए पाठ आवे छे. अने ए पाठनुं संक्षेपमांall classes of living beings.

सचेतन प्राणिओना बधा वर्गो ' एवुं भाषान्तर करेलुं छे. बुद्ध घोषनी टीकानुं भाषान्तर, होर्नले, उवासगदसाओना परिशिष्ट नं. २ जाना पान १६ उपर नीचे प्रमाणे आप्युं छे ' सव्वे

गमे ते हो पण तेमनामांना, कोईमां आंतर बल, शक्ति तथा सामर्थ्य नथी; परंतु आ दरेक जीव पोतानी स्वभावनियतिने वश थई, छ प्रकारमांनी कोई पण जातिमां रही सुख-दुःख भोगवे छे. इत्यादि.' आ सिद्धान्तोनुं सूत्र कृतांगमां (l. c.) आपेलुं वर्णन जो के थोडा शब्दोमां छे, छतां पण सरखा भावार्थवाळुं छे; अलबत, ते स्थळे आ सिद्धान्तो मक्खलिपुत्र गोसालना छे एम स्पष्ट कहेवामां आव्युं नथी. जैनो प्रधानतया चार दर्शनोनो उल्लेख करे छेः—क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद अने वैनयिकवाद. आमांथी अज्ञानिकोना मतोनुं मूळमां स्पष्ट कथन करेलुं देखातुं नथी. आ सघळां दर्शनोना विषयमां टीकाकारे जे समजुती आपेली छे, अने जे में पृ. ८३ नी २ नंबरनी टीपमां नोंधेली छे, ते घणी ज अस्पष्ट अने गेरसमजुती उत्पन्न करे तेवी छे. परन्तु ए अज्ञेयवादनो यथार्थ ख्याल आपणने बौद्ध ग्रंथोथी आवी शके तेम छे. सामञ्ञफलसुत्तमां जणाव्या प्रमाणे ते मत सञ्जय बेलट्ठिपुत्तनो हतो; अने त्यां नीचे प्रमाणे तेनुं वर्णन करेलुं छेः—'महाराज, जो मने तमे पुछशो के जीवनी कोई भावी अवस्था छे ? तो हुं जबाब आपीश के जो हुं भावी अवस्था अनुभवी शकुं, तो पछी हुं ते अवस्थानुं स्वरूप समजावी शकुं. जो मने पुछशो के शुं ते अवस्था आ प्रकारनी छे ? तो (हुं कहीश के) ते मारो विषय नथी. शुं ते ते प्रकारनी छे ? ते मारो विषय नथी. शुं ते आ बन्नेथी भिन्न छे ? ते पण मारो विषय नथी. नथी एम नथी ? ते पण मारो विषय नथी.' इत्यादि. आ ज रीते मृत्यु पछी तथागतनी हयाती रहे छे के नहीं ? रहे छे अने नथी रहेती ? रहे छे एमए नथी ? अने नथी रहेती एमए नथी ? आवा प्रश्नो जो कोई पूछे तो तेनो पण ते ए ज रीते जबाब आपे छे. आ उपरथी स्पष्ट छे के अज्ञेयवादीओ कोई पण वस्तुना अस्तित्व अने नास्तित्वना संबंधमां सर्वे प्रकारनी निरूपण पद्धतिओ तपासता हता अने जो ते वस्तु अनुभवातीत मालुम पडती तो तेओ सर्वे कथननी रीतिओनो इनकार करता हता.

बुद्ध अने महावीरना समयमां प्रचलित एवा अन्य तात्त्विक विचारोना विषयमां जैन तथा बौद्ध ग्रंथोमां मळी आवती नोंधो गमे तटली जूज होय, तो पण ते नामांकित कालना इतिहासकारने अति महत्त्वनी छे. कारण के आ नोंधो द्वारा ते कालना धार्मिक सुधारकने केवा प्रकारना पाया उपर तथा कया साधनोनी मददथी पोतानो मत उभो करवो पड्यो हतो ते जणाई आवे छे. एक बाजुए आ बधा पाखंडी मतोमां मळी आवती परस्परनी केटलीक साम्यता अने बीजी बाजुए जैन अगर बौद्धोनी जणाती विशिष्टता उपरथी स्पष्ट रीते अनुमान करी शकाय छे के बुद्ध अने महावीरे केटलाक विचारो तो आ पाखंडीओना मतोमांथी लीधा हता अने केटलाक तेओनी साथे चालता तेमना सतत वादविवादनी असरथी उपजावी कढाया हता. मारुं एम धारवुं छे के सञ्जयना अज्ञेयवादनी विरुद्ध महावीरे पोतानो स्याद्वादनो मत स्थाप्यो हतो. अज्ञानवाद जणावे छे के जे वस्तु आपणा अनुभवनी पछे तेना संबंधमां अस्तित्व अगर नास्तित्व अथवा युगपत् अस्तित्व अने नास्तित्वनुं विधान, अगर निषेध करी शकाय नहीं. ते ज रीते पण तेथी उलटी दिशाए दोडतो स्याद्वाद एम प्रतिपादन करे छे के एक दृष्टिए (अपेक्षाए) कोई पुरुष वस्तुना अस्तित्वनुं विधान करी शके (स्याद अस्ति) तेम बीजी दृष्टिए तेनो निषेध करी शके (स्याद् नास्ति); अने तेवी ज रीते भिन्न भिन्न कालमां ते वस्तुना अस्तित्व तथा नास्तित्वनुं विधान करी शके (स्याद् अस्ति नास्ति) परन्तु जो एक ज कालमां अने एक ज दृष्टिए कोई मनुष्य वस्तुना अस्तित्वनुं तथा नास्तित्वनुं विधान करवा इच्छतो होय तेणे एम कहेवुं जोईए के ते वस्तु विषये कांई कही शकाय नहीं (स्याद् अवक्तव्यः). ते प्रमाणे केटलाक संयोगोमां अस्तित्वनुं विधान करवुं अशक्य छे (स्याद्

सत्ता—एटले ऊंट, बळद, गधेडा अने तेवा बीजा बधा पशुओ. सब्बे पाणा—एटले एकेन्द्रिय द्विन्द्रिय आदि चेतनावाळा प्राणिओ, सब्बे भूता—एटले अण्डज अने गर्भज जीवो; अने सब्बे जीवा—एटले डांगर, जव, घऊं इत्यादि (वानस्पतिक) जीवो.

नास्ति अवक्तव्यः); केटलाक प्रसंगे नास्तित्व (स्याद् नास्ति अवक्तव्यः); अने केटलीक वखते बन्नेनुं विधान करवुं अशक्य होय छे (स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्यः)[1]

आ वाद ते जैनोनो प्रसिद्ध सप्तभंगी नय छे. शुं कोई पण तत्त्ववेत्ता पोताना भयंकर प्रतिस्पर्धीने चूप करवाना प्रयोजन सिवाय, जेने प्रमाणनी जरूर नथी, एवी उघाडी बाबतोनी व्याख्या करवानी इच्छा करे खरो ? एम लागे छे के अज्ञेयवादिओना सूक्ष्म विवादोए प्राय तेमना घणा खरा समकालीन मनुष्योने गुंचवणमां नांख्या हशे अगर भमाव्या हशे; अने तेथी करीने ते सर्वेने अज्ञानवादनी भूल-भूलामणीमांथी बहार निकळवा माटे स्याद्वादनो सिद्धान्त एक क्षेममार्ग तरीके देखायो हशे. आ शास्त्रनी मददथी विरोधिओ उपर आक्रमण करनार अज्ञानवादिओ पोताना ज सामे थई जता हता. आपणे नथी कही शकता के अज्ञेय-वादना केटला अनुयायिओ, आ सप्तभंगी नयना सत्यनी प्रतीति पामी महावीरना धर्ममां आवी गया हशे !

अज्ञेयवादनी बुद्धना उपर पण केटली बधी असर थई हती ते आपणे पाली ग्रंथोमां निरुपित बुद्धना निर्वाण विषयक सिद्धान्तमां जोई शकीए छीए. आ प्रकारनां नि-श्चयात्मक वाक्यो तरफ प्रथम ध्यान प्रो. ओल्डनबर्गे खेंच्युं हतुं. आ वाक्यो निःशंक पणे जणावे छे के मृत्यु बाद तथागत (अर्थात् मुक्तात्मा अथवा जेने वास्तवमां व्यक्तित्वनो हेतु कही शकाय ते) हयाती धरावे छे के नहीं; एवा प्रश्नो उत्तर आपवा बुद्ध चोक्खी ना पाडता हता. जो तेमना समयना लोकोना सांभळवामां आवा विचा-रो बिलकुल न आव्या होत अने आवी केटलीक बाबतो के जे मनुष्यना मनथी अतीत होई ते घणी महत्त्वनी गणाय छे तेना संबंधमां, तेवा प्रकारना उत्तरोथी ते लोकोने संतोष न वळतो होत तो तेओ, तेवा कोई धार्मिक सुधा-रक के जे ब्राह्मणधर्ममां तर्कसिद्ध निरुपित सघळी बाब-तोना संबंधमां पोतानो स्पष्ट अभिप्राय न आपे, तेना उपदेशोने आदरपूर्वक सांभळे ए असंभवित छे. परन्तु वस्तुस्थिति जोतां एम लागे छे के अज्ञेयवादे बौद्धोना निर्वाणना सिद्धान्तने झीलवा माटे भूमि तैयार करी राखी हती[2]. एक बाबत खास नोंध लेवा जेवी छे:—संयुत-निकाय जेनुं भाषांतर प्रो. ओल्डनबर्गे करेलुं छे, तेमां एक ठेकाणे पसेनदि राजा अने खेमा नामनी आर्या वच्चे थएलो संवाद आवे छे. तेमां राजाए मृत्युबाद तथागत हयाती धरावे छे के नहीं ए संबंधमां प्रश्नो पूछेला छे. जे सूत्रोमां आ प्रश्नो पूछेला छे, तेमां सामञ्ञफलसुत्त —के जेनुं भाषांतर उपर आपेलुं छे,—मां जेवा शब्दो संजय वापरे छे तेवा ज शब्दो वापरेला छे.

बुद्धना समयना अज्ञेयवादनी असर बुद्ध उपर थई हती तेवा प्रकारना मारा अनुमाननी पुष्टिमां हुं महावग्ग १, २३ अने २४ मां आपेली एक परंपरागत कथा अत्रे रजु करूं छुं. ते कथामां एम जणावेलुं छे के बुद्धना सौथी वधारे प्रख्यात एवा सारिपुत्त अने मोग्गलान नामना बे शिष्यो, तेमना अनुयायी थया पहेलां सञ्जयना शिष्यो हता अने पछीथी तेओए पोताना जूना गुरुना मतना २५० शिष्योने पण बौद्धमार्गी बनाव्या हता. आ हकिकत बुद्धे बोधि प्राप्त कर्यु त्यार पछी तरत ज बनी हती. आ थी ए संभवित छे के पोताना नवा मतना प्रारंभ कालमां बुद्धे शिष्यो भेळववा माटे ते वखते प्रचलित एवा बीजा मतो तरफ सर्वप्रकारनी योग्य वर्तणुंक राखवानी कोशीश करी हशे.

महावीरना सिद्धान्तोना विकास उपर, मारी मान्य-

१ भांडारकर—रिपोर्ट सन् १८८३-४ पृ. ९५

२ निर्वाणना स्वरूप-कथन संबन्धमां बुद्धे जे मौन धारण कर्युं हतुं ते तेमना वखतमां भले डहापण भरेलुं गणातुं होय, परंतु ते संप्रदायना विकासने माटे तो तेमां घणा परिणामो समाएला हता, कारण के बौद्ध मतना अनुयायीओने, ब्राह्मण दार्शनिको जेवा दूधमांथी पोरा काढनारा तर्कशास्त्रीओनी विरुद्ध पोताना मतने टकावी राखवानो होवाथी, आ महान् प्रश्न के जेना विषयमां ते-मना धर्मसंस्थापके कांई पण निश्चयात्मक कथन कर्युं नहोतुं, ते उपर वधारे स्पष्ट विचारो जणाववानी फरज पडी हती. आ रीते पोताना गुरुए अधुरा राखेला महेलने पूर्ण करवा माटे सामग्री भेगी करवाना उद्देशथी बुद्धनिर्वाण पछी तरत ज बौद्धधर्म पुष्कळ संप्रदायोना रूपमां विभक्त थई गयो हतो. आश्चर्य पामवानी जरूर नथी के सिलोन जे ब्राह्मणविद्याविषयक केंद्रथी घणुं दूर आवेलुं छे त्या बौद्धोना आ निर्वाणनो सिद्धांत असल रूपमां अखंडित रही शक्यो छे.

तानुसार, मक्खलिपुत्त गोसालनी मोटी असर थयेली छे. भगवती १५, १, मां आपेलो तेना जीवननो इतिहास, हॉर्नले पोताना उवासग दसाओना भाषान्तरने अंते, एक परिशिष्टमां संक्षेपमां भाषान्तरित करेलो छे. तेमां ए प्रमाणे नोंधेलुं छे के, गोसाल महावीरनी साथे तेमना शिष्य तरीके श्रमणधर्म पाळतो थको छ वर्ष सुधी रह्यो हतो. परन्तु पछी ते तेमनाथी जुदो थई गयो अने पोतानो नवो धर्म स्थापी जिन तरीके आजीविकोनो नायक कहेवडाववा लाग्यो. परन्तु बौद्ध ग्रंथोमां तेना संबंधमां एवी नोंध मळी आवे छे के ते नन्द वच्छ अने किस संकिच्चनो उत्तराधिकारी हतो अने तेनो संप्रदाय साधुवर्गमां चिरस्थापित (लांबा वखत पूर्वे स्थापित थएलो एवो) मनातो होई अचेलक परिव्राजकना नामे प्रसिद्ध हतो. जैनोनी ए हकिकत के महावीर अने गोसाल ए बन्नेए केटलाक वखत सुधी साथे तपश्चर्या करी हती, तेमां शंका करवानुं काई कारण नथी. परन्तु तेओ बन्ने वच्चे जे संबंध बतावामां आवे छे ते वास्तवमां तेनाथी जुदा प्रकारनो होय तेम लागे छे. मारुं एवुं मानवुं छे;—अने मारा आ अभिप्रायना पक्षमां हुं हमणा ज केटलीक दलीलो आपीश—के महावीर अने गोसाल ए बन्ने पोताना संप्रदायोने एक करवाना अने एकने बीजामां भेळवी देवाना इरादाथी परस्पर सहचारी बन्या हता; अने लांबा वखत सुधी आ बन्ने आचार्यो साथे रह्या हता. ए बाबत उपरथी चोक्कस अनुमान थाय छे के ते बन्नेना मतोनी वच्चे केटलुंक साम्य होवुं ज जोईए. आगळ पृ० २६ उपरनी टीपमां में जणाव्युं छे के 'सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा' ना स्वरूपनुं वर्णन गोसाल तेम ज जैनोनी वच्चे समान छे. अने टीकामां जणावेल एकेंद्रिय द्विन्द्रियादि वर्गरूपे प्राणिओना विभागो के जे जैन ग्रंथोमां घणा ज साधारण छे, तेवा विभागोनो गोसाले पण उपयोग कर्यो छे. चमत्कारी अने लगभग असत्याभासरूप छ लेश्यानो जैनसिद्धान्त,—जेने पहेली ज वखत दृष्टिगोचर कर्यानुं मान प्रो० ल्यूमनने घटे छे—गोसाले करेला सघळी मनुष्यजाति माटेना छ वर्गोना विभाग साथे संपूर्ण रीते मळतो आवे छे. परंतु आ बाबतना संबंधमां मारुं एवुं मानवुं छे के जैनोए मूळ आ विचार आजीविको पासेथी लीधो हतो, अने पाछळथी पोताना बीजा बधा सिद्धान्तोनी साथे ते संगत बने तेवी रीते तेमां फेरफार कर्यो हतो. आचार विषयक सघळा नियमोना संबंधमां, जेटला प्रमाणो उपलब्ध थाय छे ते उपरथी, लगभग सिद्ध थाय छे के महावीरे अधिक कठोर नियमो गोसालना लीधा हता. कारण के उत्तराध्ययन २३, १३ (पृ० १२१) मां जणाव्या प्रमाणे पार्श्वना धर्ममां निर्ग्रंथोने नीचे अने उपरना भागमां एकेक वस्त्र पेहरवानी छूट हती. परंतु वर्धमानना धर्ममां कपडानो स्पष्ट निषेध करवामां आव्यो हतो. नग्न साधु माटे जैन सूत्रोमां अनेक स्थळे मळी आवतो शब्द 'अचेलक'[1] छे जेनो शब्दार्थ 'वस्त्र रहित' एवो थाय छे. बौद्धो अचेलको अने निर्ग्रंथोने भिन्न भिन्न माने छे. उदाहरण तरीके धम्मपदनी उपरनी बुद्धघोषकृत टीकामां केटलाक भिक्षुओना संबंधमां जणावेलुं छे के, तेओ अचेलको करतां निर्ग्रंथोने वधारे पसंद करता हता. कारण के अचेलको तद्दन नग्न रहे छे (सब्बसो अपटिच्छन्ना) परन्तु निर्ग्रन्थो कोई जातनुं टूंकुं आवरण[2] राखे छे; जेने ते भिक्षुओ खोटी रीते 'लज्जानी खातर' मानता हता. अचेलक शब्दद्वारा बौद्धो मक्खलि गोसाल अने तेनी पूर्वे थई गएला किस संकिच्च अने नन्द वच्छना अनुयायिओने सूचवे छे; अने तेओना धार्मिक आचारोनुं वर्णन मज्झिमनिकायमां संगृहीत राख्युं छे. तेमां ते स्थले निगण्ठपुत्त सच्चक—जेनी ओळखाण आपणने उपर थई गएली छे

१ बीजो एक शब्द 'जिनकल्पिक' छे जेनो अर्थ 'जिन जेवो आचार पालनार' थई शके. श्वेतांबरो कहे छे के जिनकल्पने बदले प्राचीन काळमां ज स्थविरकल्प स्थिर करवामां आव्यो हतो जेनी अंदर वस्त्र राखवानी छूट आपवामां आवी हती.

१ जुओ फुस्बोलनी आवृत्ति, पृ. ३९८.

२ मूळमां आवेला 'सेसकं पुरिमसमणिता व पटिच्छादेन्ति' ए शब्दो बराबर स्पष्ट थता नथी. परंतु तेमां जोवामां आवतो विरोध निशंकरीते ए ज भावार्थ सूचवे छे. पाली शब्द 'सेसक' ते मारा धारवा प्रमाणे संस्कृत 'शिक्षक' नुं रूप छे आ जो खरूं होय तो उपरना शब्दोनुं भातान्तर नीचे प्रमाणे थई शके 'तेओ (शरीरना) आगला भाग उपर (कपडुं) पेहरी गुह्यांगने ढांके छे

ते—कायभावना एटले शारीरिक पवित्रतानो अचेलकोना आचारने उद्देशीने अर्थ समजावे छे. सच्चकना वर्णनमांनी केटलीक विगतो टीकाना अभावे नहीं समजी शकाय तेवी दुर्बोध छे. परन्तु केटलीक तो तद्दन स्पष्ट छे; अने ते, केटलाक प्रसिद्ध जैन आचारो साथे संपूर्ण सादृश्य धरावे छे. दाखला तरीके अचेलको पण जैन साधुओनी माफक भोजननुं आमन्त्रण स्वीकारता नथी. तेओने माटे अभिहत अथवा उद्दिस्सकत अन्न लेवानो निषेध छे. आ बन्ने शब्दो जैनोना अभ्याहृत अने औद्देशिक शब्दो (जुओ पृ० १३२ टिप्पण) समान होय तेम दरेक रीते संभवित छे. वळी तेओने मांस अने मदिरा लेवानी छूट नथी. 'केटलाक मात्र एक ज घरे भिक्षा लेवा जाय छे अने मात्र एक ज ग्रास खोराक ले छे. केटलाक वधारेमां वधारे सात घेर भिक्षा माटे जाय छे; केटलाक एक ज वार आपेलुं अन्न लईने रहे छे; केटलाक वधारेमां वधारे सात वार सुधी आपेलुं लईने रहे छ' आ प्रकारना ज जैन साधुओना केटलाक आचारो कल्पसूत्रनी सामाचारीमां वर्णवेला छे (२६, भाग १, पृ० ३००; अने आ ग्रंथना पृ० १७६; गाथाओ १५ अने १९). नीचे वर्णवेलो अचेलकोनो आचार अने जैनोनो आचार बराबर एक ज छे एम स्पष्ट जणाय छे. 'केटलाक हमेश एक ज वखत भोजन करे छे अने केटलाक बे दिवसमां एक ज वखत भोजन करे छे,[1] इत्यादि; अने ए रीते वधता क्रमे केटलाक ठेठ एक पखवाडीए एक वार भोजन ले छे. ' अचेलकोना आवा बधा नियमो अने जैनोना नियमो या तो लगभग एक ज छे अगर तो अतिशय मळता छे. अने आ प्रकारनुं साम्य जोवामां आवतुं होवा छतां, तथा सच्चक एक निगण्ठपुत्त गणातो होवाना लीधे तेमना धार्मिक आचारोथी ते परिचित होवा छतां, कायभावनाना आदर्श तरीके निर्ग्रन्थोनो उल्लेख करतो नथी ते खरेखर आश्चर्यजनक लागे छे. परन्तु आ आश्चर्यजनक बाबतने नीचेनी कल्पना द्वारा आपणे सहेलाईथी समजावी शकीए छीए, अने ते एवी रीते के बौद्ध ग्रंथोमां बहुधा जे असलना प्राचीन निर्ग्रन्थोनी बाबतना उल्लेखो मळी आवे छे, ते (निर्ग्रन्थो) जैन समाजना जे एक वर्ग महावीरना उग्र व्रतोनो स्वीकार कर्यो हतो तेओ नहीं, परन्तु महावीरना मतना विरोधी न बनतां जेओ ते संयुक्त संप्रदायमां रहीने पण पोताना प्राचीन संप्रदायना केटलाक खास आचारोने वळगी रह्या हता ते प्रकारना पार्श्वना अनुयायिओ हता. आ प्रकारना केटलाक कठोर नियमो के जे प्राचीन धर्मना अंगभूत मनाता न हता अने जेमने महावीरे ज दाखल करेला हता, ते संभवित रीते तेमणे गोसालना अचेलक अथवा आजीविक नामे प्रसिद्ध अनुयायिओना लीधा हता. अने आनुं कारण ते तेओए (महावीरे) जे छ वर्ष सुधी गोसालनी साथे अत्यंत निकट सहचर तरीके रही तपश्चर्या करी हती, ते छे. आ प्रमाणे आजीविकोना केटलाक धार्मिक विचारो अने आचारोनो स्वीकार करवामां महावीरनो आशय गोसाल अने तेना अनुयायिओने पोताना पक्षमां लेवानो होय एम लागे छे; अने केटलाक समय सुधी तो आ उद्देश सफल पण थयो होय. परन्तु आखरे बन्ने नेताओनी वच्चे मतभेद थयो हतो, के जेनुं कारण घणुं करीने ए प्रश्न हतो के आ संयुक्त संप्रदायनो नेता कोण बने. गोसालने साथे थएला आ टुंक समयना सम्बन्धथी स्पष्टरीते महावीरनी पदवी घणी सुस्थित बनी हती; परन्तु गोसाले, जैन हकिकतो अनुसार, पोतानी प्रतिष्ठा गुमावी हती अने आखरे तेना शोकपूर्ण अवसानथी तेना संप्रदायना भाविने सख्त फटको लाग्यो.

आपणे जो के ते बधुं साबीत न करी शकीए, परन्तु महावीरे अन्य संप्रदायोमांथी घणुं लीधुं छे ए वात निःसंशय छे. जैन धर्म यथार्थमां एक संस्थिति रूप दर्शन नहीं होवाथी तेमां नवा मतो तथा सिद्धान्तोना उमेरा घणा सहेलाईथी थई शके तेम हतुं. जे जे संप्रदाय अगर

१ आ प्रकारना उपवासोने जैनो चउत्थभत्त छठ्ठभत्त इत्यादि नामो आपे छे (जुओ उ. त. ल्युमनसपादित औपपतिक सूत्र ३० I A); अने आ उपवास करनारा साधुओ अनुक्रमे चउत्थभत्तिय, छठ्ठभत्तिय, इत्यादि नामोथी ओळखाय छे. (जुओ दा. त. कल्पसूत्र सामाचारी २१.)

तो तेना भागो महावीरनी सफल कार्यदक्षताने[1] लईने जैनधर्ममां आवता गया ते सघळा संप्रदायोना केटलाक प्रीतिपात्र विचारो तेम ज तेमना प्रिय गुरुओ, जेओने तेओ चक्रवर्ती अथवा तीर्थंकरना नामे ओळखता हता, ते सघळां दाखल थई गयां होय तो तेमां नवाई नथी. अलबत् आ एक मात्र मारूं अनुमान छे. परन्तु आ अनुमाननी मददथी आपणे जैनोनी आचार्यो साधुओ विषयक विलक्षण परंपरानुं उत्पत्ति कारण समजी शकीए छीए. प्रत्यक्ष प्रमाणनो ज्यां सर्वथा अभाव होय त्यां आपणने अनुमानो उपर ज आधार राखवो पडे छे; अने ए अनुमानोमां पण जे अनुमान विशेष सत्य—सांभळतां खरूं लागे एवुं—होय ते स्वीकारवा योग्य बने छे. फक्त आ बाबत ने छोडीने बाकीनी जे जे बाबतो आ प्रस्तावनाना प्रारंभनां पानाओमां में मारी कल्पनानुरुपे रजु करेली छे ते सघळी आना करतां वधारे प्रमाणभूत छे, ए हुं अत्रे खास जणावी दऊ छुं. ए बधा विचारोमां मारा कोई पण कथनथी जैन परंपरागत कथन के—जे लेखी पुराव ओना अभावमां आपणने एक मात्र ते ज मार्गदर्शक बने छे—तेने आघात पहोंचतो नथी. अने बीजुं, मारी एके कल्पना पण एवी नथी के जे ते समयनी परिस्थिति अनुसार असंभवित लागे. जैन धर्मना प्राचीन इतिहासनी रचनामां मुख्य स्थान रोकनार जे, ए एक हकीकत छे के, महावीरना समयमां पार्श्वनाथना शिष्यो हयाती धरावता हता अने जेनो निर्देश बतावती परंपरा पण विद्यमान होई तेनी सत्यता पण अत्यारना सघळा विद्वानो एके अवाजे स्वीकारे छे, तेनो ज में अहिं उपयोग कर्यो छे.

हवे आ रीते जो जैनधर्म ए एक प्राचीन कालथी चालतो आवतो धर्म होय अने महावीर तेम ज बुद्ध करतां वधारे जुनो होय तो तेना तत्त्वज्ञानना स्वरूपमां पण कांईक प्राचीनतानां चिह्नो देखावां जोईए. आवुं एक चिह्न ए धर्ममां खास मळी आवे छे, अने ते तेनो, सवळी वस्तु चैतन्य युक्त छे, एम बतावतो सचेतनवाद छे. ते वाद जणावे छे के मात्र वनस्पतिमां ज नहीं परन्तु पृथ्वी, पाणी, अग्नि, अने वायुना कणोमां पण आत्मतत्त्व रहेलुं छे. मानवजातिशास्त्र (*Ethnology*) आपणने एम शीखवे छे के जंगली लोकोनी तत्त्वज्ञान विषयक सघळी मान्यताओ सचेतनवादमूलक होय छे. आ सचेतनवाद जेम जेम जनसंस्कृति वधती जाय छे, तेम तेम शुद्ध मनुष्यत्वरूपमां ज मात्र परिणत थतो जाय छे. आथी करीने जो जैन धर्मनुं नीतिशास्त्र मोटे भागे आ प्राचीन सचेतनवाद—मूलक होय तो जैनधर्मनी पहेल वहेली उत्पत्तिना समये ते सचेतनवादनो सिद्धांत हिन्दुस्ताननी प्रजाना मोटा भागोमां विस्तृतरुपे विद्यमान होवो जोईए. आ परिस्थिति ते अति प्राचीन समयनी होई शके के जे वखते हिन्दुस्तानना मनुष्योना मन उपर उंचा प्रकारनी धार्मिक मान्यताओए अने पूजानी पद्धतिओए असर करी न होती.

जैन धर्मनी प्राचीनतानुं बीजुं चिन्ह ते तेनी वेदान्त अने सांख्य जेवां बे सौथी प्राचीन ब्राह्मण दर्शनोनी साथे रहेली सिद्धांतविषयक समानता छे. ते प्राचीन कालमां तत्त्वज्ञानना (Metaphysics) विकास क्रममां गुण नामना पदार्थनो जेवो जोईए तेवो खुल्लो अने स्पष्ट ख्याल थई चूक्यो ह न हतो; परन्तु ते पदार्थ द्रव्यपदार्थमांथी उत्क्रांत थई रह्यो हतो एम लागे छे. जे जे वस्तुने आपणे गुण तरीके ओळखीए छीए ते, ते वखते मूलथी वारंवार द्रव्य तरीके मनाई जती अने केटलीक वखते द्रव्य साथे तेनुं मिश्रण पण थई जतुं. वेदान्तमां परब्रह्मने शुद्ध सत्ता, ज्ञान, अने आनन्दरूप स्वाभाविक गुणथी सम्पन्न नहीं, परंतु सत्, चित्, अने आनंदस्वरूप ज मानवामां आव्युं छे. सांख्यमां पुरुष अथवा आत्माना स्वभावनुं वर्णन करती वखते तेने ज्ञान अथवा तेजोरूप बतावामां आव्यो छे. अने जो के सत्त्व, रजस्, अने तमस्,

१ खरेखर महावीर तेमना पोताना मार्गमां एक महान् व्यक्ति हशे, तेम ज तेमना समकालीन पुरुषोमां ते एक उत्तम प्रकारना नेता पण हशे, तेमां शक नथी. तेमनी तीर्थंकर पद—प्राप्तिमां जेटले अंशे, तेमणे पोताना मतनो प्रसार करवाथी संपादित करेलो तेमनो यश क रणभूत थयो छे तेटले वधे अंशे तेमनुं पवित्र जीवन कारण भूत न होतुं थकुं.

ए त्रण पदार्थोने गुणरूपे गणाव्या छे खरा, परंतु गुणनुं जे लक्षण आपणे स्वीकारीए छीए ते अनुसार ते गुणो थई शकता नथी. प्रो० गार्बेना जणाव्या प्रमाणे वास्तवमां ते मूळ प्रकृतिना अवयवो ज छे. आ ज प्रकारना सिद्धांतने लईने सामान्य रीते जैनोना प्राचीन सूत्रोमां द्रव्य अने तेना पर्यायोनो ज मात्र उल्लेख करेलो होय छे. सूत्रोमां गुण पदार्थनो ज्यारे कोईक ज ठेकाणे उल्लेख थएलो मळी आवे छे त्यारे पाछळना बीजा बधा ग्रंथोमां ते नियमित रीते वर्णवेलो होय छे. आ उपरथी एम स्पष्ट जणाय छे के ते पाछळना काळमां स्वीकारवामां आव्यो होवो जोईए. अने तेनुं कारण न्याय वैशेषिक दर्शनोना तत्त्वज्ञान अने साहित्यनी जे असर धीमे धीमे भारतवर्षना वैज्ञानिक विचारो उपर थती हती ते ज होवुं जोईए. पर्याय एटले विकास अगर अवस्थान्तरनी मान्यतामां गुण जेवा स्वतंत्र पदार्थने स्थान ज मळी शके तेम नथी. कारण के द्रव्य दरेक काळमां तेना पर्यायना रुपमां ज रहे छे, अने तेथी करीने पर्याय गुणात्मक ज होय छे; अर्थात् पर्यायोनी अंदर गुणोनो समावेश थई ज जाय छे. अने आ ज विचार प्राचीन सूत्रोमां लीधेलो होय तेम जणाय छे. अन्य एक उदाहरण, जैनोए जे अद्रव्यत्वयुक्त पदार्थ उपर द्रव्यत्वनो आरोप करी, वास्तविक रीते जे वस्तु गुणना वर्गमां आवी जाय छे तेवी 'धर्म' अने 'अधर्म' ए बे वस्तुओ, विषयक छे. आ बे वस्तुओने जैनोए द्रव्य तरीके वर्णवी छे के जेनी साथे जीवनो संबंध रहेलो होय छे.[1] आ द्रव्योने आकाशनी साथे ज संपूर्ण लोक व्यापी मानेला छे. वैशेषिको पण आकाशने द्रव्य माने छे. जो ते समयमां द्रव्य अने गुण ए बंने पदार्थोनुं भिन्न भिन्न वर्गीकरण थयुं होत अने बन्ने अन्योन्याश्रित मनाता होत, के जेम वैशेषिको माने छे, (गुणाश्रयं द्रव्यम् अने द्रव्यान्तर्वर्ती गुणः) तो उपर जणावेल गोटाळा भरेला विचारो जैनोए कदापि स्वीकार्या नहीं होत.

उपरोक्त विवेचन उपरथी स्पष्ट जोई शकाय छे के वैशेषिक दर्शन साथे जैनोना केटलाक विचारो मळता आवता होवाथी जैनधर्मनी उत्पत्ति तेना पछी थई छे, एवो जे मत डॉ० भाण्डारकरे[2] उपस्थित करेलो छे तेनी साथे हुं समत थई शकुं तेम नथी. वैशेषिक दर्शनना स्वरुपनुं संक्षिप्त वर्णन नीचे प्रमाणे आपी शकाय के—संस्कृत भाषा बोलनार तथा समजनार बधा माणसोए मनन करेला सर्वसाधारण विचारोनी जे पद्धतिसर व्यवस्था अने तेनुं जे तात्विक प्रतिपादन—निरूपण, ए ज वैशेषिक दर्शन छे. आ प्रकारनुं पदार्थविज्ञानशास्त्र प्राप्त करवानुं काम तो घणा प्राचीन काळथी शुरु थयुं हशे अने कणादना सूत्रोमां जेवुं ए शास्त्र संपूर्ण रूपे प्रतिपादित थयुं छे तेवुं तैयार थता पहेलां मनुष्योने घणी सदीओ सुधी धीरजथी मानसिक परिश्रम उठाववो पड्यो हशे; तेम ज तत्त्वज्ञानविषयक सतत चर्चाओ चलाववी पडी हशे. आथी वैशेषिक दर्शननी आदि अने अंतिम स्थापनानी वच्चेना काळमां जो वैशेषिक विचारो लई लेवानो खोटो या खरो आरोप जैनो उपर मूकवामां आवे तो, ते कदाच तेम संभवी शके खरूं. आ स्थळे बीजी एक बाबतनो उल्लेख करवो अस्थाने नहीं गणाय, अने ते ए छे के जे मुद्दाओ हुं अत्र चर्चवा इच्छुं छुं ते मुद्दाओने लईने डॉ० भाण्डारकरनो एवो मत थएलो छे के 'जैनोना विचारो ते एक बाजु सांख्य अने वेदान्तदर्शन अने बीजी बाजु वैशेषिक दर्शन एम बे पक्षनी वच्चेना समन्वयना आकारना छे.' परन्तु प्रस्तुत चर्चाने माटे तो ते बन्ने प्रकारना विचारो सरखा छे:—एटले के साक्षात् लेवुं अगर वे प्रकारना विरुद्ध विचारोनुं तडजोड करवुं, ए एक ज छे. उपरोक्त मुद्दाओ नीचे प्रमाणे छे:—(१) जैन दर्शन अने वैशेषिक दर्शन ए बन्ने क्रियावादी छे. अर्थात् ते बन्ननुं मानवुं छे के आत्मा उपर कर्म, कषायो तथा वासनादिनी साक्षात् असर थाय छे. (२) बन्ने दर्शनो असत्कार्यना सिद्धान्तने माने छे; एटले के तेमना मते कार्य ते तेना उपादान कारणथी भिन्न छे. परन्तु

१ आ कल्पना मूळ वैदिक हिंन्दुओनी हती, तेम ओल्डनबर्ग पोताना Die Religion des veda नामना पुस्तकना पृ० ३१७ उपर जणाव्युं छ.

२ जुओ तेमनो रीपोर्ट, सन १८८३—८४, पृ. १०१

वेदान्त अने सांख्य बन्ने सत्कार्य वादने माने छे: अर्थात् कार्य कारणने भिन्न माने छे. (३) ए बन्ने दर्शनोमां गुण अने द्रव्यनो पृथक् विभाग थएलो छे. ए छेल्ली बाबत तो आपणे उपर चर्ची गया छीए; तेथी हवे आपणे प्रथम बे मुद्दाओना संबंधमां विचार करवानो रह्यो छे. (१) अने (२) मां जे मन्तव्योनुं निरुपण करेलुं छे. ते व्यावहारिक ज्ञान–साधारण बुद्धिना विचारो छे. (अर्थात् सहु कोई समजी शके तेवा छे) कारण के आपणा उपर वासनाओनी साक्षात् असर थाय छे ज, तेम ज कारणथी कार्य भिन्न छे ते पण आपणा अनुभवनी बहारनां वात नथी. उ.त. बीज अने वृक्ष ए बन्ने परस्पर भिन्न छे, एम दरेक विवेकी माणस जाणे छे; अने ते मात्र सामान्य अनुभवनो विषय छे तेम पण लाग्या विना नहीं रहे. आवा विचारोने अमुक दर्शनना खास लक्षण रूपे मानी शकाय ज नहीं; अने एक बीजा मतोमां आवा विचारो समानरूपे जोवामां आवे ते उपरथी ते, एके बीजाना मतमांथी लीधेला छे तेम पण कही शकाय नहीं. परंतु जो बे भिन्न दर्शनोमां परस्पर विपरीत विचारदर्शी एक ज सिद्धान्त आव्यो होय तो ते बाबत अवश्य विचारणीय होय छे. आवो सिद्धान्त मूळ तो ते एक ज दर्शनमांथी उत्पन्न थएलो होय छे अने ते तेमां सुप्रतिष्ठित थया पछी ज अन्यद्वारा स्वीकृत थाय छे. दिक् अने आकाश ए बन्ने भिन्न द्रव्यो छे ए जातनो वैशेषिकोनो खास स्वतंत्र तर्कसिद्ध सिद्धांत छे. ते जैन दर्शनमां बिलकुल देखातो नथी. वेदांत अने सांख्य जेवा अधिक प्राचीन दर्शनोमां तथा जैन दर्शनमां आकाश अने दिक् वच्चे बिलकुल भेद करवामां आव्यो नथी. ए दर्शनोमां एकलुं आकाश ज बन्ननुं प्रयोजन सारे छे.

वैशेषिक अने जैन दर्शननी वच्चे मूल सिद्धान्तोमां भेदसूचक एवां केटलाक उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे. पहेलाना मते आत्माओ अनन्त अने सर्वव्यापी (विभु) छे; परन्तु बीजाना (जैनोना) मते तेओ मर्यादित परिमाणवाळा छे. वैशेषिको धर्म अने अधर्मने आत्माना गुणो माने छे, परन्तु उपर जणाव्युं तेम जैनो ते बन्नेने एक जातना द्रव्यो माने छे. एक बाबतमां, एक विरुद्ध वैशेषिक विचार अने तद्भिन्न जैन सिद्धान्त वच्चे केटलुंक सादृश्य जोवामां आवे छे. वैशेषिक मतमां चार प्रकारना शरीरो मानेलां छे—पार्थिव शरीर जेवुं के मनुष्य पशु आदीनुं, जलात्मक शरीर जेम वरुणनी सृष्टिमां छे, आग्नेय शरीर जेम अग्निनी सृष्टिमां छे, अने वायवीय शरीर जेम वायुनी सृष्टिमां मळी आवे छे. आ विचित्र विचार साथे सदृशता धरावनारो जैनदर्शनमां पण एक विचार छे. जैनो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, अने वायुकाय; एम ४ काय माने छे. आ ४ मौलिक पदार्थो के जे मूळ तत्त्वो छे अथवा तो तेना पण सूक्ष्मभागो छे, तेनी अंदर एक एक विशिष्ट आत्मा रहेलो छे, एम तेओ माने छे. आ जड-चैतन्यवादनो सिद्धान्त उपर जणाव्या प्रमाणे असल सचेतनवादनुं परिणाम छे. वैशेषिकोनो एतद्विषयक विचार जो के मूळ एक ज विचार प्रवाहमांथी उत्पन्न थएलो छे खरो, परन्तु तेमणे ते विचार लौकिक पुराणोना अनुरूपे गोठवेलो छे. आ बन्नेमां जैनमत वधारे प्राचीन छे अने ते वैशेषिक दर्शनना चार प्रकारना शरीर वाला मतना करतां पण तत्त्वज्ञानना वधारे पुरातन विकासक्रमना समयनो छे. मारा अभिप्राय मुजब वैशेषिक अने जैन दर्शननी वच्चे एवो कोई पण संबंध ज न हतो के जेथी एक दर्शने बीजामांथी विचारो लीधा छे, एम स्थापित करी शकाय. छतां पण हुं एम कबूल करूं छुं के ए बे दर्शनो वच्चे केटलुंक विचारसादृश्य अवश्य रहेलुं छे. वेदान्त अने सांख्यना मूळ तत्त्वभूत विचारो जैन विचारोथी तद्दन विरुद्ध छे; अने तेथी करीने जैनो पोताना सिद्धान्तने कांई पण आंच आव्या दीधा सिवाय तेमना विचारो स्वीकारी शके ज नहीं. परन्तु वैशेषिक ए एवा प्रकारनुं दर्शन छे के जेथी जैन सिद्धान्त पोताना मतने आघात पहोंचाड्या सिवाय केटलीक हद सुधी तेनी साथे संमत थई शके छे. अने आथी ज न्याय–वैशेषिक दर्शन उपरना ग्रंथकारोमां जैनोनां पण नामो जोवामां आवे तो तेमां नवाई पामवा जेवुं नथी. जैनो तो आनाथी पण आगळ वधीने त्यां

सुधी जणावे छे के वैशेषिक दर्शन स्थापनार तेमना मतनो ज एक कौशिक गोत्रीय छलुय रोहगुत्त नामनो निन्हव हतो जेणे वि. सं. ५४४ (इ. स. १८) मां त्रैराशिक मत नामनो छट्ठो नैन्हविक संप्रदाय स्थाप्यो हतो. आ दर्शननुं जे वर्णन आवश्यक सूत्र VV. 77–83 मां आपेलुं छे ते वांचवाथी जणाय छे के ते सघळुं वर्णन कणादना वैशेषिक दर्शनमांथी लीधेलुं छे. कारण के तेमां (सात नहीं पण) छ पदार्थो अने तेना पेटा भेदोनुं वर्णन आपेलुं छे; अने आ उपरान्त गुणना वर्गमां (२४ नहीं परन्तु) १७ वस्तुओनुं वर्णन करवामां आवेलुं छे; जे वैशेषिक दर्शन १, १, मां आपेली हकिकत साथे बराबर मळी रहे छे.

मारुं मानवुं छे के, जैनो अनेक बीजी बाबतोनी माफक, हिंदुस्तानना प्रत्येक प्रसिद्ध पुरुषने पोताना धर्मना इतिहास साथे जोडी देवानी बाबतमां पोताने घटे तेना करतां अधिक माननो हक्क करे छे. उपरोक्त जैन दंतकथाने असत्य मानवामां मारां कारणो नीचे मुजब छेः— वैशेषिक दर्शन वास्तवमां एक आस्तिक ब्राह्मण दर्शन मनाय छे अने ते मुख्यत्वे करीने स्वधर्मचुस्त हिन्दुओ द्वारा विकासित थयुं छे. आम होवाथी तेमणे सूत्रकारनुं जे नाम तथा काश्यप एवुं जे गोत्र बताव्युं छे ते संबंधमां तेओ असत्यालाप करे छे, एवी शंका करवानुं जराए कारण जणातुं नथी. अने बीजुं ए के समग्र ब्राह्मण साहित्यमां एवो क्यांए उल्लेख मळी आवतो नथी के वैशेषिक दर्शनना कर्तानुं खरूं नाम रोहगुत्त हतुं तथा तेनुं गोत्र कौशिक हतुं. तेम ज रोहगुत्त अने कणाद ए बन्ने नामो एक ज व्यक्तिनां होय तेम पण मानी शकाय नहीं, कारण के तेओना गोत्र स्पष्ट भिन्न भिन्न जोवामां आवे छे. 'कणादनो अन्वयायी ते काणाद' ए शब्द, व्युत्पत्तिशास्त्रना अनुसारे क्राक-वाचक एटले घुवड वाचक छे; अने एथी ते दर्शननुं उपहासात्मक नाम औलूक्य दर्शन पडेलुं छे. रोहगुत्तनुं बीजुं नाम छुलुय छे, जेनुं संस्कृतरुप षडुलूक[2] थाय छे. तेमां घुवड अने घणुं करीने काणादोनुं सूचन थाय छे ए खरुं छे, परन्तु उलूक शब्द जैनोए रोहगुत्तना गोत्रने अर्थात् कौशिकने[3] उद्देशीने लखेलो होय तेम जणाय छे. कौशिक शब्दनो अर्थ पण घुवड ज थाय छे. परन्तु आ बाबतमां जैनोनी दंतकथा करतां सर्वब्राह्मणसंमत परंपरा वधारे पसंद करवा लायक होवाथी, आपणे जैनोना परंपरागत कथनने एवी रीते समजावी शकीए के रोहगुत्ते आ वैशेषिक दर्शनने नवुं प्ररूप्युं न होतुं परंतु पोताना नैन्हविक विचारोने समर्थित करवा वैशेषिक मतनो मात्र अंगीकार कर्यो हतो.

आ भागमां भाषांतरित करेलां उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांग सूत्रना विषयमां प्रो. वेबरे Indische Studien, Vol. XVI. p 259ff अने Vol. XVII, p 43ff. मां जे लख्युं छे ते उपरान्त मारे कांई विशेष उमरेवानुं नथी. आ बन्नेमां, सूत्रकृतांग ए बीजुं अंग गणाय छे अने जैन आगमोमां अंगोने प्रथम—प्रधान—स्थान आपवामां आवे छे; तेथी ते उत्तरायध्यन सूत्र, के जे प्रथम मूळ सूत्र गणातुं होई सिद्धान्तमां तेने छेल्लुं स्थान मळेलुं छे, तेना करतां वधारे प्राचीन छे. चोथा अंगमां आपेला सिद्धान्तोना सार उपरथी जणाय छे के सूत्रकृतांगनो मुख्य उद्देश नवीन साधुओने विरोधी आचार्योना पाखंडी मतोथी संरक्षित राखवानो अने ते रीते सम्यग् दर्शनमां स्थिर बनावी तेमने परमश्रेय प्राप्त करावववानो छे. आ हकिकत एकंदर साची छे, परन्तु सर्वांगपूर्ण नथी; ए आपणे आ पुस्तकनी शुरुआतमां आपेली विषय सूचि उपरथी जोई शकीए छीए. ग्रन्थनी शुरुआतमां विरोधी मतोनुं निराकरण आपवामां आवेलुं छे अने तेनो ते ज विषय फरीथी अधिक विस्तार साथे बीजा श्रुतस्कंधना प्रथम अध्ययनमां चर्चवामां आवेलो छे. प्रथम श्रुतस्कं-

१ जुओ, कल्पसूत्रनी मारी आवृत्तिनुं पृष्ठ. ११९

२ अक्षरशः—छ घुवड. आ शब्दनो पहेलो 'छ' शब्द वैशेषिक दर्शनना छ पदार्थोनो सूचक छे.

३ भाग १, पृ० २९०; परन्तु प्रो. ल्युमेन l. c. p. 121. उपर भाषान्तर करेली एक दंतकथामां तेनुं गोत्र 'छऊलू' तरीके लख्युं छे.

धर्मा आनी पछी पवित्र जीवन गाळवा संबंधी, साधुना परिषहो संबंधी, जेमां खास करीने तेमना मार्गमां बतावबामां आवतां प्रलोभनो तथा असाधुजनो तरफथी मळता शारीरिक कष्टो संबंधी, तथा धर्मना आदर्शभूत महावीरनी स्तुति विषयक अध्ययनो आवेलां छे तेनी पछी बीजा पण तेवा ज विषयोपर अध्ययनो छे. बीजो श्रुतस्कंध जे लगभग संपूर्ण गद्यमां ज लखाएलो छे तेमां पण आवा ज प्रकारना विषयोनुं निरूपण करेलुं छे. परन्तु तेना विविध भागो वच्चे कोई पण देखीतो संबंध जोवामां आवतो नथी. आ उपरथी ते स्कन्ध अनुपूर्तिरूपे गणी शकाय अने तेथी ते पाछळना कालमां प्रथम स्कंधमां थएलो एक उमेरो छे. प्रथम स्कन्धनो उद्देश स्पष्ट रीते जुवान साधुओने मार्ग बताववानो छे.[1] तेनी रचना शैली पण आ ज प्रयोजनने उपकारक थाय तेवी राखवामां आवी छे. तेमां घणा छंदोनो पण उपयोग करवामां आव्यो छे, जेथी तेमां कवित्वनो पण समावेश थएलो छे एम मानवुं जोईए. आमांथी केटलीक गाथाओनुं रूप कृत्रिम लागे छे अने ते उपरथी ए ग्रंथ एक ज कर्तानो रचेलो होय तेम आपणे मानी शकीए छीए. बीजो स्कन्ध प्रथम स्कन्धमां चर्चेला विषयो उपर लखेला निबन्धोनो एक समूह होय एम जणाय छे.

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांग बन्ने सूत्रोनो उद्देश तथा तेमां चर्चाएला केटलाक विषयो परस्पर समान छे, परंतु सूत्रकृतांगना मूळ भाग करतां उत्तराध्ययन वधारे लांबुं छे तेम ज ते सूत्रनी योजना पण वधारे कुशळतापूर्वक करवामां आवी छे. तेनो मुख्य आशय नविन साधुने तेनी मुख्य फरजोनो बोध आपवानो, तथा विधि अने उदाहरणो द्वारा यति जीवननी प्रशंसा करवानो, तेना दक्षिाकाळ दरम्यान आवतां विघ्नो सामे चेतवणी आपवानो, तथा केटलुंक तात्त्विक ज्ञान आपवानो पण छे. पाखंडीमतोनुं घणाक ठेकाणे सूचन मात्र करवामां आव्युं छे परंतु तेमने विस्तृत रीते चर्चवामां आव्या नथी. ते दिशामांथी आवतां विघ्नो जेम जेम वधत जवा मांड्यो तेम तेम स्पष्ट रीते ओछा थता गया अने जैनधर्मनी संस्थाओ सुदृढ रीते स्थिर थती गई. नविन साधुने जीवाजीवनुं बराबर ज्ञान वधारे उपयोगी मनातुं होय तेम लागे छे. कारण के आ विषय उपर एक मोटुं अध्ययन आ ग्रंथना अंते आपवामां आव्युं छे. जो के आ आखा ग्रंथमां आवेला जुदा जुदा बधां अध्ययनोनी पसंदगी तथा गोठवणीमां कांईक योजना जेवी देखाय छे खरी परंतु ते सघळां अध्ययनो एक ज कर्ताना रचेलां छे के लेखी अगर मौखिक परंपरागत साहित्यमांथी चूंटी काढेलां छे, ए एक विचारणयि बाबत छे. कारण के आवा प्रकारनुं साहित्य जैन संप्रदायमां, तेम ज अन्य संप्रदायोमां पण, धर्मशास्त्र ग्रंथोनी रचनानी पूर्वे वर्तमान होवुं ज जोईए. मारुं एम मानवुं छे के आ अध्ययनो प्राचीन परंपरागत साहित्यमांथी ज उद्धृत करी लीधेलां छे. कारण के तेनी वर्णनशैली तथा भाषाशैली परस्पर भिन्न होय तेम स्पष्ट जणाई आवे छे. अने ते बाबत एक ज कर्तानी कल्पना साथे संगत थई शकती नथी; अने आम मानवानुं बीजुं कारण ए छे के वर्तमान सिद्धांतोमां घणा ग्रंथो आ ज प्रकारे उत्पन्न थया छे; एम मान्या विना छुटको नथी. कया समयमां आ प्रस्तुत ग्रंथो रचवामां आव्या अथवा तो वर्तमान स्वरूपमां मुकवामां आव्या ते प्रश्नने संतोषदायक निर्णय करी शकाय तेम नथी. परंतु आ ग्रंथनो वाचनार स्वाभाविक रीते ज आ बाबतमां भाषांतरकारनो अभिप्राय जाणवानी आशा राखतो होवाथी, हुं अत्यंत संकोचपूर्वक मारो मत जाहेर करुं छुं के, सिद्धान्त ग्रंथोना घणा खरा भागो, प्रकरणो तथा आलापको खरेखर जुनां छे. अंगोनुं आलेखन प्राचीन काळमां (परंपरानुसार भद्रबाहुना समयमां) थयुं हतुं; सिद्धान्तना अन्य ग्रंथो काळक्रमे घणुं करीने ई. स. पूर्वेनी पहेली शताद्बिमां संगृहित थया हता. परंतु देवर्धी गणिए सिद्धान्तोनी आ छेल्ली आवृत्ति तैयार करी (वि. सं. ९८० ई. स. ४५४) त्यां सुधी तेमां उमेराओ तथा फेरफारो थता गया हता.

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतांगनुं भाषान्तर, में, मने मळेली सौथी प्राचीन टीकाओमां स्वीकारेला मूळना आधारे करेलुं छे. आ मूळ, हस्तालिखित अन्य प्रतिओ तथा

---

१ पुराणी परंपरा अनुसार दीक्षा लीधा पछी चार वर्ष वीत्या बाद सूत्रकृतांगनुं अध्ययन कराववामां आवतुं हतुं.

गिरनारपर्वत—नेमिनाथकी टोंक.

मुद्रित प्रतिओना मूळथी थोडेक अंशे ज भिन्न छे. में एकत्रित करेली केटलीक हस्तालिखित प्रतिओ उपरथी एक स्वतंत्र मूळ तैयार करी लीधुं हतुं के जे मने मुद्रित मूळ साथे मेळवी जोवामां घणुं उपयोगी थई पडयुं छे.

उत्तराध्ययन सूत्रनी कलकत्ता वाळी आवृत्ति (संवत् १९३६ ई. १८७९) मां गुजराती विवरण उपरांत खरतरगच्छीय लक्ष्मीकीर्ति गणिना शिष्य लक्ष्मीवल्लभनी रचेली सूत्र दीपिका आपेली छे. आ टीकाथी वधारे प्राचीन देवेन्द्रनी टीका छे अने ते ज टीका उपर में मुख्य आधार राख्यो छे. ए टीका संवत् ११७९ एटले ई. स. ११२३ मां रचाई छे अने ते प्रकटरीते शांत्याचार्यनी बृहद्वृत्तिना सारांश रुपे छे. शांत्याचार्य वाळी वृत्ति में वापरी नथी. मारी पासे स्ट्रेस्सबर्ग युनिवर्सिटी लाइब्रेरीनी मालीकीनी अवचूरिनी पण एक सुंदर प्राचीन हस्तलिखित प्रति छे. आ ग्रंथ पण स्पष्टरीते शान्त्याचार्यनी वृत्तिनो संक्षेप मात्र छे. कारण के लगभग ए तेने अक्षरशः मळतो आवतो जणाय छे.

सूत्रकृतांगनी मुंबईवाळी आवृत्ति (संवत् १९३६– ई. स. १८८०) मां त्रण टीकाओ आपेली छे: (१) शीलांकनी टीका: जेमां भद्रबाहुनी निर्युक्ति पण आवेली छे. आ टीका सर्वे विद्यमान टीकाओमां सौथी प्राचीन छे. परंतु आना पहेलां पण बीजी टीकाओ थएली हती. कारण के शीलांक केटलेक स्थळे प्राचीन टीकाकारोनो उल्लेख करे छे. शीलांक नवमी शताब्दिना पश्चार्धमां थई गया होय एम जणाय छे, कारण के तेमणे आचारांग सूत्रनी टीका शक वर्ष ७९८ एटले ई. स. ८७६ मां समाप्त करी हती, एम कहेवाय छे. (२) ए टीकामांथी हर्षकुले करेलो संक्षेप जेनुं नाम दीपिका छे, ते संवत् १५८३ अथवा ई. स. १५१७ मां रचेलो छे. मारी पासे दीपिकानी एक प्रति छे जेनो में उपयोग कर्यो छे. (३) पासचन्द्रनो बालावबोध—एटले गुजराती टीका. माहीतीना मुख्य ग्रंथ तरीके में साधारण रीते शीलांकनी ज टीका वापरी छे. ज्यारे शीलांक अने हर्षकुल बंने मळता आवे छे त्यारे टीप्पणमां में तेमने बतावा ' टीकाकारो ' एम लख्युं छे. ज्यारे शीलांकनो अमुक टीकांश हर्षकुले पडतो मुकेलो होय छे त्यारे हुं मात्र शीलांकनु ज नाम आपुं छुं; अने ज्यारे कोई उपयोगनी असल हकिकत हर्षकुल ज आपे छे त्यारे त्यां आगळ में तेनुं ज नाम आपेलुं छे. मारे आ स्थळे खास जणावी देवुं जोईए के मारी एक हस्तलिखीत प्रतिमां हासियामां तथा बे बे लीटिओनी वचे केटलीक संस्कृत नोटी आपेली छे के जेनी मददथी हुं केटलीक वखते मूळनो खास अर्थ निश्चित करी शक्यो छुं.

बोन
नवेंबर, १८९४.

एच्. जेकोबी.

अहिंसा अने वनस्पति आहार–खास करीने बौद्ध धर्ममां

[बुद्धिस्ट रिव्युना, पुस्तक ६, अंक १ मां प्रकट थएला—

डॉ. F. Otto Schrader, Ph. D. ना लेखनो अनुवाद.]

अहिंसा–एटले जीवित प्राणिओने कोई पण प्रकारनी इजा करवामांथी अलग रहेवानुं–व्रत हिंदुस्तानना आर्योमां ज जन्म पाम्युं हतुं. याहुदी–ख्रिस्ती संस्कारोथी ए व्रत केटलुं बधुं विदेशीय छे, ए वात नीचेना विरोधदर्शक दृष्टान्तोथी जणाई आवे छे.[1] ज्यारे क्राईस्ट पिटरने मळ्या त्यारे पिटरे पोतानुं माछलीओ पकडवानुं काम शरु कर्युं हतुं. पिटरे जलमां नाखेली जाळोने क्राईस्टे एटला बधा आशीर्वादो आप्या के जेथी पकडाएली माछलीओना मोटा समूहने लीधे होडीओ डुबी जवाना भयमां आवी पडी. एथी उलटुं, पाणीमां नांखेली पोतानी जाळोने बहार खेंची काढवानी तैयारी करता केटलाक माछीमारो ज्यारे पायथागोरसनी दृष्टिए पड्या त्यारे तेणे ते माछीमारो पासेथी जाळग्रस्त बधी माछलीओ वेचाती लई लीधी अने पछी ते बधी माछलीओ तेम ज ते जालमां पकडाएल बीजा प्राणिओने पण तेणे मुक्त कर्यां. जो के अत्यारे आर्य ओलादनो दरेक पश्चिमवासी पोताना पौर्वात्य बन्धु जेटलो ज अहिंसाव्रतनो पक्षपाती होय छे. छतां हजुए पश्चिममां सामान्यरीते बन्धनकारक नियम तरीके तो अहिंसाव्रतनो स्वीकार घणो ज अल्प छे.

अहिंसाने धार्मिक तत्त्वनुं स्थान क्यारे मळ्युं ए कहेवुं मुश्केल छे; परन्तु अत्यारे अस्तित्व धरावता धर्मोमां जैनधर्म एक एवो धर्म छे के जेमां अहिंसानो क्रम सम्पूर्ण छे अने जे शक्य तेटली दृढताथी सदा तेने वळगी रह्यो छे.

उत्तराध्ययन सूत्र नामक जैनोना एक आगम ग्रंथमां अहिंसाने उद्देशीने जैनोनुं दृष्टिबिन्दु आ प्रमाणे बताव्युं छे:[2]—

" कोईए पण जीवता प्राणिओनी हिंसामां अनुमति आपवी नहीं; तेम करवाथी मनुष्य सर्व दुःखमाथी मुक्त थशे; जे आचार्योए यतिधर्म कह्यो छे तेओए ए प्रमाणे आज्ञा करी छे.

" जे ज्ञानी पुरुष जीवता प्राणिओने इजा करतो नथी ते समित (चारे बाजुए जोनारो) कहेवाय छे. जेम जल उच्च प्रदेशनो त्याग करे छे तेम पापकर्म ते पुरुषने त्यजी देशे.

" जंगम अथवा स्थावर जे प्राणिओ जगत्मां रहेला छे तेमने हानी थाय तेवुं कांई पण कर्म मनथी, वचनथी के कायाथी मनुष्ये करवुं नहीं. "

"(मनुष्यो सहित) प्राणिओ, अग्नि अने पवन ए त्रस–चाली शके तेवा प्राणिओ छे; पृथ्वी, पाणी, अने वनस्पति ए स्थावर–न चाली शके एवा प्राणी छे. "

आचारांगसूत्र नामना एक बीजा प्राचीन अने आगम ग्रंथमां आ बधानो यथाक्रमे संक्षेपमां नीचे प्रमाणे समावेश करवामां आव्यो छे.[3]

" ते पाप कर्मने जाणीने ज्ञानी पुरुषे पृथ्वी (जल तेज विगेरे)[4] प्रत्ये हिंसक रीते वर्तवुं नहीं, बीजाने ते प्रमाणे वर्तवा प्रेरवुं नहीं, तेम ज जेओ ते प्रमाणे वर्तता होय तेमने प्रशंसवा नहीं. "

जैन धर्ममां अहिंसाना विचार संबंधी जे उत्कटता छे तेनो आथी ख्याल आवे छे. जो के आ नियमो मात्र यतिओ माटे छे छतां हाली चाली शकतां प्राणिओनो वध न करवानुं अहिंसाणुव्रत–अहिंसा संबंधी नानो नियम–तो यति न होय तेने पण दृढताथी पाळवो पडे छे[5]:—

* ब्लॅक टाईप अमे मुक्या छे.–संपादक जै. सा. सं.

" त्रस एटले चाली शके एवां प्राणिओने अभय दान आपवामां तत्पर रहेनार सत्पुरुषोए प्रमादक पान, मांस, मद्य अने रसवाला वृक्षोना फलोनो हमेशां त्याग करवो जोईए.

" जेमां सूक्ष्म जंतुओनो नाश थाय छे अने अभक्ष्य वस्तुओ खवाय छे तेवुं रात्री भोजन, दयालु सज्जनो कदी करता नथी.

" जेओ स्थावर प्राणिओनो नाश करीने अन्नाहारी तरीके रहे छे अने जेओ त्रस प्राणिओनो नाश करीने मांसाहारी तरीके जीवे छे, ते बंनेना पापनुं अन्तर, सत्पुरुष जणावे छे के, परमाणुं अने मेरुना जेटलुं होय छे.

" अन्नाहारमां जे परमाणु जेटलुं पाप छे तेनो नाश प्रायश्चित्त मात्रथी करी शकाय छे, परन्तु मांसाहरमां पाप पर्वतराज जेवुं मोटुं छे अने तेथी तेनो नाश करी शकातो नथी[५]. "

मध, रेशम अने ऊन विगेरेनी उत्पत्तिमां बने छे तेम प्राणिओनी संपत्ति खूंचवी लेवानी यति अने उपासक बन्नेने मना करवामां आवी छे. मध खावामां चोरी अने हिंसा बन्ने रह्या छे. हिंसा एटला माटे के " मधनुं दरेक बिन्दु असंख्य मक्षिकाओना वधथी ज प्राप्त थाय छे[६]. " " जेटलुं पाप सात गामोंने बाळी नांखवाथी थाय छे तेटलुं पाप मधनुं एक टीपुं खावाथी थाय छे[७]. " ज्यां हजारो ढोरो भूखे मरे छे एवा हिन्द देशमां उपरना विचार साथे आश्चर्यजनक विरोध धरावनार वात तो ए छे के प्राणिओनुं दूध पीवामां पाप बिलकुल गणवामां आव्युं ज नथी !

अहिंसानो आवो उत्कट मार्ग अनुक्रम वगर एकदम उत्पन्न थाय ए भाग्ये ज मानी शकाय तेवुं छे, तेथी; तेम ज महावीर अने पार्श्वनाथ पण आमांना घणा नियमो उपर भार मूकता हता तेथी; आपणे एवी कल्पना तरफ दोराईए छीए के बुद्धनी पूर्वे बे शतक के तेथी पण पहेलां (एटले क्राईस्टनी पूर्वे ८०० वर्ष पहेलां) हाल जेने अहिंसानुं ' अणुव्रत ' कहेवामां आवे छे तेना जेवा एक मन्तव्यनी प्रथम स्थापना जैनो अथवा कोई अन्य धर्मानुयायीओ तरफथी करवामां आवी हशे. आ कल्पनाथी आपणे वैदिक युगनी समाप्ति सुधी पाछळ जईए छीए, अने अहिं छान्दोग्य उपनिषद्ना अन्तिम भागमां आपणे इच्छेलुं अहिंसा व्रतनुं प्रथम पगथियुं आपणने मळी आवे छे.–जो के देखीती रीते ते मूळनी शरुआतनुं तो नथी ज. छान्दोग्य उपनिषद्नो ते भाग नीचे प्रमाणे छे–

" आचार्यना घरे यथाविहित समयमां, यथा विधि, वेदनो अभ्यास करीने जे गुरुना घेरथी पाछो आवे छे, तेणे पोतानी मेळे पोताने घरे पवित्र स्थानमां, ते पवित्र ग्रंथोनो अभ्यास करवो; सत्यशील शिष्योने भणाववा; पोतानी सकल शक्तिओनुं स्थान आत्माने बनाववो; पवित्र तीर्थो सिवाय अन्यत्र कोई पण प्राणीनी हिंसा करवी नहीं; ते खरेखर आ प्रमाणे यावज्जीवन रही ब्रह्मलोक मेळवे छे; अने पुनः आवतो नथी.—पुनः आवतो नथी. "

एनो अर्थ ए के—जे मोक्षनी आकांक्षा राखे छे ते यज्ञ सिवाय अन्यत्र पशुवध करी शके नहीं. ए ध्यानमां राखवुं जोईए के अहिं गृहस्थने उद्देशीने आ अहिंसाना नियमनुं वर्णन थाय छे. केम के घणुं करीने ते समये, वैदिक युगना अन्तमां पण, ' सन्न्यास ' नो प्रारंभ थयो न हतो.

परन्तु त्यार पछीना उपनिषदोमां चतुर्थाश्रम पूर्ण विकास पामेलो जोवामां आवे छे, अने तेने माटे आपेला नियमो जैन यतिना नियमोने केटलेक अंशे मळता आवे छे. जैन यतिनी जेम, ब्राम्हण संन्यासीने पण वर्षाऋतुमां फरवानुं बंध राखवुं पडे छे, अने पाणी पीधा पहेलां गाळवुं पडे छे. अने स्पष्ट पणे ज—जो के चोक्कस नथी छतां—ते मांसाहार करी शकतो नहीं.[८] गमे तेम हो परन्तु आटलुं तो चोक्कस छे के ब्राम्हण धर्ममां पण घणा लांबा समय पछी सन्न्यासिओ माटे आ सूक्ष्मतर अहिंसा विहित थई; अने आखरे वनस्पति आहारना रूपमां ब्राह्मण ज्ञातिमां पण ते दाखल थई हती. कारण ए छे के जैनोना धर्मतत्त्वोए जे लोकमत जीत्यो

हती तेनी असर सज्जडरीते वधती जती हती. बुद्धना समये अने त्यार पछी पण केटलाक वखत सुधी ब्राह्मणोए वनस्पति अहारनो स्वीकार पूरे पूरो कर्यो न हतो ए वात सुप्रसिद्ध पंच पंचनख व्रतथी[९] साबीत थाय छे. महाभारत (१२, १४१, ७०) मां आ नियम नीचेना रूपमां आपेल छे—

" ब्राह्मण, क्षात्रिय अने वैश्ये मात्र पांच पांच नख वाळा प्राणीनुं भक्षण करी आ धर्म प्रमाणे चालवुं अने जे अभक्ष्य छे ते प्रत्ये मन दोरवुं नहीं. "

ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे के ते ज नियम एक जूना बौद्ध जातकमां अने लगभग बधा जूना ब्राह्मण धर्मग्रंथो—स्मृतिओमां[१०] मळी आवे छे. कूर्मपुराणमां तेने मनुए कहेलो बताव्यो छे, परंतु मनु (तेम ज गौतम) छ प्राणीओनी अनुमति आपे छे; अने आपस्तंब सातनी पण रजा आपे छे. महाभारतमां बीजे स्थळे (१२, ३७, २१--२४)[११] ब्राह्मणने अभक्ष्य एवा प्राणीओनुं एक लांबु लीष्ट व्यास मुनिए आप्युं छे. जो भक्ष्य प्राणीओनी संख्या बहु थोडी होत तो व्यास आटली महेनत लेत नहीं. परंतु समय जतां ज्यारे जैन अने बौद्ध धर्म देशमां प्रबळ थया त्यारे प्राणी—हिंसा अने मांस—भक्षण मात्र यज्ञमां ज करवां एवो नियम कर्या वगर ब्राम्हणोथी चलावी लेवायुं नहीं.[१२] अने तेमां पण पशुहिंसा वधारे ने वधारे ओछी करवामां आवी अने अन्ते मांसनी इच्छा राखनारा (आमिषकांक्षिणः) पितृओने [जेओनो मांसभक्षणनो हक्क महाभारतना छल्लो भागोमां सहेज नामरजी साथे स्वीकारवामां आव्यो छे[१३]] पण वनस्पति-भक्षक थवानी फरज पाडवामां आवी. अने आखरे दक्षिण हिंदमां ई. स. ना तेरमा सैकामां उत्पन्न थएला माधव संप्रदायना केटलाक प्रतिनिधिओए अन्तिम पगलुं लीधुं. तेमणे गमे ते प्रकारनी प्राणीहिंसाने पापवाळी गणीने धिक्कारी अने यज्ञमां प्राणी बलिदानने स्थाने कहेवातो पिष्ट—पशु एटले अन्ननी बनावेली प्राणीनी आकृति वापरवानो रिवाज दाखल कर्यो.[१४]

परन्तु आ सर्व ब्राह्मणोने ज उद्देशीने छे; अथवा बहु तो द्विजोने उद्देशीने छे. वैदिक संप्रदायना अवशिष्ट वर्गोने मांसाहारमांथी मुक्त राखवामां आव्या न हता. तेथी आधुनिक स्थिति बहुशः नीचे दर्शाव्या मुजब छे. दक्षिण हिन्दमां सर्वत्र ब्राह्मणो वनस्पति आहार करनारा छे. उत्तरमां घणा ब्राह्मणो मत्स्य-भक्षक छे अने काश्मीरमां तो अन्य मांस पण खाय छे. क्षत्रियो सदा मोटे भागे मांस खाता ज हता अने हजुए खाय छे. वैश्यो (व्यापारी वर्ग, जेने दक्षिणमां चेटी-आर अने उत्तरमां वाणीआ विगेरे कहे छे तेओ) साधारण रीते ब्राह्मणोना भोजननुं अनुकरण करता देखाय छे. शूद्रो मांस-भक्षक तेम ज वनस्पति-भोजी पण होय छे. घणा भागे तेओ वनस्पति आहार उपर रहे छे, केम के मांस घणुं मोघुं होवाथी तेमना माटे दुर्लभ जेवुं छे.

संन्यासीओना विषयमां तो में प्रथम ज कह्युं छे के जे नियमोने तेओ अनुसरे छे ते घणे अंशे जैन मतने मळता आवे छे. तेओ झाझे भागे तपस्या करे छे अने तेथी तेओमांना घणा तो मांसनो स्पर्श पण करता नथी; केम के इंद्रियोना विषयोनी वृत्तिओने तेथी पोषण मळे छे. परन्तु जन्मथी ब्राह्मण एवो एक आदर्श रूप अने विद्वान् संन्यासी के जेना परिचयमां हुं आव्यो छुं, तेणे मने कह्युं के श्रद्धापूर्वक अर्पण करवामां आवेली मांसवाळी वस्तुनो पण अनादर करवो ए खरा भिक्षु माटे अयोग्य अने दौर्बल्यसूचक छे. तेनो विचार आवो होय एम जणाय छे, के जे यति तेने आपवामां आवेली खावायोग्य गमे ते वस्तु खावाने शक्तिमान न होय, ते तैत्तिरीय उपनिषद्मां (२, ७) कहेल, तेनी अने संसारनी वच्चे रहेला खाडानी ('उदरं अन्तरं' नी) पेली-पार जवाने फतेह थयो गणाय नहीं; तेम ज द्वन्द्व-मोह अने जुगुप्साने जीत्यां गणाय नहीं, के जे आत्म-साक्षात्कारमां मुख्य साधन मनाय छे. आ उपरथी ' मिलिन्दपह्न ' (३,६) नो एक जाणवा जेवो उल्लेख स्मरणमां आवे छे, जेमां बौद्ध साधु कहे छे के " हे महाराज! ते हजु रागथी मुक्त थयो नथी, जे भोजन करती वखते

स्वाद अने स्वादजन्य सुखनो पण अनुभव करे छे ज्यारे सरेखर राग रहित पुरुष तो भोजन करती वखते मात्र स्वादनो ज अनुभव करे छे परन्तु स्वादजन्य सुखनो अनुभव करतो नथी. ''

हवे आपणे बौद्धधर्म तरफ वळीए. अहिं अहिंसा अने वनस्पति आहारना संबंधमां एक विवादग्रस्त प्रश्न उत्पन्न थाय छ, के जे प्रश्ननो निर्णय मारा जाणवा प्रमाणे हजु कोई लावी शक्युं नथी. डॉ० न्यूमेन आदिनो पक्ष कहे छे, के बुद्ध वनस्पति आहार ज करता; ज्यारे बीजो पक्ष के जेमां घणा विद्वानो छे; तेओ 'अमुक खास प्रसंग सिवाय अन्यत्र बुद्ध मांसाहारनी मना करता हता,' ए वातनो इन्कार करे छे. पूर्वपक्ष ज्यारे, अहिंसा ए व्रत भिक्षु तेम ज गृहस्थे पाळवाना नियमोमां प्रथम स्थान धरावे छे, ए बाबत उपर भार मुके छे, त्यारे उत्तर पक्ष, धर्म ग्रंथोना केटलाक फकराओनो, तथा महायान तेम ज हीनयान ए उभय शाखाओना अनुयायीओनो मोटो भाग जे आजे मांस भक्षण करवा छतां पोते अहिंसानुं पालन करे छे एम माने छे, ते बाबतनो आश्रय ले छे.

मारा मत मुजब सत्य बन्ने पक्षमां रहेलुं छे अने तेना कारणो हवे हुं विस्तारथी आपुं छुं.

एक आश्चर्यजनक वात ए छे, के दक्षिण हिन्दना जैनोमां बुद्धसम्बन्धी अद्यापि जाणीती एवी एक हकिकत छे के ते 'बुद्ध एक घणो खराब माणस हतो अने मांसाहारने उत्तेजन आपतो हतो,' ब्राह्मणधर्मनुं उपहास आलेखतुं अने खण्डनमण्डन करतुं धर्मपरीक्षा नामे पुस्तक[१५] जे तामिल भाषान्तरना रूपमां बणुं प्रसिद्ध छे, तेमां उल्लेखेली बुद्धनी आ अपकीर्तिनुं कारण आपणे गोतवुं जोईए. ए पुस्तकमां बौद्धधर्म ऊपर सात पद्यो छे; अने तेमां पहेलो ज जे आक्षेप करवामां आव्यो छे ते ए छे के 'बुद्धना मत प्रमाणे मांसाहार करवामां पाप नथी.' आ आक्षेप मात्र मनःकल्पित नथी. बीजा प्राचीन जैन पुस्तकोमां पण ते रूपान्तरथी मळी आवे छे. दृष्टांत तरीके सूयगडांगसूत्र मां[१६] एम कहेलुं छ के बुद्धे नीचे प्रमाणे उपदेश कर्यो हतो.

''(दुष्कालना वखतमां) एक गृहस्थ पोताना पुत्रने मारीने खाई शके, अने एक ज्ञानी भिक्षु जो तेमांथी मांस ले तो तेने पाप लागे नहीं.

'' जो कोई माणस मूलथी धाननो ढगलो मानीने[१७] माणस अथवा बालकनो वध करे, तेने अग्नि उपर मूके, पकावे तो ते बुद्धोनो माटे योग्य एवुं भोजन होई शके. ''

आहिंया आ प्रमाणे घणा विलक्षण रूपमां बुद्धना एक मतने आलेख्युं छे के जे असलमां आपणे जोईए तो, आ प्रमाणे जडी आवे छे, के वध कराएला प्राणीना वधनुं कारण पोते कोई पण रीते न होय तेवा मांस सिवाय बौद्ध भिक्षुए अन्य कोई जातनो मांसाहार करवो नहीं.

चुल्लवग्गमां (७,३-१५) अने अन्य पिटकोमां वणी सारी रीते एक खुलासो आपवामां आव्यो छे, के ज्यारे मतभेद उत्पन्न करवानी इच्छाथी (अर्थात् पोतानी मांगणी स्वीकारवामां नहीं आवे एम सारी रीते जाणतो होवो छतां) देवदत्त मत्स्य अने मांस आहारनी भिक्षुओने माटे मना करावववानी विनति करवा बुद्ध पासे जाय छे त्यारे बुद्ध तेनी विनतिनो अस्वीकार करे छे[१८] अने कहे छे के '.....हे देवदत्त ! आठ मास सुधी वृक्षो नीचे शयन करवानी में रजा आपी छे.[१९] तेम ज अदृष्ट, अश्रुत अने अशंकित ए प्रमाणे त्रणे बाबतोमां जे तद्दन शुद्ध होय तेवा मत्स्य अने मांस [खावानी पण में रजा आपी छे.] '

अर्थात्, हत प्राणीतेने माटे हणवामां आव्युं छे तेम ते भिक्षुना दीठामां आवेलुं न होय (अदिट्ठम्), तेना माटे हणाएलुं छे एम तेना सांभळवामां पण आव्युं न होय (अश्रुतम्), अने आ मारा माटे हणवामां आव्यो हशे के केम ? एम तेने शंका पण न आवी होय (अपरिशंकितम्), तेवा मांसने **पवत्तमंस** ('पहेलांथी ज अस्तित्वमां आवेलुं मांस') कहेवामां आवे छे, अने ते **उद्दिसकतमंस** (' हेतुपूर्वक तैयार करेला मांस ') थी उलटा प्रकारनुं मनातुं हतुं.[२०]

वळी सरखावोः–' हे भिक्षुओ ! मांस खावाना हेतुथी हणाएला प्राणीनुं मांस जाणी जोईने कोईए खावुं नहीं. जे कोई ए प्रमाणे करशे ते "दुक्कत" अपराध करशे. हे भिक्षुओ ! अदृष्ट, अश्रुत, अने अशंकित एम त्रण प्रकारे जे मांस शुद्ध होय ते खावानी हुं रजा आपुं छुं. " (महावग्ग ६, ३१ ना अंतमां) वळी. " हे मूर्ख ! (मांस क्यांथी आव्युं छे ते) तपास्या विना तुं शी रीते ते मांस खाई शके ?.....हे भिक्षुओ ! तपास कर्या वगर कोईए पण मांस खावुं नहीं " (तेज ग्रंथ ६,२३)

बीजो नियम ए छे के–मांस काचुं न होवुं जोईए. (ब्रह्मजाल सुत्त १०, अंगुत्तरनिकाय १९३–१९९; मज्झिमनिकाय, ३८ विगेरे) संघमां दाखल थता नवा पुरुषो माटे वारंवार कहेवामां आव्युं छे के " तेओ काचुं (अन्न) स्वीकारता नथी [तेओ काचुं मांस स्वीकारता नथी.]"

छेवटे महावग्ग (५, २३) मां एक विचित्र आज्ञा करवामां आवी छे—अने हुं जाणुं छुं त्यां सुधी अन्यत्र ते जोवामां आवती नथी. ते स्थळे माणसनुं, हाथीनुं घोडानुं, कुतरानुं, सर्पनुं, सिंहनुं, वाघनुं, चित्तानुं, दीपडानुं, रींछनुं अने तरक्षुनुं मांस त्यजवा विषे कहेवामां आव्युं छे. आने आपणे व्यासनी यादीना (जुओ उपर) अवशिष्ट भाग तरीके गणी शकीए.

अहिंसोपदेशक धर्मना एक महान् प्रवर्तक मांसना उपभोगने धिक्कारे नहीं; मांसाहारनो सर्वदा त्याग कर्या सिवाय पोताना मनोविकारोने जीतवानी एक भिक्षु इच्छा राखे; आ बधुं, जेम अत्यारे पण बौद्धधर्मना परिचयमां, जे विचार शील पुरुषो आवे छे तेमने, एक न समजी शकाय एवी गुंचवण लागे छे, तेम ते समये पण घणा माणसोने आ विचार आश्चर्यजनक अने अतर्क्य लागतो हतो. परंतु ए एक सारी वात छे, के आ विचारनो बुद्ध पोते शी रीते निराकरण करता हता तेनो एक पुरावो आपणने मळी आवे छे.

सुत्त निपातना आमगंध सुत्तमां कोई एक पुरुष बुद्धने संबोधे छे; [२१]अने पछी पोताना वनस्पतिभोजीपणानुं वर्णन अने प्रशंसा करीने कहे छे के "स्वच्छताने (आमगंध एटले खराबगंधने) मारी साथे कांई संबंध नथी. आम तमे कहो छो (अने वळी) हे ब्रह्मबंधु ! [२२] सारी रीते तैयार करेल पक्षीना मांस साथे भेळवेला भात तमे खाओ छो; तेथी हे काश्यप ! हुं तमने पूछुं छुं के तमे अशुद्धतानो शो अर्थ करो छो ?" आनो बुद्ध उत्तर आपे छे के: " जीवतां प्राणिओने दुभववां, मारवां,कापवां,बांधवां,चोरी करवी, असत्य भाषण करवुं, छळ अने कपट करवुं, सार वगरनुं वाचवुं तेनुं नाम अशुद्धता छे; पण मांसभक्षण नहीं. " आनी पछी आ प्रकारना बीजा छ श्लोको आवे छे जे दरेकनी अंते; " आ ते अशुद्धता छे; पण मांसभक्षण नहीं " आ शब्दो होय छे. अने तेमां कहे छे के "मत्स्याहार के मांसाहारनो त्याग, नग्नभ्रमण, मस्तकमुंडन, जटाधारण, धूल–निर्माल्य–भस्मधारण, अग्निहोम, आ सर्व, मायामांथी जे पुरुष मुक्त नथी तेने पवित्र करी शकता नथी. वेदाध्ययन, गुरुदान, देवयजन, धर्म अथवा शीत सहनद्वारा आत्मदमन, अने एवा बीजां, अमृतत्वनी इच्छाथी करवामां आवेलां तपो, मायाथी बद्ध पुरुषने पवित्र करी शकता नथी. " [२३]

अलबत्, ए वात तो स्पष्ट ज छे के ऊपर जे प्रकारो वर्णवेला छे तेमां मांसने भिक्षुना भोजनना एक आवश्यक भाग तरीके तो स्थान आपवामां आव्युं नथी ज, पण सहेलाईथी जेनो सर्वदा त्याग करी शकाय एवा अपवाद रूपे ज मांसने स्थान आपेलुं छे. तथापि बुद्ध तेनो सर्वथा निषेध करवा इच्छता न हता. अने तेम करवामां तेमने मुख्य कारण, पोताना उपदेशनुं ए एक स्पष्ट अने शाश्वत उदाहरण बतावबानी तेमनी इच्छा हती के " आहारना प्रश्नने धार्मिक शुद्धि–विशुद्धि साथे बिलकुल संबंध छे नहीं. "

मांसना आ नियत उपयोग सिवाय, आपणा प्रस्तुत विषयमां बौद्ध अने जैन साधुओमां विशेष भेद नहीं हतो. जैन साधुनी जेम बौद्ध साधुने पण कालजीपूर्वक कोई पण प्राणीनी हिंसाथी दूर ज रहेवानुं हतुं. सुत्तनिपातमां (धम्मिक सुत्त १९) पण कह्युं छे के:—

"चर तेम ज अचर (तस अने थावर) उभय प्रकारना प्राणीनी हिंसाथी दूर रहेवुं, तेणे (भिक्षुए) जीवने हानि करवी नहीं, करावबी नहीं, बीजाने तेम करवामां सम्मति आपवी नहीं. "

तेज प्रमाणे धम्मपद (२६,२३) मां:—

" जे चराचर प्राणीनी हिंसाथी दूर रहे छे तेने हुं ब्राह्मण कहुं छुं; जे पोते हिंसा करतो नथी, अने अन्यने हिंसा करवा प्रेरतो नथी (तेने हुं ब्राम्हण गणुं छुं.) "

" सारुप्यमत्तनो—आत्मानुं सारुप्य—अर्थात् ज्यां ज्यां जीव छे त्यां त्यां तेना आत्माना जेवुं ज कांई छे " ए वात भिक्षुए भूलवी जोईए नहीं.[२४]

" लीला रोपाओने पगनीचे चगदी नाखवाथी दूर रहेवाने, वनस्पति जीवनी हिंसाथी बचवाने, घणा नाना जीवोनी जिंदगीनो क्षय थतो अटकाववाने " [२५] माटे वर्षा ऋतुमां पर्यटन करवानी ना करी हती. जे फळोने अग्निथी, छरीथी, नखथी अचेतन करवामां आव्या होय अथवा जेमां एक पण बीज रह्युं न होय अथवा जेमां बीजनो (अर्थात् बीजमां रहेली बीजां फळो उत्पन्न करवानी शक्तिनो) क्षय थई गयो होय, तेवां ज फळो खावानी रजा आपवामां आवी हती.[२६] आ साथे—एटले वनस्पति जीवनी अहिंसा साथे " घास वगरनी " जगामां अन्नना अविशिष्ट भागने फेंकी देवानो आदेश पण घणे स्थले करवामां आव्यो छे.

आ बधुं तो बौद्ध भिक्षुने उद्देशीने विवेचन थयुं. हवे आपणे ए निर्णय करवानो छे के बौद्ध गृहस्थ माटे आ नियमो छे के नहीं ? अने जो होय तो ते केटली मर्यादा सुधी.

जैनोनी स्थूल अहिंसाना जेवुं एमां पण कांई होवुं जोईए ए बिचार, दृष्टांत तरीके, संयुत्त निकाय ७, १, ५ ना उल्लेखथी दृढ थाय छे. ते स्थळे ज्यारे अहिंसक नामनो ब्राह्मण बुद्धपासे आवीने कहे छे के " अयुष्मान् गोतम, हूं अहिंसक छुं " त्यारे तेनो उत्तर बुद्ध श्लोकोमां आ प्रमाणे आपे छे:

" तूं जेम कहे छे तेम भले तारुं नाम अहिंसक हो: परंतु जे कायाथी, वचनथी, अने मनथी कोईनी हिंसा करतो नथी तेवो अहिंसक तूथा. केम के ते ज खरो अहिंसक छे जे बीजानी हिंसा करतो नथी. "

पुनः अंगुत्तरनिकाय (३, १५३ comp,१०, २१२ मां आपणे वांचीए छीए के:—

" हे भिक्षुओ ! त्रण कार्यवाळो माणस नरकगामी थाय छे. कया ते त्रण कार्यो ? जे पोते जीवनी हिंसा करतो होय, बीजाने हिंसा करवा प्रेरतो होय, अने बीजाने हिंसा करवामां सम्मति आपतो होय. ".

" हिंसा, हे भिक्षूओ ! हुं त्रण प्रकारनी गणुं छुं. लोभथी कराएली, दोष—धिक्कारथी कराएली, अने अज्ञान-मोहथी कराएली. "

आ वचनो अंगुत्तर निकाय (१०—१७४) मांनां नियमनी जेम मात्र भिक्षूओ माटे ज कहेवामां नथी आव्यां.

आ विषयमां सौथी वधारे विचारवा लायक सुत्तनिपातनुं धम्मिक सुत्त छे. भिक्षुना नियमनुं वर्णन कर्या पछी, तेमां (श्लोक १८ विगेरे) कह्युं छे के " हवे हुं तमने गृहस्थना धर्मो कहीश, जेनुं पालन करवाथी मनुष्य (बीजा जन्ममां) श्रमण अने अर्हत् थाय छे. कारण के एक भिक्षु पासेथी जे नियमोना पालननी आशा राखी शकाय, तेवा नियामो पालवा गृहस्थ, कदाच समर्थ थाय नहीं. " अने त्यार पछी " चर तेम ज अचर—तस थावर—उभय प्रकारना " विगेरे उपर उतारेला श्लोको बडे उपासक गृहस्थना धर्मोनी ते गणना गणावे छे.

आथी ए विचार सूचवाय छे के, जो के " अचर-जीवो " ए पदनो बौद्ध मतमां अर्थ मात्र " वनस्पति-योनी " एटलो ज थाय छे. छतां चर अने अचर बन्ने प्रकारनो अहिं समावेश करवामां आवेलो होवाथी बौद्ध धर्मी गृहस्थ, जैन उपासक करतां वधारे व्यापक अर्थमां अहिंसानुं पालन करे छे. परंतु कदाच ए विचार बरावर पण नहीं होय. कारण के पिटकोमां एक ज शब्द घणी वार जुदा जुदा अर्थमां प्रयोजाएलो नजरे पडे छे; अने तेथी तस अने थावरनो जे अर्थ अहिं ए लोको करता

ते घणे भागे फुजबोले पोताना भाषांतरमां कर्यो छे तेवो ज हतो: एटले तस " जे ध्रुजे छे ते " अने थावर " जे बलवान् छे ते. "

गमे तेम हो, पण ए तो स्पष्ट छे के बौद्ध गृहस्थने मात्र जाते हिंसा करवामांथी ज नहीं, परन्तु मत्स्य अथवा मांस वेचातुं लेवामांथी, तेम ज अन्य रीते पण प्राणी वधने उत्तेजन आपवामांथी पण अलग रहेवानुं कहेवामां आव्युं हतुं. केम के जे माणस मत्स्य अथवा मांस खरीदे छे ते माछीमार अथवा कसाईना कार्यने अनुमति आपे छे ज. खरुं जोतां तो ते वधारे (पाप) करे छे. ते" बीजा पासे हिंसा करावे छे " " हिंसाने उत्तेजन आपे छे " अथवा (महाभारत १३, ११३, ४०) भीष्मना शब्दोमां कहीए तो ते " पोताना पसा वडे हिंसा करे छे. "

हुं मानुं छुं के महावग्ग (६, ३१) ना उल्लेखमां रहेलो अर्थ आ ज छे. ए स्थळे राजा पवतमंस—एटले कोईए तैयार करेलुं मांस मंगावे छे, जेनुं परिणाम ए आवे छे के बलदना एक घातक तरीके तेनी निंदा करवामां आवे छे. वळी संयुत्त निकाय (१४; २५.३) जुओ. त्यां हिंसा करनाराओ साथेना संसर्गने पण निंदवामां आव्यो छे. महाभारत (१३, ११३, ४७) मां कह्युं छे के सात माणसो जीव—भक्षक छे, एटले हिंसानुं पाप करे छे. जेम के—जे माणस ते प्राणी ने लावे छे, जे अनुमति आपे छे, जे हणे छे, जे वेचे छे, अथवा खरीदे छे, जे मांस तैयार करे छे, अने जे तेने खाय छे. छेल्ला बेने अपवादरूप गणिए तो बुद्धे कहेला नियमोने अनुसरतो ज महाभारतनो—आ उल्लेख छे. जो के बुद्धना अनुयायीओना वर्तन साथे तो ते असंगत छे.

परंतु कोई शंका करे के, जो गृहस्थ मांस वेचातुं पण लई शके नहीं तो भिक्षुओने जे त्रण प्रकारे शुद्ध एवा मांसने लेवानी रजा आपवामां आवी छे, ते मांस क्यांथी आवे ? आनो तो उत्तर स्पष्ट छे के बौद्ध साधुओ गमे त्यांथी भिक्षा ग्रहण करता हता; मात्र बुद्धानुयायी पासेथी ज नहीं.[२७]

आपणा आ ऊहापोह उपरथी आपणे ए निश्चय उपर आवीशुं के पुराणा बौद्ध धर्ममां भिक्षु मांसाहार कचित् ज करतो, अने गृहस्थ तो तेना करतां पण ओछी वखत मांस खातो. केम के गृहस्थ कांई भिक्षा मांगतो नहीं. परंतु तेने प्रवास विगेरेना प्रसंग दर्मियान बौद्धेतर वर्ग पासेथी तेवो खोराक लेवानी रजा आपवामां आवी हती.

संपूर्ण अहिंसानुं पालन तो मोटामां मोटा ज्ञानी पुरुषने माटे पण अशक्य छे. अने जेम घणा माणसो धारे छे तेम आ कांई नवी पण शोध नथी. आ विषयमां महाभारतना वनपर्वमांनी धर्मव्याध—भक्तिमान शौनिकनी मनोरंजक वार्ता वांचवा जेवी छे. तेना अंते कहेलुं छे के ' चालवामां, बेसवामां, सुवामां, खावामां, विगेरे दरेक क्रियामां अने दरेक बाबतमां असंख्य प्राणीओनी हिंसा थाय छे. तेथी जगत्मां कोई अहिंसक नथी. (नास्ति कश्चिदहिंसकः)' आ निर्विवाद सत्य छे. आपणने जीववा माटे जीवनी हिंसा करवी पडे छे, ए आ जीवननी एक अत्यंत दुःखदायक वीना छे; "आ बधुं जीवता प्राणीओथी व्याप्त छे " अने " आ सर्व जीवता प्राणीओथी ग्रस्त छे. " (जीवैर्ग्रस्तमिदं सर्वं) ए उल्लेख सत्य छे. तेम छतां पण सर्व अनावश्यक हिंसाथी बचवानी आपणी फरज छे. ज्यां ज्यां आपणाथी बनी शके त्यां त्यां दुःख उत्पन्न थतुं अटकाववानी अने उत्पन्न थएल दुःखने घटाडवानी आपणी फरज छे. वृद्ध भीष्मना शब्दो (महाभारत—११३,११६,३४) ध्यानमां राखवा जोईए के. " जीवनदानथी अन्य महत्तर दान हतुं नहीं अने थशे नहीं. "

प्राणदानात्परं दानं न भूतो न भविष्यति

*
* *

[आ आखा लेखमां आवेली टीपो आ नीचे, एक साथे ज आपी देवामां आवे छे.—संपादक.]

१ शोपनहॉर, ग्रन्ड्लेज डर मॉरल, रेक्लम, पु० ३, पान ६२३

२. जेकॉबी, जैनसूत्र, पु. २, पा० ३३, ३४.

३. जेकॉबी, जैनसूत्र, पु. १, पा. ५

४. चातुर्भौतिक देहवाळा असंख्य आत्माओ छे. एवा घणा देहो एकस्थाने भेगा थवाथी ज तेओ दृष्टिगोचर थाय छे. जेकॉबी.

५. जीवविचार तथा अन्य ग्रन्थोने आधारे तेनो अर्थ 'वनस्पती अने जीवभूनो सिवाय अन्य सर्व' एम थाय छे.

६. अमितगतिनुं सुभाषितसंदोह, ३१; ४, ५, तथा २१; ८, ९,

७. अमितगतिनुं सुभाषितसंदोह, २२; २,

८. „ „ „ २२, ३

९. सरखावो, डयूसेननुं Geschich teder Philosoh hie, I,२, पा० ३४०. 'भिक्षा' ना अर्थ उपर तेनो आधार छे.

१० ल्युडर्स, Eine indische Speiseregel जर्मन ओरिएन्टल सोसायटीनुं जर्नल १९०७ पा० ६४१

११. याज्ञ० १; १७७, वसि० १४; ३९, गौ० १७; २१, मनु ०५; १८, आप० १; ५, १७, ३७, विष्णु० ५१; ६.

१२ Schrader, Die Fragen des Koenigs Menandros परिशिष्ट, पा० २७

१३. पहेलां घणी वखत आ प्रमाणे करवामां आव्युं हतुं तेम; जुओ उपर.

१४. अल्पदोषमिह ज्ञेयम् (१३, ११५, ४५).

१५. आ रिवाजनी तरफेणमां तेम ज विरुद्धमां घणुं लखायुं छे, जुओ महामहोपाध्याय हरप्रसादशास्त्रीनुं Notices on San Mss., 1907, p, .घणे भागे आ बाबतमां मध्य सुधारक हता. महाभारत १३, ११५, ५६ मा जणाव्युं छे के "पूर्वकल्पमां यज्ञपशु चोखाना लोटनो (व्रीहिमय) बनावता, अने ते वडे शुभ लोकनी इच्छावाळा पुरोहितो यज्ञ करावता एम कहेवाय छे." ते ज स्थळे ६३ मा श्लोकमां जैनधर्मनी असर जणाय छे ज्यां भीष्म मधु मांसनो उपयोग करवानो निषेध करे छे.

१६ 'Die Dharmapariksha des Amitag ati, Leipzig' 1905 मां एम्० मीरोनोए तेनुं पृथक्करण कर्युं छे., पा० ३८.

१७. प्रो० जेकॉबीए तेनो अनुवाद कर्यो छे. सेक्रेड बु० ई०; पु० ४५, पा० २४३ तथा ४१५

१८ पूर्वपक्षीए शंका उठावी छे ते प्रमाणे शक्य नथी. विरुद्धपक्षमां बंधबेसता दृष्टान्तनुं विचित्र रूपांतर करवाने बदले लेखके एटलुं ज कहेवुं जोईतुं हतुं के भूलथी हणेला प्राणीने खावामां कांई पाप नथी.

१९. "मत्स्यमांस" ओल्डनबर्ग, परंतु सरखावो अङ्गुत्तर निकाय ३, १५१, 'न मच्छं न मंसं.'

२० Dनी अन्य सूचना विषे जणावे छे.

२१ ओल्डनबर्गनुं विनयपिटकम्, पु० २, पा. ८१ टीप.

२२. आ स्थळे मूळमां कस्सप छे.पण ते कांई खास नोंधवा जेवी बाबत नथी,कारण के सगळा बुद्धोनो लगभग सरखो ज उपदेश छे

२३. दुष्ट ब्राह्मण.

२४ Rhys Davids, Buddhism, 8 th ed. पा० १३१, तथा सेक्रेड बु० ई०, पु०, १०. पा. ४०, ४१

२५. सुत्तनिपात १३, १० तथा अन्य स्थळे.

२६. महावग्ग, ३, १.

२७. चुल्लवग्ग, ५; ५, २ (सरखावो. ओल्डनबर्ग, पा. ७५)

२८. आ उपरथी एवुं अनुमान करवुं न जोईए के जे चुन्दनी पासेथी तेमने छेवटनी भिक्षा मळी हती ते बौद्धेतर तथा मांसाहारी हतो. केवी जातनो खोराक बनाववो ए निश्चय नहीं करी शक वाथी तेणे एक पाडोशीने मोकल्यो हतो. अहीं खास जाणवानुं ए छे के आ फकरामां (४. १३—२०) चुन्द शब्द ज वपराएलो छे, तथा तेने 'लुहारना पुत्र' तरीके ओळखाव्यो छे; परंतु आगळ उपर तेने 'आवुसो' (४२) तथा 'भिक्खु' (४१) पण कहेलो छे.

डॉ० होर्नलना जैनधर्म विषेना विचारो.

[अनुवादक—श्रीयुत नानालाल नाथाभाई शाह. बी. ए.]

[स्वर्गस्थ डॉ० ए. एफ्. आर. होर्नलनुं नाम पुरातत्त्ववेत्ताओमां सुप्रसिद्ध छे. तेमणे चंडकृत प्राकृत लक्षण अने उवासगदसाओ सूत्र ए बे जैन ग्रंथो संशोधित—अनुवादित करीने प्रकट कर्या हता. ते सिवाय केटलीक जैन पट्टावलिओ पण तेमणे प्रसिद्धिमां मुकी हती. तेओ सन् १८९७ मां बंगालनी एसियाटिक सोसायटीना प्रमुख नेमाया हता. सन् १८९८ मां ज्यारे ए सोसायटीनी वार्षिक सभा मळी हती त्यारे तेमणे पोताना प्रमुख तरीकेना भाषणमां खास करीने ' जैनीजम् एण्ड बुद्धिजम्' तथा 'इन्डियन आर्किओलॉजी एन्ड एपिग्राफि ' ए विषयो चर्च्या हता. आ नीचे आपेला विचारो तेमना ए ज भाषणमांथी लीधेला छे. आ मूळ भाषण प्रोसीडिंग्रास् ऑफ धी एसियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगालना १८९८ ना फेब्रुवारीना अंकमां (पृ० ३९ थी ५३) प्रसिद्ध थएलुं छे.

सम्पादक.]

जैनधर्मविषेना आपणा ज्ञानमां गया वर्षोमां घणो ज वधारो थयो छे. हिंदुस्तानमां जैन अने बौद्ध ए बन्ने प्रतिस्पर्धी धर्मो होई सरखी रीते ज पुराणा छे, तो पण मध्यकालीन युगमां जैनधर्मनुं अस्तित्व ज नहीं हतुं एम आजपर्यंत घणा विद्वानोनुं मत हतुं; अने हजी पण तेना विश्वविख्यात प्रतिस्पर्धी—बौद्धधर्म—साथे सरखावतां मात्र नाम सिवाय तेनी विशेष माहिती जनसमुदायने नथी. परंतु हवे प्रो. जेकोबीए करेली गवेषणाओ, के जेमां प्रो. बुल्हर, में अने अन्य विद्वानोए पण मदद करी छे,[1] तेने लईने हिन्दुस्तानना अति प्राचीन अने सुस्थित संप्रदायोमांनो ए पण एक छे एवी जातनुं पोतानुं अस्सल स्थान ए धर्मे पुनः प्राप्त कर्युं छे. ए ज गवेषणाओनो सारांश संक्षेपमां हुं आज अहीं आपवा इच्छुं छुं.

जैन आगमो विगेरेमां महावीरना नामथी ओळखाता महापुरुषने साधारण रीते जैन धर्मना प्रवर्तक तरीके मानवामां आवे छे. तेमनुं मूळ नाम वर्धमान हतुं. बौद्ध ग्रंथोमां तेमने ' नातपुत्त ' एटले के नात क्षत्रियोना राजपुत्र तरीके ओळखाव्या छे. बुद्धनी माफक महावीर पण राजकुलोत्पन्न हता. तेमना पिता सिद्धार्थ ते नात अगर नाय नामनी क्षत्रिय जातना ठाकोर हता, जे वैशाली नामना आबादी भर्या शहेरना कोल्लाग नामना परामां रहेता हता. आ कारणथी महावीरने वैशालीय पण कहेवामां आवे छे. वैशालिनुं आधुनिक नाम बैसाढ छे, जे पटनाथी उत्तरे २७ मैल दूर आवेलुं छे. जुना वखतमां ते शहेरना त्रण भाग हता; वैशाली, कुंडगाम अने वाणियगाम; जेमां अनुक्रमे ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वाणीया रहेता हता. हालमां आ सर्व नाश पाम्युं छे. परंतु तेनी निशानीओ आधुनिक बेसाड, बसुकुंड अने बनिया नामना गामोना रुपमां हजीए हयाती धरावे छे ते वखते तेमां गणस्वामिक नामनी विचित्र प्रजासत्ताक राज्यव्यवस्था चालती हती: एटले के त्यांना रहेवासी क्षत्रिय जातीना उमरावोनी बनेली एक समितिना हाथमां राज्यसत्ता रहेती हती. ए समितिमां एक सभापति रहेतो जेने राजा कहेवामां आवतो, अने तेनी मददमां एक उपसभापति अने बीजो सेनापति रहेतो. ए प्रजासत्ताक राज्यना ते समयना प्रमुख राजा चेटकनी त्रिसला नामे कन्या साथे सिद्धार्थना लग्न थयां हतां, अने तेना

१ आ बाबतनी विशेष हकीकत माटे प्रो० जेकोबीना ' आचारांग अने ' कल्पसूत्र ' तथा ' उत्तराध्यन ' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र ' ना अनुवादो; तथा प्रो० बुल्हरनुं 'ईंडियन सेक्ट ओफ जैनस्' अने मारुं ' उपासक दशा'नु भाषांतर जुओ. वळी, १८७९ मां प्रसिद्ध थयेलुं प्रो० जेकोबीनुं ' कल्पसूत्र ' तथा 'ओरीजिन ओफ धी श्वेताम्बर एन्ड दिगम्बर' नामनो जर्मन ओरीएन्टल सोसायटीना Volo XXXVIII जर्नलमां प्रसिद्ध थएलो तेमनो लेख वांचो.

ज पेटे ई० स० पूर्वे ५९९ मां अगर ते अरसामां महावीरनो जन्म थयो हतो. आ उपरथी तेओ एक उच्च कुलमां जन्म्या हता, ए स्वतः सिद्ध थाय छे. अने तेने लीधे ज बुद्धनी माफक महावीर पण शरुआतमां पोतानी जातना क्षत्रियो अने उच्च कुळना लोकोना संसर्गमां ज वधारे आव्या हता. महावीरनां लग्न यशोदा नामे स्त्री साथे थयां हतां. ते यशोदाने अनोज्जा नामनी पुत्री थई जेनां लग्न पण एक एवा ज उच्च कुलना जमाली नामना पुरुष साथे करवामां आव्यां. आ जमाली पाछळथी महावीरनो शिष्य थयो हतो. पोताना पिताना मरण सुधी महावीर गृहस्थवासमां ज रह्या. पितानी संपत्तिनो वारसो तेमना मोटा भाई नंदीवर्धने लीधा पछी, त्रीस वरसनी उमरे, पोताना कुटुंबना वृद्ध पुरुषोनी आज्ञा लईने तेमणे यतिजीवनमां प्रवेश कर्यो, के जे जीवनने युरोपनी माफक भारतवर्षमां पण कुलना जेष्ठ पुत्र शिवायना अन्य युवानो माटे महत्त्वाकांक्षाओ पूरी करवाना क्षेत्र तरीके मानवामां आवे छे. कोल्लागमां नाय वंशना क्षत्रियोए एक धार्मिक संस्था स्थापी हती, के जेवी संस्थाओ हजीए आ देशमां दृष्टिगोचर थाय छे. अहीं कलकत्तामां आपणी नजीक आवेला माणिकतोलामां ज आवी एक संस्था विद्यमान छे जेने आपणे बधा जाणीए छीए. आवी संस्थाओमां मंदिर अने मुनिओने रहेवा सारुं उपाश्रय होय छे अने तेनी फरतुं उद्यान होय छे; केटलीक वखते तेमां स्तूप पण होय छे. आ बधाने साधारण रीते चैत्यना नामथी ओळखवामां आवे छे, जो के खरी रीते चैत्य नाम फक्त अंदरना मंदिर माटे ज वापरी शकाय. नाय वंशना आ चैत्यने दुईपलास कहेता, अने तेमां ते वंशमां पूज्य मनाता पार्श्वनाथना संप्रदायना साधुओ आवीने वसता हता.

पोताना यतिजीवनना आरंभकाळमां महावीर स्वाभाविक रीते ज दुईपलास चैत्यमां वसता पार्श्वनाथना संप्रदाय तळे रहेवा लाग्या; परंतु त्याग विषेना तेमना विचारो, जेमां दिगम्बरत्व मुख्य हतुं, तेने लीधे, ए संप्रदायना नियमो तेमने रोचक न लाग्या होय एम जणाय छे. तेथी एकाद वर्ष पछी तेओ त्यांथी नीकळी गया, अने निर्वस्त्र (दिगंबर) थईने बिहारना दक्षिण तथा उत्तर प्रांतमां, तेम ज कदाचित् हालना राजमहाल सुधी तेओ खूब फर्या हता. नग्नवृत्तिवाळी दीक्षा लेवा तैयार थाय एवा अनुयायीओ मेळवतां तेमने बार वरस लाग्या होय तेम जणाय छे. ए पछी तेमने 'महावीर'नुं उपनाम मळ्युं अने 'जिन' तरीके तेओ ओळखावा लाग्या. आ 'जिन' पद उपरथी ज जैन अने जैनधर्म एवां नामो घडायां छे. महावीर प्रथम पार्श्वनाथना पंथमां दीक्षित थया हता, तेथी तेमनो उल्लेख जैन तीर्थंकरोनी परंपरामां पार्श्वनाथनी पछीना तीर्थंकर तरीके करवामां आवे छे. जैन मंदिरोमां पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापवानुं पण आ ज कारण छे. जैन मंदिरोवाळा पवित्र पर्वतनुं पार्श्वनाथ पहाड (पारसनाथ-हिल) एवुं नाम पण आ उपरथी ज पडेलुं छे. पोतानी जींदगीना छेवटना त्रीस वरसोमां महावीरे धार्मिक उपदेश आप्यो छे, तथा पोताना संप्रदायनी व्यवस्था करी छे. ए काममां तेमने, तेमना मातृपक्षने लईने सगपणनां संबंधमां जोडाएला उत्तर अने दक्षिण बिहारप्रदेशमोना विदेह, मगध अने अंग देशना राजाओनी घणी सहायता मळी हती. आ देशोमां आवेला शहेरो अने गामडांओमां ज घणे भागे तेमणे पोतानुं धार्मिक जीवन गाळ्युं हतुं. परंतु नेपाळनी हद भणी आवेली श्रावस्ती नगरी तेम ज पारसनाथनी टेकरी सुधी पण तेमणे पोतानुं भ्रमण लंबावेलुं खरूं. आ उपरथी एम कही शकाय के तेमनी धार्मिक मुसाफरी तेमना समकालीन बुद्धना जेटली ज लगभग हती. साधारण रीते तेमना जीवनमा एवा कोई खास बनावो बनेला नथी. बुद्ध तेमना एक भयंकर प्रतिस्पर्धी हता; तो पण तेमनी साथे कोई जाणवा जेवो वाद-विवाद थयो होय एम लागतुं नथी. जैनोना ग्रंथोमां बुद्धनो भाग्ये ज उल्लेख आवे छे, प्रत्युत ते ग्रंथोमां तत्कालीन एक बीजा ज मोटा धर्मगुरु साथे महावीरने थएला भयंकर वैरनो उल्लेख करेलो छे. आ धर्मगुरु ते गोसाल छे. जे एक मंखली (भिक्षु) नो पुत्र होई आजीविक

नामना साधुओनो आचार्य हतो. आ आजीविक साधु-संप्रदाय ते समय तेम ज तदनंतर पण एक घणो आगळ पडतो संप्रदाय हतो. तेनो उल्लेख अशोकना ई० स० पूर्वे २३४ ना स्तंभ-लेखमां पण आवे छे. परंतु त्यार बाद ते संप्रदाय नष्ट थयो लागे छे. ज्यारे महावीर प्रारंभमां नग्नावस्थामां फरवा लाग्या त्यारे आ गोसाल तेमनो पहेलो शिष्य थयो हतो एम लागे छे. पण छ वर्ष तेओ साथे रह्या पछी ते बेऊमां विखवाद उत्पन्न थयो. तेथी गोसाल तेमनाथी जुदो पड्यो अने एक नवा ज सम्प्रदायनो जाते गुरु बन्यो; अने ते पण महावीर करतां बे वर्ष पहेलां. पोतानो शिष्य पोतानी पहेलां गुरुपदने प्राप्त थयो, आथी स्वाभाविक रीते ज ते बेऊमां वैर थयूं.[२] गोसाल शिवाय महावीरने मुख्य ११ शिष्यो हता जे सघळा भक्तिपूर्ण रह्या हता, अने तेमणे उपदेश आपी एकंदर ४२०० श्रमणो बनाव्या हता. आ बधामांथी महावीरनी पाछळ जीवतो रहेनार सुधर्मन् नामनो शिष्य हतो जेना लीधे हाल सुधी जैनधर्म चाल्यो आवे छे. महावीरनुं निर्वाण तेमना ७२ मा वर्षे पटना प्रांतमांना पावा नामना गाममां थयुं हतुं के जे स्थान जैन लोकोमां हाल पण पवित्र मानवामां आवे छे. तेमना जन्म अने निर्वाणनी साधारण रीते मनाती तिथिओ ई० स० पूर्वे ५९९ अने ५२७ छे. अने हालनी शोधखोळो उपरथी पण ए बहु खोटी लागती नथी. आ प्रमाणे बुद्धनी मितिओ पण क्रमथी ई० स० पूर्वे ५५७ अने ४७७ छे. एटलुं तो निश्चित ज छे के आ बन्ने समकालीन हता, अने महावीर बुद्ध करतां पहेलां निर्वाण पाम्या हता. तेमनुं प्राबल्य पण बुद्ध जेटलुं ज हशे, कारण के तेओ पण पोतानो एक खास सम्प्रदाय चलावी शक्या छे. तेमणे खास करीने पार्श्वनाथना पंथने तो पोताना मतमां ज मेळवी लीधो हतो के जेथी पार्श्वनाथना पंथनुं निर्ग्रंथ नाम तेमना पंथने पण लगाडवामां आव्युं हतुं. ए बेऊना मतमां फक्त न्यूनाधिक वस्त्रो पहेरवा विषे ज मुख्य फेर पडतो हतो. पार्श्वनाथना पंथना साधुओ ते वखते तो आ बाबतमां एकमत थई गया हता. परंतु वस्त्र विषेनो आ मतभेद केटलाक समयसुधी मूढावस्थामां रहीने थोडा सैका बाद ए फरीथी जागी उठ्यो, अने आगळ उपर आपणे जोईशुं तेम, तेना लीधे श्वेताम्बर अने दिगम्बर एवा बे खास विभाग पडी गया. पहेलां जैन लोको निर्ग्रंथ अगर निगण्ठना नामथी ओळखाता हता. उपर कहेला ई० स० पूर्वे २३४ ना अशोकना स्तंभ-लेखमां पण आ ज नाम तेमने माटे वापरेलुं छे. त्यार पछीना घणा सैकापर्यंत पण आ ज नाम चाल्युं आव्युं हतुं. कारण के ई० स० पछीना सातमां सैकामां आवेलो चीनी मुसाफर हुएन्त्सांग पण तेमने ए ज नामथी ओळखे छे. आ नाम केवी रीते उडी गयुं अने तेने स्थाने "जैन" नाम केम प्रचलित थयुं ते हजीपर्यंत समजायुं नथी.

अहिंया क्राईस्ट अने महावीरना साम्य विषे थोडीक टीका करवानुं मने मन थाय छे. ते बेऊने बार शिष्यो हता के जेमांथी बेऊने एक शिष्याभास हतो. आवी जातना केटलाक समान बनावोने लीधे बौद्धधर्म अने ईसाईधर्म वच्चे जेम परस्परनी सापेक्षिता बतावबामां आवे छे, तेम जैन अने ईसाई वच्चे बतावबानुं काम कोईए करेलुं नथी. आवा बनावोने घणी वार वधु महत्त्व आपवामां आवे छे. उपर्युक्त बनाव पण जरा विचारास्पद छे, जो के आवा छूटा छवाया बनावो बहु प्रमाणभूत तो न ज लेखाय.[३] जैन अने बौद्धधर्मनी तपास चलावतां मालुम पडे छे के महावीर अने बुद्धना जीवन तेम ज सिन्द्धातोमां घणी नानी मोटी बाबतोमां साम्य रहेलुं छे. आ साम्य उपरथी ज महावीरना वृत्तान्तमां तथा तेमनी

२ गोसाल विष प्रो० जेकोबीना विचारो सहेज जुदा छे. तेमना मत प्रमाणे गोसाल अने महावीर बन्ने स्वतन्त्र मतस्थापक हता के जेओ पोत पोताना पंथोने भेगा करवाना हेतुथी ज ६ वर्ष साथे रह्या हता, परन्तु संघटित पंथनो कोण नेता थाय ते विषयमां तकरार पडतां तेओनी वच्चे विरोध उत्पन्न थयो हतो.

३ त्रण वेपारीनी वात विषेना साम्य वाळा आवा एक बीजा बनाव माटे जुओ प्रो० जेकोबीनो उत्तराध्ययनसूत्रनो अनुवाद, पान २९.

पहेलां जैन धर्मना अस्तित्वमां घणाओने अश्रद्धा रहेली हती. परंतु उपर आपेली महावीरना जीवननी रूपरेषा उपरथी जणाशे के तेमनुं जीवन बुद्धना जीवन करतां चोक्कस भिन्न ज छे.

सिद्धान्तो अने व्रत–नियमोना साम्यनी बाबतविषे बोलतां पहेलां मारे जणाववुं जोईए के बौद्ध अगर जैन ए खरी रीते धर्मो नथी; परंतु एक जातनी साधु-संस्थाओ छे. युरोपमां जेम डॉमिनिकन्स अने फ्रान्सीस्कन्स जेवा साधुसंप्रदायो छे तेवा आ पण भिक्षुसंप्रदायो छे. बंने ई. स. पूर्वे पांचमां सैकाना आरंभमां अने छठ्ठा सैकाना अंतमां स्थपायेला छे. ए वखते उत्तर हिन्दमां धार्मिक चळवळ पूरजोशमां चालती हती. एवा घणा संप्रदायो ए वखते उद्भव्या हता. परंतु तेमां आ बे ज प्रचलित रही शक्या. त्रीजो संप्रदाय 'आजीविको' नो हतो, जेना विषे में उपर कहेलुं ज छे. आ उपरथी एम नहीं मानवानुं के आवा भिक्षु संप्रदायो ते वखतनी परिस्थितिमां खास सुधारारूप अगर नवा ज हता. आवी संस्थाओ मूळ चालता आवेला ब्राह्मण धर्ममां पण हती. ब्राह्मण धर्ममां चार आश्रमो विहित छे; जेम के विद्याभ्यासने माटे ब्रह्मचर्याश्रम, पछी गार्हस्थ्य, पछी एकांतवास माटे वानप्रस्थ, अने त्यार बाद छेल्लां वर्षो माटे संन्यस्त. आ संन्यासीओनी ढबे ज जैन अने बौद्धना संप्रदायो ई. स. पूर्वे छठ्ठा सैकामां अस्तित्वमां आव्या हता. फेर मात्र एटलो ज के जैनो तथा बौद्धोनी माफक ब्राह्मणोए मोटी भिक्षुसंस्थाओ रची न हती. ए धर्मोए ब्राह्मण संन्यासीओना विधिनियमोनुं ज अनुकरण कर्युं हतुं. अने तेथी ज बौद्ध अने जैनोमां साम्य होवानुं कारण मळे छे. अहिंसानो सिद्धान्त जे बौद्धो अने जैनोमां खास अगत्यनो गणाय छे ते मूळ ब्राह्मण धर्मना संन्यासीओमांए पळातो हतो. काळक्रमे ब्राह्मणधर्ममां एवी एक वृत्ति उद्भवी के संन्यस्त आश्रममां ब्राह्मण शिवाय बीजा लोको दाखल थई शके नहीं; अने प्रायः ए कारणने लीधे ज, ब्राह्मणेतर ज्ञातिओ माटे आ जैन अने बौद्ध संन्यासी आश्रमो स्थपाया हता. एमां पण प्रथम तो क्षत्रिओने ज अवकाश हतो. परंतु पाछळथी, बीजा लोकोने पण दाखल करवामां आव्या. ब्राह्मण संन्यासीओ आवा ब्राह्मणेतर संन्यासी वर्गो तरफ घृणानी नजरथी जुवे, ए स्वाभाविक छे, अने तेथी तेमनामां परस्पर भेदभाव अने विरोध उत्पन्न थाय ए पण तेटलुं ज स्वाभाविक छे. आ कारणथी ब्राह्मण संन्यासीओनी जेम जैन अने बौद्ध श्रमणोए एकला कर्मकांडने ज तिलांजली आपी अटकी नहीं रह्या, पण तेमणे एक पगलुं आगळ जई वेदाध्ययन पण बंध कर्युं, के जेने लीधे तेओ खरी रीते ब्राह्मणधर्मथी बिल्कुल छूटा पड्या. जैनधर्म अने बौद्धधर्म ए सुधारक पक्षनी चळवळो होई खास करीने तेओ वर्णाश्रम सामे बंड उठावनार छे, एवुं जे मत अद्यापि प्रचलित जणाय छे ते तद्दन खोटुं छे. तेओ तो फक्त ब्राह्मण संन्यासीओना स्वातंत्र्य सामे ज विरोध उठावे छे. वर्णाश्रम धर्म उपर तेओनो धसारो नथी. तेमना संप्रदायोमां पण, जो के उघाडी रीते बधाने अवकाश छे एम जणाववामां आवे छे, छतां घणा भागे मात्र उच्च वर्णोने ज दाखल करवामां आवे छे. एक वात खास जाणवा जेवी छे, के आ पन्थोने माननारा गृहस्थ लोको साधारण रीते धार्मिक बाबतोमां पोताना पंथना व्रतनियमोने ज अनुसरनारा हता, तेम छतां, गर्भाधान, लग्नविधि, उत्तरक्रिया विगेरे संस्कारोमां तेओ ब्राह्मणधर्मना उपाध्यायोने निमंत्रता हता. बौद्ध अगर जैन भिक्षुओ ते लोकोना धर्माचार्य तरीकेनुं काम करता, परंतु तेमनुं गोरपदुं तो ब्राह्मणो ज करता रहेता हता.

आ उपरथी जणाशे के बौद्ध अने जैनधर्ममां घणुं साम्य होवानुं कारण तेमना वखतनी परिस्थिति ज हती. बाकी सिद्धांत अने प्रक्रिया विषयक तेओमां घणी भिन्नताओ छे, अने ते एटली बधी तथा एटली झीणवटवाळी अने पारिभाषिक छे के अ वा नाना लेखमां हुं भाग्ये ज तेनुं विवेचन करी शकुं. तेम ज तेवुं विवेचन घणाने नीरस पण लागे. जेमने तेमां रस पडे एम होय तेमने प्रो. जेकोबीनां जैन सूत्रोना भाषांतरोनी प्रस्तावनाओ जोवा मारी भलामण छे. बे बाबतो के जेना विषेनो उल्लेख बीजे कोई ठेकाणे थयो नथी ते, मारा मत प्रमाणे,

आ बे धर्मोना सिद्धांत अने प्रक्रियामांनो खास तफावत जणावी शके छे. 'त्रिरत्न' नामनो प्रख्यात शब्द बौद्धो अने जैनोने सामान्य छे, जेनो अर्थ बौद्धो बुद्ध, धर्म अने संघ करे छे; अने जैन लोको सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, अने सम्यक्आचार करे छे. बेऊ धर्मना आ मुद्रालेखो खास विचारसूचक छे. बौद्ध लोकोनो मुद्रालेख आधिभौतिक अर्थवाळो छे अने जैनोनो आध्यात्मिक अर्थमां छे. पहेला अर्थ उपरथी जणाय छे के बुद्ध धर्ममां व्यावहारिक अने जीवंत उत्साह भरेलो छे, अने बीजा अर्थ उपरथी जणाय छे के जैन धर्म विचारोमां वहनारो अने असाहसिक छे.आ अनुमानने बेऊ धर्मना इतिहासथी समर्थन मळे छे.पोताना चपळ अने प्रवर्तक उत्साहथी बौद्धधर्म, हिंदुस्तानथी बहार प्रसर्यो, अने फक्त एक भिक्षु संप्रदायमांथी विकसित थईने सिलोन, बर्मा, तिबेट,तथा अन्य भागोमां वधीने एक महान् धर्म तरीके परिणत थयो; पण जैनधर्म शान्तवृत्तीथी मात्र हिन्दमां ज चालु रह्यो. बीजो शब्द जेनो जैनो अने बौद्धो बंने उपयोग करे छे ते 'संघ' शब्द छे. जैनोना संघमां चार प्रकारना माणसोनो समावेश थाय छे—जेम के भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक अने श्राविका. बौद्ध लोकाना संघमां फक्त भिक्षुओ अने भिक्षुणीओनो ज समावेश थाय छे. ते पंथमां इतर लोकोने कोई खास नामथी संप्रदायमां जोडवामां आव्या नथी. पोताना पंथना लोको साथे कोई प्रकारना व्यवस्थित संबंध विना कोई पण भिक्षुसंघ नभी शके नहीं, ए स्पष्ट ज छे. कारण के पोताना संप्रदायना अस्तित्वनी खातर पोताना पंथना लोको पासेथी द्रव्य विगेरे मेळववानी दरेक संघने खास करीने जरूर रहे छे ज. पण ए बेऊ पंथोनुं वर्तन पोताना उपासको तरफ तद्दन भिन्न भिन्न प्रकारनुं हतुं. बौद्धोमां भिक्षुओनी बाबतमां कांई कहेवा—करवानो बीजाओने कोई अधिकार न हतो. लोकोने संघमां कोई विधिपुरस्सर दाखल करवामां आवता न हता. तेमने कोई जातनी प्रतिज्ञाओ लेवानी न हती.तेमना आचारोने माटे कोई विधि—निषेधनो खास ग्रंथ न हतो. तेमने माटे कोई विशिष्ट धर्मक्रिया करवामां आवती नहीं; तथा कोई दुष्टने बहिष्कृत पण करवामां आवतो नहीं; टुंकाणमां ए ज के तेमना पंथना साधारण लोकोनी स्थिति एवी शिथिल तथा असंबद्ध हती के बौद्ध पंथनो अनुयायी साथे साथे बीजा पंथनो पण होई शके; कारण के ते माटे कोई जातना खास नियमो न हता. हुं बुद्धना महान् संघमांनो एक छुं तथा तेना धार्मिक फायदाओ हुं उठावुं छुं; आवी मगरुरीनी लागणी राखवानो अधिकार बौद्ध उपासकोने न हतो. जैनोना श्रावकादिनी स्थिति आथी जुदी ज छे. बौद्ध उपासक करतां तद्दन जुदी ज रीते तेओ पोताना संघना खास आवश्यक अंग तरीके गणाता; अने पोतानो गाढ संबंध भिक्षुओ साथे जोडाएलो छे एम तेओ मानता. आ बाबतमां बौद्धधर्मे हिमालय जेवडी मोटी भूल करी छे; अने आ भूलने लीधे ज ते हिंदुस्तान के ज्यां तेनो खास प्रादुर्भाव थयो हतो त्यांथी, जडमूळथी जतो रह्यो छे. आगळ वधतां ई. स. ना सातमा सैकाथी असरकारक बनता जता लोकोना धार्मिक वळणमां फेरफार थतो होवाने लीधे प्रख्यात चीनी मुसाफर हुएन्त्संगना समयमां बौद्ध धर्ममां ओट थतो गयो; अने तेमां पण काळक्रमे नवमा सैकामां शंकराचार्ये प्रकटावेली ब्राह्मण धर्मनी संस्थाओना सचोट विरोधने लीधे पड्या पर पाटु मारवा जेवुं थयुं. आखरे ज्यारे बारमा अने तेरमा सैकामां भारतवर्ष उपर, उच्छेदक मुसलमानोनी स्वारीओ थया लागी त्यारे, तारानाथ अने भिन्हाजुद्दीननी तवारीखोमां जणाव्या प्रमाणे थोडा घणां बाकी रहेला बौद्ध विहारो तथा चैत्योने सखत आघात पहोंच्यो, जेथी बौद्धधर्म केवळ छिन्नभिन्न दशामां आवी अंते नाश पाम्यो. तेणे मूळथी ज पोताना उपासकोने भिक्षुसंघसाथे गाढ संबंधमां राख्या नहीं, तेम ज पाछळथी पण ते संबंध योजाई शकयो नहीं, तेथी करीने साधारण उपासको पाछा ब्राह्मण धर्ममां जोडाई गया अने तेथी ब्राह्मणो केवळ गोरपदुं करवाने बदले, पुनः बौद्ध धर्मना पहेलांना समय प्रमाणे गोरपदुं तेम ज आचार्यपदुं बंने करवा लाग्या. फक्त थोडाक लोको, अने खास करीने बंगाळना केटलाक लोको, ब्राह्मणधर्ममां न भळतां बुद्ध

तथा भिक्षुसंघ विना पण बौद्ध धर्मनी पतित अवे विशीर्ण अवस्थामां पड्या रह्या के जेमने जोतां साधारण रीते पहेलांना जाहोजलालीवाळा बौद्धधर्मनुं भाग्ये ज कोईने भान थाय. बौद्धधर्मना आ अवशेष रहेला उपासकोनी शोध करवानुं मान आपणा जोईन्ट फिलोलोजिकल सेक्रेटरी पंडित हरप्रसाद शास्त्रीने घटे छे. तेमणे ज प्रख्यात बौद्ध त्रयीमांना 'धर्म' ना अनुयायी तरीके ते लोकोने शोधी कहाड्या छे, अने १८९७ ना आपणी संस्थाना जर्नलमां तेमनी हकीकत प्रसिद्ध करी छे. आ लोको उपरथी ज धर्मतोला स्ट्रीट आवुं नाम घडायुं छे, तथा हजी पण जाऊं बाजार स्ट्रीटमां तेमनुं धर्मचैत्य मौजूद छे.

बौद्ध धर्मना आ प्रकारना विनाशकाळ दरम्यान जैन धर्मनी स्थिति तद्दन जुदी ज हती. अने तेथी ते हजी पण निर्विघ्नपणे चाल्या करे छे, तथा तेना साधुसंघो अने श्रावकसंघो हजी पण पश्चिम तथा दक्षिण हिन्दमां अने बंगालमां दृष्टिगोचर थाय छे. तेमनी एवी एक संस्था आपणी नजीकमां आवेला माणिकतोला परामां ज मौजुद छे. जुना वखतनी धार्मिक भिक्षुसंस्थाओमांथी हाल जीवती जागती एवी फक्त ए एक जैनधर्मनी ज संस्था छे. अलबत् आवी ऐकांतिक संस्थाना इतिहासमांथी जनसमाजने रस पडे एवो खोराक तो भाग्ये ज मळी शके; तो पण जे एक बाबत आपणा ध्यान उपर खास घसारो करी शके छे ते ए छे, के आ धर्म पण श्वेताम्बर अने दिगंबर एवा बे पंथमां विभक्त थई गएलो छे. आ विभाग थवानुं कारण ए शब्दो उपरथी ज सूचित थाय छे. एटले के न्यूनाधिक वस्त्रो पहेरवाना विखवाद उपरथी आ भागो पडेला छे. आ उपरांत बाछळथी सिद्धांत अने प्रक्रियामां पण बेऊ संप्रदायोने केटलोक भेद थएलो छे, पण ते जनसमाज माटे विशेष रसोत्पादक नथी. जैनधर्मना आ बंने संप्रदायो विभक्त तेम ज विरोधी अवस्थामां रह्या करे छे. बेऊनुं साहित्य पण भिन्न छे; परंतु 'अंगो' अने 'पूर्वो' ना नामे जे जुनुं धार्मिक साहित्य छे ते मात्र श्वेताम्बरोनुं ज गणाय छे. वखत जतां आ बे विभागोमांथी संप्रदायो अने साधुओना अनेक फांटा निकळ्या छे. बौद्धोनो तथा जैनोनो ऐतिहासिक शोख एकसरखी रीते वृद्धिंगत थएलो छे. तेओए नियमित रीते पोताना धर्माचार्यो तथा गुरुओनी पट्टावलीओ जाळवी राखेली छे, जेमांनी घणी खरी प्रो. बुल्हरे, डॉ. क्लाटे, तथा मे इंडियन एन्टीक्वेरीमां अने एपिग्राफिआ इंडिकामां प्रसिद्ध करी छे. विशेषमां तेमना धार्मिक तथा अन्य पुस्तकोमां घण ऐतिहासिक बाबतोनी नोंधो वारंवार जोवामां आवे छे. आवी बाबतोने उपर्युक्त विद्वानो उपरांत प्रो. वेबर तथा प्रो. भाण्डारकरे पण जुदी जुदी काढीने संगृहीत करी छे.[४] ए साहित्यमांथी हजी पण एवी घणी बाबतो तारवी कढाय तेम छे, जेनी टूंक रुपरेषा हुं अहिं नीचे वर्णवुं छुं.

महावीरनुं निर्वाण थयां पछी बीजा सैकामां—ई०स० पूर्वे लगभग ३१० मां—मगध देशमां एटले हालना बिहार प्रांतमां द्वादश वार्षिक दुकाल पड्यो. ते वखते जैनधर्म बिहारप्रांत ओळंगी बहार नीकळ्यो हतो एम जणाय छे. ते समये त्यांनो राजा मौर्यवंशीय चंद्रगुप्त हतो. तथा अद्यापि अविभक्त जैनधर्मना आचार्यपदपर भद्रबाहु प्रतिष्ठित हता. दुकाळनी आफतमां केटलाक साधुओ साथे भद्रबाहु दक्षिण तरफ कर्णाटकमां नीकळी गया अने मगधमां तेमनी जग्या स्थूलभद्र भोगववा लाग्या. लगभग दुकाळना अंतमां, पण भद्रबाहुनी गेर हाजरीमां, पाटलीपुत्र (पटना) मां एक सभा थई जेणे अग्यार अंगो तथा चौद पूर्वो के जेनो समावेश बारमा अंगमां थाय छे ते भेगां कर्यां. दुर्भिक्षना आपत्ति-समयमां जे जे हरकतो पेदा थई तेनी असर जैन धर्मनी प्रकिया उपर पण थई. साधुओने माटे साधारण एवो नियम हतो के तेमणे नग्न ज रहेवुं जोईए; जो के अपवादरूपे केटलाक नबळा साधुओने अमुक वस्त्र पहेरवानी रजा पण आपवामां आवेली हती. मगधमां रहेला ते केटलाक साधुओने वखतनी जरुरीयात

४. जुओ प्रो. वेबरनुं 'केटलाग ऑफ जैन मेन्युस्क्रीप्टस्' १८८८ ने ९२; तथा प्रो. भांडारकरनो रीपोर्ट ऑफ धी सर्च फॉर मेन्युस्क्रीप्टस् १८८३-४. विशेष हकिकत माटे वळी जुओ. प्रो. जेकोबीनी जैनसूत्रोनी प्रस्तावना (भाग २).

प्रमाणे एम लाग्युं के नग्न दशा छोडी आपणे हवे श्वेत वस्त्र पहेरवां जोईए. एथी उलटुं केटलाक साधुओ धर्मांधताथी ए विचारने वश न थतां पोताना वर्गना साधुओने माटे निर्वस्त्र रहेवानो फरजीयात विधि बनाव्यो, अने तेमनाथी अलग थई दूर जता रह्या. दुर्भिक्ष पछी ज्यारे फरीथी देश आबाद थयो त्यारे ते पेला साधुओ पाछा आव्या परन्तु तेमनी गेरहाजरीमा श्वेतवस्त्र पेहरवानो नियम रूढ थई गएलो होवाथी तेओ त्यांना साधुओ साथे भेगा मळी शक्या नहीं. आ रीते दिगम्बरो अने श्वेतांबरोनी भिन्नताना पायो नंखायो. आना परिणामे पाटलीपुत्रमां संगृहीत थएला धार्मिक ग्रंथोने दिगम्बरोए मान्य राख्या नहीं अने तेथी तेओ कहेवा लाग्या के अमारा 'पूर्वो' अने 'अंगो' नष्ट थई गयां छे. शरुआतमां आ विभाग बहु महत्त्वनो न हतो परन्तु केटलाक सैका पछी एटले लगभग ई. स. ७९ अगर ८२ मां आ विभागोए चुस्त-रूप धारण कर्युं. विभक्त थवा विषे बेऊ पक्षनुं ऐकमत्य छे; परन्तु विभक्त थवाना वर्ष माटे ३ वर्षनी भिन्नता जोवामां आवे छ. आ समये विहार प्रांतमांथी नीकळीने जैनधर्मे घणी दूर सुधी पोतानो प्रसार कर्यो हतो तथा पोतानी केटलीक संस्थाओ अने पक्षो वधार्या हता; अने आपणे आगळ जोईशुं के आ वखते तेमणे मथुरामां पण एक सारी संस्था स्थापी हती. तवारीख उपरथी एम जणाय छे के, आ प्रमाणे विस्तृत थवानी प्रवृत्ति खास करीने, ई. स. पहेलानां त्रीजा सैकामां श्वेताम्बराचार्य सुहस्तिन् ना समयमां वधी हती. कारण के ते वखतनी पट्टावलीमां विभागो अने उपविभागोनी असाधारण भरती जोवामां आवे छे. अने एटलुं तो निश्चित ज छे के ई. स. पहेलांना बीजा सैकानी मध्यमां जैनधर्म ओरीसाना दक्षिण भाग सुधी पहोंची गयो हतो. केम के कटक आगळना खंडगिरि पर्वतना खारवेलना लेखमां जैनोनो खास उल्लेख थएलो छे.

काळक्रमे पाटलिपुत्रमां संगृहीत थएला जैन सिद्धान्तो फरी केटलीक अव्यवस्थामां पड्या, अने हस्तालिखित प्रतोना अभावने लीधे तेमना नाशनी पण तैयारी थवा लागी. तेथी तेमने व्यवस्थित करवानी जैन समाजने अत्यंत आवश्यकता लागी अने तेटलामाटे आखरे संप्रदायना एक मुख्य आचार्य देवर्धिनी देखरेख तळे गुजरातमां आवेला वल्लभी नगरमां एक सभा भरवामां आवी.

आ दंतकथा उपरथी एम जणाय छे के श्वेताम्बरोए सुरक्षित राखेला जैन सिद्धान्तग्रंथो ई. स. पहेलांना लगभग चौथा सैकाना अंत अथवा त्रीजा सैकाना प्रारंभ जेटला जुना छे, कारण के पाटली पुत्रनी सभा लगभग ई. स. पूर्वे ३०० मां थएली; अने ते वखते ज आ आगमो संगृहीत थया हता. आ हकीकत उपरथी सूचित थाय छे के ए ग्रंथो ते वखत पहेलां पण विद्यमान होवा जोईए अने जैन दंतकथा पण एम कहे छे के महावीरे पोताना मुख्य शिष्य गणधरोने प्रथम 'पूर्वो' शीखव्यां हतां अने ते पूर्वो उपरथी गणधरोए नवां 'अंगो' बनाव्यां हतां. 'पूर्वो' एटले 'पहेलां'ना ग्रंथो अर्थात् 'अंगो' नी पहेलां थएला ग्रंथो. पाटलीपुत्रनी सभा वखते, जैनोना कहेवा प्रमाणे ते ग्रंथोमांनो केटलोक भाग नाश पाम्यो हतो, अने तेथी बाकी रहेला भागने बारमा 'अंग' तरीके संगृहीत करवामां आव्यो. एक जैन दंतकथा एम जणावे छे के मूळमां जे सिद्धान्त ग्रंथो हता, तेमांथी बाकी रहेला ग्रंथोने पाटलीपुत्रनी सभामां पुनः संशोधित करी ते समयने अनुकूल आवे तेवा नवा रूपमां गोठववामां आव्या.

जैन धर्म अने तेना इतिहास विषे आ प्रमाणे दंतकथाओ छे. त्रीसेक वर्ष पहेलां आ दंतकथाओने बिलकुल बेवजूद गणवामां आवती हती, परन्तु हवे तेवी वृत्तिने, जैन साहित्यमां देखाई आवती ऐतिहासिक चोकसाई अने झीणवटने लीधे सखत फटको लाग्यो छे. गत वर्षोमां प्रो. जेकोबी, प्रो. ल्युमॅन अने में प्रसिद्ध करेलां जैन पुस्तको उपरथी आ दंतकथाओनी सत्यता विशेष मालुम पडती जाय छे. प्रो. जेकोबीए जैन सिद्धान्त ग्रंथोनी भाषा अने शैलीनी बारीक तपास करीने तेमना पुराणपणा विषेनुं पोतानुं प्रामाणिक मत प्रसिद्ध कर्युं छे; तो पण ज्यां सुधी आ दंतकथाओ विषे अचुक अने

स्वतंत्र पुरावा मळी शके नहीं त्यां सुधी तेमना उपर संपूर्ण विश्वास राखी शकाय नहीं, ए स्वाभाविक ज छे. परंतु हवे आवा स्वतंत्र पूरावानी शोधो पण गया वर्षोमां थएली छे, अने तेनुं मान वीएनानों प्रो. बुल्हरनी तीव्र बुद्धिने घटे छे. ई. स. १८७१ मां मेजर जनरल सर ए. कनींघामे[5] मथुराना कंकाली टीलाना खंडेरोमांथी शोधी काढेला लेखोनुं पुनर्निरीक्षण करीने प्रो. बुल्हरे तेमांना केटलाक लेखोमां जैनोना केटलाक आचार्यो अने विभागोनां खास नामो शोधी काढ्यां; अने तेथी ते वखतना आर्कीओ लॉजीकल सर्व्हे खातानः वडा डॉ० जे बर्गेस द्वारा ते टेकराने बराबर खोदावबानी व्यवस्था करवामां आवी, जे मुजब डॉ० फुहररना अध्यक्षपणा नीचे १८८९ थी १८९३ सुधी अने पुनः १८९६ मां तेनुं खोदाण काम करवामां आव्युं. आथी बीजा घणा नवा लेखो हाथ लाग्या अने तेनी नकलो डॉ० बुल्हर तरफ रवाना करवामां आवी. तेमणे ते लेखोनुं परीक्षण करी तेमांथी केटलाक खास खास लेखो चूंटी काढ्या अने वीएना ओरीएन्टल जर्नलमां तथा एपीग्राफीआ इंडीकाना प्रथम बे पुस्तकोमां प्रसिद्ध कर्या. आमांना केटलाक लेखो घणा उपयोगी छे. कारण के तेमां इंडो सिथीयन संवत् एटले के इंडो–सिथीयन राजा कनिष्क, हुविष्क अने वसुदेवे उपयोग करेला संवतनी मितिओ आपेली छे. आ राजाओ ई० स० ना प्रथम बे सैकाओमां थएला छे अने तेमनुं राज्य हिंदना उत्तर–पश्चिम किनाराथी ठेठ मथुरासुधी प्रसर्युं हतुं. आ लेखोनी मिति, ते संवत्ना ५ थी ९८ मां वर्ष सुधीनी छे, जे ई० स० ना ८३ थी १७६ वर्षनी बराबर थाय छे. आमांना घणा लेखो तो जैन प्रतिमाओनी बेसणी ऊपर कोतरेला छे. तेमां ते मूर्ति बनावनार श्रावक अगर श्राविकाओनां, जे मंदिरमां ते मूर्ति स्थापित करवामां आवी तेनां, जे साधु अथवा साध्विओना उपदेशथी ए कार्य करवामां आव्युं तेनां अने जे गण अगर संघना तेओ अनुयायी हता तेनां नामो आपेलां छे. आ समर्पणना लेखोमांथी घणी उपयोगी बाबतोना विश्वसनीय पुरावाओ मळी आवे छे.

प्रथम तो आ लेखोमां उपदेशक तरीके उल्लिखित साधु अगर साध्विओना जे जे गण–संघ आदिनां नामो एमां आपेलां छे ते गणादि ई. स. ना पहेला अने बीजा सैकामां विद्यमान हता ए बाबतनो पुरावो कल्पसूत्र अने बीजा जैन ग्रंथोमांथी आपणने मळी आवे छे. जे कौटिक नामना गणनो एमां वारंवार उल्लेख थएलो छे ते गण सुस्थिताचार्ये स्थापेलो हतो. आ सुस्थित ई. स. पूर्वेना बीजा सैकाना पूर्वार्धमां संघना आचार्य तरीके विद्यमान हता. स्पष्ट रीते ज आ गण जैनोनी श्वेतांबर शाखानो हतो. आ रीते आपणने आ लेखो उपरथी ई. स. पूर्वेना बीजा सैकाना मध्यमां जैन श्वेतांबर संप्रदायनी विद्यमानतानो परोक्ष पुरावो मळे छे एटलुं ज नहीं पण ई. स. ना प्रारंभना बे सैकामां ए संप्रदायनो कौटिक नामे गण मथुरासुधी फेलाएलो हतो तेनो प्रत्यक्ष पुरावो पण मळे छे. तथा ए लेखोमां तेनो जे वारंवार उल्लेख आवे छे तेथी ते मथुरामां सारी पेठ जामेलो हशे एम पण स्पष्ट जणाय छे. ते समये बुलन्द शहेरमां पण एक एवी संस्था हती जेनो पुरावो ए लेखोमां आवता उच्चनगर अथवा वारण नामना समुदायना साधुओनां नामो उपरथी मळे छे. ए बन्ने नामो उक्त शहेरना जुनां नामो हतां.

बीजी बाबत ए छे के, संघना एक अंग तरीके साध्वी वर्गने जे गणवामां आवे छे तेनो हयातीनो पुरावो पण आ लेखो पूरो पाडे छे. अने ते उपरथी विशेष ए पण हकीकत मळी आवे छे के पोताना धर्मनो विकास करवामां आ साध्वीओ पण घणो भाग लेती हती, अने खास करीने श्राविकाओमां. कारण के एक अपवाद सिवाय बधी ज श्राविकाओए साध्वीओना उपदेशथी प्रतिमा समर्पण करवानुं जणाव्युं छे. आ वातने जैन सिद्धान्त ग्रंथोना लखाणथी समर्थन पण मळे छे. जैन

५ आ विषयनी शोध खोळना तेमना लेखो वीएना ओरिएन्टल जर्नल, १८८७ थी ९१, अने १८९६ मां प्रसिद्ध थया छे; तेम ज १८९७ ना इम्पिरीयल एकेडेमी ऑफ सायन्सना जर्नलमां पण तेमणे ते प्रकट कराव्या छे.

६ जुओ तेमना सर्वे रिपोर्टस, भाग २.

धर्ममां दिगंबर अने श्वेताम्बर ए बे विभागो घणा जुना वखतथी पडेला छे तेनो पण एक अधिक पूरावो आमांथी मळी आवे छे. दिगम्बरो पोताना संघमां स्त्रीओने सामेल करता नथी. फक्त श्वेताम्बरो ज तेम करे छे. तेथी आ लेखो उपरथी एम सिद्ध थाय छे के मथुरामांनी आ संस्था श्वेताम्बरोनी ज हती तथा ई. स. ना प्रथम सैकामां आ विभक्त अवस्था बराबर निश्चित थएली हती.

आ लेखो उपरथी एक बीजी हकीकत ए मळे छे के जैन संघमां श्रावक–श्राविकाओनी व्यवस्थित रचना करेली छे. में उपर सूचना करेली ज छे के जैन संघमां आ पण एक अगत्यनो विभाग गणाय छे, के जे धर्मनी उन्नतिमां घणी महत्त्वनी बाबत छे. ए लेखोमां श्रावक अने श्राविका एवा शब्दो वपराएला छे जेने हाल सरावगी पण कहेवामां आवे छे. बौद्धोमां पण श्रावक शब्द वपराएलो छे पण त्यां तेनो अर्थ अर्हत् (अमुक कक्षानो साधु) एवो करवामां आवे छे. आ हकिकत श्रावकोनी चोक्कस स्थितिविषे उल्लेख करे छे एटलुंज नहीं, पण जैन अने बौद्ध ए बे महान् धर्मोनी विशिष्टतानुं पण स्पष्ट प्रतिपादन करे छे.

एक बीजी उपयोगी बाबत ए छे, के ते लेखोमां श्रावकोनी जातिविषे पण वारंवार उल्लेख आवेलो छे. जैन अगर बौद्धधर्म वर्णाश्रम दूर करवा मांगे छे, एवी जे मान्यता छे ते तद्दन खोटी छे एम में पहेलां जणावेलुं छे. एक माणस श्रावक बनवाथी वर्णभ्रष्ट थतो नथी. ते पोतानी जातिनो धंधो–रोजगार छोडी शके छे, परन्तु कन्यानी आप ले माटे तथा अन्य व्यवहार माटे तो तेने पोतानी जुनी जातिनो ज आश्रित रहवुं पडे छे. एक लेखमां एक लुहारे दान आप्यानुं वर्णव्युं छे. जैन थया पछी ते लुहार बन्यो हशे एम मानवुं भूल भरेलुं छे, कारण के श्रावकोने माटे तो लुहारना धंधानो निषेध करेलो छे. तेथी आ उल्लेख तेना बापदादानी तथा तेनी जाति माटे ज हशे. तो पण एम जणाय छे के हालनी माफक ते वखते पण घणा खरा श्रावको व्यापारी वर्गना ज हता.

जैन ग्रंथोमां आपेली घणी बाबतोनुं समर्थन आ लेखोमांथी थई शके एम छे, ए सिद्ध करवा माटे पण विस्तृत पूरावा हुं आपी शकुं तेम छुं; परन्तु हाल करवा करतां आ विषयमां रस लेनार सज्जनोने प्रो. बुल्हरना लेखो ज स्वयं वांची लेवानी हुं भलामण करवी योग्य धारुं छु. हजी जे एक बाबत मारे खास जणाववी जोईए, ते ए छे के, सुप्रसिद्ध चक्र अने स्तूप तथा तेना अन्य अंगो ए बौद्ध धर्मना ज खास बाह्य चिन्हो मनाय छे; पण १८८३ मां लीडन मुकामे भराएली छट्ठी ' इन्टरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ ओरीएन्टालीस्टस् ' आगळ वांचेला लेखमां मर्हुम पंडित भगवानलाल इंद्रजीए बतावी आप्युं हतुं के जैन लोको पण स्तूपोने पूजे छे. अने हवे प्रो. बुल्हरे ऊंडी शोध खोळ कर्या पछी सप्रमाण सिद्ध कर्युं छे के चक्र अने स्तूप विषेनी अद्यापि चालती आवती विद्वानोनी मान्यता केवळ भूल भरेली छे. मथुरामांथी एक जैन स्तूपनां अवशेष सुधां प्रकट रीते मळी आव्या छे. पहेलांथी थती आवती भूलने लीधे शरुआतमां एम लाग्युं हतुं के आ स्तूप पण बौद्धोनो हशे; परन्तु तेनी बाजुएथी ज्यारे बे जैन मंदिरोना अवशेषो मळी आव्या तथा जैन लेखो अने प्रतिमाओ विगेरे पण त्यां मळी आव्यां त्यारे आ स्तूप पण जैनोनो ज होवो जोईए, ते विषयमां पछी कोई जातनी शंका रही नहीं. त्यारबाद केटलाक कोतरेला पत्थरो पण मळेला छे, जेना उपर तेना बीजा अवयवो साथे जैन स्तूपोनो आकार कोतरेलो छे. आपणे हाल सुधी जेने बौद्ध स्तूपो मानता आव्या छीए तेना जेवा ज आ स्तूपो छे. प्रो. बुल्हरे तो पोतानुं अनुमान आगळ दोडावीने एम पण कह्युं छे के स्तूप–पूजा ए जुना वखतमां फक्त जैन अने बौद्ध ज करता एम नहीं, परंतु चुस्त संन्यासीओ (ब्राह्मण धर्मना) पण करता हता. एक जैन प्रतिमानी बेसणी जेना उपर कोतरकाम तथा लेख छे तनी शोध खास जाणवा जेवी छे. तेमां बौद्ध प्रतिमाओनी माफक ज एक त्रिशूल उपर चक्र काढेलुं छे. आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के चक्रनुं चिन्ह ए केवळ बौद्धोनुं ज नथी. ते लेखमां जणाव्या प्रमाणे, ते प्रतिमा, एक साधुना

उपदेशथी एक श्राविकाए प्रतिष्ठित करी हती. ए बेऊनी आकृतिओ पण, आ पवित्र चिन्हनी तेओ स्तुति करता होय तेम, कोतरवामां आवी छे. वळी लेखमां एम पण उल्लेख छे के, ई. स. १५७ ने मळती सालमां, आ देवनिर्मित स्तूपमां प्रतिमा बेसाडवामां आवी. 'देवनिर्मित' ए शब्दथी सूचित थाय छे के ए स्तूप बहु ज जुनो होवो जोईए. कारण के ई. स. ना बीजा सैकामां तेनो मूळ इतिहास भूली जवायो हतो अने तेनुं स्थान एक दंतकथाए लीधुं हतुं. तेथी आपणे तो ए ज निश्चय उपर आवी शकीए के घणा सैका पहेलां ए स्तूप निर्मित थयो हशे. प्रो. बुल्हरे शोधेली ए बाबतने एक जैन ग्रंथमांथी टेको पण मळे छे.[1] ते दंतकथा प्रमाणे ई० स० ना ९ मा सैकामां ते स्तूप हयाती धरावतो हतो अने ते वखते तेनी मरामत विगरे करवामां आवी हती; तथा तेमां पत्थरो बेसाडवमां आव्या हता. मूळ ते स्तूप ईंटोनो बनेलो हतो अने पार्श्वनाथने समर्पित करेली सुवर्णथाल तेमां मुकेली हती. एम कहेवामां आवे छे के ए सुवर्ण थाळ मथुरामां देवोए आणी हती अने घणा वखत सुधी जैनोने पूजा करवा माटे ते बहार राखवामां आवी हती. परंतु पाछळथी ज्यारे मथुराना एक जुना राजानी ते थाळी पडावी लेवानी इच्छा थई त्यारे तेना उपर ईंटोनो आ स्तूप बनाववामां आव्यो आ समय ते, घणा भागे ई. स. पहेलांना बीजा सैकानो हशे, ज्यारे प्रथम ज जैनो मथुरामां वास करवा लाग्या हता. ए थाळ तेओ कदाच विहारमांथी लाव्या हशे, अने जे राजाए थाळ पडावी लेवानी इच्छा करी, ते कदाच ई. स. नी शरुआतमां अमल चलावतो इंडो–सीथियन कानिष्क राजा हशे.

१ ए ग्रंथ ते जितप्रभकृत तीर्थकल्प छे. ए विषयना विशेष वर्णन माटे 'वीएना एकेडमी ऑफ सायन्सोज्'ना, कार्य विवरणमां जुओ.

महावीर निर्वाणनो समय-विचार

[* जेमनी ऐतिहासिक विषय तरफ रुची छे अने जेओ ए विषयना लेखोनुं मननपूर्वक अध्ययन-श्रवण करे छे तेओ सारी पेठे जाणे छे के, जैन इतिहास अने जैन काळगणानाना ॐ नमः रूपे जे श्रमण भगवान् श्री महावीर देवनो निर्वाण-समय छे तेना विषयमां पुरातत्त्ववेत्ताओमां आज घणां वर्षोथी परस्पर मतभेद अने वाद-विवाद चाली रह्यो छे. जैन धर्मना प्राचीन साहित्यमां पण खुद ए बाबतमां एकता जणाती नथी. महावीरदेवनो निर्वाण समय, ए जैन इतिहासमां तो सौथी अग्र भाग भजवे छे; परन्तु अखिल भारतीय इतिहासमां पण तेनी बेटली ज महत्ता छे अने ए कारणने लईने पुरातत्त्वज्ञोना माटे ते एक घणो ज अगत्यनो सवाल थई रह्यो छे.

सामान्य रीते जैन ग्रंथोनी वळण उपरथी एम मानवामां आवे छे के, हिन्दुस्तानमां वर्तमानमां जे विक्रम संवत्‌ना नामे संवत् प्रवर्ते छे तेना प्रारंभ पहेलां ४७० वर्षे, अने ई० स० ५२७ पूर्वे, श्रमण भगवान् श्री-महावीरनुं निर्वाण थयुं हतुं. जैन धर्मना दिगंबर अने श्वेतांबर नामना बंने प्राचीन संप्रदायोना घणा ग्रंथो उपरथी ए निर्णय निकळे छे. परंतु प्रसिद्ध जैन साहित्यज्ञ जर्मन विद्वान् डा० हर्मन जेकोबीए, आचार्य श्री हेमचन्द्रना एक उल्लेखथी प्रेराई ए निर्णयमां शंका उपस्थित करी अने तेने मळतां बीजां केटलांक प्रमाणोनो आश्रय लई, ए जुनी मान्यताने असंबद्ध जणावी. त्यार पछी बीजा घणाक विद्वानोए ए संबंधमां, परस्पर खंडन-मंडन चालु कर्युं अने एक बीजाए पोत पोताना कथनने सत्य सिद्ध करवा अनेक जातनो ऊहापोह कर्यो. जार्ल चार पेंटियर नामना एक विद्वाने 'इंडियन एन्टीक्वेरी' नामना सुप्रसिद्ध मासिक पत्रना सन् १९१४ ना जून, जुलाई अने ओगष्ट मासना अंकोमां, ए विषयनो एक घणो ज विस्तृत लेख लख्यो[१] अने तेमां महावीर निर्वाण विक्रम संवत् पूर्वे ४७० वर्षे नहीं परंतु ४१० वर्षे (ई० स० ४६७ पूर्वे) थयुं हतुं, अने परंपराप्रमाणे जे गणना गणवामां आवे छे तेमां ६० वर्ष वधारे छे ते कमी करवा जोईए, एम सिद्ध करवा विशेष प्रयास कर्यो हतो.

पोताना ए विस्तृत लेखमां प्रथम तो ए विद्वाने एम सिद्ध कर्युं के, मेरुतुंगाचार्य विगेरेना विचारश्रेणी आदि ग्रंथोमां जैन काळगणना संबंधी जे प्राचीन गाथाओ आपेली छे, तेमां जणावेला राजाओनो कोई पण प्रकारनो परस्पर ऐतिहासिक संबंध छे ज नहीं. तेम ज महावीर निर्वाण पछी ४७० वर्षे जे विक्रम राजा थवानो उल्लेख छे तेनो इतिहासमां क्यांए अस्तित्व नथी. माटे ए पुराणी गाथाओमां जे प्रकारे काळगणना करवामां आवी छे अने जे राजाओना राज्यकाळ आप्या छे ते निर्मूळ छे. लेखना बीजा भागमां ए विद्वाने एम बताव्युं के सामण्णफलसुत्त विगेरे केटलाक बौद्ध ग्रंथो उपरथी जणाय छे के, महावीरदेव अने बुद्धदेव बंने समकालीन हता; अने बौद्ध ग्रंथो प्रमाणे बुद्धदेवनो निर्वाण ई० स० पूर्वे ४७७ वर्षे थयुं हतुं. जनरल कानिंग्हाम अने मोक्षमुलरे पण ए तारीख मान्य राखी छे. बुद्धदेवनी मृत्युसमये ८० वर्षनी अवस्था हती. तो हवे जोवानुं के, गाथाओमां जणाव्या प्रमाणे जो महावीर देवनो अंतकाळ ई० स० पूर्वे ५२७ वर्षे थयो होय तो ते वखते बुद्धदेवनी उमर फक्त ३० वर्षनी हशे. परंतु ए सौ कोई माने छे के छत्रीस वर्षनी उम्मर पहेलां तो गौतम बुद्धने बोधिज्ञान पण थयुं न होतुं, तो पछी तेमना

---

*आ लेख चारेक वर्ष उपर लखायो हतो. अने एक पत्रमां ते वखते प्रकट करायो हतो. हवे आपण विषयना बधा लेखो, आ पत्रमां क्रमथी प्रकट करवानो विचार राख्यो छे तेथी आ लेख अहीं प्रकट करवो आवश्यक मान्यो छे.—संपादक.

[१] ए लेखनो अनुवाद हव पछीना अंकोमां आपवामां आवशे.—संपादक.

अनुयायिओ तो थाय ज क्यां थी. तेथी हवे सिद्ध छे के महावीर देवनुं निर्वाण जो उक्त कथन प्रमाणे थयुं होय, तो पछी तेमनी, बुद्धदेवनी साथे समकालीनता शी रीते मळी शके छे ? वळी एम पण कहेवामां आवे छे के महावीर अने बुद्धदेव बने अजातशत्रु (श्रेणिकना पुत्र) ना राज्यकाळमां मौजुद हता. ऐतिहासिक उल्लेखो प्रमाणे अजातशत्रु बुद्धदेवना मृत्यु पूर्वे ८ वर्षे राजगादीए बेठो हतो अने तेणे एकंदर ३२ वर्ष सुधी राज्य कर्युं. आ रीते उक्त जैन गाथाओ प्रमाणे जो महावीर निर्वाण मानवामां आवे तो आ हकीकत पण बंध बेसती आवे तेम नथी. तेथी या तो महावीरनिर्वाणनो समय उक्त समयथी आ तरफ आणवो जोईए अने या तो बुद्धदेवनो निर्वाणसमय पाछळ हठाववो जोईए. परंतु बुद्धदेवनो निर्वाणसमय तो चोक्कस गणतरीए गणेलो छे अने महावीरनो समय मात्र अनुमानथी कल्पी लीधेलो छे, माटे तेने ६० वर्ष आ तरफ खसेडवानी जरुरत छे. आनी पुष्टिमां हेमचन्द्राचार्यना **परिशिष्ट पर्व** नुं कथन पण उपलब्ध छे आ विषयमां, आवी रीते, ए लेखमां ते विद्वाने घणा ज लंबाणथी चर्चा करी छे.

उपर ज जणाव्युं छे के, जैन इतिहासना माटे आ एक घणो ज अगत्यनो सवाल छे अने एना निराकरण उपर ज जैनधर्मना साहित्य अने इतिहासनी वास्तविक अने क्रमिक रचना रची शकाय छे; अने तेटला माटे, जैन विद्वानोए, ए बाबत खास प्रयत्न करवानी जरूरत हती; परंतु जोईए छीए के संख्याबंध जैन आचार्यमांथी कोई-ए पण, जेमनी गादीना पोते वारस थवा जाय छे तेमनी, खरी तारीख खोळी काढवा माटे जराए प्रयत्न कर्यो नथी. प्रयत्न करवानी वात तो दूर रही, परन्तु दुनियाना बीजा विद्वानो ए विषयमां शी वड-मथळ करी रह्या छे तेनी खबर सुधां मेळववानी दरकार करता नथी !

अस्तु. श्रीयुत काशीप्रसादजी जायसवाल एम्. ए. (आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी) बारिस्टर-एट-लॉ करीने पटनामां एक विद्वान् गृहस्थ छे. हिंदुस्तानना नामी ऐतिहासिकोमांना तेओ एक छे. तेमणे भारतना प्राचीन इतिहाससम्बंधी घणो ऊहापोह कर्यो छे अने केटलाक पाश्चात्योना भ्रांत विचारोनो घणी ज उत्तमतापूर्वक संस्कार कर्यो छे; अने अनेक ऐतिहासिक गुंचवाडाओ उकेल्या छे. प्रसंगोपातथी महावीरना निर्वाण समयनो पण तेमणे केटलेक ठेकाणे उल्लेख करेलो छे, अने उपर जणाव्या प्रमाणे ए गुंचवायला कोकडाने पण खोलवानो प्रशसनीय प्रयास करेलो छे. बिहार अने ओरीसा रीसर्च सोसायटीना सने १९१५ ना सप्टेंबर मासना जर्नलमां **शैशुनाक अने मौर्य काल गणना** (Saisunaka and Mauyra Chronology) विषये तेमणे एक घणो ज महत्त्वनो निबंध लख्यो छे. तेमां अंते बुद्ध देव अने महावीर देवना निर्वाण-समयनुं पण घणी ज विद्वत्तापूर्वक विवेचन कर्युं छे, अने जैनोनी प्राचीन गाथाओनी गणतरीने ज सप्रमाण सिद्ध करी, जे विद्वानो उपर जणाव्या प्रमाणे ६० वर्षनी न्यूनता आणता हता तेमनी दलीलो तोडा पाडवानुं प्रयत्न कर्युं छे; तथा जैन, बौद्ध अने हिंदुओना ग्रंथोना प्रामाणिक आधारोने लईने तेमणे पोतानां कथनने पुष्ट बनाव्युं छे.

हालमां ए विद्वाने एक अत्यंत महत्त्वना ऐतिहासिक लेखनुं संशोधन करी उक्त जर्नलनां छेल्ला अंकमां प्रकट कर्यो छे. ए लेख ते सुप्रसिद्ध सम्राट् खारवेलनो उदयगिरिनी हाथीगुहावाळो लेख छे, जे में. डॉ. भगवानलालजीनी संशोधित करेली आवृत्ति प्रमाणे गये वर्षे गुजरातीमां बहार पाड्यो छे. डॉ. भगवानलालना संशोधनमां थोडा वर्ष उपर डॉ. फलीट विगेरे पुरातत्त्वज्ञोए शंका करी हती, अने कोई अधिकारी विद्वानना हाथे ए लेखनुं पुनः अवलोकन थवानी जरूर जणावी हती. ते कार्य श्रीयुत जायसवाल महाशये पूर्ण कर्युं छे अने ए लेखनी घणी ज सूक्ष्म बुद्धिथी छानवीन करी तेनी उत्तम आवृत्ति प्रसिद्धिमां मूकी घणा नवा तत्त्वोनुं उद्घाटन कर्युं छे. ए लेखना एक बे-भागा संबंधमां मारी साथे पण तेमणे केटलोक रसभर्यो पत्रव्यवहार चलाव्यो हतो. तेमना ए लेख-संशोधनथी जैनधर्मना तत्कालीन इतिहास उपर डॉ. भगवानलाल करतां पण वधारे प्रकाश पड्यो छे अने समुच्चय भारतीय

इतिहासनी महात्तामां पण एक विशेष उमेरो थयो छे. ए निबंधमां पण तेमणे महावीर–निर्वाण संबंधी सूचन कर्युं छे अने पोताना उपर्युक्त काळनिर्णयवाळा लेखमां करेला कथनने वधारे पुष्ट बनाव्युं छे. तेमनी आ बधी दलीलो पुरातत्त्वज्ञो मान्य करता जाय छे अने अर्लि हिस्टरी ओफ इन्डिआना लेखक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मि. वीन्सेंट स्मीथे पण हवे तेमना कथनने सादर स्वीकार्युं छे, एम श्रीयुत जायसवाल मने पोताना तारीख ९।७।१८ ना पत्रमां, खास रीते नीचे प्रमाणे जणावे छे.

" आप को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि V. Smith ने यह अब मान लिया कि बुद्धदेव तथा महावीरस्वामी का निर्वाण–काल जैसा हम कहते हैं वही ठीक है। अर्थात् जैसा कि उन के अनुयायी मानते हैं। यह खारवेल के लेख से सिद्ध हो गया। मि. विंसेंट स्मीथने पत्रद्वारा यह मुझे लिखा है।"

आवी रीते भारतीय इतिहासना एक घणा ज महत्त्वना प्रश्ननो घणा युगोनी घडमथल पछी एक भारतीय विद्वानना हाथे ज निर्णय थतो जोई दरेक भारतीयने प्रसन्न थवा जेवुं छे, अने खास करीने जैन समाजे तो पोतानी कृतज्ञता प्रकट करवा माटे श्रीयुत जायसवालने हार्दिक अभिनंदन आपवुं जोईए.

कालगणना विषयमां हमेशां कृपणता बतावनारा पाश्चात्य पुरातत्त्वज्ञोए महावीर–निर्वाणने ६० वर्ष आ तरफ खेंचीने पुराणा जैन ग्रंथोमां आपेली प्राचीन गाथाओने असत्य ठेरवा हती, परतु श्रीयुत जायसवाल ए ग्रंथकारोना पक्षमां वगर फीए बेरीस्टरी करवा तैयार थया अने अनाथ अने मूक एवा ए जीर्ण ग्रंथोना कथनने पोताना प्रतिभाबळे सत्य ठरावी विचारक जगत् आगळ तेमनो प्रतिष्ठाने पूर्ववत् स्थिर करी आपी छे.

श्रीयुत जायसवालना मत प्रमाणे महावीर स्वामीनुं निर्वाण वि. सं. पूर्वे ४७० वर्षे नहीं परंतु ४८८ वर्षे थयुं हतुं. कारण के पट्टावलिओ विगेरेमां जे ४७० वर्ष लख्या छे ते विक्रमना राज्यारोहण सुधीनां नथी; परंतु जन्म सुधीनां छे. विक्रम पोताना जन्मथी १८ मे वर्षे गादिए बेठो हतो, अने त्यारथी तेनो संवत् चाल्यो छे, तेथी विक्रम सं. नी शरूआत पहेलां ४८८ वर्ष उपर महावीर–निर्वाण थयुं हतुं ए सिद्ध थाय छे. आ गणत्री प्रमाणे आजे जे आपणे महावीर–निर्वाण संवत् २४४८ मानीए छीए तेना बदले २४६६ (२४४८+१८) मानवुं जोईए. केटलीक जूनी पट्टावलिओमांथी पण आ कथनने पुरावो मळे छे.

श्रीयुत जायसवाले आ संबंधमां छूटा छवाया घणा उल्लेखो कर्या छे, परंतु सघळा पुरावाओनो संक्षेपमां एकत्र संग्रह अने तेना उपरथी निकळतो सार; तेमणे उपर जणाव्या प्रमाणे बीहार अने ओरीसा रीसर्च सोसायटीना जर्नलना प्रथम भागना प्रथम अंकमां (The Journal of the Bihar and Orissa Researeh Society. Vol, 1. Part 1.) शैशुनाक अने मौर्यकालगणना तथा बुद्धनिर्वाणनी तारीख (Saisunaka and Maurya Chronology and the Date of the Buddha's Nirvana) नामना लेखनी अंते, खास महावीरनिर्वाण अने जैन कालगणना संबंधी एक स्वतंत्र प्रकरण उमेरीने तेमां आप्यो छे. जैन ग्रंथोमां वारंवार मळी आवता श्रेणिकादि शिशुनाकवंशीय अने चन्द्रगुप्तादि मौर्यवंशीय राजाओना वास्तविक राज्यकाल जाणवानी जिज्ञासावाला दरेक जैन विद्वाने ए समग्र निबंध खास मननपूर्वक वांचवो जोईए. जिज्ञासु वांचकोनी खातर तेम ज विद्वान् मनाता जैन मुनिवरोना ज्ञाननी खातर, ए लेखमांनो अंतिम भाग जे महावीर–निर्वाण संबंधी लखाएलो छे तेनो अनुवाद अत्र आपवामां आवे छे. जैन विद्वानो तरफथी आ विषयमां वधारे ऊहापोह थवानी आशा तो राखी शकाय तेम छे ज नहीं परंतु जो तेओ एकवार मननपूर्वक आ बधुं समग्र वांची जय, जेटली पण प्रवृत्ति करशे तो आ प्रयत्न माटे लेवायलो श्रम आशा आपनार निवडशे, तथास्तु.]

निर्वाण तिथि.

चंद्रगुप्त राजाना राज्यारोहण विषे जैनो तरफथी नीचे प्रमाणेनी हकीकत मळे छे.—जे वर्षमां नवमो नंद (शकटालनो स्वामी) मृत्यु पाम्यो अने चंद्रगुप्त गादीए बेठो ते ज वर्षमां स्थूलभद्राचार्ये*काल कर्यो हतो.[1] आ बनाव महावीरना निर्वाण पछी २१९ वर्षे बन्यो हतो.[2] हवे जो एम मानिए के महावीर चंद्रगुप्तना तख्तनशीन थया पहेलां २१९ वर्षे निर्वाण पाम्या, तो पछी महावीरना निर्वाण पछी ५३ के ६० वर्ष पछी बुद्ध निर्वाण पाम्या, एम मानवुं योग्य गणाय नहिं कारण के तेओ बंने समकालीन हता अने तेथी तेमनुं मृत्यु पण थोडा ज अंतरे थयुं होय एम मानवुं सकारण छे.

निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र (महावीर) ज्यारे पावामां निर्वाण पाम्या त्यारे बुद्ध जीवता हता एवा भावार्थ वाळो उल्लेख जे अंगुत्तर निकायमांथी मळी आवे छे ते पूर्ण मानवा योग्य छे.[3] अने जे पुरावाओना विषयमां अत्रे ऊहापोह कर्यो छे, तेमांथी पण एज निकळा आवे छे, के महावीर चंद्रगुप्तना राज्यारोहण पूर्वे २१९ वर्षे निर्वाण पाम्या अने बुद्ध २१८ वर्षे. आ प्रमाणे चंद्रगुप्त ३२० A. M. J. (महावीर जिन पछी) (चालु) अने २१९ A. B. (= बुद्धदेव पछी) (चालु) गादिये बेठो; अने बुद्ध, महावीरना पछी एक वर्षे निर्वाण पाम्या.[4] जैनोनी कालगणन प्रमाणे चंद्रगुप्त ई. स. पूर्वे ३२६ या ३२५ ना नव्हेंबर मासमां गादिए बेठो.[5]

हवे चंद्रगुप्तना राज्यारोहण पहेलानुं २१८ मुं वर्ष ते (३२६+२१८) ई. स. पूर्वेनुं ५४४ मुं वर्ष थाय, एटले के बुद्ध निर्वाणनुं वर्ष पण उपर जणाव्या प्रमाणे, ई. स. पूर्वेनुं ५४४ मुं ज थयुं.[6] अने सीलोन, बर्मा अने सीआमनी दंतकथाओ प्रमाणे पण बुद्धनिर्वाणनुं ए ज वर्ष आवे छे, जे जाणी आपणने सानुकूळ आश्चर्य थशे.

जैन कालगणना (Jaina Chronology)

डॉ० होर्नल सरस्वती गच्छनी पट्टावलीनी १८ मी गाथाना आधारे विक्रम संवत्नी शरुआत माटे ४७० पछी बीजां १६ वर्ष वधारे ले छे. गाथानो अर्थ अथवा तो भावार्थ एवो छे के—विक्रम सोळ वर्षनी उमर सुधी

---

* जैन ग्रंथो प्रमाणे आ कथन बिल्कुल बंधबेसतुं नथी.
— संपादक जै. सा. सं.

१ तपगच्छनी पटावली I. A. ११–२५१ (इन्डियन एन्टीक्वेरी, पुस्तक ११. पृष्ठ २५१).

२ खरतगच्छनी पटावली. I. A.–११. २४६.

३ ओलडेनबुर्ग, Z D M G ३४,७४९.

४ बराबर चोक्स बोलिए तो बुद्ध महावीर पछी एक वर्ष अने आठ दिवसे निर्वाण पाम्या कारण के महावीर कार्तिक वदी १५ ने दिवसे निर्वाण पाम्या (कल्पसूत्र, प्रकरण १२३) अने बुद्ध कार्तिक शुदी ८ ने दिवसे (फ्लीट, J R A S. 1909, 22)

५ ॲलेक्झेन्डर ज्यारे पंजाबमांथी पाछो फर्यो (ई. स. पूर्वे ३२६ ऑक्टोबर) त्यारे नन्दराजा राज्य करतो हतो. आ तारीखमां अने चंद्रगुप्तनी राज्यारोहणनी तारीखमां परस्पर कांई विरोध नथी. नन्दना सैन्य सामेथी ॲलेकझेंडरनो पाछा फरवानो अने पंजाबमां मेसेडोनियन लष्करनी हयातीनो पण चंद्रगुप्ते लाभ लीधो. पंजाबना लोकोए चंद्रगुप्तने मगधनुं राज्य मेळववामां मदद करी हती. अने ते एवा इरादाथी करी हशे के मगधनुं महान् सैन्य पछी तेमना स्वतंत्र थवाना आशाने पुरी करे; एटले के चंद्रगुप्त पोतानो विजय थया पछी ते सैन्यनो उपयोग तेमना माटे करे. ॲलेक्झेन्डर कार्मिनियामां हतो एटलामां ज पंजाबना सुबा फिलिप्पोसनुं हिंदिओना हाथे खून थयुं; अने आ काम चंद्रगुप्तनी उश्केरणीथी थयुं होय तेम लागे छे. सरखावो, मुद्राराक्षसनी अंदर पर्वतकना मृत्युनी हकीकत. पर्वतक=परवओ=पिरवओ=फिलिप्पोस) (मुद्राराक्षस विषयक म्हारो निबंध, I. A. आक्टोबर, १९१३.)

६ J. R. A. S. (जर्नल ऑफ धी रॉयल ओशियाटिक सोसायटि) 1909, 2.

बुद्धदेवना निर्वाणनी तारीख उपर तक्षशीलानो इतिहास एक रीते अमुक प्रकारनो प्रकाश पाडे छे. ज्यारे बुद्ध उपदेश आपता हता त्यारे तक्षशिला ए एक स्वतंत्र संस्थाननी राजधानी हती, (BI, P. 28.) अने हिन्दी विद्यानुं एक महान् केन्द्र हतुं. अशोकना अभिषेकनुं वर्ष बु० नि० पछीनुं २१८ मुं गणी तेना उपरथी गणना करतां बुद्धनो उपदेश समय (४५ वर्ष) ई. स. पूर्वे ५२८ थी ४८३ सुधीमां आवी जाय छे. परन्तु तक्षशिला लगभग ई. स. पूर्वे ५०५ वर्षना अरसामां हिन्दु राजधानी तरीके रही न हती. कारण के ते ज वर्षे अथवा तो तेनी आसपासमां ज ते हेरीअसना हाथमां चाली गई हती. बुद्धना छेल्ला वीस वर्षना अरसामां तक्षशिला जो पार्शीअनोना ताबे रही होत तो भाग्ये ज कोई तेने एक स्वतंत्र राजधानी तरीके अथवा तो एक महत्त्वनुं स्थान तरीके गणी शकत.

गादिए बेठो हतो नहीं. एटले के १७ मा वर्षे तेनो अभिषेक थयो, एने एनो तात्पर्यार्थ एवो नीकळे छे के ते सत्तरमा वर्षना अंतमां अथवा तो ४८७ A. M. J. ना अंते गादिए बेठो. आनुं परिणाम ए आव्युं के जैनोए विक्रम संवत्ना प्रथम वर्ष (ई० स० पूर्वे ५८–५७) ना अंते अने ४७० A. M. J. पुरा थयानी वच्चे १८ वर्षनुं अंतर मुक्युं.[७]

"ब्राह्मण साम्राज्य" नामना म्हारा लेखमां, म्हें साबीत कर्युं छे के जैनो विक्रम नामथी सातकर्णि बीजाने ओळखे छे (जे नहपानने तावे करनार हतो अने जेना विषे नीचे जुओ–) के जे लगभग ई. स. पूर्वे ५७ वर्षे मृत्यु पाम्यो; अथवा तो तेनो पुत्र पुलुमायि के जे तेना पछी ते ज वर्षे गादिये बेठो. अने म्हारा पोताना मत प्रमाणे तो हवे पुलुमायि ए ज जैनोनो खरो विक्रम छे. (कारण के–लोकमां तेनुं बीजुं अने घणुं करीने वधारे प्रचलित नाम 'विलवय' हतुं (कुरु=राजा) [सरखावो, शिक्कानुं नाम विविलक (A–) विलव, (I–) पुराणोनो विलक, W. and H, 196; V. P. 464 n.] आज विलव (विडव) अथवा पिलव ने, क्र नो ल (ड) थई गएलो समजी जैनोए तेनो विक्रम करी न्हांख्यो छे.[८] मालवाना कार्तिकादि (कृतेषु) संवतना पहेला वर्षनो अने विलवना राज्यारोहणनो समय एक होवाथी, अथवा घणुं करीने तेओनो परस्पर समानकाल होवाथी, ते बन्ने एक ज होय, एम मानी लेवामां आव्युं छे.

प्रद्योतोना समयथी लई शकराज्य[९] अने विक्रम संवत् सुधीनी जैन कालगणना नीचे प्रमाणे छे.

(अ) पालक (जेनुं प्रद्योत पछी गादिये आववानुं वर्णन पुराणोमांथी पण मळी आवे छे.) जे रात्रिए महावीर निर्वाण पाम्या ते रात्रिए (अर्थात् दिवसे) अवंतीनी गादिये बेठो.

(ब) तेनां ६० वर्षो पछी नन्दोना राज्यने एक अगत्यनो समय गणवामां आव्यो छे. अने तेओना राज्यना एकंदर १५५ वर्ष गणेलां छे. पुराणोना हिसाबे, नंदवर्धनथी ते छेल्ला नन्द सुधी १२३ वर्ष थाय छे अने तेटला काल सुधी ए लोकोनुं राज्य चाल्युं. ३२ वर्षनो जे वधारो छे ते आपणने उदायीना राज्यना प्रथम अथवा बीजा वर्ष आगळ लावी मुके छे. एटले के पालकवंशनो लक्ष्य खेंचवा लायक बीजो एक अगत्यनो समय, उदायीना राज्यारोहणथी शरु थाय छे. पण पुराणो प्रमाणे अजातशत्रुना छठ्ठा वर्षनी (पालकना राज्यारोहण) अने उदायीना अभिषेकनी वच्चे आपणे ६४ वर्ष मूकी ए छीए, ज्यारे जैन कालगणना प्रमाणे पालक (एटले पालकवंश) ना ६० ज वर्ष छे.[१०] आ रीते चंद्रगुप्तना समयमां पुनः ४ वर्षनो फरक आवे छे, अने तेथी ते महावीर पछी २१५ अथवा २१९ वर्षे गादिये बेठो एम जुदी जुदी तारीखो आपवामां आवे छे. आपणे आगळ जोईशुं तेम, आ तफावत शुंग समयनी शरूआत सुधी बराबर करवामां आव्यो न हतो अने तेथी ते पाछळथी करवामां आव्यो हशे.

(क) मौर्योना राज्यकालना वर्षसमूहना बे विभागो करवामां आव्या छे १०८ अने ३०. (एकंदर १३८ वर्ष अने पुराणो प्रमाणे १३७) तेमां १०८ वर्ष मौर्यवंशना छे अने ३० वर्ष पुष्यमित्रना छे. बीजा शब्दोमां बोलीए तो पुष्यमित्रनुं पहेलुं वर्ष ते ज तेना छेल्ला वर्ष

---

७. I. A. 20, Page 347, सरस्वती गच्छनी पटावली, डॉ० होर्नेलनी ३६० मा पृष्ठ उपरनी टीका. महावीरना निर्वाणथी ते शक सुधी ४७० वर्ष (सरखावो, I. A. 2, 363.) अने पछी विक्रम संवत्नी शरूआत सुधी १८ वर्ष "वीरात् ४९२ विक्रम जन्मान्त वर्ष २२—राज्यान्त वर्ष ४" एटले के ४९२ A. M. J =४ विक्रम संवत्. (पुरा थयां)

८ सरखावो, चांडना (हिन्दी) चंक्रमण (संस्कृत)
सड (हिं०) सकृत् (सं०)
अंड (हिं०) अक्र(सं)
अड्डाव (हिं०) अक्रम (सं)
बिलम (हिं. धीमे चालवुं)= विक्रम.

९ I. A, II, 361; XX, 341.

१० अजातशत्रु २९
दरशक ३५
———
६४

तरीके जणाय छे. अने बलमित्र—भानुमित्र (बलमित्र वंशनो भानुमित्र ?) ना ६० गणी समय बराबर कर्यो छे. आ गणना आपणने महावीर पछी ४१३ वर्ष सुधी लई आवे छे. ४० वर्षनो बीजो आंकडो नहपाणना राज्यकाल माटे आप्यो छे.[11] छेल्ला अंकोमां १३ वर्ष गर्दभिल्लना राज्यना छे अने ४ शकराज्यना छे. आवी रीते एकंदर संख्या ४७० थाय छे. अहिंआ गाथाओनी गणना बंध थाय छे. ते प्रथम शकोना पराजयथी समाप्ति पामे छे.[12] विक्रमसंवत् अने आ गणनानो (४७० महावीर पछी) परस्पर संबंध मेळववा, जैनो उपर जणाव्या प्रमाणे वच्चे १८ वर्षनो आंतरो मुके छे.[13]

गाथा, महावीरना निर्वाणनुं वर्ष (१७+५८+४७०=) ई० स० पूर्वे ५४५ मुं आपे छे, के जेने जैनो, महावीर पछी ४७० वर्षे, विक्रम जन्म अने तेना १८ मां वर्षे विक्रमराज्य प्रारंभ; एम जणावे छे. महावीर कार्तिक वदी १५ ना दिवसे निर्वाण पाम्या अने विक्रमना कार्तिकादी संवतनी शुरुआत थई ते वच्चे ४७० अने १८ वर्ष पूरेपूरां पसार थई गया हतां. हवे आ प्रमाणे चंद्रगुप्तना राज्यारोहणनुं प्रथम वर्ष, के जे महावीर पछी २१९ वर्षे आवे छे, ते ई० स० पूर्वे ३२६ ना नवेंबरना कोईक दिवसनी अने ई० स० पूर्वे ३२५ ना आक्टोम्बर—नवेम्बरना अंतनी वच्चे आवे. जैनोना अहेवाल प्रमाणेनी आ तारीख, अशोकना शिलालेखो प्रमाणेनी तवारीख अने तेनी ग्रीसना राजाओनी समकालीनता साथे बराबर मळती आवे छे.[14]

हेमचंद्राचार्यनी भूल.

हेमचंद्राचार्ये प्रद्योतोना जे ६० वर्ष मुकी दीधा छे, ते तेमनी एक म्होटी भूल छे अने ते स्पष्ट ज छे. कारण के जो आपणे शुरुआतना ते ६० वर्ष मुकी दईए तो, चंद्रगुप्त, स्थुलभद्र, सुभद्र अने भद्रबाहुनी समकालीनतामां विरोध आवे छे. प्रो० जेकोबीए मध्यकालीन हेमचंद्रना आ भांग्यातुट्या अहेवालने पोतानी गणनामां पाया तरीके लीधो छे. अने आम करवामां, पाली—लेखोमां आपेला अशोकना अभिषेकना भूलभरेला समयनी अने तेना उपर बांधेली निर्वाणकाल—गणनानी तेमना उपर वधारे असर थई छे.

पाली लेखोमां आपेला समय उपर बांधेली गणतरीए, ए ज लेखोमां लखायली अशोकना अभिषेकनी तारीख अने पूर्वपरंपराथी चालती आवेली तवारीख वच्चे लगभग ६० वर्षनो तफावत मुक्यो छे. हेमचंद्राचार्यनी भूलथी जैन तवारीखमां पण ६० वर्ष छोडी देवामां आवेला होवाथी, आ गणना—एकताए, कालगणना विषे संकुचित दृष्टि राखनारा आधुनिक अभिप्रायने मजबुत बनाव्यो छे. परंतु प्रद्योतनो पुत्र पालक, के जे अजातशत्रुनो समकालीन हतो, ते महावीर निर्वाण पछीना दिवसे अथवा वर्षे गादिये बेठो, ए मानवुं स्वाभाविक अने सप्रमाण छे. हेमचंद्राचार्यना कथन प्रमाणे, महावीर—निर्वाण पछी तुरत ज नंदवंशनुं राज्य शरू थयुं ए मानवुं तद्दन भूलभरेलुं अने अप्रमाणिक छे.

उपसंहार.

उपर जे ऊहापोह करवामां आव्यो छे तेनो सारार्थ ए निकळे छे के—पुराणोनी गणना प्रमाणे बुद्धना निर्वाणनुं संवत्सर ई. स. पूर्वे ५४४ मुं वर्ष आवे छे. आ तारीखने जैन कालगणना पण पुष्टि आपे छे, अने बौद्धग्रंथ दीपवंशनी अंदरथी पण एवी हकीकत मळी आवे छे के जे आ निर्णयने मजबुत करे छे. अने आ बधा उपरथी ए सिद्ध थाय छे के बौद्धधर्मिओनो, तेमना धर्मसंस्थापकना निर्वाण—समय माटे वर्तमानमां जे अभिप्राय छे, ते यथार्थ छे. बीजो सारार्थ ए निकळे छे, के महावीरना निर्वाण

---

११ 'आन्ध्र साम्राज्य' नामना में म्हारा लेखमां नहपाणनी तारीखनी चर्चा करी छे. [अने ते समय १३३-९३ B. C. छे]

१२ आ शकोनो पराजय सातकर्णि बीजाए कर्यो हतो...... ज्योतिषिओनो विक्रमादित्य ते बीजो शातकर्णि छे अने जैनोनो विक्रम ते पुलुमायी छे.

१३ जैन तवारीखने उज्जैननी तवारीख कही शकाय. ते पालकना राज्यथी शरू थई नहपाण सुधी आवे छे अने पछी मालव संवत्थी प्रारंभ थाय छे.

१४ जुओ, अशोकना अभिषेक उपर म्हारो लेख. J.A.S.B. आगस्ट—सप्टेंबर १९१२.

समय विषे जैनग्रंथोमां आपेला अहेवालने पुराणोमांथी टेको मळे छे.[१५]

वास्तविक रीते सीलोनना पाली–लेखोने पुराणनी गणना साथे विरोध नथी. ते तेने पूर्ण करे छे अने पुष्टि आपे छे तथा पोते तेनाथी पूर्ण थाय छे अन पुष्टि मेळवे छे. नंदोना विषयनो घोटाळो, के जेना परिणामे, सैकाओ सुधी बीजा घोटाळाओ उद्‌भव्या हता ते दूर थवाथी जैन कालगणनानी खरी किंमत जणाई आवे छे.[१६]

१५ डॉ. होर्नलिए जैनकालगणनामांनो घणो घोटाळो दूर कर्यो छे. [जुओ, इंडिअन एंटीक्वेरी, पु. २०, पृष्ठ १३०]

१६ संप्रति अने सुहस्ती विषे जे तारीख आपेली छे ते भूल भरेली छे. बधी प्रतोना संप्रतिनी तारीख विषे एक मत नथी, [इ. ए. पु. ११ पृ. २४६] तेओ २०२ A.M.J. अने २३५ A.M.J नी वच्चे हता. [तेज ठेकाणे जुओ.] ज्यारे चंद्रगुप्तनी तारीख तरीके २१९ थी २४३ A.M.J. नां वर्षो गणी लीधा छे. पुराणोना आधारे करेली गणना प्रमाणे २३५ A.M.J. ना बदले तेनी खरी तारीख [इ. स. पूर्वे २२०, ५४५+२२० =] ३२५ A.M.J छे. [जुओ, एपेंडीक्स, C.] श्वेतांबर जैनो, सुहस्ती के, जे संप्रतिना समकालीन हता, तेमनी विद्यमानताना वर्ष तरीके २६५ A.M.J. वर्षने गणे छे. पण श्वेतांबर जैनो पालकना शरूआतना ५० अथवा वधारे–खरी रीते ५४–वर्षो [जुओ, विभाग ३४, ब.] मुकी दे छे. तेथी सुहस्तीनी खरी तारीख २६५+६०+४ =३२९ A.M.J. छे. आ तेमना स्वर्गवासनी तारीख छे. आ प्रमाणे सुहस्ती, संप्रतिना गादीनशीन थया पछी चार वर्षे देवलोकपाम्या.

चंद्रगुप्त अने सुहस्तीना निर्वाणनी वच्चे श्वेतांबर जैनो १०९ अथवा ११० वर्ष मुके छे. [डॉ. जेकोबीनी परिशिष्टपर्वनी प्रस्तावना पृ. ५] आ हकीगत पुराणोक्त कथन साथे मळती आवे छे. [जुओ एपेंडीक्स सी प्रकरण २५—२५] २४ वर्ष चंद्रगुप्त, २५ वर्ष बिंदुसार, ४० वर्ष अशोक, ८ वर्ष कुनाल, ८ दशरथ, ४ संप्रतीना राज्यना = एकंदर १०९ सरखावो एपेंडीक्स बी. ३.

हेमचंद्र अने बीजाओना लेखो प्रमाणे जैन राजपरंपरा नीचे प्रमाणे छे.

A. श्रेणिक [बिंबीसार].
B. कुणिक [अजातशत्रु] [अवंतीमां पालक].
C. उदायी.
D. नंद [नंद. वर्धन] अने, बीजा नंदो.
E. चंद्रगुप्त.
F. बिंदुसार, H. [कुनाल].
G. अशोकश्री. I. संप्रति.

आ त्रणे संप्रदायोना कथनोमां जो के केटलोक परस्पर विरोधाभास देखाय छे परन्तु भावार्थ एक ज छे. आ त्रणे आस्तिक–नास्तिक पंथो खरेखरा इतिहासने अनुसर्या छे, अने तेनुं रक्षण कर्युं छे. बे हजार वर्ष जेटला लांबा समयमां जे कांई मूलो पेसी गई छे ते आवी रीते थोडी मेहनते अने थोडुं ध्यान आपे दूर करी शकाय एवी छे.

*
* *

[आ लेखना सूक्ष्म अवलोकनथी समजाशे के श्रीयुत जायसवाले जैन दंतकथा अने तेनी पुराणी गाथाओनी बौद्ध अने हिंदुपुराण ग्रंथोनी साथे केवी उत्तम रीते संबद्ध ठरावी छे, अने आज लगभग बे हजार वर्ष जेटला दीर्घकाळ सुधी, भारतना इतिहास युगना आदिभूत उल्लेखोमां, जे परस्पर विरोध अने असंगतता पुरातत्वज्ञोने जणाती हती तेनो केवी उत्तम पद्धतिए निकाल आप्यो छे. अलबत्त श्रीयुत जायसवालना विचारोनो सर्वांशे स्वीकार हजी सुधी विद्‌वानो तरफथी थयो न होय,के तेमां कांई कांई अंशे मतभेद होय तो ते स्वाभाविक छे; परंतु तेमणे भारतना प्राचीन इतिहासना निरीक्षणमुं एक जुदुं ज दृष्टिबिन्दु विचारक जगत् आगळ उपस्थित करी, इतिहासना गुंचाएला कोकडानुं नवी ज पद्धतिए पृथक्करण करवानुं एक अत्युत्तम साधन देखाडी आप्युं छे, तेमां कोईने संशय नथी. अने जैन काळगणना तथा महावीर–निर्वाण समयना विषयना तेमना विचारो म्हने तो घणे अंशे ग्राह्य जणाय छे. तो पण जो कोई विद्वाननां मनमां आ संबंधी मतभिन्नता जणाती होय, तो तेणे अवश्य आवी रीते जाहेर ऊहापोह करीने, आपणा श्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवना निर्वाण समयनो सदाने माटे निर्णय करी नाखवो जोईए. ज्यांसुधी आ रीते, कोई प्रमाणिकपणे श्रीयुत जायसवालना निर्णयमां शंका उपस्थित न करी शके अने आ विचारमां सप्रमाण मतभेद न जणाबी शके त्यां सुधी हवे

आपणे ए ज निर्णयने कबूल करवो जोईए अने वहे पछी वीर-निर्वाण संवत् ए ज गणतरीए लखवानो व्यवहार अने प्रचार करवो जोईए. आवता नवा वर्षना छपाता जैन पंचांगोमां वीर संवत् २४४५ ना बदले २४६३ लखवां जोईए. आशा छे के जैन पंचांग प्रकाशको अने जैन पत्र संपादको आ बाबत उपर लक्ष्य आपशे.

परिशिष्ट

[उपर जे लखवामां आव्युं छे, ते शरुआतमां जणाव्या प्रमाणे श्रीयुत जायसवालना एक इंग्रेजी विस्तृत निबंधना थोडाक भागना भाषांतररूपे छे. ए निबंधमां तेमणे जैन काळगणना संबंधी विस्तृत विवेचन करेलुं छे, अने ते आ लेख ध्यानपूर्वक वांची जवाथी तेनो कांईक ख्याल आवी जशे. आ इंग्रेजी निबंध लख्या पहेलां ४-५ वर्ष अगाउ ज्यारे श्रीयुत जायसवाल पाटलीपुत्र नामना हिन्दी पत्रना संपादक हता त्यारे ते पत्रमां पण तेमणे एक न्हानो सरखो लेख जैन निर्वाण संवत् उपर हिन्दीमां लख्यो हतो.ए लेख पण आ विषयने ज लगतो छे अने संक्षिप्तमां लखायेलो होई सहज समजवा जेवो छे तेथी ते पण, तेमनी ज भाषामां अत्र आपी देवमां आवे छे.]

जैन निर्वाण--संवत्

जैनों के यहां कोई २५०० वर्षकी संवत्-गणना का हिसाब हिन्दुओंभर में सब से अच्छा है । उस से विदित होता है कि पुराने समयमें ऐतिहासिक परिपाटी की वर्षगणना यहां थी । और जगह लुप्त और नष्ट हो गई, केवल जैनोमें बच रही । जैनों की गणना के आधार पर हमने पौराणिक और ऐतिहासिक बहुत सी घटनाओं को जो बुद्ध और महावीर के समय से इधर की है समयबद्ध किया और देखा कि उन का ठीक मिलान जानी हुई गणना से मिल जाता है । कई एक ऐतिहासिक बातों का पत्ता जैनों के ऐतिहासिक लेख पट्टावलियो में ही मिलता है । जैसे नहपान का गुजरात में राज्य करना उस के सिक्कों और शिला-लेखों से सिद्ध है । इस का जिक्र पुराणों में नहीं है । पर एक पट्टावली की गाथा में जिसमें महावीरस्वामी और विक्रमसंवत् के बीच का अन्तर दिया हुआ है नहपाण का नाम हमने पाया । वह 'नहवाण' के रूप में है । जैनों की पुरानी गणना में जो असंबद्धता योरपीय विद्वानों द्वारा समझी जाती थी वह हमने देखा कि वस्तुतः नहीं है ।

महावीर के निर्वाण और गर्दभिल्ल तक ४७० वर्षका अन्तर पुरानी गाथा में कहा हुआ है जिसे दिगंबर और श्वेतांबर दोनों दलवाले मानते हैं । यह याद रखने की बात है कि बुद्ध और महावीर दोनों एक ही समय में हुए । बौद्धों के सूत्रों में तथागत का निर्ग्रन्थ नातपुत्र के पास जाना लिखा है । और यह भी लिखा है कि जब वे शाक्यभूमि की ओर जा रहे थे तब देखा कि पावा में नातपुत्र का शरीरान्त हो गया है । जैनों के 'सरस्वती गच्छ' की पट्टावली मे विक्रमसंवत् और विक्रमजन्म में १८ वर्ष का अन्तर माना है । यथा—"वीरात् ४९२ विक्रम जन्मान्तर वर्ष २२, राज्यान्त वर्ष ४" विक्रम विषय की गाथा की भी यही ध्वनि है कि वह १७ वें या १८ वें वर्ष में सिंहासन पर बैठे । इस से सिद्ध है कि ४७० वर्ष जो जैन-निर्वाण और गर्दभिल्ल राजा के राज्यान्त तक माने जाते हैं, वे विक्रम के जन्म तक हुए—(४९२=२२+४७०) अतः विक्रमजन्म (४७० म० नि०) में १८ और जोडने से निर्वाण का वर्ष विक्रमीय संवत् की गणना में निकलेगा अर्थात् (४७०+१८) ४८८ वर्ष विक्रम संवत् से पूर्व अर्हन्त महावीर का निर्वाण हुआ । और विक्रम संवत् के अब तक १९७१ वर्ष बीत गए हैं, अतः ४८८ वि० पू० १९७१=२४५९ वर्ष आजसे पहले जैन-निर्वाण हुआ । पर "दिगंबर जैन" तथा अन्य. जैन पत्रों पर वि० सं० २४४१ देख पडता है । इस का समाधान यदि कोई जैन सज्जन करें तो अनुग्रह होगा । १८ वर्ष का फर्क गर्दभिल्ल और विक्रम संवत् के बीच गणना छोड देने से उत्पन्न हुआ मालूम देता है । बौद्ध लोग

लंका, श्याम, बर्मा आदि स्थानो में बुद्ध निर्वाण के आज २४५८ वर्ष बीते मानते हैं। सो यहां मिलान खा गया कि महावीर, बुद्ध के पहले निर्वाण-प्राप्त हुए; नहीं तो बौद्ध गणना और 'दिगंबर जैन' गणना से अर्हन्त का अन्त बुद्ध-निर्वाणसे १६-१७ वर्ष पहेले सिद्ध होगा. जो पुराने सूत्रों की गवाही के विरुद्ध पडेगा।

विजयसेन सूरिने आगराना संघे मोकलेलो सचित्र सांवत्सरिक पत्र.

आ साथे जे एक चित्र आपेलुं छे, ते तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य विजयसेनसूरि उपर संवत् १६६७ मां आगराना जैन संघे मोकलेला एक सांवत्सरिक-क्षमापना पत्रनुं छे. सांवत्सरिक-क्षमापना पत्र एटले शुं ए जेमे जाणवानी इच्छा होय तेणे अमारुं विज्ञप्ति त्रिवेणी नामनुं हिन्दी पुस्तक वांचवुं. ए पुस्तकमां अमे एवी जातना पत्रो-के जेने विज्ञप्ति पत्र पण कहेवामां आवे छे तेनुं विस्तृत वर्णन करेलुं छे.

आ सचित्र पत्र मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराजना शास्त्र-संग्रहमांथी मळी आव्युं छे. मूळ पत्रना कोईए बे ककडा करी नांख्या छे अने तेमां पहेला ककडाना मथाळानो केटलोक भाग जतो रह्यो छे. आ बन्ने ककडानी भेगी लंबाई एकंदर लगभग १३ फूट जेटली छे अने पहोळाई १३ईंच छे. पहेला अने बीजा ककडानी वच्चेनो कोई चित्र-भाग जतो रह्यो छे के, छे ते बराबर छे, ते जाणवानुं कशुं साधन नथी. चित्रसमूहनी नीचे विज्ञप्ति-लेख छे अने तेणे एकंदर ३-७ जेटली जग्या रोकी छे.

आ सचित्र पत्रनी पूरेपूरी विगत समजवा माटे, एने लगतो थोडोक इतिहास अहिं आपवो आवश्यक छे.

जगद्गुरु श्रीहरिविजय सूरि अने तेमना पट्टधर आचार्य विजयसेनसूरि-बंने जैन इतिहासमां सुप्रसिद्ध छे. हीरविजयसूरिने मुगल सम्राट् अकबर बादशाहे केवी रीते पोतना दरबारमां बोलाव्या हता अने केवी रीते तेमनो आदर-सत्कार कर्यो हतो, ए विगेरेनो इतिहास अमारा कृपारसकोष नामना पुस्तकनी प्रस्तावनामां विस्तार साथे आप्यो छे. हीरविजयसूरि ज्यारे बादशाहनी अनुमति लई पाछा गुजरातमां आव्या त्यारे एक-बे वर्ष पछी बादशाहे विजयसेनसूरिने पण पोतानी पासे [illegible] तेमनुं पण तेवुं सारुं सन्मान कर्युं हतुं. ए बाबतनो पण थोडोक उल्लेख उपर्युक्त पुस्तकमां कर्यो छे. संवत् १६५२ मां हीरविजयसूरि स्वर्गस्थ थया अने तेमनी पाटे विजयसेनसूरि अधिष्ठित थया. ते बनाव पछी १० वर्षे एटले संवत् १६६२ मां अकबर बादशाह गुजरी गयो अने तेनी गादिए जहांगीर आव्यो. अकबर बादशाहे हीरविजयसूरिना उपदेशथी पोताना साम्राज्यमां पर्युषणा विगेरेना दिवसोमां जे जीव हिंसा-निषेधना फरमान आदि बहार पाड्या हता ते जहांगीरे रद कर्या हता एटलुं ज नहीं पण जैनोना धर्म-गुरुओ उपर पोतानी खफगी जाहेर करी अनेक रीते तेमने कनडवानी पण तेणे शुरुआत करी हती.

विजयसेन सूरिना शिष्य समूहमां महोपाध्याय विवेकहर्ष गणी करीने एक महान् विद्वान् अने अनेक राजदरबारोमां वणुं मान सन्मान पामेला प्रभावशाली यतिवर हता. तेमणे संवत् १६६८ नी सालमां आगरामां चातुर्मास कर्यो अने राजा रामदासादि द्वारा जहांगीर बादशाहने मळीने पोतानी विद्वत्ता अने शांतवृत्तिथी तेने संतुष्ट करी तेनी पासेथी, ते सालमां, तेना राज्यमां पर्युषणाना दिवसोमां जीवाहिंसा न थवा पामे तेवुं फरमान बहार पडाव्युं. महोपाध्यायना आवा सुकृत्यथी आगराना जैन संघने घणो आनंद थयो हतो. तेणे पोताना ए आनंदने गच्छपति आचार्य के, जे ते वखते देवपाटण (काठियावाड) मां चातुर्मास रहेला हता तेमनी अगळ प्रकट करवा माटे उत्तम चित्रकार पासे सुन्दर अने भावदर्शक चित्रपट्ट तैयार करावी सांवत्सरिक क्षमापनाना पत्ररूपे तेमनी उपर मोकल्युं. आ चित्रपट्टमां केवी रीते महोपाध्याय विवेकहर्ष गणी राजा रामदासने साथे लई जहांगीर बादशाह पासे फरमान मेळववानी प्रार्थना करे छे; ते मळया पछी केवी रीते उपा

ध्यायना बे शिष्यो बादशाही नोकरोने साथे लई आगरा शहेरमां जाते ते बाबतनो ढंढेरो पीटता फरे छे; इत्यादि दृश्यो बहु सुन्दररीते चित्रेलां छे. चित्रना एक भागमां विजयसेनसूरिनी व्याख्यानसभा पण चित्रेली छे अने तेमां विवेकहर्ष गणी जाते ए फरमान पत्र लई आचार्यनी सेवामां समर्पित करी रह्यानो देखाव पण काढेलो छे.

आ चित्रमां आलेखेली आकृतियो बहु स्पष्ट अने तादृश छे. दरेक प्रधान आकृति उपर तेनुं नाम पण काळी शाहीथी लखेलुं छे. चित्रनी महत्ता एटला उपरथी ज समजी शकाशे के ते खुद बादशाही चित्रकारनी पींछीथी आलेखायुं छे. ए बाबत ए पत्रमां नीचे प्रमाणे खास उल्लेख करवामां आव्यो छे के—'उस्ताद सालीवाहन बादशाही चित्रकार छे. तेणे ते समये जोयो तेवो ज आमां भाव राक्यो छे.' आथी आ सचित्र-पत्रनी ऐतिहासिक महत्ता केटली विशेष छे ते दरेक विद्वान् समजी शके तेम छे.

पत्रनी भाषा हिन्दी-मिश्रित गुजराती छे अने ते काना-मात्रना हिसाब वगर जेम व्यापारी लोको लखे छे तेवी रीते लखाएली छे. आ नीचे प्रथम पत्रनी मूळ नकल--असलनी भाषामां ज—आपी छे अने तेनी नीचे लाईनवार हालनी भाषा प्रमाणे शुद्ध-संस्कारी रूपान्तर आप्युं छे.

(मूळ नकल)

(१) स्वास्ताश्रीचंतामंणापारस्वजणाप्रणामो श्रीदेवकापाटणामाहानगरसूभथांने पूजआरंद्धा माहाओतमो—
(२) अतंमचारीतरपात्रसूरामणा कूमतंअंद्धकारनभोमंणा कलकालगउतमोअवतार सरस्वती कंठआमरंणा—
(३) चउदवदानद्धांन ऐकवद्ध असंमना टालणाहार दूवद्ध द्धरंम परूपक त्रगा ततवना जाणा चार कखाअना.
(४) जीपक पंचमाहावरतना पालणाहार छकाअना पीहर सातभअना टालणाहार आठ मद्ध सथांनकना जीपक.
(५) नववाडवसद्धब्ररंमचरजानापालणाहार दसवद्धसरमणाद्धरंमपत्रपालक अगरअंगवार ऊपांगना जाणा.
(६) तेर काठीआना जीपक चऊदभेद जीवना प्ररोपक पनर परमाधार्मना भेदना जाण सोलकलासं-
(७) पुरण चंद्रवदन सतरभेद संज्यमना प्रातिपालक अढार सहस सिलंग रथना
(८) धारकः उगणिस न्यतधरमना परूपक विस असमाधीथाने रहीतः ऐकविस सबल—
(९) ना वारकः बावीस परीस्हाना जीपकः तेवीस सुगडा अंग अधेनना जाण चैवि—
(१०) स तिथंकरनी आगन्यना प्रातिपालकः पंचविस भावनाना भायकः छविस—
(११) दसाकलपविवहारना जाण सताविस साधगुणना उपदेसक अठाविस आया—
(१२) रकलपना जाण उगणातिस पपसुत्त प्रसंगना टालणहारः तिस मोहनी स्थानीक—
(१३) ना जीपक ईकतिस सिधगुणना जाणः बत्तिसजोग संग्रहना प्रतिपालक ते—
(१४) तिस गुरनी आस्यतनाना वारणहारः चत्तिस अतीसैना जाणः पत्तिस श्रीवित—
(१५) रागवणीना गुणना कथकः छत्तिस छत्तिसी सुरगुणे वीरजमानः वादीगुर—
(१६) ड गोवीद वादीगोधुमघरट मरदितवादी मरट सरसतिलबधप्रसादः दली—
(१७) त अनेक दुरवादवाद समुद्रनी परि गंभीरः मेरपरबतनि परी धिरः प्रापत सं—
(१८) सार समुद्र तिरः मायमही विडारणसीरः श्रीजिनसासन सहकारकीर
(१९) करमसत्त विडारणवीरः वाणि मीठि ईम्रतखीरः घरमकरतै न कर धीरः नीर—
(२०) मलचित जीम गंगानीरः उजल जससागर डंडीरः भंजण भवभिरः सोभा—
(२१) गगुणे अभिनवै गुरहीर जीण प्रतीबोध्य अकबर साह वडवीर दी—
(२२) न करणीपर अधीक प्रताप तेज सुविहत जणसु धरे हेज वड वैरागी अती—

(२३) सोभागी करणनि परी त्यागी मुगतिना रागी श्रीपातिसाह प्रबोधक अबोह जी—
(२४) व प्रतिबोह कालिकाल गोतिमा अवतार तपगछ सागार हार तपतेज दीवा—
(२५) कर गछाधीपति गछाधीराज सरबउपमाजोग: भटारिक पुरिदर श्री श्री श्री श्री श्री—
(२६) श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री विजयसेन सुरसूरिस्वर सु—
(२७) परिवार चरण कमलानं श्री आगराकोटानु सदा आदेसकारी चरणसेवक दासन—
(२८) दास पाइरज समान सदासेवक: सा: विमलदास सा: बंदीदास सा: लालचंद दुरगदा—
(२९) स: सं: चंदुमोपती सा: ननजी: सा: चंद्रसेन: सं: प्रतापसी: सां: नाथु भीषारीदास सा: पुनूमना
(३०) सा: समीदास दरगहमल: सा: पेमन सा: टोडर: सं: वीरदास सा: कवडू ननु सं: धरमदास गटका: सं: नेतसी: सा: खडा: सा: भोजु सा: सा—
(३१) गर सं: कवरजी वरधमान: सा: वैरा राई सीघ सा: कवरा धरमसी सा: मोकल सा: मेघा
(३२) सा: कटारू पिरथीमल सा: बोहीध सा: गोरा सा: वधा कुहाड सं: देवकरण सा: पदमसी: सा: मा—
(३३) नीकचंद सा तिलोकसी जैतसी: सं: धरमदास: सा: ताराचंद सा: पद्मापीथाका सा: रासा: सा: षेत—
(३४) सी सा: नेतसी सा मुला: सा: डूंगर: सं: रीषभदास सा चाउ सा षेमन सा: लीषमीदास सा: भीरपाल सा: भीमा सा: भोजुराजु
(३५) सा: भारूतारण: सा: पतापसारि: सा: तारूपसारी सा: देवजी: सोनी: रीषमदास सोनी विमलदास:
(३६) सा: अमीचंद सा: देवकरण सा: देवजी भीमजी सा: जीवा सं: उदा कमा: सं: सीघु सं सवल
(३७) सं: समीदास सं: लीलापती सं: कलु सं: वीरजी: सं: कपुरा सादुल सा: कल्याण सुगंधी: दरगह सुगंधी:
(३८) सा: कचरा मुहणैत सा: पदा मुहणैत सा: जेसीघ मुहणैत सा: जादू सा: ईसर सा: भाउ सा: गोवल
(३९) सा: सोमसी: सा: पोमसी सा: वरधमान सा: राउ सा: धनराज सं: नीहालु सा: रूडा: सा: मोवाल सोनी
(४०) सकतन सा: रतना सा: संसारू सा: वाधु सा: जावड सा: डगर वैद सा: गग्ग सा: भू डूगर सा: सु—
(४१) रताणा: सा: जेकरण आदेसकारी दवस वंदणा: सीकाह सा कावः राघवनी अवधार जो: समस—
(४२) त संघनी द्वादस वंदणा अवधारजो: ईह श्री पुजीजीनै प्रसाद कुसल षेम छै पुजीजीना—
(४३) कुसल षेमना सदा समाचार लीषवाजी त सेवकनै परम संतोष उपजै: अपर ईह श्री—
(४४) पजुसण प्रब नीराबाद पणै हुआ छै अमारी दीन १२ पजुसणनी विसेष सावदेस: पुरबदेस:
(४५) तथा ढीलमंडल: मेवातमंडल रीणथंभैरगढ देसा: बीजा ही घणै देसी अमारी वरती छै ते: संतोष मानजो
(४६) श्री सतरभेद पुजा १५ श्री जहगीर पातीसाह तषत बेठ पुठै ये अपुरब करणी हुई छै भ—
(४७) गवनजीनै प्रसाद श्रीतपागच्छनी उनित वीसेष हुई छै श्री: पातिसाहजी फुरमान २ करी द—
(४८) ना: ते श्री पजुसण आव श्रीजीनु: रमदासजी आगै हुई गुदरण हुकम दीआ ढंढोरा दीवाय—
(४९) पारीउर वार सारै दीना १२ अमारी वरताई: जीण वेल श्रीजी हुकम दीना तीणवेला दरीषन—
(५०) जुडथा श्रीजी झरोषै बैठा था राजा रमदासजी आगै था तीण पाछै फुरमान लीय: पं: विवेकहं [हर्ष]
(५१) तिण पाछै: पं: उदैहं (हर्ष) था: पछे अमारी आसरी विनती की श्रीपातिसाहजी हुकम दीना
(५२) ततकाली: तीणवेला: जीसा दरीषना जुडसु तीण समना ये लेष माह सरब लीष छै

(५३) उसता सालीवहण पातिसाही चित्रकार छै तेण तीण समै देष छै ईसाही ईण चि–
(५४) त्र माहे भाव राष छै सु लेष देष प्रीछजोः उसता सालीवहण वंदणा विनवी छै प्रछ जो
(५५) ईह श्रीः पजुसण श्रीसतर भेद पुजा १५ सनाथदीन ६१ तप मासषमण १॥ मासषम–
(५६) ण १। पाषषमण तथा अठाई तथा दवदसम दसम अठम बीजाही तप घणा हुआ छै.
(५७) छछरी पोसह त ९०१ सहमी वछल साः बंदीदासकैः चैमासा पाषी असटमी सदी सह–
(५८) मीवछल चाल छै पुजीजीका प्रसादथी अपरं ईह श्री जिन प्रासाद नवा संः चंदु करय छै
(५९) प्रतीमा पीण माहासुदर हुई छै घणिनु पीणा प्रतीस्टाना घणाई छै श्रीपुजीजी आवै तथा
(६०) श्रीआचारिजजी पधारतै जीणससणीना घणा उछाह होई सार संघना मनोरथ पैहचै
(६१) पुजीजी क्रिपाकर पधारजोः महो उपाध्याय श्रीसोमविजै पीण नेडा छै पुजी जलदथी लषी छै वि–
(६२) चारी भला जाण तम लीषजो जीम पुजी लीष तिम परमाण लेष प्रसाद वैगा मकुलजो
(६३) ईभरमावादः पंः श्रीः माहानंद ठण ३ छै दीलः री जेठठण २ छैः पारोःगणसरतनई ठण २ पहली चै–
(६४) मासः पेरोजाबाद गणी षीमानंद रहथा विजा मतका आचारिज रहमाटः हीवक तै तें षाली
(६५) पडः हीवै चैमास पेरोजावादकी षेतनी चीता करजोः पहले कैतही सात परहथा तै सरब मडराष
(६६) हीवै भीपु षेत षाली न रह तीम करजोः सावीकानी वंदणा विनवि छै ते प्रीछजो सही जाणजो.
(६७) संः विमलादे बाः साहीजदे बाः मीरष बाः जादव [पारमासहमनी वंदणा अवधारजो
(६८) बाई कपुर दे बाः लाछ बाः मोतांस पयादी बाः जीवड दे १साः ताराचंद साः षेतावेद साः मोहील
(६९) मणीक दे बाः कवर बाः सीरदे बाः भगत १ साः छीतु साः कासी साः वेणीदास
(७०) बालादे वहुः मनोरथदे बाः गारबदे बाः राज १ साः सागर साः भैरू साः मणकचंद
(७१) वहु केसरदे बाः होली बाः गरादे १ साः भोवाल साः ढोला साः डगर
(७२) पुजीजी प्रतिस्टा उपरी वैग पधारजो ईहना संघना उतकंठा घणी छै ऐकवार तुमार चरण
(७३) देष समसत संघ संतोष पामः नहीतर महोउपाध्यनु आदेस देजो जीण सासणनी सो–
(७४) भा होई तीम करजो घण स्य लीषीअ पुजीजी ईहनी परचीता तुमन छे ते प्रीछजो
(७५) संवतु १६६७ मीती कातीसुदी २ सुभदीने सोमवारे सुभं भवतुः लीः सीकहसा सुत.

[उपरना लखाणनुं हालनी भाषामां शुद्ध संस्कारी रूपांतर]

(१) स्वस्ति श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनं प्रणम्य श्री देवपाटण महानगरे शुभस्थाने, पूज्य आराध्य महात्मा,
(२) उत्तम चारित्र पात्रशिरोमाणि, कुमतान्धकार नभोमाणि, कालिकाल गौतमावतार, सरस्वतीकंठाभरण,
(३) चउदविद्यानिधान, एक विध असंयमना टाळणहार, द्विविध धर्मप्ररूपक, त्रण तत्त्वना जाण, चार कषायना–
(४) जीपक, पंचमहाव्रतना पाळणहार, छकायना पिता, सात भयना टाळणहार, आठ मदस्थानकना जीपक,
(५) नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्यना पाळणहार, दशविध श्रमणधर्म प्रतिपालक, अग्यार अंग बार उपांगना जांण,
(६) तेर काठियाना जीपक, चऊद भेद जीवना प्ररूपक, पंदर परमाधार्मिकना भेदना जांण, सोलकला–

(७) संपूर्ण चन्द्रवदन, सतरभेद संयमना प्रतिपालक अढार सहस्र शीलांगरथना–
(८) धारक, ओगणीस ज्ञाताधर्म (कथा) ना प्ररूपक, वीस असमाधि स्थानक रहित, एकवीस सबल–
(९) [दोष] निवारक, बावीस परीषहना जीपक, तेवीस सूयगडांगना अध्ययनना जाण, चौवी–
(१०) स तीर्थंकरनी आज्ञाना प्रतिपालक, पंचवीस भावनाना भावुक, छव्वीस–
(११) दशाकल्प–व्यवहार [अध्ययन] ना जांण, सतावीस साधुगुणना उपदेशक, अठावीस आचा–
(१२) रप्रकल्पना जांण, ओगणतीस पापसूत्रप्रसंगना टाळणहार, तीस मोहनीयस्थानक—
(१३) ना जीपक, एकत्रीस सिद्धगुणना जाण, बत्रीस योगसंग्रहना प्रतिपालक, ते—
(१४) त्रीस गुरुनी आशातनाना वारणहार, चउत्रीस अतिशयना जांण, पांत्रीस श्रीवीत—
(१५) रागवाणीना गुणना कथक, छत्रीस छत्रीसी सूरिगुणे विराजमान, वादीगरु—
(१६) डगोविन्द, वादीगोधुमघरट्ट, मृदितवादीमरट्ट, सरस्वती लब्ध प्रसाद, दलि—
(१७) त अनेक दुरवादी वाद, समुद्रनी परे गंभीर, मेरु पर्वतनी परे धीर, प्राप्तसं—
(१८) सार समुद्रतीर, मायामही विदारणसोर श्रीजिनशासन सहकारकीर,
(१९) कर्मशत्रुविदारणवीर, वाणी मीठी अमृतक्षीर, धर्मकरतां न करे धीर, नि–
(२०) र्मल चित्त जिम गंगानीर, उज्ज्वल यश सागर डंडीर, भंजग भवभीर, शौभा–
(२१) ग्य गुणे अभिनवगुरुहीर, जेणे प्रतिबोध्यो अकबर शाह बडवीर, दि–
(२२) नकरनी परे अधिक प्रताप तेज, सुविहित जनथी धरे हेज, वड वैरागी, अति–
(२३) सौभागी, कर्णनी परे त्यागी, मुक्तिना रागी, श्रीबादशाह प्रबोधक, अबोधजी–
(२४) व प्रतिबोधक, कलिकाल गौतमावतार, तपागच्छ शृंगारहार, तपतेज दिवा–
(२५) कर, गच्छाधिपति, गच्छाधिराज, सर्वोपमायोग्य, भट्टारक पुरंदर (पांच श्री)
(२६) [१६ श्री] विजयसेनसूरि सूरीश्वर स–
(२७) परिवार चरणकमलान् श्री आगराकोटना सदा आदेशकारी, चरणसेवक, दासानु–
(२८) दास, पायरजसमान, सदा सेवक, सा. विमलदास, सा. वंदीदास, सा. लालचंद दुगड,
(२९ थी ४२ मी लाईन सूधीमां आगराना आगवोन श्रावकोनां नामो मात्र आपेलां छे.)
(४३)—समस्त संघनी द्वादशवंदना अवधारशो. अहिंया श्रीपूज्यजीना प्रसादे कुशल–क्षेम छे. पूज्यजीना
(४४) कुशल–क्षेमना सदा समाचार लखवा, जेथी सेवकोने परमसंतोष उपजे. अपरं अहिंया श्री–
(४५) पजुसण पर्व निराबाधपणे थया छे. अमारी दिन १२ पजुसणनी,—विशेष सावदेश, पूर्वदेश,
(४६) तथा दिल्लीमंडल, मेवातमंडल, रणथंभोर गढदेश, बीजाए घणा देशे अमारी वरती छे, ते संतोष मानजो.
(४७) श्रीसत्तरभेदी पूजा १५, श्रीजहांगीर बादशाह तखत बेठां पछी आ अपूर्व करणी थई छे.
(४८) भगवन्तजीना प्रसादे श्रीतपागच्छनी उन्नति विशेष थई छे. श्रीबादशाहजीए फरमान २ करी दी–
(४९) धा, ते श्रीपजुसण आव्ये श्रीजीना रामदासजी आगळ थई गुदरण (?) हुकम दीधो. ढंढेरो देवायो.
(५०) पारीउरवारसारे (?) दिन १२ अमारी वरतावी. जे वेळा श्रीजीए हुकुम दीधो ते वेळां दरीखानो
(५१) भराणो हतो. श्रीजी झरोके बेठा हता. राजा रामदासजी आगळ हता. तेमनी पाछळ फरमान लई

पं० विवेक हर्ष,